सस्ती ग्रन्थमाला का पन्द्रहवां पुष्प

अर्वाचीन प्राचीन

भजन संग्रह

(अध्यात्मिक पदों का सुन्दर संकलन)

प्रकाशक—

सस्ती ग्रंथमाला

धर्मपुरा, देहली-६ ।

वीर नि० सं० २४९० मूल्य

चतुर्थ बार २२०० वि० सं० २०२० २५ न० पै०

सस्ती ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

—:●:—

१ पद्मपुराण	७)	९. भजन सग्रह	।)
२. रत्नकरण्ड श्रावकाचार	५)	१० वैराग्य प्रकाश	।)
३. मोक्षमार्ग प्रकाशक	३)	११. दशधर्म लावनी	।)
४ कल्याण गुटका	२॥)	१२. ब्रह्मचर्य रहस्य	।)
५. मानव धर्म	।॥)	१३ जैन शतक	≡)
६. सरल जैनधर्म	॥=)	१४ रहस्यपूर्ण चिट्ठी व	
७ बृहत् समाधि मरण	।=)	छहढाला (मूल) आदि	२० न० पै०
८. छहढाला साथ	३२ न० पै०	१५ मेरी भावना	)॥

श्री धनकुमारचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

१. प्रश्नोत्तर भावसागर प्रथम भाग	॥=)	२ प्रश्नोत्तर ज्ञान सागर द्वितीयभाग	॥=)
३ स्वास्थ्य विधान	॥)		

पत्र व्यवहार का पता—

मुन्शी सुमेरचन्द जैन, आराइजनवीश
२६६६, राजा प्रतापसिंह, किनारी बाजार, दिल्ली।

श्री प्रिंटिंग एजेन्सी तथा वैयार्क प्रेस, देहली।

श्री वीतरागाय नमः

अर्वाचीन प्राचीन भजन-संग्रह

—❀—

(१)

सब मिलके आज जय कहो, श्री वीर प्रभु की।

मस्तक झुका के जय कहो, श्री वीर प्रभु की ॥टेक॥

विघ्नों का नाश होता है, लेने से नाम के।

माला सदा जपते रहो, श्री वीर प्रभु की ॥१॥

ज्ञानी बनो दानी बनो, बलवान भी बनो।

अकलंक सम बन जय कहो, श्री वीर प्रभु की ॥२॥

होकर स्वतंत्र धर्म की, रक्षा सदा करो।

निर्भय बनो अरु जय कहो, श्री वीर प्रभु की ॥३॥

तुमको भी अगर मोक्ष की, इच्छा हुई है 'दास'।

उस वाणी पर श्रद्धा करो, श्री वीर प्रभु की ॥४॥

(२)

जिन वाणी मुक्ति नसैनी है, जिन वाणी ॥ टेक ॥

यह भवदधि से पार उतारन, पर भव को सुख दानी है ॥१

मिथ्यातिन के मनहि न आवै, भविजन के मन मानी है ॥२

धर्म कुधर्म की समझ परें सब,जुदिय जुदिय कर मानी है ॥३

'बाजूराय' भजो जिन वाणी, सुख कर्ता दुख हानी है ॥४

(३)

निरखत निज-चन्द्र-वदन, स्व-पर सुरुचि आई ॥ टेक ॥
प्रगटी निज आन की, पिछान ज्ञान-मान की ।
कला उद्योत होत काम, यामिनी पलाई ॥१॥
सास्वत आनन्द स्वाद, पायो विनस्यो विषाद ।
आन में अनिष्ट इष्ट, कल्पना नसाई ॥ २ ॥
साधी निज साध की, समाधि मोह व्याधि की ।
उपाधि को विराधिकै, अराधना सुहाई ॥३॥
धन दिन छिन आज सुगुनि, चिंते जिनराज अबै ।
सुधरे सब काज 'दौल', अचल सिद्धि पाई ॥४॥

(४)

जब तै आनन्द जननि दृष्टि परी माई ।
तब तै संशय विमोह भरमता विलाई ॥ टेक ॥
मै हूँ चित चिह्न, भिन्न परतें, पर जड स्वरूप ।
दोउन की एकता सु, जानी दुखदाई ॥१॥
रागादिक बंधहेत, बंधन बहु विपत देत ।
संवर हित जान तासु, हेतु ज्ञान ताई ॥२॥
सब सुख मय शिव है तसु, कारन विधि झारन इमि ।
तत्व की विचारन जिन-वानि सुधि कराई ॥३॥
विषय चाह ज्वाल तै, दह्यो अनन्त कालतै ।
सुधांशु स्यातपदांक गाह-तैं, प्रशांति आई ॥४॥

या बिन जग जालमें न, शरन तीन कालमें ।
संभाल चित भजो सदीव, 'दौल' यह सुहाई ॥ ५ ॥

(५) ✓

जीव तू अनादि ही तैं भूल्यौ शिव गैलवा ॥ टेक ॥
मोहमद वार पियौ, स्वपद विसार दियौ ।
पर अपनाय लियौ, इन्द्री सुखमें रचियौ ।
भवतें न भियौ न तजियौ मन मैलवा ॥ १ ॥
मिथ्या ज्ञान आचरन, धरिकर कुमरन ।
तीन लोक की धरन, तामें कियो मै फिरन ।
पायौ न शरन लहायौ सुख शैलका ॥ २ ॥
अब नर भव पायौ, सुथल सुकुल आयौ ।
जिन उपदेश भायौ, 'दौल' झट छिटकायौ ।
पर परनति दुखदायिनी चुरैलवा ॥ ३ ॥

(६)

आपा नहिं जाना तूने, कैसा ज्ञानधारी रे ॥ टेक ॥
देहाश्रित करि क्रिया आपको, मानत शिवमगचारी रे ॥१
निज-निवेद विन घोर परीषह, विफल कही जिन सारी रे ॥२
शिव चाहे तो द्विविधिकर्म तैं,कर निजपरनति न्यारी रे ॥३
'दौलत' जिन निजभाव पिछान्यौ,तिन भवविपत विदारीरे ॥४

(७)

आतम रूप अनूपम अद्भुत,याहि लखै भवसिंधु तरो ॥टेक॥

अल्पकाल में भरत चक्रधर, निज आतम को ध्याय खरो।
केवल ज्ञान पाय भवि बोधे, ततछिन पायो लोक शिरो ॥१
या बिन समुझे द्रव्य लिंग मुनि, उग्र तपन कर भार मरो।
नवग्रीवक पर्यन्त जाय चिर, फेर भवार्णव माँहि परो ॥२
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, येहि जगत में सार नरो।
पूरव शिव को गये जाँहि अब, फिर जैहैं यह नियत करो ॥३
कोटि ग्रन्थ को सार यही है, येही जिनवानी उचरो।
'दौल' ध्याय अपने आतम को, मुक्तरमा तब वेग वरो ॥४

(८)

आप भ्रम विनाश आप आप जान पायौ।
कर्णधृत सुवर्ण जिमि चितार चैन थायौ ॥टेक॥
मेरो तन तनमय तन मेरो मैं तन को त्रिकाल।
कुबोध नश सुबोध भान जायौ ॥ १ ॥
यह सुजैन वैन ऐन, चिन्तन पुनि पुनि सुनैन।
प्रगटो अब भेद निज, निवेद गुन बढ़ायौ ॥ २॥
यों ही चित अचित मिश्र, ज्ञेय ना अहेय हेय।
ईंधन धनंज जैसे, स्वामि योग गायो ॥ ३ ॥
भंवर पोत छुटत झटति, बांछित तट निकट जिमि।
मोहराग रुख हर जिय, शिवतट निकटायौ ॥ ४ ॥
विमल सौख्यमय सदीव, मैं हूँ मैं नहिं अजीव।
जोत होत रज्जुमय, भुजंग भय भगायौ ॥ ५ ॥

यौंही जिव चग्र सुगुन, चिन्तत परमारथ गुन ।
'दौल' भाग जागो जब, अल्प पूर्व आयो ॥ ६ ॥

(९)

और सबै जगद्वन्द मिटाओ,लौ लावो जिन आगमओरी ॥टेक
है असार जगद्वन्द बंध कर, यह कछु गरजन सारत तोरी ।
कमलाचपला यौवनसुरधनु,स्वजन पथिकजन क्योंरति जोरी॥१
विषय कषाय दुखद हैं दोनों, इनतैं तोर नेह की डोरी ।
परद्रव्यन को तू अपनावत, क्यों न तजै ऐसी बुधि भोरी ॥२
बीत जाय सागर थिति सुरकी,नर परजाय तनी अति थोरी।
अवसर पाय'दौल'अब चूको,फिर न मिलै मणिसागर वोरी ॥३

(१०)

ऐसामोही क्योंन अधोगतिजावै,जाको जिनवानी न सुहावै ॥टेक
वीतरागसे देव छोड़कर, भैरव यक्ष मनावै ।
कल्पलता दयालुता तजि, हिंसा इन्द्रायनि बोवै ॥ १ ॥
रुचै न गुरु निर्ग्रन्थ भेष बहु-परिग्रही गुरु भावै ।
परधन परतिय को अभिलाषै, अशनअशोधित खावै ॥ २ ॥
परकी विभव देख ह्वै सोगी, पर दुख हरख लहावै ।
धर्म हेतु इक दाम न खरचै, उपवन लक्ष बहावै ॥ ३ ॥
ज्यों गृहमें संचै बहु अघ त्यौं, बन हू में उपजावै ।
अम्बर त्याग कहाय दिगम्बर, बाघम्बर तन छावै ॥ ४ ॥
आरम्भ तज शठ यंत्रमंत्र करि, जनपै पूज्य मनावै ।
धाम बाम तज दासी राखै, बाहिर मढ़ी बनावै ॥५॥

नाम धराय जती तपसी मन, विषयनिमें ललचावै।
'दौलत' सो अनन्त भव भटकै, औरन को भटकावै ॥६॥

(११)

मोही जीव भरम तमतैं नहिं, वस्तुस्वरूप लखै है जैसें ॥टेक
जे जे जड़ चेतन की परनति, ते अनिवार परनवें वैसें।
वृथा दुखी शठकर विकलप यों, नहिं परिनवें परिनवें ऐसें॥
अशुचि सरोग समलजड़ मूरत, लखत विलात गगनघन जैसें।
सो तन ताहि निहार अपनपो, चहत अबाध रहै थिर कैसें॥
सुत-तिय-बंधु-वियोग योग यों, ज्यों सराय जन निकसें पैसें।
विलखत हरखत शठ अपने लखि, रोवत हंसत मत्त जन ऐसें॥
जिन-रविवैन किरनलहि जिन निज, रूप सुभिन्नकीयौ परमेंसें।
सोजग मौल'दौल'को चिर थित, मोहविलास निकास हृवैसें॥

(१२)

ज्ञानीजीव निवार भरमतम, वस्तु स्वरूप विचारत ऐसें ॥टेक
सुत-तिय बंधु धनादि प्रगट पर, ये मुझतें हैं भिन्न प्रदेशें।
इनकी परनति है इन आश्रित, जो इन भाव परनवें वैसें ॥१
देह अचेतन चेतन मैं इन, परनति होय एकसी कैसें।
पूरन गलन स्वभाव धरैतन, मैं अजअचल अमल नभ जैसें ॥२
पर परिनमन न इष्ट अनिष्ट न, वृथा राग रुष द्वंद भये सें।
नसैं ज्ञान निज फंसै बंधमें, मुक्त होय समभाव लये सें ॥३
विषयचाह दवदाह नसै नहिं, बिन निज सुधासिंधु में पैसें।

अब जिन बैन सुने श्रवनतें, मिटे विभावकर्हूँ विधितैं सें ॥४॥
ऐसो अवसर कठिन पाय अब, निजहित हेत विलम्ब करे सें।
पछताओ बहु होय सियाने,चेतन 'दौलत'छूटो भव भैसें ॥५॥

(१३)

अपनी सुधि भूल आप, आप दुख उपायौ।
ज्यौं शुक नभचाल विसरि, नलिनी लटकायौ ॥टेक॥
चेतन अविरुद्ध शुद्ध, दरश बोधमय विशुद्ध।
तजि जड़-रस-फरस-रूप, पुद्गल अपनायौ ॥१॥
इन्द्रिय सुख दुख में नित्त, पाग राग रुख में चित्त।
दायक भवविपतिवृन्द, बंधको बढ़ायौ ॥२॥
चाह-दाह दाहे, त्यागो न ताह चाहे।
समता सुधा न गाहे, जिन निकट जो बतायौ ॥ ३ ॥
मानुष भव सुकुल पाय, जिनवर-शासन लहाय।
'दौल' निज स्वभाव भज, अनादि जो न ध्यायौ ॥४॥

(१४)

हमतो कबहूँ न हित उपजायो।
सुकुल सुदेव सुगुरु सुसंगहित, कारन पाय गमायो ॥टेक
ज्यौं शिशु नाचत, आप न माचत, लखनहार बौराये।
त्यौं श्रुति वांचत आप न राचत, औरन को समुझाये ॥१
सुजस लाहकी चाह न तज निज, प्रभुता लखि हरषाये।
विषय तजे न रचे निजपदमें, पर पद अपद लुभाये ॥२

पाप त्याग-जिन जाप न कीन्हौं, सुमन चाप-तप ताये ।
चेतन तनको कहत भिन्न पर, देह सनेही थाये ॥३॥
यह चिर भूल भई हमरी अब, कहा होत पछताये ।
'दौल' अजौं भव-भोग रचौ मत, यौं गुरु वचन सुनाये ॥४॥

(१५)

मत कीज्यौ जी यारी, ये भोग भुजंग सम जान के ॥टेक॥
भुजंग डसत इक वार नसत है, ये अनन्त मृतुकारी ।
तिषना तृषा बढ़ै इन सेये, ज्यौं पीये जल खारी ॥१॥
रोग वियोग शोक वनका धन, समता लता कुठारी ।
केहरि करी अरी न देत ज्यौं,त्यौं ये दें दुख भारी ॥२॥
इनमें रचे देव तरु थाये, पाये शुभ्र मुरारी ।
जे विरचे ते सुरपति अरचें, परचे सुख अविकारी ॥३॥
पराधीन छिनमांहि छीन ह्वै, पापबन्धकरतारी ।
इन्हें गिनें सुख आकमांहि तिन, आमतनी बुध धारी ॥४॥
मीन मतंग पतंग भृङ्ग मृग, इन वश भये दुखकारी ।
सेवत ज्यौं किंपाक ललिक, परिपाप समय दुखकारी ॥५॥
सुरपति नरपति खगपतिहूकी, भोग न आस निवारी ।
'दौल' त्याग अब भज विराग सुख,ज्यौं पावें शिवनारी ॥६॥

(*१६)

प्रभु मोरी ऐसी बुधि कीजिये।
रागद्वेष दावानल से बच, समता रस में भीजिये ॥टेक॥

परमें त्याग अपनपो निज में, लाग न कबहूँ छीजिये ।
कर्म कर्मफलमाँहि न राचत, ज्ञान सुधारस पीजिये ॥१॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरननिधि, ताकी प्राप्ति करीजिये ।
मुझ कारजके तुम बडकारन, अरज 'दौलकी' लीजिये ॥२॥

(१७)

हे मन तेरी को कुटेव यह, करन-विषयमें धावै है ॥टेक॥
इनहीके वश तू अनादि तै, निजस्वरूप न लखावै है ।
पराधीन छिन छीन समाकुल, दुर्गति विपति चखावै है ॥१॥
फरस विषय के कारण वारथ, गरत परत दुख पावै है ।
रसना इन्द्रीवश झष जल में, कंटक कंठ छिदावै है ॥२॥
गन्धलोल पंकज मुद्रित में, अलि निज प्राण गमावै है ।
नयन विषयवश दीप शिखा में, अंग पतंग जरावै है ॥३॥
करन-विषयवश हिरन अरन में, खलकर प्रान लुनावै है ।
'दौलत' तज इनकोजिनको भज,यह गुरु सीख सुनावै है ॥४॥

(१८)

हो तुम शठ अविचारी जियरा,जिनवृष पाय वृथा खोवत हो
पी अनादि मवमोह स्वगुननिधि, भूल अचेत नींद सोवत हो
स्वहित सीख-वच सुगुरु पुकारत,क्यों न खोल उर-दृग जोवतहो
ज्ञान विसार विषयविष चाखत, सुरतरु जारि कनक बोवतहो
स्वारथ सगे सकल जनकारन, क्यों निज पाप भार ढोवतहो
नरभव सुकुल जैनवृष नौका,लहि निज क्यों भवजल डोवतहो

पुण्य पापफल वातव्याधिवश, छिनमें हंसत छिनक रोवत हो
संयम-सलिललेय निज उरके,कलि मल क्यों न'दौल'धोवत हो

(१९)

मानले या सिख मोरी, झुके मत भोगन ओरी ॥टेक॥
भोग-भुजंग भोगसम जानो, जिन इनसे रति जोरी ।
ते अनन्त भव भीम भरे दुख, परे अधोगति पोरी ।
बंधे दृढ़ पातक डोरी ॥१॥
इनको त्याग विरागी जे जन, भये ज्ञानवृष-धोरी ।
तिन सुख लह्यो अचल अविनाशी, भवफांसी दई तोरी ।
रमैं तिनसंग शिवगोरी ॥२॥
भोगन की अभिलाष हरनको, त्रिजग संपदा थोरी ।
यातैं ज्ञानानन्द 'दौल' अब, पियौ पियूष कटोरी ।
मिटै भवव्याधि कठोरी ॥३॥

(२०)

छांड़ि दे या बुधि भोरी, वृथा तन से रति जोरी ॥टेक
यह पर है न रहै थिर पोषत, सकल कुमल की झोरी ।
यासौं ममता कर अनादितैं, बंधो कर्म की डोरी ।
सहै दुख जलधि हिलोरी ॥१॥
यह जड है तू चेतन यौं ही, अपनावत बरजोरी ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणनिधि, ये हैं सम्पत तोरी ।
सदा विलसौ शिवगोरी ॥२॥

सुखिया भये सदीव जीव जिन, यासौं ममता तोरी ।
'दौल' सीख यह लीजे पीजे, ज्ञानपियूष कटोरी ।
मिटै परवाह कठोरी ॥३॥

(२१)

ऐसा योगी क्यों न अभयपद पावै,सो फेर न भवमें आवै॥टेक
संशय विभ्रम मोह-विवर्जित, स्वपरस्वरूप लखावै ।
लख परमातम चेतन को पुनि, कर्मकलंक मिटावै ॥१॥
भवतन भोगविरक्त होय तन, नग्न सुभेष बनावै ।
मोहविकार निवार निजातम-अनुभव में चित लावै ॥२॥
त्रस थावर-वध त्याग सदा, परमाददशा छिटकावै ।
रागादिकवश झूठ न भाखै, तृण हू न अदत्त गहावै ॥३॥
बाहिर नारि त्यागि अन्तर, चिदब्रह्म सुलीन रहावै ।
परमाकिंचन धर्म सार सो, द्विविध प्रसंग बहावै ॥४॥
पंच समिति त्रय गुप्ति पाल, व्यवहार-चरनमग धावै ।
निश्चय सकल कषाय रहित ह्वै,शुद्धातम थिर थावै ॥५॥
कुंकुम पंकदास रिपु तृण मणि, व्याल माल सम भावै ।
आरत रौद्र कुध्यान विडारे, धर्म शुकलको ध्यावै ॥६॥
जाके सुखसमाज की महिमा, कहत इन्द्र अकुलावै ।
'दौल' तास पद होय दास सो, अविचल ऋद्धि लहावै ॥७॥

(२२)

चिन्मूरत दृग्धारी की मोहि, रीति लगत है अटापटी ॥टेक॥

बाहिर नारकिकृत दुख भोगै, अन्तर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनि संग पै तिस,परनतितैं नित हटाहटी ॥१
ज्ञानविरागशक्तितैं विधिफल, भोगत पै विधि घटाघटी।
सदननिवासी तदपि उदासी, तातै आस्रव छटाछटी ॥२
जे भवहेतु अबुधके ते तस, करत बन्धकी झटाझटी।
नारक पशु तिय षंढ विकलत्रय,प्रकृतिनकी ह्वै कटाकटी ॥३
संयम धर न सकै पै संयम, धारन की उर चटाचटी।
तासु सुयश गुनकी 'दौलत' कै, लगी रहै नित रटारटी ॥४

(२३)

चित चिन्तकै चिदेश कब, अशेष पर वमूं।
दुखदा अपार विधि दुचार-की चमू दमूं ॥टेक॥
तजि पुण्य पाप थाप आप, आपमें रमूं।
कब राग-आग शर्म-बाग, दागिनी शमूं ॥ १ ॥
दृगज्ञानभानतैं मिथ्या, अज्ञान तम दमूं।
कब सर्व जीव प्राणिभूत, सत्वसौं छमूं ॥ २ ॥
जल मल्ल लिप्त-कल सुकल, सुबल्ल परिनमूं।
दलकै त्रिशल्ल मल्ल कब, अटल्लपद पमूं ॥ ३ ॥
कब ध्याय अज अमर को फिर, न भवविपिन भमूं।
जिन पूर कौल 'दौल' को, यह हेतु हों नमूं ॥ ४ ॥

(२४)

धनि मुनि जिन यह भाव पिछाना ॥ टेक ॥

तन व्यय वांछित प्रापति मानो,पुण्य उदय दुख जाना ॥१॥
एक विहारी सकल ईश्वरता, त्याग महोत्सव माना ।
सब सुखको परिहार सार सुख, जानि राग रुष भाना ॥२॥
चित स्वभाव को चिंत्य प्रान निज, विमल ज्ञानदृगसाना ।
'दौल'कौन सुखजान लह्यो तिन,करो शांति-रस पाना ॥३॥

(२५)

मेरे कब ह्वै वा दिनकी सुघरी ॥ टेक ॥
तन बिन वसन असन बिन वनमें,निवसों नासादृष्टि धरी ॥१
पुण्य पाप परसों कब बिरचों,परचों निजनिधि चिर विसरी।
तज उपाधि सजि सहजसमाधी,सहों घाम हिम मेघझरी ॥२
कब थिरजोग धरो ऐसो मोहि, उपल जान मृग खाज हरी ।
ध्यान-कमान तान अनुभव-शर, छेदों किहि दिन मोह अरी ॥
कब तृण कंचन एक गिनों अरु, मणि जडितालय शैलदरी ।
'दौलत' सत गुरुचरन सेव जो, पुरवो आश यहै हमरी ॥४

(२६)

जम आन अचानक दाबैगा ॥ टेक ॥
छिन २ करत घटत थित ज्यों जल,अंजुलिको झर जावैगा ॥१
जन्म तालतरुतै पर जियफल, कोंलग बीच रहावैगा ।
क्यों न विचार करै नर आखिर, मरन महीमें जावैगा ॥२
सोवत मृत जागत जीवत ही, श्वासा जो थिर थावैगा ।
जैसे कोऊ छिपै सदासों, कबहूँ अवशि पलावैगा ॥३

कहूँ कबहूँ कैसें हू कोऊ, अन्तकसे न बचावैगा।
सम्यग्ज्ञानपियूष पिये सौं, 'दौल' अमरपद पावैगा ॥४॥

(२७)

अरे जिया, जग धोखेकी टाटी। टेक।
झूठा उद्यम लोक करत हैं, जिसमें निशिदिन घाटी ॥१॥
जान बूझके अन्ध बने हैं, आंखन बांधो पाटी ॥२॥
निकल जांयगे प्राण छिनक में, पड़ी रहैगी माटी ॥३॥
'दौलतराम' समझ मन अपने, दिल की खोल कपाटी ॥४॥

(२८)

कबधों मिलैं मोहि श्रीगुरुमुनिवर,करिहै भवोदधि पारा हो ॥टेक
भोगउदास जोग जिन लीनों, छांड़ि परिग्रह भारा हो।
इन्द्रिय दमन वमन मद कीनों, विषय कषाय निवारा हो ॥१
कंचन कांच बराबर जिनके, निंदक बंदक सारा हो।
दुर्धर तप तपि सम्यक निज घर,मन वचतनकर धारा हो ।२
ग्रीषम गिरि, हिम सरिता तीरे, पावस तरुवर ठारा हो।
करुणाभीन चीन त्रसथारक, ईर्यापंथ समारा हो ॥३
मास मासव्रत धार शील दृढ़, मोह महामल टारा हो।
मास छमास उपास वास वन, प्रासुक करत अहारा हो ॥४
आरत रौद्र लेश नहिं जिनके, धर्म शुक्ल चित धारा हो।
ध्यानारूढ़ गूढ़ निज आतम, शुद्ध उपयोग विचारा हो ॥५
आप तरहिं औरनको तारहिं, भवजल सिंधु अपारा हो।

'दौलत' ऐसे जैन-जतिन को, नितप्रति धोक हमारा हो ॥६

(२९)

हमतो कबहुं न निज घर आये ।
परघर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये ॥ टेक ॥
परपद निजपद मानि मगन,ह्वै पर परनति लपटाये ।
शुद्ध बुद्ध सुख कन्द मनोहर, चेतन भाव न भाये ॥१॥
नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये ।
अमल अखण्ड अतुल अविनाशी, आतमगुन नहिं गाये ॥२॥
यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये ।
'दौल' तजौ अजहूं विषयनको, सतगुरु बचन सुनाये ॥३॥

(३०)

मत राचो धीधारी, भव रंभथंभसम जानके ॥ टेक ॥
इंद्रजालको ख्याल मोह ठग, विभ्रम पाप पसारी ।
चहुंगति विपतिमयी जामें जन, भ्रमत भरत दुख भारी ॥१
रामा भामा बामा सुत पितु, सुता स्वसा अवतारी ।
को अचंभ जहाँ आप आपके, पुत्र दशा विस्तारी ॥२
घोर नरक दुख ओर न, छोर न, लेश न सुख विस्तारी ।
सुन नर प्रचुर विषयजुर जारे, को सुखिया संसारी ॥३
मंडल ह्वै आखंडल छिन में, नृप कृमि सधन भिखारी ।
जा सुत विरह मरी ह्वै बाघिन, ता सुत देह विदारी ॥४
शिशु न हिताहित ज्ञान तरुन उर, मदन दहन पर जारी ।

वृद्ध भये विकलांगी थाये, कौन दशा सुखकारी ।।५
यों असार लख छार भव्य झट, भये मोखमगचारी ।
यातें होउ उदास 'दौल' अब, भज जिनपति जगधारी ।।६

(३१)

नित पीज्यौ धीधारी, जिनवानि सुधासम जान के ।।टेक
वीरमुखारविंदतें प्रगटी, जन्म जरा गद टारी ।
गौतमादि गुरु-उरघट व्यापी, परम सुरुचि करतारी ।।१
सलिल समान कलिलमल गंजन, बुधमनरंजनहारी ।
भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी ।।२
कल्यानकतरु उपवनधरिनी, तरनी भवजलतारी ।
बंधविदारन पैनी छैनी, मुक्तिनसैनी सारी ।।३
स्वपरस्वरूप प्रकाशन को यह, भानु कला अविकारी ।
मुनिमन कुमुदिनि मोदन शशिभा,शमसुखसुमन सुवारी ।।४
जाको सेवत बेवत निजपद, नशत अविद्या सारी ।
तीनलोकपति पूजत जाको, जान त्रिजग हितकारी ।।५
कोटि जीभसों महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी ।
'दौल' अल्पमति केम कहै यह, अधम उधारनहारी ।।६

(३२)

मत कीज्यौ जी यारी, घिनगेह देह जड़ जान के ।।टेक
मात-तात-रज-वीरजसों यह, उपजी मलफुलवारी
अस्थि माल पल नसाजाल की, लाल लाल जलक्यारी ।।१

कर्म कुरंग थली पुतली यह, मूत्र पुरीष भंडारी।
चर्ममड़ी रिपुकर्मघड़ी धन, धर्म चुरावनहारी ॥ २ ॥
जे जे पावन वस्तु जगत में, ते इन सर्व बिगारी।
स्वेदमेद कफक्लेदमयी बहु, मदगद व्याल पिटारी ॥३ ॥
जा संयोग रोग-भव तौलों, जा वियोग शिवकारी।
बुध तासौं न ममत्व करें यह, मूढ़मतिनकों प्यारी ॥ ४ ॥
जिन पोषी ते भये सदोषी, तिन पाये दुख भारी।
जिन तप ठान ध्यान कर शोषी, तिन परनी शिवनारी॥५॥
सुरधनु शरद जलद जल बुदबुद, त्यौं झट विनशनहारी।
यातैं भिन्न जान निज चेतन, 'दौल' होहु शमधारी ॥ ६ ॥

(३३)

सन्त निरन्तर चिन्तत ऐसें,आतमरूप अबाधित ज्ञानी ॥टेक॥
रागादिक तो देहाश्रित हैं, इनतैं होत न मेरी हानी।
दहनदहत ज्यों दहन न तदगत,गगन दहनताकी विधि ठानी॥
वरणादिक विकार पुद्‌गल के, इनमें नहिं चैतन्य निशानी।
यद्यपि एक क्षेत्र अवगाही,तद्यपि लक्षण भिन्न पिछानी॥२॥
मैं सर्वांगपूर्ण ज्ञायक रस, लवण खिल्लवत लीला ठानी।
मिली निराकुल स्वाद न यावत्,तावत् पर परनति हित मानी
'भागचन्द' निरद्वन्द निरामय, मूरति निश्चय सिद्ध समानी।
नित अकलंक अवंक शंक बिन,निर्मल पंक बिना जिमि पानी

(३४)

यही इक धर्म मूल है मीता! निज समकितसार-सहीता।टेक।
समकित सहित नरकपदवासा, खासा बुधजन गीता।
तहंतें निकस होय तीर्थंकर, सुरगन जजत सप्रीता ॥ १ ॥
स्वर्गवास हू नीको नाहीं, बिन समकित अविनीता।
तहंते चय एकेंद्री उपजत, भ्रमत सदा भयभीता ॥ २॥
खेत बहुत जोते हु बीज बिन, रहित धान्यसों रीता।
सिद्धि न लहत कोटि तपहूते, वृथा कलेश सहीता ॥ ३ ॥
समकित अतुल अखंड सुधारस, जिन पुरुषनने पीता।
'भागचन्द' ते अजर अमर भये, तिनहीनें जगजीता ॥ ४ ॥

(३५)

जीवनके परिनामनिकी यह,अति विचित्रता देखहु ज्ञानी।टेक।
नित्य निगोद माहिंते कढ़िकर, नर परजाय पाय सुखदानी।
समकित लहि अंतर्मुहूर्त में, केवल पाय वरै शिवरानी ॥१॥
मुनिएकादश गुणथानक चढ़ि,गिरत तहाँतें चितभ्रम ठानी।
भ्रमत अर्धपुद्गल परिवर्तन, किंचित् ऊन काल परमानी ॥२
निज परिनामनि की संभाल में,तातै गाफिल ह्वै मत प्रानी।
बंध मोक्ष परिनामनिही सों, कहत सदा श्रीजिनवरवानी ॥३
सकल उपाधिनिमित भावनिसों,भिन्नसु निज परनतिको छानी
ताहि जानि रुचि ठानहोहु थिर,'भागचंद'यह सीख सयानी ॥

(३६)

परिनति सब जीवन की, तीन भांति वरनी।
एक पुण्य एक पाप, एक रागहरनी ॥ टेक ॥
तामे शुभ अशुभ अंध, दोय करें कर्मबंध।
वीतराग परिनति ही, भवसमुद्र तरनी ॥ १ ॥
जावत शुद्धोपयोग, पावत नाहीं मनोग।
तावत ही करन जोग, कही पुण्य करनी ॥ २ ॥
त्याग शुभ क्रियाकलाप, करो मत कदाच पाप।
शुभ मे न मगन होय, शुद्धता विसरनी ॥ ३ ॥
ऊँच ऊँच दशा धारि, चित प्रमाद को बिडारि।
ऊँचली दशाते मति, गिरो अधो धरनी ॥ ४ ॥
'भागचन्द' या प्रकार, जीव लहै सुख अपार।
याके निरधार स्याद्—वादकी उचरनी ॥ ५ ॥

(३७)

जीव तू भ्रमत सदीव अकेला, संगसाथी कोई नहिं तेरा॥टेक
अपना सुख दुख आपहि भुगते, होय कुटुम्ब न भेला।
स्वार्थ भयें सब बिछुर जात है, विघट जात ज्यो मेला ॥१॥
रक्षक कोई न पूरन ह्वै जब, आयु अन्तकी बेला।
फूटत पारि बंधत नहि जैसे, दुद्धर जल को ठेला ॥ २ ॥
तन धन जोबन विनशि जात ज्यो, इन्द्रजाल का खेला।
'भागचन्द' इमि लखि करि भाई, हो सतगुरु का चेला ॥३॥

(३८)

आकुल रहित होय इमि निशदिन, कीजे तत्व विचारा हो ।
को मैं कहा रूप है मेरा, पर है कौन प्रकारा हो ॥ १ ॥
को भव-कारण बंध कहा को, आस्रव रोकनहारा हो ।
खिपत कर्म बंधन काहेसों, थानक कौन हमारा हो ॥ २ ॥
इमि अभ्यास किये पावत है, परमानन्द अपारा हो ।
'भागचन्द' यह सार जानिकर, कीजै बारम्बारा हो ॥ ३ ॥

(३९)

बुधजन पक्षपात तज देखो, सांचा देव कौन है इनमें ॥टेक॥
ब्रह्मा दंड कमंडलधारी, स्वांत भ्रांत वश सुर नारिन में ।
मृगछाला माला मौजी पुनि,विषयासक्त निवास नलिन में ।।१
शम्भू खट्वा अंगसहित पुनि, गिरिजा भोगमगन निशदिनमें।
हस्त कपाल व्याल भूषन पुनि,रुंडमाल तन भस्म मलिनमें।२
विष्णु चक्रधर मदनवानवश, लज्जा तजि रमता गोपिन में ।
क्रोधानल जाज्वल्यमान पुवि, तिनके होत प्रचंड अरिनमें ।।३
श्री अरहंत परम वैरागी, दूषन लेश प्रवेश न जिनमें ।
'भागचन्द'इनको स्वरूप यह,अब कहो पूज्यपनों है किनमें।।४

(४०)

सांची तो गङ्गा यह वीतराग-वानी ।
अविच्छिन्न धारा निज धर्मकी कहानी ॥ टेक॥

जामें अतिहो विमल अगाध ज्ञान पानी।
जहां नहीं संशयादि पंक की निशानी ॥ १ ॥
सप्तभंग जहँ तरङ्ग उछलत सुखदानी।
संत-चित पराल-वृन्द रमैं नित ज्ञानी ॥ २ ॥
जाके अवगाहनतैं शुद्ध होय प्रानी।
'भागचन्द' निहचै घटमांहि या प्रमानी ॥ ३ ॥

(४१)

आतम अनुभव आवै, जब निज आतम अनुभव आवै।
और कछू ना सुहावै, जब निज आतम अनुभव आवै ॥टेक॥
रस नीरस हो जात ततच्छिन, अक्ष विषय नहिं भावै ॥१॥
गोष्ठी कथा कुतूहल विघटै, पुद्गल-प्रीति नसावै।
राग दोष जुग चपल पक्षजुत, मन पक्षी मर जावै ॥ २ ॥
ज्ञानानन्द सुधारस उमगै, घट अन्तर न समावै।
'भागचन्द' ऐसे अनुभव के, हाथ जोरि सिर नावै ॥ ३ ॥

(४२)

धन्य धन्य है घड़ी आज की, जिनधुनि श्रवन परी।
तत्व प्रतीत भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी ॥ टेक ॥
जड़तैं भिन्न लखी चिन्मूरत, चेतन स्वरस भरी।
अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, परमैं सब परिहरी ॥ १ ॥
पाप पुन्य विधिबंध अवस्था, भासी अति दुख भरी।
वीतराग विज्ञानभावमय, परिनति अति विस्तरी ॥ २ ॥

चाह-दाह विनसी बरसी पुनि, समता मेघझरी ।
बाढ़ी प्रीति निराकुल पदसों, 'भागचन्द' हमरी ॥ ३ ॥

(४३)

जे दिन ‿ ı विवेक बिन खोये ॥ टेक ॥
मोह वारुणी पी अनादितैं, पर पदमें चिर सोये ।
सुखकरंड चितपिंड आपपद, गुन अनंत नहिं जोये ॥ १ ॥
होय बहिर्मुख ठानि राग रुख, कर्म बीज बहु बोये ।
तसु फल सुख दुख सामग्री लखि, चित में हरषे रोये ॥२॥
धवल ध्यान शुचि सलिल-पूरतें, आस्रव मल नहिं धोये ।
परद्रव्यनिकी चाह न रोकी, विविध परिग्रह ढोये ॥ ३ ॥
अब निजमें निज जान नियत तहां, निज परिनाम समोये ।
यह शिवमारग समरससागर, 'भागचन्द' हित तोये ॥ ४ ॥

(४४)

अब मेरे समकित सावन आयो ॥ टेक ॥
बीति कुरीत मिथ्यामति ग्रीषम, पावस सहज सुहायो ॥१॥
अनुभव दामिनि दमकन लागी, सुरति घटा घन छायो ।
बोलै विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिन भायो ॥ २ ॥
गुरुधुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमग विहसायो ।
साधक भाव अंकूर उठे बहु, जित तित हरष सवायो ॥३॥
भूल धूल कहि मूल न सूझत, समरस जल भर लायो ।
'भूधर' को निकसै अब बाहिर, निज निरचू घर पायो ॥४॥

(४५)

भगवन्त भजन क्यों भूला रे ॥ टेक ॥
यह संसार रैनका सुपना, तन धन वारि बबूला रे ॥१॥
इस जोवन का कौन भरोसा, पावक में तृणपूला रे।
काल कुदार लिये सिर ठाड़ा, क्या समझै मन फूला रे ॥२॥
स्वारथ साधै पाँच पांव तू, परमारथ को लूला रे।
कहु कैसे सुख पैहै प्राणी, काम करै दुख मूला रे ॥३॥
मोह पिशाच चल्यो मति मारै, निज कर कंध बमूला रे।
भज श्रीराजमतांवर 'भूधर', दो दुरमति सिर धूला रे ॥४॥

(४६)

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय ॥ टेक ॥
फल चाखन की वार भरै दृग, मर है मूरख रोय ॥१॥
किंचत् विषयनि के सुख कारण, दुर्लभ देह न खोय।
ऐसा अवसर फिर न मिलेगा, इस नींदड़ी न सोय ॥२॥
इस विरियां में धर्म-कल्पतरु, सींचत स्यानै लोय।
तू विष बोवन लागत तो सम और अभागा कोय ॥३॥
जे जग में दुखदायक बेरस, इसही के फल सोय।
यों मन 'भूधर' जानिके भाई, फिर क्यों भोंदू होय ॥४॥

(४७)

सुन ज्ञानी प्राणी, श्री गुरु सीख सयानी ॥ टेक ॥
नरभव पाय विषय मति सेवो, ये दुरगति अगवानी ॥१॥

यह भव कुल यह तेरी महिमा, फिर समझी जिनवानी ।
इस अवसर मे यह चपलाई, कौन समझ उर आनी ॥२॥
चदन काठ-कनक के भाजन, भरि गगा का पानी ।
तिल खलि रांधत मदमती जो, तुझ क्या रीस बिरानी ॥३॥
'भूधर' जो कथनो सो करनी, यह बुधि है सुखदानी ।
ज्यो मशालची आप न देखै, सो मति करै कहानी ॥४॥

(४८)

ऐसो श्रावक कुल तुम पाय, वृथा क्यो खोवत हो ॥टेक॥
कठिन कठिन करि नरभव पाई, तुम लेखी आसान ।
धर्म विसारि विषयमे राचो, मानी न गुरु की आन ॥१॥
चक्री एक मतगज पायो, तापर ई धन ढोयो ।
विना विवेक विना मतिही को, पाय सुधा पग धोयो ॥२॥
काहू शठ चिन्तामणि पायो, मरम न जानो ताय ।
वायस देखि उदधि मे फेंक्यो, फिर पीछे पछताय ॥३॥
सात बिसन आठो मद त्यागो, करुना चित्त विचारो ।
तीन रतन हिरदै मे धारो, आवागमन निवारो ॥४॥
'भूधरदास' कहत भविजन सों, चेतन अब तो सम्हारो ।
प्रभु को नाम तरन तारन जपि, कर्मफन्द निरवारो ॥५॥

(४६)

सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग खाया ॥ टेक ॥
टुक विश्वास किया जिन तेरा, सो मूरख पछिताया ॥१॥

आपा तनक दिखाय विज्जु * ज्यों, मूढमती ललचाया।
करि मद अन्ध धर्म हर लीनों, अन्त नरक पहुँचाया ॥२॥
केते कंत किये तै कुलटा, तो भी मन न अघाया।
किसही सौं नहिं प्रीति निबाही, वह तजि और लुभाया ॥३॥
'भूधर' छलत फिरै यह सबकों, भौंदू करि जग पाया।
जो इस ठगनी को ठग बैठे, मैं तिसको सिर नाया ॥४॥

(५०)

आया रे बुढ़ापा मानो, सुधि बुधि बिसरानी ॥ टेक ॥
श्रवन की शक्ति घटी, चाल चालै अटपटी।
देह लटी भूख घटी, लोचन झरते पानी ॥ १ ॥
दातन की पंक्ति टूटी, हाडन की संधि छूटी।
कायाकी नगरि लूटी, जाति नहिं पहचानी ॥ २ ॥
बालोंने वरन फेरा, रोगने शरीर घेरा।
पुत्रहू न आवै नेरा, औरो की कहा कहानी ॥ ३ ॥
'भूधर' समुझि अब, स्वहित करैगो कब।
यह गति ह्वै है जब, तब पिछतै है प्रानी ॥ ४ ॥

(५१)

अन्तर उज्जल करना रे भाई ॥ टेक ॥
कपट कृपान तजै नहिं तबलों, करनी काज न सरना रे ॥१॥
जप तप तीरथ यज्ञ व्रतादिक, आगम अर्थ उचरना रे।

* बिज्जु = बिजली

विषय कषाय कीच नहिं धोयो, योंही पच पच मरना रे ।२।
बाहिर भेष क्रिया उर शुचिसों, कीये पार उतरना रे ।
नाहीं है सब लोक रजना, ऐसे वेदन वरना रे ।।३।।
कामादिक मनसौं मन मैला, भजन किये क्या तिरना रे ।
'भूधर' नील वसन पर कैसें, केशर रङ्ग उछरना रे ।।४।।

(५२)

वे मुनिवर कब मिलि है उपकारी ।। टेक ।।
साधु दिगम्बर नगन निरम्बर, संवर भूषणधारी ।।१।।
कंचन काच बराबर जिनके, ज्यौं रिपु त्यौं हितकारी ।
महल समान मरन अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी ।।२।।
समग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी।
शोधत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी ।। ३ ।।
जोरि जुगल कह 'भूधर' विनवै, तिन पद ढोक हमारी ।
भाग उदय दरसन जब पाऊं, ता दिन की बलिहारी ।।४।।

(५३)

मोहि कब ऐसा दिन आय है ।। टेक ।।
सकल विभाव अभाव होंहिगे, विकलपता मिट जाय है ।।१।।
यह परमातम यह मम आतम. भेद बुद्धि न रहाय है ।
औरनिकी का बात चलावै. भेद विज्ञान पलाय है ।। २ ।।
जानै आप आपमैं आपा, सो व्यवहार विलाय है ।
नय परमान निखेपन माहीं, एक न औसर पाय है ।।३।।

दरसन ज्ञान चरन के विकलप, कहो कहां ठहराय है।
'द्यानत' चेतन चेतन ह्वै है, पुद्गल पुद्गल थाय है ॥४॥

(५४)

विपति में धर धीर, रे नर ! विपति में धर धीर ॥टेक॥
सम्पदा ज्यों आपदा रे ! विनश जै है वीर ॥ १ ॥
धूप छाया घटत बढै ज्यों, त्योंहि सुख दुख पीर ॥ २ ॥
दोष 'द्यानत' देय किसको, तोर करम-जंजीर ॥ ३ ॥

(५५)

आतम अनुभव करना रे भाई ॥ टेक ॥
जब लौं भेद ज्ञान नहिं उपजै, जनम मरन दुख भरना रे।१।
आतम पढ़ नव तत्व बखाने, व्रत तप संजम धरना रे।
आतम-ज्ञान बिना नहिं कारज, योनी सङ्कट परना रे ॥२॥
सकल ग्रन्थ दीपक हैं भाई, मिथ्यातम के हरना रे।
कहा करैं ते अन्ध पुरुष को, जिन्हें उपजना मरना रे ॥३॥
'द्यानत' जे भवि सुख चाहत हैं, तिनको यह अनुसरना रे।
सोहं ये दो अक्षर जपके, भव-जल पार उतरना रे ॥४॥

(५६)

जीव तैं ! मूढ़पना कित पायो ॥ टेक ॥
सब जग स्वारथ को चाहत है, स्वारथ तोहि न भायो ॥१॥
अशुचि अचेतन दुष्ट तन माहीं, कहा जान विरमायो।
परम अतिन्द्री निज सुख हरिके, विषय रोग लपटायो ॥२॥

चेतन नाम भयो जड़ काहे, अपनो नाम गमायो ।
तीन लोक को राज छांड़िके, भीख मांग न लजायो ॥३॥
मूढ़पना मिथ्या जब छूटे, तब तू संत कहायो ।
'द्यानत' सुख अनंत शिव विलसो, यों सद्गुरु बतलायो ॥४॥

(५७)

हम लागे आतमराम सों ॥ टेक ॥
विनाशीक पुद्गल की छाया, कौन रमै धनवान सों ॥१॥
समता सुख घटमें परकास्यो, कौ   ाज है काम सों ।
ि·भाव जलांजुलि दीनों, मेल   'नजस्वामसों ॥२॥
भेद ज्ञान करि निज परि देख्यौ, कौन विल.·ं चामसों ।
उरै परै की बात न भावै, लौ लाई गुण ग्राम सों ॥३॥
विकलप भाव रंक सब भाजे, झरि चेतन अभिरामसों ।
'द्यानत' आतम अनुभव करिके, छूटे भव दुख धामसों ॥४॥

(५८)

बसि संसार में मैं, पायो दुःख अपार ॥ टेक ॥
मिथ्याभाव हिये धर्यो, नहिं जानों सम्यकचार ॥ १ ॥
काल अनादिहि हों रुल्यो, हो नरक निगोद मंझार ।
सुर नर पद बहुत धरे पद, पर प्रति आतम धार ॥ २ ॥
जिनको फल दुख-पुंज है हो, ते जानें सुखकार ।
भ्रम मद पीय बिकल भयो नहिं, गह्यो सत्य ब्यौहार ॥३॥
जिनवानी जानो नहीं हो, कुगति विनाशन हार ।

'द्यानत' अब सरधा करी, दुख मेटि लह्यो सुखकार ॥४॥

(५६)

धनि धनि ते मुनि गिरि बनवासी ॥ टेक ॥
मार मार जगजार जारते, द्वादश व्रत तप अभ्यासी ॥१॥
कौड़ी लाल पास नहिं जाके, जिन छेदी आसापासी ।
आतम-आतम पर-पर जानैं, द्वादश तीन प्रकृति नासी ॥२॥
जा दुख देख दुखी सब जग ह्वै ,सो दुख लख सुख ह्वै तासो॥
जाको सब जग सुख मानत है, सो सुख जान्यो दुखरासी॥३
बाहिज भेष कहत अन्तर गुण, सत्य मधुर हितमित भासी ।
'द्यानत' ते शिवपंथ पथिक हैं, पांव परत पातक जासी ॥४॥

(६०)

हो भैया मोरे ! कहु कैसे सुख होय ॥ टेक ॥
लीन कषाय अधीन विषय के, धर्म करै नहिं कोय ॥१॥
पाप उदय लखि रोवन लागें, पाप तजै नहिं सोय ।
स्वान-बान ज्यों पाहन सूंघे, सिंह हनै रिपु जोय ॥ २ ॥
धरम करम सुख दुख अघसेती, जानत हैं सब लोय ।
कर दीपक ले कूप परत है, दुख पै है भव होय ॥ ३ ॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म भुलायो, देव धर्म गुरु खोय ।
उलट चाल तजि अब सुलटे जो, 'द्यानत' तिरे जग तोय ॥४

(६१)

मन मेरे राग भाव निवार ॥ टेक ॥

राग चिक्कनतें लागत है, कर्म धूलि अपार ।। १ ।।
राग आस्रव मूल है, वैराग्य संवर धार।
जिन न जान्यो भेद यह, वह गयो नर हार ।। २ ।।
दान पूजा शील जप तप, भाव विविध प्रकार।
राग बिन शिव सुख करत है, रागतें संसार ।। ३ ।।
वीतराग कहा कियो यह, बात प्रगट निहार।
सोइ कर सुख हेत 'द्यानत'. शुद्ध अनुभव सार ।। ४ ।।

(६२)

हम न किसी के कोई न हमारा,झूठा है जग का ब्योहारा।।टेक
तन सम्बन्धी सब परिवारा, सो तन हमने जाना न्यारा ।।१
पुन्य उदय सुखका बढ़वारा, पाप उदय दुख होत अपारा।
पाप पुन्य दोऊ संसारा, मे सब देखन हारा ।। २ ।।
मैं तिहुं जग तिहुं काल अकेला, पर संजोग भया बहु मेला।
थिति पूरी करि खिर खिर जाहीं, मेरे हर्ष शोक कछु नाहीं।
राग भावतें सज्जन मानैं, द्वेष भावतैं दुर्जन जानैं।
राग द्वेष दोऊ मम नाहीं, 'द्यानत' मैं चेतनपद माहीं ।।४।।

(६३)

कहिवे कों मन सूरमा, करवे को कांचा ।। टेक ।।
विषय छुड़ावै और पै. आपन अति माचा ।। १ ।।
मिश्री मिश्रीके कहै, मुंह होय न मीठा।
नीम कहैं मुख कटु हुआ, कहूं सुना न दीठा ।। २ ।।

कहने वाले बहुत हैं, करने को कोई ।
कथनी लोक रिझावनी, करनी हित होई ॥ ३ ॥
कोटि जनम कथनी कथै, करनी बिनु दुखिया ।
कथनी बिनु करनी करै, 'द्यानत' सो सुखिया ॥४॥

(६४)

देखो सुखी समकितवान ॥ टेक ॥
सुख दुखको दुखरूप विचारै, धारै अनुभव ज्ञान ॥ १ ॥
नरक सातमे के दख भोगै, इन्द्र लखै तिनमान ।
भीख मागकै उदर भरै, न करै चक्री को ध्यान ॥ २॥
तीर्थंकर पद को नहिं चाहे, जदपि उदय अप्रमान ।
कुष्ट आदि बहु व्याधि दहत, न चहत मकरध्वज थान ॥३॥
आधि व्याधि निरबाध अनाकुल, चेतन जोति पुमान ।
'द्यानत' मगन सदा तिहि माहीं, नाही खेद निवान ॥४॥

(६५)

अब हम अमर भये न मरैंगे ॥ टेक ॥
तन कारन मिथ्यात्व दियो तज, क्यो करि देह धरैंगे ॥१॥
उपजै मरै कालतै प्रानी, तातै काल हरैंगे ।
राग द्वेष जग-बंध करत हैं, इनको नाश करैंगे ॥ २ ॥
देह विनाशी मै अविनाशी, भेदज्ञान करैंगे ।
नासी जासी हम थिरवासी, चोखे हों निखरैंगे ॥ ३ ॥

... अन्तस पार बिन समझे, सब सब दुख बिसरेंगे ।
'मक्खन' निपट निकट दो अक्षर, बिन सुमरे सुमरेंगे ॥४॥

(६६)

यह तन जावे तो जावे, मेरी उत्तम क्षमा न जावै ॥टेक॥
जिय दीव दुर्जन दुख देवै, धीरज धारि सभी सहि लेवै ।
क्रोध जरा नहीं आवै ॥ मेरी उत्तम० ॥ १ ॥
कोई सर्वथा लाठी मारै, पकड़ि बांधि जेलों मे डारै ।
फांसी पर लटकावै ॥ मेरी उत्तम० ॥ २ ॥
टूक टूक होवै तन सारा, मरै न आतम राम हमारा ।
यह दृढ़ श्रद्धा आवै ॥ मरी उत्तम० ॥ ३ ॥
क्षमा कवच धारै जो तनपै लग न गोली तीर बदन पै ।
दुश्मन ही थकि जावै ॥ मेरी उत्तम० ॥ ४ ॥
क्रोध अग्नि संसार जलावै, क्षमा नीर से ताहि बुझावै ।
सो नर धन्य कहावै ॥ मेरी उत्तम० ॥ ५ ॥
करै क्षमा जग में सुख साता, ये ही स्वर्ग मोक्ष की दाता ।
यही स्वराज्य दिलावै ॥ मरी उत्तम० ॥६ ॥
उत्तम क्षमा समान न दूजा, करो सभी मिल इसकी पूजा ।
जो 'मक्खन' सुख पावे ॥ मरी उत्तम० ॥ ७ ॥

(६७)

कुछ काम करके जाना, दुनिया मे आने वाले ।
क्यों हो रहे नाकों, बेकार जाने वाले ॥टेक॥

चौरासी लाख खोये, धरि जन्म मरण रोये ।
अब व्यर्थ मत गवानवा नर जन्म पाने वाले ।।१।।
हिंसा असत्य चोरी, कर करके द्रव्य जोरी ।
क्या साथ ले चलेगा, सब छोड़ जाने वाले ।।२।।
सुत मात तात भाई, सम्पति के सब सहाई ।
विपदा में कर लड़ाई, सब रूठ जाने वाले ।।३।।
जोरू जमीन'जर से, करता है क्या मुहब्बत ।
सब छोड़ने पड़ेंगे, नहीं जाने वाले ।।४।।
कीजे सदा भलाई, मत कर कभी बुराई ।
नेकी बदी रहेगी, दिन चार जीने वाले ।।५।।
जन्मा है उसको 'मक्खन', मरना जरूर होगा ।
अब बेखबर न हो तू, परलोक जाने वाले ।।६।।

(६८)

दुनियाँ में सबसे न्यारा, यह आत्मा हमारा ।
सब देखन जाननहारा, यह आत्मा हमारा ।। टेक ।।
यह जले नहीं अग्नी में, भीगे न कभी पानी में ।
सूखे न पवन के द्वारा, यह आत्मा हमारा ।।१।।
शस्त्रों से कटे न काटा, नहिं तोड़ सके कोई भाटा ।
मरता न मरी का मारा, यह आत्मा हमारा ।।२।।
माँ बाप सुता सुत नारी, झूठे झगड़े संसारी ।
नहिं कोई वेत सहारा, यह आत्मा हमारा ।।३।।

मत फँसे मोह ममता में, 'मक्खन' आजा आपा में।
तन धन कुछ नहीं तुम्हारा, यह आत्मा हमारा ॥४॥

(६९)

अरे मूरख मुसाफिर क्यों, पड़ा बेहोश सोता है।
संभल उठ बांधले गठरी, समय क्यों व्यर्थ खोता है ॥टेक॥
किसी का पल घड़ी छिन में, किसी का एक दो दिन में।
बजे जब कूंच का डका, पयाना सब का होता है ॥१॥
खड़ा है काल लेकर मौत का, झंडा तेरे सिर पर।
अरे अब चेत चेतन देख, क्या दुनियाँ में होता है ॥२॥
तेरे मां बाप दादे सब, गये हैं जिस यमालय मे।
उसी में सब को जाना है, कहो किस किस को रोता है ॥३॥
बनी है हाड़ चमड़े से, रुधिर और मांस मय काया।
झरें दिन रात मल इससे, तू क्या मल-मल के धोता है ॥४॥
लड़कपन खेल में खोया, जवानी में विषय सेया।
बुढ़ापे में बढ़ी तृष्णा, गया नर जन्म थोता है ॥५
गई सो तो गई अब भी, रही को राख ले 'मक्खन'।
करो निज काज आतम का, न खा भवदधि में गोता है ॥६॥

[७०]

ये आत्मा क्या रंग दिखाता नये नये।
बहुरूपिया ज्यों भेष बनाता नये नये ॥टेक॥
भरता है सांग देव का स्वर्गों में जाय के।

करता किलोल देवियों के संग नये नये ॥१॥
पर नर्क में गया सहे रूप नारकी धरा ।
लखि मार पीट भूख प्यास दुख नये नये ॥२॥
तिर्यंच में गज बाज वृषभ महिष मृग अजा ।
धारे अनेक भांति के कालिब नये नये ॥३॥
नर नारि नपुंसक बना मानुष की योनि मे ।
फल पुण्य पाप के उदय पाता नये नये ॥४॥
'मक्खन' इसी प्रकार भेष लाख चौरासी ।
धारे बिगार बार बार फिर नये नये ॥५॥

(७१)

ऐसा दिन कब पाउं, नाथ मै ऐसा दिन कब पाऊं ॥टेक॥
बाह्याभ्यन्तर त्यागि परिग्रह, नग्न सरूप बनाऊं ।
भैक्षासन इक बार खड़ा हो, पाणि पात्र मे खाऊं ॥१॥
राग द्वेष छल लोभ मोह, कामादि विकार हटाऊं ।
पर परिणति को त्यागि निरन्तर, स्वाभाविक चित लाऊं ॥२॥
शून्यागार पहार गुफा, तटिनी तट ध्यान लगाऊं ।
शीत उष्ण वर्षा को बाधा, से नहिं चित अकुलाऊं ॥३॥
तृण मणि कंचन कांच महल, अहि विष अमृत समझाऊं ।
शत्रु मित्र निन्दक बन्दक को, एकहि दृष्टि लखाऊं ॥४॥
गुप्ति समिति व्रत दशलक्षण, रत्नत्रय भावन भाऊं ।
कर्म नाश केवल प्रकाश, 'मक्खन' अब शिवपुर जाऊं ॥५॥

(७२)

इस दुनियाँ को ठग लीना रे, इस ठगनी माया ने ।
चमकि दमकि चंचल चपला सी, चित्त लुभा याने ।।टेक।।
कुटला सी घर घर में फिरि करि, रूप दिखा याने ।
नये नये पति किए निरन्तर, लक्ष्मी जायाने ।।१।।
हीरा मोती नीलम पन्ना, बनि बनि के याने ।
सोना चादी मोहर अशर्फी, पैसा रुप्या ने ।।२।।
धरैं मूंद कै अलमारी, तालों में तैखाने ।
तौ भी थिर नहीं रहती चलती. फिरती छाया ने ।।३।।
साधु संत योगी संन्यासी, मोहि लिए याने ।
पीर फकीर वजीर ठगे, इस दौलत दाया ने ।। ४ ।।
पंडित ज्ञानी व्रती तपस्वी, नहिं छोड़े याने ।
आस फास में फांसि लिए, जग जन भरमाया ने ।। ५ ।।
पूजा पाठ दान तप संयम, छुड़ा दिए याने ।
किए प्रमादी रोगी सब, को दुर्बल काया ने ।। ६ ।।
'मक्खन' कोई बचा न ऐसा, जो न ठगा याने ।
ऐसी ठगनी को ठगी, निजातम ध्यान लगैया ने ।। ७ ।।

(७३)

जागि अय मूरख मुसाफिर, ये ठगों का गाम है ।
जा चला जल्दी यहाँ से, मोक्ष तेरा धाम है ।।टेक।।
पंच इन्द्री मन विषय, विष देके मारेंगे तुझे ।

फंस न इनके जाल में ये, सोचने का काम है ॥१॥
ये तेरी नवद्वार वाली, है पुरानी झोंपड़ी ।
हाड़ के टट्टड़ लगे, ऊपर से लिपटा चाम है ॥२॥
कब तलक ठहरेगा तू, इस घर में ये बतला तो दे ।
एक दो या चार दिन में, कूंच का पैगाम है ॥३॥
जिनको कहता बाप मा, भाई भतीजे यार तू ।
हैं सभी साथी तभी तक, पास तेरे दाम है ॥४॥
धाम धन दौलत खजाने, सब पड़े रह जायेंगे ।
जायगा रीता अकेला, एक आतमराम है ॥५॥
सोचता क्या क्या पड़ा, इच्छा न पुरी होयगी ।
शाम से होती सुबह, होती सुबह से शाम है ॥ ६ ॥
स्वप्नवत् संसार झूंठा, देखि आँखे खोल के ।
एक सच्चा जान 'मक्खन', वीर प्रभु का नाम है ॥७॥

(७४)

मैं किस दिन मुनिवर बनके, बन बन डोलूं रे ।
मैं सोहं सोहं हर दम, मुखसे बोलूं रे ॥टेक॥
मैं सकल परिग्रह छोड़ूं, इस दुनियाँ से मुख मोड़ूं ।
तज राग द्वेष सारे कलेश, नहिं प्राण किसीके छोलूं ॥१॥
मैं ऐसा ध्यान लगाउं, सब तन की सुधि बिसराऊं ।
मेरे तनसे खाज करें हिरना, मैं आत्मानुभवन-रस घोलूं ॥२॥
मैं आतम-ज्योति जगाऊं, 'शिवराम' स्वपद कब पाऊं ।

समता सम्हार ममता निवार, निज आत्म हृदय-पट खोलूँ ॥

(६५)

दिन रात मेरे स्वामी, मै भावना ये भाऊँ ।
देहांत के समय मे, तुमको न भूल जाऊँ ॥ टेक ॥
शत्रू अगर कोई हों, सन्तुष्ट उनको कर दूँ ।
समता का भाव धर कर, सब से क्षमा कराऊँ ॥१॥
त्यागूँ आहार पानी, औषध विचार अवसर ।
टूटे नियम न कोई, दृढता हृदय मे लाऊँ ॥२॥
जागें नहीं कषायें, नहिं वेदना सतावे ।
तुमसे ही लौ लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ ॥३॥
आतम स्वरूप अथवा, आराधना विचारूँ ।
अरहंत सिद्ध साधू, रटना यही लगाऊँ ॥४॥
धर्मात्मा निकट हो, चरचा धर्म सुनावे ।
वो सावधान रक्खें, गाफिल न होने पाऊँ ॥५॥
जीने की हो न वाछा, मरनेकी हो न इच्छा ।
परिवार मित्र जन से, मै मोह को हटाऊँ ॥६॥
भोगे जो भोग पहले, उनका न होवे सुमरन ।
मै राज्य सम्पदा या, पद इन्द्र का न चाहूँ ॥७॥
सम्यक्त्व का हो पालन, हो अन्त मे समाधी ।
'शिवराम' प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ ॥८॥

जल में कमल कीच में कंचन, त्यों परव स बसाने रे।
सो 'शिवराम' भक्त है सच्चा, धन्य धन्य है ताने रे ॥६॥

(७६)

समझ मन बावरे, सब स्वारथ का संसार ॥टेक॥
हरे वृक्ष पर तोता बैठा, करता मोज बहारी।
सूखा तरुवर उड़ गया तोता, छिन में प्रीति बिसारी ॥१॥
ताल पाल पर किया बसेरा, निर्मल नीर निहारा।
लखा सरोवर सूखा जब ही, पंखी पंख पसारा ॥२॥
पिता पुत्र सब लागें प्यारे, जब लों करे कमाई।
जो नहीं द्रव्य कमाकर लावे, दुश्मन देत दिखाई ॥३॥
जब लग स्वारथ सधत है जासें, तब लग तासों प्रीति।
स्वारथ भये बात न बूझे, यही जगत की रीति ॥४॥
अपने अपने सुख को रोवे, मात पिता सुत नारी।
धरे ढके की बूझन लागे, अन्त समय की बारी ॥५॥
सभी सगे 'शिवराम' गर्ज के, तुम भी स्वारथ साधो।
नर तन मित्र मिला है तुमको, आतम हित आराधो ॥६॥

(८०)

चाल—(आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है)
आज अहिंसा का झंडा फिर, दुनियाँ में लहराना है।
जाग उठो,जाग उठो ऐ भारत वीरो,भारत आज जमाना है।
जिस झंडे को वीर प्रभू ने, आलम में लहराया था।

प्राणि मात्र की रक्षा करना, पाठ यही सिखलाया था ।
पाठ वही फिर आज सभी को, मित्रो हमें पढ़ाना है ॥१॥
समन्तभद्र अकलंकदेव ने, जिसका भाष्य बताया था ।
अमृतचन्द्र और कुन्दकुन्दने, सच्चा मर्म बताया था ।
उनका वह आदेश हमें फिर, घर घर में पहुँचाना है ॥२॥
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, जर्मन हो या जापानी ।
रूसी चीनी फ्रेञ्च इटेली, हो ब्रिटेन हिन्दुस्तानी ।
नाहक खून बहाना प्यारो, भारी पाप कमाना है ॥३॥
खुद जीवो जीने दो सबको, फर्ज यही है इन्सानी ।
दीनों के अधिकार दबाना, हैवानी है शैतानी ।
तन मन धन को अर्पण करके, अत्याचार हटाना है ॥४॥
वेद पुराण कुरान बाईबिल, धर्म दया बतलाते हैं ।
शान्ति सुख का मूल अहिंसा, गांधी जी फरमाते हैं ।
डंका फिर से आज अहिंसा, का 'शिवराम' बजाना है ॥५॥

(८१)

आज मैं परम पदारथ पायौ, प्रभु चरनन चित लायौ ॥टेक।
अशुभ गये शुभ प्रगट भये हैं, सहज कल्प तरु छायौ ॥१॥
ज्ञानशक्ति तप ऐसो जाकी, चेतनपद दरसायौ ॥२॥
अष्टकर्म रिपु जाधा 'जोने, शिव' अंकूर जमायौ ॥३॥

(८२)

मतकर चिन्ता चेतन चातुर, चिन्ता किये तें चित्त दहेगो।।टेक

चिन्ता किये कुछ हाथ न आवै
व्यर्थ करम को कष्ट गहैगो ॥१॥
हट गया पुण्य पलट गए शुभ दिन,
दिन ये अशुभ भी थिर न रहैगो ॥२॥
कर्म कमाये जो तिनको फल,
तू न सहैगो कौन सहैगो ॥३॥
तू नित चाहै मनोरथ सिद्धी,
होत वही जो कर्म चहैगो ॥४॥
दुख का दाता और न कोई,
अपना करम फल आप लहैगो ॥५॥
'शिव' सुख चाहो गहो मन समता,
समता गहे तै दुःख बहैगो ॥६॥

(८३)

क्षमा उत्तम धरम जग में, मुनीजन इसको ध्याते हैं।
कषाये भाव दुखदाई, ये जीवों को सताते है ॥टेक॥
नहीं है क्रोध सम वैरी, जगत में और जीवों का।
विपायन से मुनी भी इसके, वश हो नर्क जाते है ॥१॥
बिना कुछ दोष के दुर्जन, हैं दुख देते मुनीजन को।
वे समरथ होके सहते हैं, नहीं कुछ क्रोध लाते हैं ॥२॥
वो चिन्तन ऐसा करते हैं, नहीं कुछ दोष है इसका।
करम जैसे किये पूरब, उन्हीं के फल को पाते हैं ॥३॥

जो तन घाते कोई आकर, विचारें तब श्री मुनिवर।
न मारे से मरेंगे हम, अमर जो हम कहाते है ॥४॥
क्षमा को धार मिथ्याती, है पाते देव पदवी को।
अगर सम्यक्त युत धारें, तो वह 'शिव' पुर को जाते हैं ॥५

(८४)

आप में जब तक कि कोई आपको पाता नहीं।
मोक्ष के मन्दिर तलक हरगिज कदम जाता नहीं ॥टेक॥
वेद या पुराण या कुरान सब पढ़ लीजिये।
आपके जाने बिना मुक्ति कभी पाता नही ॥१॥
हरिण खुशबूके लिये दौड़ा फिरे जंगलके बीच।
अपनी नाभी में बसे उसको नजर आता नहीं ॥२॥
भाव-करुणा कीजिये ये हो धर्म का मूल है।
जो सतावे और को वह सुख कभी पाता नहीं ॥३॥
ज्ञानपै 'न्यामत' तेरे है मोह का परदा पड़ा।
इसलिये निज आत्मा तुझको नजर आता नहीं ॥४॥

(८५)

जमाना आ गया खोटा, बदी का काम करते हैं।
धर्म घटता हो जाता है, पाप दिन-रात बढ़ते हैं ॥टेक॥
जरा सी बात पर भाई, ये भाई से झगड़ते हैं।
अदालत बीच जाकर के, दो जानिबसे बिगड़ते हैं ॥१॥
थमेंगे ये जमीनों आसमां, किसके सहारे पर।

बहन और भानजी कोदेख, मनमें पाप धरते हैं ॥२॥
मात और तात को गाली, सुनाते हैं सताते हैं।
नारि का पक्ष ले करके, पिता से आप लड़ते हैं ॥३॥
बहू बेटी शरम करती नहीं, माँ बाप सुसरे की।
ये गाली सीटने देती है, सुन मन-हर्ष करते हैं ॥४॥
बहन बेटी भतीजी, देखती रहती हैं बेचारी।
बुलाकर साले साली, उनकी जीमनवार करते है ॥५॥
ये सब करनी के फल जानो, पड़े है काल बीमारी।
जवां सुत बाप के आगे, हो मन को मार मरते है ॥६॥
पड़े जब आनकर सरपे, कहै ईश्वर को मर्जी है।
समझने क्यों नहीं दिल में, कि हम क्या काम करते हैं॥७॥
ये नाहक नाम कलियुग का, कभी ईश्वर का धरते हैं।
किसी का दोष क्या 'न्यामत' जो करते है सो भरते हैं ॥८॥

(८६)

रावण सुनो सुमति हिय धार, सती-सीता के चुराने वाले।
सीता को चुरानेवाले, कुल को दाग लगाने वाले ॥टेक॥१॥
रानी थीं दस आठ हजार, लाया क्यों हर कर परनार।
तज कर धरम सकल सुखकार,शील की बाड़ हटाने वाले॥२
तुझे जो थी सीता सों प्रीत, लाया क्यों न स्वयंवर जीत।
यह थी क्षत्रीपन की रीति, क्षत्री नाम लजाने वाले ॥३॥
जो सीता लीनी थी ठान, लाया क्यों नहिं सन्मुख आन।

वे बलवान्, गिरि कैलाश हिलावे वाले ॥४॥

जो होना था सो हो गया खैर, उलटी दे दो सीता फेरि।
अच्छा नहीं राम से वैर, 'न्यामत' कहते कह कर टेरि॥५॥

(४७)

बिना सम्यक्त के चेतत, जन्म विरथा गंवाता है।
तुझे समझाएं क्या मूरख, नहीं तू दिलमें लाता है ॥टेक॥
अथिर है जगत की सम्पत, समझले दिल में अयनादां।
राव और रंक होने का, यूँही अफसोस खाता है ॥१॥
एश इशरत में दुख होवे, कहीं दुख में महासुख हो।
क्यों अपने में समझता है, यह सब पुद्गलका नाता है ॥२॥
विनाशी सब तू अविनाशी, इन्हों पे क्या लुभाता है।
निराला भेष है तेरा, तु क्यों पर में फंसाता है ॥३॥
पिता सुत बन्धु और भाई, सहेली संग की नारी।
स्वारथ की सभी यारी, भरोसा क्या रखाता है ॥४॥
अनादि भूल है तेरी, स्वरूप अपना नहीं जाना।
पड़ा है मोह का परदा, नजर तुझको न आता है ॥५॥
है दर्शन ज्ञान गुण तेरा, इसे भूला है क्यों मूरख।
अरे अब तो समझ ले तू, चला संसार जाता है ॥६॥
तू चेतन सब से न्यारा है, भूल से देह धारा है।
तू जड़ में न जड़ तुझ में, तू क्यों धोके में आता है ॥७॥
जगत में तूने चित्त लाया, कि इन्द्री भोग मन भाया।

कभी दिल में नहीं आया, तेरा क्या जग में नाता है ॥८॥
तेरे में और परमातम में, कुछ नहीं भेद अय चेतन।
रतन आतम को मूरख कांच, बदले क्यों बिकाता है ॥९॥
मोह के फंद में फंसकर, क्यों अपना 'न्यायमत' खोई।
कर्म जंजीरों को काटो, इसी से मोक्ष पाता है ॥१०॥

(८८)

समकित बिन फल नहीं पावोगे,
नहीं पावोगे पछतावोगे ॥टेक॥

चाहे निर्जन बन तप करिये, बिन समता दुख बाहोगे ॥१॥
मिथ्या मारग भिश दिन सेवो, कैसे मुक्ती पावोगे ॥२॥
पत्थर नाव समन्दर गहरा, कैसे पार लंघावोगे ॥३॥
झूठे देव गुरू तज दीजे, नहीं आखिर पछतावोगे ॥४॥
'न्यामत' स्यादवाद मन लावो, यासे मुक्ती पावोगे ॥५॥

(८९)

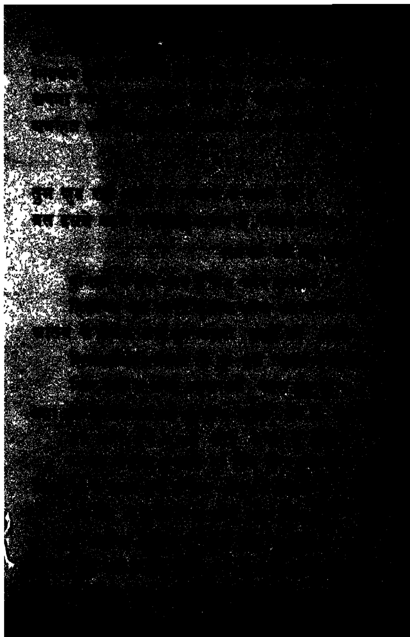
ज्ञानी ज्ञान की आँखें खोल, तेरा जीवन है अनमोल ॥टेक॥
यह दुनियाँ है झूठी सारी, मतलब से है सब नरनारी।
मतलब सधे तभी तक प्यारे, बोलें स्वारथ बोल ॥१॥
मात पिता सुता सुत आजा, मतलब के सब करें समाजा।
मेरा राजा प्रेम दुलारा, कहें सुधारस घोल ॥२॥
कमा कमा कर खाओ खिलाओ, पिता पुत्र से लाड़ लड़ाओ।
अन्त समय कोई काम न आवे, सुन ले दिल को खोल ॥३॥

इन्द्रादिक कोउ नाहिं बचैया, और लोक का शरना क्या है ॥५॥
निश्चय हुआ जगत मे मरना, कष्ट परें तब डरना क्या रे ॥६॥
अपना ध्यान करत खिर जावें, तौ कमनका हरना क्या है ।
अवहित करि आरततजि बुधजन', जन्म जन्ममें जरना क्या रे ।

(९२)

तुम खुद रहो रहने दो अमान मे सभी को ।
बस इससे बढके धर्म नाहिं माना है किसी को ॥
समझा लो यह जीको ॥टेक॥

दुनियां मे पच पाप है यह वीर सुनाया ।
हिंसा व झूठ चोरी कुशील लोभ बताया ॥
आतम के समझ शत्रु दूर करदो इन्हीं को ॥बस० ॥१॥
सिसकारिया भरता है तू इक फांस चुभे से ।
फिर क्यो न कोई बहल उठे कत्ल हुए से ॥
क्या हक है सताता जो तू दीन दुखी को ॥ बस० ॥२॥
गर माल लके तुझसे कोई मुकर है जाए ।
अच्छा लगेगा तुझको या दिल तेरा दुखाये ॥
लिख झूठ रुक्के पर्चे न कर तग किसी को ॥ बस० ॥३॥
गर घर मे आके तेरा कोई माल चुराये ।
तू लायगा सतोष या उसे कैद कराये ॥
तू मत हरे धन प्राणो से प्यारा है सभी को ॥ बस० ॥४॥
गर तेरी माता बहिन पे कोई दृष्टि चलावें ।



क्या सहन तू करेगा या खूँ उसका बहाये ॥
मतदेख बद नजर से कभी तू भी किसी को ॥बस० ।।५॥
चाहता है खजाने मै ज़रो मालसे भरूँ ।
भाई तो मरें भूखे मै निज चैन ही करूँ ॥
इन्साफ़ क्या कहता है ज़रा सोच इसी को ॥बस० ॥ ६॥
ये ही तो है पंचाणुव्रत जो वीर सुनाये ।
जिसने करोड़ो हैवा को इन्सान बनाये ॥
'आनन्द' अपना लक्ष बना ले तू इन्हीं को ॥ बस० ॥७॥

(६३)

या संसार में कोई सुखी नज़र नहिं आता ॥टेक॥
कोई दुखिया निर्धनी, दीन बचन मुख बोले ।
भ्रमत फिरे परदेशन मे, धन की चाह मे डोले ॥ १ ॥
दौलत के कोठार भरे है, तन मे रोग समाया ।
निशि दिन कड़वी खात दवाई, कहो करत नहिं काया ॥२॥
तन निरोग अरु धन बहुतेरा, फिर भी सुख को रोता ।
पूजत फिरे कुदेव जगत के, तदपि पुत्र नहिं होता ॥३॥
तन निरोग धन पुत्र पाय के, फिर भी रहा दुखारी ।
पुत्र नहीं आज्ञा को माने, घर में कर्कशा नारी ॥४॥
तन धन और सुलक्षण नारी, सुत है आज्ञाकारी ।
फिर भी दुखिया रहा जगत में, भयो न छत्रा धारी ॥ ५ ॥
चक्रपती भये छत्रपती भये, फिर नारी संग मोहे ।

प्रतिबिम्ब वैसा होगा, करना जो चाहो करलो ॥४॥
करलो भलाई भाई, करते हो क्यों बुराई।
दिन चार जीना होगा, करना जो चाहो करलो ॥५॥
कर कर के छल कपट जो, लाखों रुपये कमाये।
सब छोड़ जाना होगा, करना जो चाहो करलो ॥६॥
अपने मजे की खातिर, पर के गले न काटो।
दुख तुमको पाना होगा, करना जो चाहो करलो ॥७॥
उपकारको न भूलो, जो चाहते भलाई।
ये ही साथ होगा, करना जो चाहो करलो ॥८॥
शुभ काम करके मरना, समझो इसो को जीना।
जीना न और होगा, करना जो चाहो करलो ॥९॥
जो आज धर्म करना, छोड़ो न उसको कल पर।
साथी धरम ही होगा, करना जो चाहो करलो ॥१०॥
हो सकता मोल सबका, पर मोल ना समय का।
'बालक'ये कहना होगा, करना जो चाहो करलो॥११॥

(६७)

जब तेरी डोली निकाली जायगी।
बिन महूरत के उठा ली जायगी ॥टेक॥
उन हकीमों से यूं कहदो बोल कर।
दावा करते थे जो किताबें खोल कर॥
यह दवा हरगिज न खाली जायगाजगी ॥बिन०॥१॥

क्यों गुलों पर हो रहा बुलबुल निसार ।
है खड़ा पीछे शिकारी ख़बरदार ॥
मार कर गोली गिराली जायगी ॥ बिन ॥ २ ॥
जर सिकन्दर का पड़ा यहां रह गया ।
मरते दम लुकमान भी यह कह गया ॥
यह घड़ी हरगिज़ न टाली जायगी ॥बिन ०॥ ३ ॥
ऐ मुसाफ़िर क्यों पड़ा सोता यहां ।
ये किराये पर मिला तुझको मकां ॥
कोठरी खाली करालो जायगी ॥ बिन० ॥ ४ ॥
चेत 'भैया लाल' तुम प्रभु को भजो ।
मोह रूपी नींद से जल्दी जगो ॥
यहो आत्मा परमात्मा बन जायगी ॥ बिन० ॥ ५ ॥

(६८)

कभी तो अवसर मिलेगा ऐसा, स्वरूप निज में समायेंगे हम।
जगत के धंधेसे तर्क होकर, विभाव परणति हटायेंगे हम॥टेक
यह मोहमाया लगी है पीछे, कि जिसकी संगतिसे खूब भटके।
कुमति काम वश कुदेव सेये, इन्हें न अब सिर नवायेंगे हम ॥
यह देह इन्द्रियको पुष्ट करके, किये हैं निश दिन अनर्थ नाना।
धरेंगे चारित्र निहंग जिसदिन, तोपाप परणति मिटायेंगे हम।
योगकषायों के द्वार जो जो, हुआ है आस्रव कर्मों का भारी ।
बंध पड़ा है अनेक भवका, समय में वसु विधि जलायेंगे हम॥

जिस तन को तू रोज सजाये, आखिर मिट्टी में मिल जाये।
फिर पीछे पछताये ।। वीर से० ।। ४ ।।
जिस माया पर तू इतराये, आखिर में कछु काम न आये।
यहीं पड़ी रह जाये ।। वीर से० ।। ५ ।।
धर्म ही आखिर काम में आये, हर दम तेरा साथ निभाये।
'त्रिलोकी' यही समझाये ।। वीर से० ।। ६ ।।

(१०३)

ज़रा गठरी को अपनी सम्भाल, हो वतनी परदेशिया ।।टेक।।
क्यों तू पड़ गफलत में सोया, निज धन जाए तेरा खोया।
इस निदरा को अपनी तू टाल, हो वतनी परदेशिया ।। १ ।।
चार पांच अरु सात लुटेरे, देख खड़े यह सर पर तेरे।
ठगने को सब तेरा माल, हो वतनी परदेशिया ।। २ ।।
लाखों दुख की रैन बिताई, तब गठरी यह सुख की पाई।
कुछ कर अपने जीवन का ख्याल, हो वतनी परदेशिया ।।३।।
रस्ता बहुत किया जो पूरा, कह 'सुमत' मत छोड़ अधूरा।
उठ कदम शेष मंजिल पे डाल, हो वतनी परदेशिया ।। ४ ।।

(१०४)

भगवान् महावीर जो भारत में न आते।
दुख दर्द जमाने का कहो कौन मिटाते ।।
व्यथा किसको सुनाते ।।टेक।।
पशुओं की गर्दनों पै चला करते दुधारे।

बेमौत बेगुनाह् कटा करते बेचारे ॥
भगवान् दया करके जो उनको न छुड़ाते ॥ दुख दर्द० ॥१॥
मन्दिर मठों में खू ं को मचा करती होलियाँ।
यज्ञों में प्राणियों की जला करती टोलियाँ ॥
वो वीर अहिंसा का जो डंका न बजाते ॥ दुख दर्द० ॥२॥
गर वीर न होते तो हमे कौन बचाते।
स्वाधीन किस तरह से बने कोनबताते ॥
गाधी को अहिंसा का सबक कौन सिखाते ॥ दुख दर्द० ॥४॥
भगवान् महावीर ने वह ज्ञान सिखाया।
जिसने करोड़ो हैवाँ को इन्सान बनाया ॥
हम ठोकरे खाते न जो वह राह् बताते ॥ दुख दर्द० ॥४॥
वह शान्ति का था दून अहिंसा का पीर था।
शेरों में था वो शेर और वीरों मे वीर था ॥
कारण यही जो सब उसे सर अपना झुकाते ॥ दुख दर्द०॥५

(१०५)

जिस घड़ी अपनी घड़ी असली घड़ी पर आएगी।
कूकने से भी न इक पल घटने बढ़ने पाएगी ॥ ढेक ॥
जो घड़ी पाकिट में या हरदम है तेरे हाथ में,
और बड़ी भारी गारंटी भी है जिसके साथ में,
हर घड़ी ही यह घड़ी बतलाती है दिन रात में।
इतनी तो जाती रही इतनी घड़ी है हाथ में,

जिस घड़ी भी वह घड़ी तुझको नजर आजाएगी,
उस घड़ी रखनी घड़ी तेरी सुफल हो जाएगी ।।१।।
हर घड़ी देखे घड़ी और है घड़ी से बे खबर,
है फिकर हरदम घड़ी का है घड़ी से बे फिकर,
जो घड़ी का शौक है रख हर घड़ी उस पर नजर ।
हर घड़ी अपनी घड़ी को ध्यान में रखना मगर,
जिस घड़ी भी ध्यान में तेरे घड़ी आजाएगी,
उस घड़ी तेरी घड़ी अनमोल माना जाएगी ।।२।।
हर घड़ी तुझको घड़ी गिन गिन घड़ी बतला रही,
हर घडी पर हर घड़ी हाथों से निकली जा रही,
जो घड़ी हाथों से निकली हाथ वह नहीं आएगी ।
जो घड़ी है हाथ में वह भी न रहने पाएगी,
इससे तु अपनी घड़ी दे वीर से घड़ीसाज को,
जो घड़ी थी वीर की वैसी घड़ी बन जाएगी ।।३।।

(१०६)

ज्ञान की महिमा न्यारी जगत में ज्ञान की ।। टेक ।।
ज्ञान बिना करनी सब थोथी, जैसे गधे पर लादी पोथी ।
ज्ञान सकल दुख हारी जगत में ।।१।।
ज्ञान बिना नर पशु सम जानो, पूंछ सींग बिन बैल बखानो।
ज्ञान बिना है अनारी जगत में ।।२।।
भूप हरे नहिं चोर चुरावे, खरच करे दिन दिन बढ़ जावे ।

ज्ञान खजाना भारी जगत में ॥३॥
ज्ञान सुधा रस अति सुखदाई, इसको पीवो पिलावो भाई।
ज्ञान ही 'शिव' सुखकारी जगत में ॥४॥

(१०७)

जय बोलो, जय बोलो, श्री वीर प्रभू की जय बोलो ॥टेक॥
जब दुनियाँ में जुल्म बढ़ा था, हिंसा का यहाँ जोर बढ़ा था।
आप लिया अवतार, प्रभू की जय बोलो ॥ १ ॥
पुण्य उदय भारत का आया, कुण्डलपुर में आनन्द छाया।
हो रही जय जय कार, प्रभू की जय बोलो ॥ २ ॥
राय सिद्धारत राज दुलारे, त्रिशला की आँखों के तारे।
तीन लोक मन हार, प्रभू की जय बोलो ॥ ३ ॥
भर यौवन में दीक्षा धारी, राज पाट को ठोकर मारी।
करी तपस्या सार, प्रभू की जय बोलो ॥ ४ ॥
तप कर केवल ज्ञान उपाया, दुनियाँ से पाखंड हटाया।
कीना धर्म प्रचार, प्रभू की जय बोलो ॥ ५ ॥
पशु हिंसा को दूर हटाया, सबको शिवमारग दरशाया।
किया जगत उद्धार, प्रभू की जय बोलो ॥ ६ ॥

(१०८)

पुजारी ! हृदय के पट खोल।
कोई गावै कोई रोवै, तू उनसे मत बोल ॥टेक॥
तू न किसी का कोई न तेरा, नाहक करता मेरा मेरा।

तुझे पड़ी है क्या दुनियाँ की, मत रस में विष घोल ॥१॥
तेरी सूरत सुन्दर प्यारी, उसको विमल छटा है न्यारी।
इधर उधर मत फिरे भटकता, व्यर्थ बजावत ढोल ॥२॥
तेरे घट में है परमातम, बना मूढ़ मत भूले आतम।
तेरे घट में छिपा हुआ है, तेरा रतन अनमोल ॥३॥
ज्ञान दीप से तिमिर भगादे, आतम शक्ति पुनः सरसादे।
भक्ति तुला से मनके मनसे, मनके मनको तोल ॥४॥

(१०६)

अज्ञान तम को नाश कर, मारग दिखाया आपने।
सत्य अहिंसा धर्म का, डंका बजाया आपने ॥ टेक ॥
मूक पशुओं की बली को, जानते थे धर्म नर।
अश्व यज्ञ नरमेध यज्ञ, जग से मिटाया आपने ॥ १ ॥
वृष अहिंसा का मरम, अज्ञान जन समझे नहीं।
वीर का भूषण क्षमा है, यह बताया आपने ॥ २ ॥
इसलिये तुम वीर हो, अतिवीर हो महावीर हो।
सन्मति वर्द्धमान हो, शिवमग दिखाया आपने ॥ ३ ॥

(११०)

मुसाफिर क्यों पड़ा सोता, भरोसा है न इक पलका।
दमादम बज रहा डंका, तमाशा है चला-चलका ॥टेक॥
सुबह तो तख्तशाही पर, बड़े सज धजके बैठे थे।
दुपहरे वक्त में उनका हुआ है, बास जंगल का ॥१॥

कहाँ हैं राम अरु लक्ष्मण, कहाँ रावण से बलधारी।
कहाँ हनुमन्त से योधा, पता जिनके न था बल का ॥२॥
उन्होंको कालने खाया, तुझे भी काल खावेगा।
सफर सामान उठ कर तू, बना ले बोझ को हलका ॥३॥
जरा सी ज़िन्दगानी पर, न इतना मान कर मूरख।
यह बीते ज़िन्दगी पलमें, कि जैसे बुद-बुदा जलका ॥४॥
नसीहत मान ले 'ज्योति', उमर पल पल मे कम होती।
जपन कर आज जिनवरका, भरोसा कुछ न कर कलका ॥५

(१११)

शुभ भावना

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का व्यवहार घर घर बार हो॥ टेक॥
धर्म का परचार हो और देश का उद्धार हो।
और यह उजड़ा हुआ भारत चमन गुलज़ार हो॥ १॥
रोशनी से ज्ञान की संसार में परकाश हो।
धर्म के परचार से हिंसा का जग से ह्रास हो॥ २॥
शान्ति अरु आनन्द का हर एक घर में बास हो।
वीर वाणी पर सभी संसार का विश्वास हो॥ ३॥
रोग भय और शोक होवें दूर सब परमात्मा।
कर सकें कल्याण 'ज्योती' सब जगत की आत्मा॥ ४॥

(११२)

चेतावनी

अनन्तकाल निगोद माँहि, सुध नहीं निज जाति की ।
भूमि अगन जल बनस्पति भयो, और हूओ वातकी ॥१॥
दुर्लभता से त्रस भयो, तब निबल जिय को घात की ।
अति रौद्रता से नर्क पहुँचो, खबर दिन की न रात की ॥२॥
पूर्व पुन्य से भयो नर, रहो मास नव कुक्ष मात की ।
बालपन अज्ञान थायो, युवा हुआ तो पातकी ॥३॥
वृद्ध अवस्था में बढ़ो, त्रसना घटी गत गात की ।
विषय भोग माँहि उमर खोई, खबर दिन की न रात की॥४
अब चेत चेतन धार संयम, ले शरण सरस्वती मात की ।
पंचइन्द्रिय मन वश करो, जो चाहते सुख शाश्वती ॥ ५॥
धर ध्यान आतम पाल संयम, नष्ट होवें घातकी ।
सर्वज्ञ हो निर्वाण पद लो, जहाँ खबर दिनकी न रातकी ॥६

(११३)

आत्म सम्बोधन

समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है ।
भव उदधि तन अथिर नौका, बीच मंझधारा पड़ी है ॥टेक॥
आत्म से है पृथक तन धन, सोचरे मन कर रहा क्या ?
लखि अवस्था कर्म जड़की, बोल उनसे डर रहा क्या ?
ज्ञान दर्शन चेतना सम, और जग में कौन है रे ?
दे सके दुख जो तुझे वह, शक्ति ऐसी कौन है रे ?

कर्म सुख दुख दे रहे हैं, मान्यता ऐसी करी है।
चेत चेतन प्राप्त अवसर, आत्म चिन्तन की घड़ी है ॥१॥
जिस समय हो आत्म दृष्टि, कर्म थर थर कांपते हैं।
भाव की एकाग्रता लखि, छोड़ खुद ही भागते हैं॥
ले समझ से काम या फिर, चतुर्गति ही में विचरले।
मोक्ष अरु संसार क्या है, फैसला खुद ही समझ ले॥
दूर कर दुविधा हृदय से, फिर कहाँ धोका धड़ी है।
समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है ॥२
कुन्दकुन्दाचार्य गुरुवर, यह सदा ही कहि रहे हैं।
समझना खुद ही पड़ेगा, भाव तेरे बहि रहे हैं॥
शुभ क्रिया को धर्म माना, भव इसी से धर रहा है।
है न पर से भाव तेरा, भाव खुद ही कर रहा है॥
है निमित्त पर दृष्टि तेरी, बान ही ऐसी पड़ी है।
चेत चेतन प्राप्ति अवसर, आत्म चिन्तन की घड़ी है ॥३॥
भाव की एकाग्रता, रुचि, लीनता, पुरुषार्थ करले।
मुक्ति बन्धन रूप क्या है, बस इसी का अर्थ करले॥
भिन्न हूँ पर से सदा, इस मान्यता में लीन हो जा।
द्रव्य, गुण, पर्याय ध्रुवता, आत्म सुख चिर नींद सो जा॥
आत्म 'गुणधरलाल' अनुपम, शुद्ध रत्नत्रय जड़ी है।
समझ उरधर कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है ॥४

———

भजन–सूची

जैन फिल्मी गायन

(नवीन संस्करण)

संग्रहकर्त्ता

मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ,

सरल जैन ग्रन्थ भण्डार,

जवाहरगंज, जबलपुर ।

मूल्य—आठ आना

जैन फिल्मी गायन

(वर्णीजी की अमर कहानी)

संग्रहकर्त्ता

मोहनलाल जैन, शास्त्री

जवाहरगंज, जबलपुर

प्रकाशक

सरल जैन ग्रन्थ भन्डार

जवाहरगंज, जबलपुर

प्रथम वार
२०००

रक्षा बन्धन
वीर सं. २४८६

मूल्य
आठ आना



मुद्रक

स्वरूपचन्द्र जैन,

अशोक प्रेस, हनुमानताल, जबलपुर।

❀ श्री जिनाय नमः ❀

जैन धार्मिक फिल्मी गायन

(वर्णीजी की अमर कहानी)

भजन नं० १

तर्ज—(दूसरों का दुखड़ा दूर करने वाले)

भक्तों के दुखड़े दूर किये तुमने, मेरे दुख दूर करो अब आन ।
हे श्री चौबीसों भगवान, मेरे दुख दूर करो अब आन ।।टेक।।

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति सुमति दीजे स्वामी ।
पद्म सुपारस चन्द्रप्रभु जिन, सुविधिनाथ अन्तरयामी ।।
शीतलनाथ करो जग शीतल, श्रेयनाथ पद नमन महान ।।टेक।।

वासुपूज्य अर विमल जिनेश्वर, श्री अनन्त अतिशयधारी ।
धर्मनाथ श्री शान्ति कुन्थ प्रभु, अरह वरी जा शिवनारी ।।
मल्लिनाथ मुनिसुव्रतस्वामी, नमि कीना, आतमकल्यान ।।टेक।।

नेमि प्रभु तजि राजुल नारी, पशुओं की मन किलकारी ।
पार्श्व कमठ उपसर्ग चूरकर, महावीर हो ब्रह्मचारी ।।
सेवा 'रतन' करो तुम जब तक, मिले न पद निर्वान ।।टेक।।

भजन नं० २

तर्ज—(जरा सामने तो आओ छलिये)

महावीर दर्शन को चलिये, अभी सुनी ये बात है।
वो ऐसे दयालु परमात्मा, दुखियों की सुनें आवाज है ॥टेक॥
निर्धन धनी या मूरख गुनी, हो तुमको किसीसे क्या नाता।
जो तुमको ढूंढ़ अरु तुम मिलो ना, ऐसा कभी ना हो सकता ॥
तेरे नामका जमाना कुशलात है, इतिहास बताये यह बात है॥टेक॥
जलती अगन में पापी जनोंने, जब दीन पशूगण को वारा।
झंडा अहिंसा का विश्वभर में, लेकर तुम्हीं ने फहराया ॥
तेरा नाम जो जपे दिनरात है, वह पापीभी वीर बनजात है ॥टेक॥
मेंढक चला पखड़ी ले कमलकी, तेरे नाम पर दीवाना।
मरकर अचानक उसने स्वर्ग का, छिनमें लिया है परवाना ॥
तूं जानता प्रभूजी सब बात है, तूं तारनतरन जिनतात है ॥टेक॥
चांदन नगर में इक ग्वाले ने, तुमको हृदय में बैठाया।
रथ न चलेगा जबतक हमारा, यह भी स्वप्न में बतलाया ॥
उस ग्वालेने लगाया जब हाथ है, रथ दौड़ने लगा इकसाथ है ॥टेक॥
जिसने पुकारा जिनवीर तुमको, तुमने पूरनकी उसकी आशा है।
सिंहुंड़ी नगर का सेवक 'रतन' ये, ऐसे दरश का प्यासा है ॥
करूं वंदना तुम्हारी जोड़ हाथ है, अब राखना हमारी प्रभु लाज है॥



भजन नं० ३

तर्ज—(मन डोले मेरा तन डोले, मेरे दिल का गया करार रे)

वन वन डोले दासी को ले, वो पवन कुँवर की नार रे,
सती अंजना सुन्दरिया।

देख गरभ को सास ससुर ने, मन में कुमति विचारी।
अभी निकारो मेरे घर से, है यह कुलटा नारी॥
रथ को झट ले सारथि, अब छोड़ चली घरबार रे।
सती अंजना सुन्दरिया॥ वन० ॥१॥

कहे अंजना आँसू भरकर, रथ वाले सुन लेना।
मात-पिता घर मुझ अभागिनी, को अब पहुँचा देना॥
रथ यों दौड़े ज्यों हवा चले, आ गया पिता का द्वार रे।
सती अंजना सुन्दरिया॥ वन० ॥२॥

सुनी पिता ने आइ अंजना, सँग ना सूर सिपाही।
बिन आदर के क्यों ये आई, दिल को अफसोस तबाही॥
रथ वाले से जाकर बोले, ले जाव यहां से टार रे।
सती अंजना सुन्दरिया॥ वन० ॥३॥

रथ को मोड़ चली वन को, आंखों से बरसे पानी।
फिरे भटकती निर्जन वन में, वो महलों की रानी॥
नहिं तन चाले डगमग डोले, बढ़ गया गरभ का भार रे॥
सती अंजना सुन्दरिया॥ वन० ॥४॥

एक गुफा को देख गई, अन्दर ना मन दरलानी।
बैठे ध्यान लगाये मुनिवर, थे मनपर्यय ज्ञानी ॥
यों हँस बोले, ज्यों रस घोले, तेरे पाप भये हैं चार रे।
सती अंजना सुन्दरिया ॥ वन० ॥५॥

शुभ थी घड़ी वा लगन थी नीकी, काम देव जब जन्में।
सती अंजना के मामा आ, पहुँचे उस ही वन में ॥
हस कर बोले बालक को लै, चल गये विमान बैठार रे ॥
सती अंजना सु दरिया ॥ वन० ॥६॥

खेल कूद में हनूमान थे, जब विमान दौड़ाया।
मार छलांग गिरे नीचे, माता ने रुदन मचाया ॥
आंसू ढोले, हाथों को मले, मेरे जीवनप्रान अधार रे ॥
सती अंजना सुन्दरिया ॥ वन० ॥७॥

चकनाचूर शिला हो गइ, जब देखा नीचे आके।
हँस-हँस कर किलकारे सुत, माता ने लिया उठाके ॥
प्रभु जय बोले आगे चले, जिनराज चरन उर धार रे।
सती अंजना सुन्दरिया ॥ वन० ॥८॥

रहे अंजना मामा के घर, सुख से काल वितावे।
शेष कथा आगे पुरान से, भविजन पता लगावे ॥
जिनवर भोले अब तो सुन ले, कर दे 'रतन' को पार रे।
सती अंजना सुन्दरिया ॥ वन० ॥९॥



भजन नं० ४

तर्ज—(बहे अखियों से धार जिया मेरा बेकरार सुनो सुनो जी)

प्रभु लीना अवतार, सुख पायो नर नार,
देव कीना जयकार, शीस तो झुकावे कर जोड़के ॥टेक॥
नाम तुमने महावीर पाया, चांदनपुर में अतिशय दिखाया।
सब जानै संसार, सुनो सुनो जी दातार,
देव कीना जयकार, शीश तो झुकावे कर जोड़ के ॥प्रभु०॥
भक्ति ग्वालेने तुमसे लगाई, थी प्रीत सच्ची जो उसकी निभाई।
मैं भी आया तेरे द्वार, स्वामी लीजिये उबार ॥देव०॥
चंदना को छुड़ाया जंजीर से, एकमंत्री को गोले की पीर से।
ग्राम चाँदन मँझार, बना मन्दिर अपार ॥देव०॥
नाम जिसने महावीर ध्याया, भूत विंतर चलें छोड़ काया,
नाव मेरी मँझधार, कर दीजो भवपार,
है 'रतन' की पुकार, शीश तो झुकाय कर जोड़ के ॥देव०॥

भजन नं० ५

(तर्ज—ओ दुनियां बनाने वाले, क्या यही है दुनियां तेरी)

ओ शिवलोक जाने वाले, क्या यही है भक्ति तेरी।
भूल गया माया के मद में, कहता मेरी मेरी ॥टेक॥
इष्ट समागम को सुख मानै, होय अनिष्ट बड़ा दुख ठानै।
ओ वीर कहाने वाले, क्यों भूल गई सुधि तेरी ॥१॥

औरों को अपनाता है तू, अपने को नहिं ध्याता है तू।
ओ राह भुलाने वाले, क्यों जाता राह अँधेरी ॥२॥
राग द्वेष से अब मुख मोड़ो, मोहबली को छिन में तोड़ो।
ओ धर्म चलाने वाले, आश 'रतन' को तेरी ॥३॥

भजन नं० ६

तर्ज—(ओ नाग कहीं जा बसियो रे, मेरे पिया को ना डसियो रे)

हो मगन प्रभू जो ध्यावे रे, दुख दारिद्रय नशावै रे।
छल पाप कपट ना करियो रे, प्रभु नाम सुमरियो रे ॥टेक॥
सेठ सुदर्शन को शूली से, तुमने आन बचाया।
मानतुङ्ग के ताले तोड़े, जैन धर्म चमकाया ॥
तुम कभी न दुख से डरियो रे, प्रभु नाम सुमरियो रे ॥छल०
मैना रैनमंजूषा सीता, सती अंजना नारी।
चंदनबाला और द्रौपदी, की ना खबर विसारी ॥
तुम वीर की जय जय करियो रे, प्रभु नाम सुमरियो रे ॥छल०
श्रीपाल का कुष्ट मिटाया, हो गई कंचन काया।
विषधर से इक सेठ कुँअर को, छिन में आन बचाया ॥
प्रभु की पूजन करियो रे, प्रभु नाम सुमरियो रे ॥ छल०
वीरनाथ की भक्ती से, मैंढक ने सुरपद पायो।
अमरलोक की भीख मांगने 'रतन' दौड़ता आयो ॥
इस वार निराश न करियो रे, प्रभु नाम सुमरियो रे ॥ छल०

भजन नं० ७

तर्ज—(देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई०)

देख वीर के समवसरन में, मानस्तम्भ महान।
मानी जन का गलता मान, देख० ॥ टेक ॥

दो हजार से अधिक पुरानी,
वीर समय की सुनो कहानी।
भये प्रभू जब केवलज्ञानी,
एक पहर तक खिरी न बानी।
अवधि विचार इन्द्र गौतम,
लेने की दिल ठान ॥ मानी० ॥

वृद्धरूप धरि सुरपति चाला,
पहुँचा गौतमद्विज की शाला।
शिष्य कौन सबसे गुणवाला,
इतना कह इक पद्य निकाला ॥
कठिन पद्य को सुनत अकल,
गौतम की भइ हैरान ॥ मानी० ॥

गौतम कहैं मान में आकर,
तू क्या समझेगा है चाकर।
देखें तेरे गुरु को जाकर,
चले अकड़कर पैर बढ़ाकर।

शिष्य पांच सौ साथ लिये मन,
में विवाद की ठान ॥ मानी० ॥
ज्यों ही निकट प्रभू के आये,
मान त्यागकर जिनगुण गाये।
गणधर का पद गौतम पाये,
नैया पार 'रतन' की कर दो, महावीर भगवान ॥ मानी० ॥

भजन नं० ८

तर्ज—(मैं तो गवने चली हूं, काहे बोले पपीहा, काहे बोले पपीहा)

चेतन क्यों पड़े सो रहे, मौका ना सोने का।
ऐसा समय अनमोल गया, हाथों से खोने का ॥
मोह नींद में गमाये काल, पापीजियरा, पापीजियरा।
राग द्वेष में जमाये ख्याल, पापीजियरा, पापीजियरा ॥टेक
बालपन खेल खोये, वहाँ ज्ञान भी न होये।
खेल-कूद में गाय-रोय में, बिताँये जियरा ॥ पापी.
बी. ए. पास की पढ़ाई, बाबू फैसन बनाई।
तत्त्वभेद को ना जाना, दुख पाये जियरा ॥ पापी.
आई जवानी छाई दृगन में, केलिकरी सँग नारि भवन में।
छोड़ चल दिये मारे, इक आत्मा तुम्हारे,
त्याग नींद ये 'रतन', सुख पाये जियरा ॥ पापी.



भजन नं० ६

तर्ज (कव्वाली) आचार्य शांतिसागर जी महराज की

गये शांतिसागर अमरलोक जबसे,
स्वप्नों में जिनका, याद आ रही है।
मुश्किल है मिलना, हमें ऐसे गुरुवर,
नजरों में तस्वीर दिखला रही है ॥टेक

समझा था हमने, चमकते सितारे,
न डूबे कभी, सारी दुनिया के प्यारे।
हमारा धरम भी इन्हीं के सहारे,
तो विद्वान जीते, हजारों विचारे ॥
छुपा बादलों में वही एक तारा,
जग में अंधेरी सी, छा रही है ॥मुश्किल०

सधा तीन खम्भों से, जिन धर्म मैया,
वर्णी मनोहर को, पहला बताया।
परम पूज्य वर्णी, गणेशी गुरू ने,
अरे ज्ञान खम्भे को, पक्का जमाया ॥
गया टूट चारित्र का, थम्भ अब तो,
नैया भँवर में चली जा रही है ॥मुश्किल०

तड़पते हैं मरते हैं, जिस भूख से हम,
न दिन रात का भेद, कर खूब खाया।
परीषह क्षुधा जीतने, का जो जलवा,
गुरु शांतिसागर ने, हमको दिखाया ॥

उपसर्ग कीना, सरप राज ने जब,
वही आत्मा ध्यान में लग रही है ॥मुश्किल०
तपोधन का वर्णन करें, हम कहां तक,
मरण जब निकट ज्ञान, द्वारा विचारा।
कुंथलगिरी क्षेत्र पर, जाय मुनिवर,
करम नाश करने, को सन्यास धारा ॥
लिया चार दिन जब, तेतीस दिन में,
उपदेश बानी भी चलती रही है ॥मुश्किल०
अठारह सितम्बर सन, पचपन को मंडे,
सुवह छै बजे ठीक, शिवधाम लीना।
हजारों जुड़े नारि नर, दर्शनों को,
कोई शोक में तो कोई नृत्य कीना ॥
किया शव का अभिषेक, इक्यान सौ में,
पहाड़ी पै जय जय, जय मच रही है ॥मुश्किल०
मंगाया गया मन पचासक तो चंदन
कपूर भी तीन बोरों में आया,
लगा ढेर नरियल का, ज्यों एक पर्वत,
गुरुसेवकों ने मिलकर शवको जलाया।
'रतन' शांति उपदेश, जल्दी समझलो,
झट काललब्धी चली, आ रही है ॥मुश्किल०

भजन नं० १०

(श्री वीर निर्वाण कल्याणक का)

हम वीर की सन्तान तो, कुछ करके जायँगे ॥ कुछ करके० ॥
मिथ्यात्व में जो सोते है, उनको जगायेंगे ॥टेक॥
त्रिशलावती का लाल तूं, सिद्धार्थ का प्यारा ।
कुण्डलपुरी का प्राण तूं, दुखियों का सहारा ॥
दुनियां में तेरे नाम का, गौरव बढ़ायेंगे ॥ हम वीर० ॥ १ ॥
पशुओं का संहार जब, होता था, जहान में।
हिंसा को थे बताते धर्म, मूरख पुराण में ॥
रोते थे कि भारत में, कब महावीर आयेंगे ॥ हम वीर० ॥ २॥
थी चैत्र सुदी तेरस सुभग, प्रभू अवतार लिये ।
देखा कि सूर्य-रश्मि खिली, उलूक चल दिये ॥
अब रंग मिथ्यावादियों पंडों के जमने न पायेंगे ॥ हम वीर ॥३॥
उपदेश अहिंसा का देकर, सब यज्ञ मिटाये ।
घर घर में ऊँच नीच, सब जैन बनाये ॥
वो ही अहिंसा धर्म का, झंडा उठायेंगे ॥ हम वीर० ॥ ४ ॥
थी अमावस कार्तिकी, न सूर्य निकलने पाये ।
पावापुरजी से मोक्ष गये, कल्याणक देव रचाये ॥
निर्वाण लाडू हमभी, मंदिर में चढ़ायेंगे ॥हम वीर० ॥ ५ ॥
कल्याणक अंतिम जिनवरके, सुरनर पावापुर सब आये।
घरघर में दीप जला घृतके, तब दीप-मालिका कहलाये ॥
जिनवर भवन में अब दीप, 'रतन' जलायेंगे ॥हम वीर ॥ ६ ॥

भजन नं० ११

तर्ज—(मोहन की मुरलिया बाली सुन)

क्यों करता पाप कमाई, तेरे जीवन को दुखदाई ॥टेक
हिंसा, झूठ औ चोरी करके, महल मकान बनाया।
परनारी से विषय किया अर, भरी तिजोरी माया॥
अब छोड़ दे मेरे भाई, तेरे जीवन को दुखदाई ॥टेक
भक्ष्य अभक्ष्य न छोड़े तूने, आठों मद अपनाये।
क्रोध, मान, माया में पड़कर, लोभ न दिल से जाये॥
अब अंत नरक गति पाई, तेरे जीवन को दुखदाई ॥टेक
सात व्यसन में मस्त हुआ तू, परनिन्दा सुन फूला।
धर्म किया ना कुछ भी प्राणी, मद माया में भूला।
नरदेह 'रतन' अब पाई, तेरे जीवन को सुखदाई ॥टेक

भजन नं० १२

तर्ज—(हवा में उड़ता जाये मेरा लाल दुपट्टा मलमल का)

क्या फहर-फहर फहराये, सुनहला झंडा जिनवर का।
यह मेरे मन को भाये, केसरिया झंडा जिनवर का ॥टेक॥
पवन चले शर-शर, फर-फर ये झंडा डगमग डोले।
लहर-लहर लहराये सांथिया, भेद हृदय का खोले ॥टेक॥
ये झंडा है वीर प्रभू का, जैनधर्म का प्यारा।
इसकी ऊँची शान बढ़ाना, है कर्तव्य हमारा ॥टेक॥
बनकर सब युगवीर अहिंसा, धर्म लगाते नारे।
अब तो देना तार जिनेश्वर, 'रतन' शरण में थारे ॥टेक॥

भजन नं० १३

तर्ज—(मुरली वाले मुरली बजा)

प्रभु चरणों में मन को लगा, नरभव जायेगा दे के दगा।
विषयों की तृष्णा में लगा है मन,
कीनी न प्रीति कभी प्रभु के चरन ॥
पूजा कुदेवों को मन हो मगन,
ये पापी नरकों में देंगे पुगा ॥ नर० ॥
हिंसादि पापों में कीना रमन,
वेदों पुराणों का करके दमन।
आतम से कीना न श्री जिनभजन,
चेतन तूं कर्मों को दे अब भगा ॥ नर० ॥
दुखों के सागर में डूबे हैं जन,
भारत को स्वामी बना दो चमन।
चरणों में सेवक ये पड़ता 'रतन'
दर्शन भये आज कि समन जगा ॥ नर०॥

भजन नं० १४

तर्ज—(मैंने देखी जग की रीति, मीत सब झूठे पड़ गये)

मैंने कीनी ऐसी भूल, पिया गिरनारी चढ़ गये (हो)।
मेरी खोटी थी तकदीर, बीच मँझधार छोड़ गये (हो)॥टेक॥
भये ध्यान मग्न हो प्रभु, राज भार छांड़के,
मैं भी आज दीक्षा लूंगी, जैन व्रत्त मॉंडके।
मेरे यदुकुल के सरताज, मुझे क्यों न्यारी कर गये ॥टेक॥

मोसे प्रीत त्यागी धर्म से न त्यागियो,
अष्ट कर्म नाश कर मोक्ष पग धारियो।
मेरे जैन-धर्म के ताज, अष्ट कर्मों से लड़ गये ॥टेक॥
जैन व्रत धारियों का, बेड़ा पार कीजिये,
शर्ण आये आपकी, जिनेश तार दीजिये।
मेरा छोटा मिहुँड़ी ग्राम 'रतन' दर्शन को अड़ गये ॥टेक॥

भजन नं० १६

तर्ज—(ओ नाग कहीं जा बसियो रे) भजन—मैनासुन्दरी

श्रीपाल को लेकर मैना, चली बहाती युग नैना।
मैना पै दया प्रभु करियो रे, मेरी पीर को हरियो रे ॥टेक॥
कुष्टी वर जो दियो पिता ने, यह तकदीर हमारी।
मेरे तो वो कामदेव मैं, उनकी आज्ञाकारी ॥
ना रोष किसी पर करियो रे, मेरी पीर को हरियो रे ॥१॥
कर्मन की गति कोइ न जाने, जाने केवलज्ञानी।
वन वन फिरै भटकती मैना, ज्यों मछली बिन पानी ॥
मुझ अबला की चित धरियो रे, मेरी पीर को हरियो रे ॥२॥
सिद्धचक्र का पाठ रचाऊं, जिनवर न्हवन कराऊं।
कुष्टरोग को इस पानी से, छिन में आज नशाऊं ॥
मेरे शील की रक्षा करियो रे, मेरी पीर को हरियो रे ॥३॥
सिद्धपाठ से की कोटीभट, सबकी कंचन काया।
धन्य सती मैना रानी को, जग में गौरव पाया ॥
प्रभु दया 'रतन' पर करियो रे, मेरी पीर को हरियो रे ॥४॥

भजन नं० १७

तर्ज (हुआ सुत राम दशरथ के बहादुर हो तो ऐसा हो)

ये सुन्दर तन सजा करके, न जिनवर नाम को लीना ॥टेक॥
रहा भोगों में मस्ताना, गती का ख्याल ना कीना।
सजा शिर तेल बालों से, झुकाया है न प्रभु चरणों ॥
वो मस्तक खाक नरियल सम, जगत में क्या तेरा जीना ॥टेक॥
जो उत्तम श्रोत्र दो पाकर, न जिनवानी सुनी तूने।
दो निर्मल नैन को पाकर, न जिनवर दर्श भी कीना ॥टेक॥
जो निजमुख थुति न प्रभु कीनी, जीभ है नागसी उसकी।
भुजा है बैल के सम वो, जिन्हों ने दान ना दीना ॥टेक॥
जो पग से तीर्थ ना बन्दै, बजन से भू दहलती है।
'रतन' को तार दो भगवन, तुम्हारा शरण अब लीना ॥टेक॥

भजन नं० १८

तर्ज (मोहन की मुरलिया बाजे हो, सुन ठेस जिया में)

तेरी शानपर बलि-बलि जाऊँ (हो) चरणों में शीश झुकाऊँ।
तन मन से लवलीन जो, भविजन तेरे गुण को गाये ॥
वेद पुराण सभी कहते हैं, फेर न भव में आये ॥
अब चैन से शिवपद पाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ ॥१॥
काल दुखी को पाकर प्राणी, भूल रहे गुण अपने।
धर्ममार्ग सब छोड़ दिये हैं, जैसे निश के सपने ॥
फिर सूर्य को दीप दिखाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ ॥२॥

करना दूर हमारे अवगुण, चरण तुम्हारे परसूं।
दया 'रतन' पर करना जिनवर, तेरे दर्श को तरसूं॥
भव भव के दुःख नसाऊं, चरणों में शीश झुकाऊं ॥३॥

भजन नं० १६

महावीर जयन्ती का गायन, तर्ज— (मुरली वाले मुरली बजा)

आज वीर स्वामी का डंका बजा,
देवों ने सारे नगर को सजा ॥टेक॥
जन्में प्रभु आज नृप के भवन,
कल्याणक सुरपति किया जाय वन।
पांडुक शिला पर कराया न्हवन,
तबला सारंगी औ बाजे बजा ॥देवों०॥
हम भी मनावें वही आज दिन,
अपने नगर को बनायें चमन।
चलकर गावें प्रभु के भजन,
नर तन पाने का यही मजा ॥देवों॥
सबको मुबारिक होये आज दिन,
नरनारि पूजें तुम्हारे चरन।
पड़ता है पैरों में सेवक 'रतन',
प्रभु गुण गाये से आया मजा ॥देवों०॥

भजन नं० २०

तर्ज (तुम जाओगे कहो मेरी कसम)

गिरनारी प्रभु तुम जाओगे,
मुझे रोती हुई छोड़ के जाओगे ।।टेक।।
घन घोर घटा जब छायेगी,
और बिजली कड़क डरायेगी ।
वर्षा अति जोर करायेगी,
तब कोमल वदन दुख पाओगे ।।मुझे।।
मो से नौ भव से प्रेम लगाये थे,
क्यों सावन में व्याहन आये थे ।
पशुओं के बन्ध छुड़ाये थे,
प्रभू तप करके कर्म खिपाओगे ।।मुझे।।
कष्ट भारत के स्वामी मिटाये थे,
मेरी नैया को पार लगाओगे ।
ग्राम सिहुंड़ी में मङ्गल कराये थे,
प्रभू छोड़ 'रतन' पछताओगे ।।मुझे।।

भजन नं० २१

तर्ज—(जिया बेकरार है, छाई बहार है, आजा....)

करदो भवपार है, नैया मँझधार है,
चौबीसों जिनराज जी, तेरा ही आधार है ।।टेक।।
ऋषभ, अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम जिनस्वामी।
श्री सुपार्श्व चन्द्रप्रभु बन्दों, पुष्पदन्त जी नामी ।।करदो।।

शीतलदेव श्रियांस जिनेश्वर, वासुपूज्य सुखकारी।
विमल, अनंत धर्म उर ध्याऊँ, शांतिचक्रि पदधारी ॥करदो॥
कुन्थुनाथजी अरहप्रभू तुम, मल्लि काममल नाशी।
मुनिसुव्रत नमिनाथ नेमिजिन, पारश्वनाथ शिवनासी ॥करदो॥
महावीर स्वामी दुखहारी, अगणित पापी तारे।
दया नजर से नाव 'रतन' की करदो प्रभू किनारे ॥टेक॥

भजन नं० २२

तर्ज—(मैंने देखी जग की रीत मीत सब)

सुन राजमती चित्तधर ये दुनियाँ झूठी सारी।
तज गये इसको बलदेव चक्रि आदिक पदधारी॥
ये दुनियाँ झूठी सारी ॥सुन॥

मोह जाल चक्र में फसे हैं जीव आदि से।
सुख दुख भोगते हैं अपने प्रमाद से॥
भूले हैं आतम ज्ञान करम गति सबसे न्यारी ॥टेक॥

अष्ट कर्म हन सिद्ध भये सुख धाम में।
ओं नमः सिद्ध तिन करहुं प्रणाम मैं॥
तुम भी तजि जग जंजाल करो शिवपद से यारी ॥टेक॥

दास कहें नेमिजिन गिरनार को गये।
आर्यिका के महाव्रत राजमति ने लिये॥
चरणों की आश लगाय 'रतन' की अब है बारी ॥टेक॥

भजन नं० २३

तर्ज (गम का फसाना किसको सुनायें टूटा हुआ....)

सब ही कहते थे, अब अच्छा जमाना आयेगा ।
हम तो कहते हे प्रभो, कब ये जमाना जायेगा ॥
बदला जमाना किसको सुनायें ।
जलता हुआ दिल किसको दिखायें ॥टेक॥
ना कुछ ठिकाना पशुओं के वध का ।
रोती हजारों बेचारी गायें ॥
मिलता है न खाना मरते हैं लाखों ।
भगवान ये दुख कब तक दिखायें ॥टेक॥
छोड़ा धरम को जयहिन्द कहते ।
ईश्वर को उनको सौ सौ दुआयें ॥
जीवन 'रतन' पापों से बचाना ।
इक दिन जमानें फिर वो हां आयें ॥टेक॥

भजन नं० २४

तर्ज—(देखो देखो री बदरवा कारे जियरा डराये)

देखो पारस प्रभू छबि प्यारी, तेरी बलिहारी ॥टेक॥
प्रभू महिमा जग से न्यारी, तेरी बलिहारी ।
आठ वर्ष बालापन ही से, पंच अणुव्रत धारी ॥
जलते नाग स्वर्ग पहुँचाये, धन्य बाल ब्रह्मचारी ॥१॥
किया कमठ उपसर्ग करी, पदमावति ने रखवाली ।
मान दैत्य का चूरचूर कर, जय जय देव उचारी ॥२॥

नाश घातिया केवल पायो, लोकालोक निहारी।
दे उपदेश हजारों तारे, कीर्ति बड़ो जग भारी ॥३॥
दुखियों के दुख तुमने टारे, पाप विनाशन हारी।
शिवरमणी के तुम दाता हो, आया 'रतन' भिखारी ॥३॥

भजन नं० २५

तर्ज—(छुपछुप खड़े हो जरूर कोई बात है, पहली मुलाकात है)

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को, दिन शुभकार है ॥
वीरनाथ स्वामी आज, लीना अवतार है ॥ टेक ॥
स्वर्गों में देवों के आसन कम्पाये।
स्वयमेव अनहद तो, बाजे बजाये ॥
आयो सुरपति गज, होय असवार है।
वीरनाथ स्वामी आज, लीना अवतार है ॥ १ ॥
इन्द्राणी हाथों मे, प्रभु को उठाये।
सुरपति ने स्वामी, को गज पै बिठाये ॥
रूप देख इन्द्र कीने, नेत्र हजार है ॥ वीरनाथ
पांडुक शिला में जा, कलश ढुराये।
सुरपति तबै नाम, सन्मति धराये ॥
लाय मात सौंप करी, देव जयकार है ॥ वीरनाथ
वैसे ही जयन्ती को, हम भी मनाते।
भक्ति से सूरज को, दीपक दिखाते।
कीजिये 'रतन' को, जिनेश भवपार है ॥ वीरनाथ

भजन नं० २६

तर्ज—(लिख दी मेरी तकदीर में बरबादी लिखने वाले ने)

हो पहिले जिनवर ने, आठों करम का नाश कीना ॥टेक॥
त्रेशठ प्रकृति का नाश कर, पाया है केवलज्ञान को ।
उपदेश से भवतार जब, आया निकट निर्वान को ॥टेक॥
माघ बदि चौदस दिवस को, कर्म हन शिवपुर गये ।
तब से दिवस यह चल रहा, सब जैन वीरों के लिये ॥टेक॥
हे प्रभो ! तुम जा बसे, आनन्दमय शिवधाम में ।
इस देश को करना सुखी, मङ्गल भी हो इस ग्राम में ॥टेक॥
तेरे गुण गण का नहीं कर, पाया गणधर ने कथन ।
सूर्य को दीपक दिखा, अज्ञान बस कहते 'रतन' ॥टेक॥

भजन नं० २७

तर्ज—(अखियां मिला के जिया भरमा के)

नेमी पिया आयके, दरश दिखायके, चले नहिं जाना ॥टेक॥
पशुओं की रक्षा से, दयालू, कैसे रोका जाये ।
देखो जी स्वामी, मेरा जिया भी न दुखने पाये ॥१॥
नव भव से प्रीति कीनी, क्या दगा इस भव में दोगे ।
मेरे परिवार को यों ही, पिया रोते छोड़ोगे ॥२॥
धरना था योग क्यों, द्वारावती से सजकर आये ।
छप्पन करोड़ यदुवंशी, क्यों ब्याहन आये ॥३॥
मैं भी गिरनार को चलती हूँ, मुझको साथ लेना ।
जल्दी भवसागर से सेवक 'रतन' को तार देना ॥४॥

भजन नं० २८

तर्ज—(गाये जा गीत मिलन के तू अपनी लगन के)

करले भजन भगवान के, करम नाशन के जो शिवपद पाना है ॥
क्यों करता है मेरा मेरा तेरा है क्या तन ॥
धन दौलत सब पड़ा रहेगा, जाने वाले सुन ।
जैसे बबूला सबनम के, चलोगे एकदमसे जो शिव पद पाना ॥ १
इन कर्मों के कारण जिनवर तपधारा है वन ।
बहिरातम को छोड़ बावरे करले शुभ आतम ॥
नाशेंगे दुख भव वन के जन्म औ मरण के,
जो शिवपद पाना है ॥ करले ॥ २ ॥
श्रावक कुल नर जन्म गया तो पछितायेगा मन ।
प्रभु चरणों में आन पड़ा है, सिहुँड़ी बाला 'रतन' ॥
ध्याता तुम्हें बचपन से लगन चरनन से,
जो शिवपद पाना है ॥ कर ले ॥ ३

भजन नं० २६

तर्ज—(पापी पपीहा रे, पी पी न बोल बैरी)

पापी जियरा रे पापों को छोड़ बैरी पापों को छोड़ ।
नन्हींसी जिन्दगी पै धर्म को न छोड़ बैरी, पापों को छोड़ ॥
तुझको ये घमण्ड है मैं सम्पत्ती का भारी रे ।
एक पाई तेरे साथ न जाये, पड़ी रहेगी सारी रे ॥
भेद न प्रभु का पाया, उनहीं से नाता जोड़ ॥ पापी० ॥ १

पांच पाप कर माया जोड़ी, दान दिया ना पाई रे।
जोड़ जोड़कर छोड़ चला सब, अन्त नरकगति पाई रे ॥
ज्ञान को भुलाया तूने, विषयों से नाता जोड़॥ पापों० ॥२
चारों गति में खूब घुमाया, मनुष्य जनम अब पाया रे।
वीतराग से देव मिले हैं, छोड़ कपट छल माया रे ॥
धर्म को 'रतन' तू करले, वैरियों से नाता तोड़ ॥ पापों० ॥३

भजन न० ३०

तर्ज—(छोड़ बाबुल का घर आज पीके नगर)

छोड़ परिवार घर आज तज के नगर तोहे जाना पड़ा ॥
रूप पुद्गल का पाके न कीना धरम,
मान में आयके कोने पांचों करम।
नरक में जायकर, छोड़के देहनर, तोहे रोना पड़ा ॥छोड़०॥१
पहले कहता था हरगिज नहीं जाऊँगा।
आयुकर्मों के फन्दों में न आऊँगा ॥
देखलो नर-नारि जाय बाहर नगर खाक होना पड़ा ॥छोड़०॥२
आयु कर्मों ने छोड़ा न जिनदेव को।
चक्रि नारद गदाधर औ बलदेव को।
तोड़ जंजाल कर,चाहने शिवनगर,वनमें जाना पड़ा ॥छोड़०॥३
मोक्ष का मार्ग भगवन दिखाना मुझे।
पार संसार सागर से करना मुझे।
है रतन दीनवर ग्राम सिहुँड़ी नगर,चरण में आ पड़ा ॥छोड़०॥४

भजन नं० ३१

तर्ज—(अब घर चलो बालम .)

प्रभु करले भजन मिट जाये कजा ॥
तेरे नर भव पाने का येही मजा ॥ टेक ॥
ज्ञानी कहाया शास्त्र पढ़ जाना न आतमा ।
बेकार खाके चल दिया कर देह खातमा ॥
फिर से नरकों की पाई सजा ॥ टेक ॥
नरकों की मार खायके तिर्यञ्चगति गया ।
सह भूख प्यास वेदना पापी न की दया ॥
तब ही यमपुर का डंका बजा ॥ टेक ॥
सम्पत्ति सुरग की पाय उसे छोड़ते रोया ।
तीनों गति को खोय के नरजन्म भी खोया ॥
सिख धर ले 'रतन' विषयों को न सजा ॥ टेक ॥

भजन नं० ३२

तर्ज—(अब घर चलो बालम)

तेरा जीवन जायेगा देके दगा, नहिं साथ में जाये कोई सगा।
घर बार के साथी चलेंगे श्मशान तक ॥
नेकी बदी ही जायगी कीनी जो आज तक ।
इक दौलत का नहिं जायेगा तगा ॥ तेरा० ॥१॥
आराम यश के लिए, जीवों को सताया ।
झूठे को सत्य बोलके, परधन को चुराया ।
ज्ञान को जान, पापों को अब ही भगा ॥ तेरा० ॥२॥

है सब से नीच कर्म जो परनारि को देखा।
कर कर के पाप जायगा देना पड़ेगा लेखा।
हो 'रतन' नेह स्वामी के चरनों लगा ॥ तेरा० ॥३॥

भजन नं० ३३

तर्ज—(मुरली वाले से नेहा लगाये बैठी हूं....)

आओ मिलकर ये जलसा मनाये जायेंगे।
प्यारे भारत के वीरों के गुण गायेंगे ॥ शैर ॥
याद आती है बापू की दिल में अमर।
गान करते हैं आंखों में आंसू मगर ॥
देख भारत की हालत ये जलता जिगर।
थाम दिल को भी आगे बढ़े जायेंगे ॥ आओ० ॥१
नेता सुभाष बोस का आता है जब ख्याल।
उस वीर के आगे किसी की गल न सकी दाल।
तसवीर देख शान की रोते हैं वृद्ध बाल।
शेर के नाम पर फूल न बरसायेंगे ॥ आओ० ॥२
भाई बल्लभ भगतसिंह भी चल गये।
हिंद की शान जाये न मरना भले ॥
देश वीरों को भैया भुलाना नहीं।
ओ 'रतन' व्यर्थ जीवन गमाना नहीं ॥
प्यारे नेहरू के झन्डे को फहरायेंगे ॥ आओ० ॥३

भजन नं० ३४

तर्ज—(गम का फसाना किसको सुनायें....)

जप तप किये तीरथ किये, पूजन करी धग्धीर है।
सम्यग्दर्शन के बिन नहीं, कटना करम जंजीर है ॥टेक॥
सम्यक्त्व के बिन मुक्ति न पाओ।
कर्मों ने जग में यों ही घुमायो ॥
पूजन भजन कर कीनी तपस्या।
ज्यादा से ज्यादा ग्रीवक में जायो ॥ टेक ॥
सुरमों की सम्पत्ति को छोड़ फिर से।
नरकों के डण्डों की मार खायो ॥
परमात्मा को क्यों ढूंढता है।
तेरा ही आतम है उसको ध्याया ॥ टेक ॥
संसार तरना तुझको 'रतन' तो।
सम्यक्त्व से ही शिवलोक पायो ॥ टेक ॥

भजन नं० ३५

तर्ज—(मुहब्बत के धोखे में कोई न आये)

प्रभु जी के गुण को, जो कोई गाये।
प्रभु चरणों में, शीश झुकाये ॥
जब सुत गर्भ विर्षे, तुम आये।
षट् नव मास रतन बरषाये ॥
जनमत ही दश अतिशय पाये ॥ प्रभु० ॥
जब तुम घातिया कर्म नशाये।

धनपति समव – सरण रचाये ॥
भविजन को शिव – मार्ग दिखाये ॥ प्रभु० ॥
धर्म दोय मुनि श्रावक गाये।
जिन–भक्ती को पार लगाये ॥
दास 'रतन' प्रभु तेरे गुण गाये ॥ प्रभु० ॥

भजन नं० ३६

तर्ज—(ये तो बांस बरेली से आया, सावन में ब्याहन आया)

आठों कर्मों ने सबको नसाया।
वीर पुरुषों ने इनको नसाया ॥
एक ज्ञानावरण, करे विद्या–हरन।
वीरवाणी को इसने भुलाया ॥वीर०॥
करे दर्शन का नाश, दर्शनावरणी खास।
कर्म–शत्रु का पहरा लगाया ॥वीर०॥
जैसे मदिरा शराब, करे जीवन खराब।
मोहनी रंग पक्का जमाया ॥वीर०॥
जीव करता है धर्म, विघ्न डाले एक कर्म।
दोष अन्तराय चौथा बताया ॥वीर०॥
कर्मघाती ये चार, हैं अघाती भी चार।
आयु, नाम, गोत्र वेदनीय गाया ॥वीर०॥
करो आतम का ध्यान 'रतन' चाहो कल्यान।
मिलै न हरदम ये प्यारी काया ॥वीर०॥

भजन नं० ३७

तर्ज—(घटा घन घोर घोर मोर मचावे शोर)

राजुल–घटायें छई काली काली, बादल में आई लाली।
नेमि पिया आजा ॥ टेक ॥

नेमि-सुनो हे राजुल प्यारी, शील धुरंधरनारी विषयों को नाजा।
विषयभोग में इस चेतन ने, काल अनादि गमाये।
तृष्णा रोग बढ़े दिन दिन, ज्यों ईंधन अग्नि जलाये।
मिलाये मौका भारी, करदो चलने की त्यारी शिवसुखके काजा ।१

स०–सावन भादों की हरियाली, देख मेरा जिय डोले।
तुम बिन कैसे रहूँ अकेली, बोल पपीहा बोले ॥
उमर मेरी बाली बाली, आई हैं रातें काली, छोड़ मुझे ना जा ॥२

ने०–राज करो अपने महलों में, नौकर आज्ञाकारी।
मेरे जाने से क्या दुख है, कुटुम तुम्हारा भारी ॥
करूँ मैं जाके यारी, शिव रमणी से प्यारी, और बनूँ राजा ॥३

रा०–सब परिवार महल मंदिर, तुम बिन ना लागे नीके।
जैसे एक अंक बिन प्यारे, बिन्दु सभी हैं फीके ॥
दया पशुओं की पाली, मुझको नजरों से टाली।
किस भव की ये सजा ॥४

ने०–हाथी घोड़ा महल खजाने, तुम सी राजुल नारी।
भोगत भोग प्यारे लागे, पर भव में दुखकारी ॥

मुहब्बत तोड़ो सारी, चलो जी गिरनारी, संयम के काजा ॥५
रा०-धन्य दिवस जब भई सगाई, धन्य पिता महतारी ।
तुमसे नाथ हैं मिलना दुर्लभ, धन्य घड़ी बलिहारी ॥
भई थी मैं मतवाली, आके प्रभु बचाली, भाग्य मेरा जागा ॥६
ने०-भाग्य तुम्हारे अच्छे थे, भैया ने पशू घिराये ।
कार्य तुम्हारा होना था, हम कारण बन कर आये ॥
करो जल्दीसे त्यारी, गुजरे है पल-पल भारी, तप धरैना काजा ॥७
कवि-सभी देवियों को पति मिलते एक जनम हितकारी ।
राजुल से पति मिलें सभीको, जनम-जनम हितकारी ॥
'रतन' की आई बारी, भव के दुख नाशनहारी, पार लगाजा ॥८

भजन नं० ३८

तर्ज—(जादूगर सैयां, छोड़ मोरी बैयां....)

[मैनासुन्दरी का वन जाना और श्रीपाल का रोकना]

कोटीभट सैयां, छोड़ मोरी बैयां,
देख तेरी लई बात, अब वन जाने दो ॥टेक॥
जाने दो छलिया, न छेड़ो मेरी गलियाँ,
तेरे न दिल में है पीर ।
बारह बरस गमाये दुख में, क्या मेरी तकदीर है ॥
अब न होगी मुलाकात ॥ टेक ॥

राजमहल को अब ना आऊँ, क्यों करते मजबूर है।
देर करूँगी ना इक पलकी, मुक्ति महल बड़ी दूर है ॥
जहाँ पर सबकी कुशलात ॥टेक॥
सुख दुख जीना मरना जग में जैसे धूप छांव है।
आज हमारे कल उसके, यह राजमहल अर गांव है ॥
झट सोच 'रतन' दिन जात ॥ टेक ॥

भजन नं० ३६

तर्ज—(मोरी अटरिया पै कागा बोले, मेरा जीरा०)

मोरे नयनों में वर्णी की सूरत डोले।
जिया ऐसा बोले कोई जा रहा है ॥ टेक ॥
मेरे मन में आती उमङ्ग रे।
जाय देखूँगा वर्णी का संघ रे ॥
गुरु भाषासमिति सी हो बोले बोले।
पाप धोले धोले दुख ना रहा है ॥ मोरे०
सुने ज्ञानी के जाकर बैन रे।
वीर संतान सच्चे वो जैन रे ॥
लगें ऐसे ये वर्णी हैं भोले भोले।
देश जय जय बोले, यश छा रहा है ॥ मोरे०
मिली शिक्षा ना भूले हैं ज्ञान रे।
जैन मारग के वर्णी जी प्रान रे ॥
सन्त शिक्षा को धर ले न जग में डोले।
संयम को ले यम आ रहा है ॥ मोरे०

भजन नं० ४०

तर्ज—(हुआ सुत राम दशरथ के बहादुर....)

हमारे हिन्द का प्यारा, जवाहर हो तो ऐसा हो।
सितारा देश भारत का, जवाहर हो तो ऐसा हो॥
अहिंसा धर्म का जिसने, पढ़ाया पाठ दुनियाँ को।
दिखाया शांति का मारग, जवाहर हो तो ऐसा हो॥१॥
न तोपों से लड़ाई की, न तेगा हाथ में लीना।
भगाया देश से जालिम, बहादुर हो तो ऐसा हो॥२॥
छोड़ घरबार के सुख को, स्वतंत्र कीना वतन अपना।
किया बरबाद तन धन को, जवाहर हो तो ऐसा हो॥३॥
तेरे उपकार का बदला, चुका सकता नहीं भारत।
तुम्हारे गुण 'रतन' गाये, जवाहर हो तो ऐसा हो॥
हमारे हिंद का प्यारा, जवाहर हो तो ऐसा हो॥४॥

भजन नं० ४१

तर्ज—(जब तुम्हीं चले परदेश लगाकर ठेस....)

ले भारत मां का नाम, छोड़ सबका काम, बनाया गाना।
सुन लेना मेरा फिसाना॥
देश है हिंद सबसे न्यारा, ये मध्यप्रांत अति ही प्यारा।
सी० पी० में जिला जबलपुर है मस्ताना॥१॥

बीना से रेल जो आती है, कटनी मुड़वारा जाती है ।
स्टेशन बीच सलैया बना दिवाना ॥२॥
दच्छिण में ग्राम बना नीका, जंगल है चार मील ही का ।
मुकाम पोस्ट है सिहुँडी खास ठिकाना ॥३॥
है बस्ती घनी किसानों की, संख्या है चोदह सौ जनकी ।
बनता है ज्यादह घर घर चांवल खाना ॥४॥
जिनमंदिर के पास बने कोठा, घर जीरन मेरा इक छोटा ।
है नाम 'रतन' धन्धा, है खास किराना ॥५॥
विक्रम सम्वत है आठ सही, छठ जेठ सुदी ऋतु गर्म कही ।
दिन एक बजे पर, खतम किया ये गाना ॥६॥

नोट— यहां तक के ४१ भजन श्रीरतनचन्द्रजी सिहुँड़ी (जबलपुर) म० प्र० निवासी द्वारा रचित हैं।



भजन नं० ४२

(तर्ज—कारे बदरा तू न जा, न जा)

गीत पतन के न गा, न गा, प्रभके भजन नित गा।
निज जीवन को सार बना, जिनवरके गुण गाजा आजा ॥
नाटक और सिनेमा देखे, समय को व्यर्थ गमाय।
देख जरा जिनवाणी जिससे, भवसागर तिर जाय,...गीत ॥
मानव तन उत्तम कुल प्राणी, शुभ करमों से पाय।
विना भजन के व्यर्थ गमावे, सो मूरख कहलाय...गीत...॥
शबनम सम जीवन है, तिसपर काल रहा मँडराय।
कर तू 'रतन' भजन जिनवरके, जिससे शुभ गति पाय....गीत॥

भजन नं० ४३

तर्ज—(ओ नाग कहीं जा बसियो रे)

यो जग झूंठो रँग रसियो रे, यामें भूल न फँसियो रे ॥
व्यर्थ मगन तू किसपै होवे, यहाँ कौन हैं प्यारे।
ये तो जनम मरण के फेरे, बना दिये करतारे ॥
यो मोह प्रबल सठ हठियो रे, यामें भूल न फँसियो रे ॥
फूल के जैसी सुन्दर कोमल, है यह तेरी काया।
भूषण, वसन पहिन ऊपर से, इसको खूब सजाया ॥
पर अन्त भूलि में बसियो रे, यामें भूल न फँसियो रे ॥
आज 'रतन' जो तेरे साथ है, कल ना साथ रहेंगे।
दो दिन के मेहमान सभी हैं, ये सब कूच करेंगे ॥
तू मोह न इनसे करियो रे, या में भूल न फँसियो रे ॥

भजन नं० ४४

तर्ज—(मेरे भगवान तू मुझको यूँही ..)

अरे मन तू सदा दिल में प्रभू की याद रहने दे ।
जगतके व्यर्थ पचड़ों से तू दिल आजाद रहने दे ॥
तेरे गीतों में सच्चे भाव हो गर ईश भक्ती के ।
जगत फिर भी तुझे 'बगुला' कहे तो खूब कहने दे ॥
जगत जंजाल में फँसकर प्रभूको भूलने वाले ।
घड़ी पल तो लगी प्रभु भक्ति में फरियाद रहने दे ॥
'रतन' हो लीन भक्ती में सिखा दुनियांके लोगोंको ।
प्रभू की भक्ति से जग गुलशने आबाद रहने दे ॥

भजन नं० ४५

तर्ज—(दूर कोई गाये, धुन ये सुनाये)

वीर प्रभु आये, हर्ष बढ़ाये, कुण्डल नगरियाँ रे ।
बाजैं हैं बधैयाँ रे ॥
जगके अन्दर धधक रहे थे पापाग्निके शोले ।
होमकुण्ड में जलते थे, जीते पशुओं के टोले ॥
बाजैं हैं बधैयाँ रे ॥
यौवन में घरबार त्याग कर पहुँचे वन में वीर,
बारह वरष 'रतन' तप करके, मेटी जगकी पीर ।
आनन्द छाये, मंगल गाये, कुण्डल नगरियाँ रे ॥
बाजैं हैं बधैयाँ रे ॥

भजन नं० ४६

तर्ज—(तू गंगा की मौज में जमुना की धारा)

तू सिद्धार्थ नन्दन और त्रिशला दुलारा, करेंगे मनन।
तुम्हारा तुम्हारा हो''॥
जो तुम हो खिवैया तो पतवार मैं हूं।
अगर तुम हो सागर तो इक धार मैं हूं॥
करम सैन्य के वीर तुम हो जितैया।
फँसी आके मँझधार मेरी यह नैया॥
चले आओजी चले आओ, नैया को देने सहारा,...हो करेंगे॥
भला कैसे टूटेंगे बन्धन करम के।
नहीं जानते हम मरम जब धरम के॥
ये सातों विषय सब तरह घेर लेंगे।
'जगत जाल' सत-पथ पै चढ़ने ना देंगे॥
तब कैसे 'रतन' को मिलेगा सहारा...हो करेंगे मनन॥

भजन नं० ४७

तर्ज--(चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है)

वीर के गुण गाऊं मैं, दिन चाहे रात हो।
तुम्ही तात, तुम्हीं भ्रात, तुम्हीं पितु मात हो॥
वीर तेरी भक्ति में, श्रद्धा जो हो गई।
करमों की सेना भी, मुँह ढक के सो गई॥
क्योंकि कर्म जीतने में, तुमही विख्यात हो''॥

वीर तेरे चरणों में प्राणी जो आ गया।
स्वर्गों की संपद सुहानी वो पा गया॥
दुःख सब जाय भाग, सुख का प्रभात हो''तुम्हीं तात'''॥
शान्त छवि तेरी जब नयनों में छा गई।
मनके अँधियारे में ज्योति जगमगा गई॥
धन्य वीर चरणों में 'रतन' का माथ हो'''तुम्हीं तात'''॥

भजन नं० ४८

तर्ज—(छोड़ बाबुल का घर)

छोड़ मिथ्या भ्रमण, मोहे सच्ची शरण, आज आना पड़ा।
हो, हो, हो आज आना पड़ा॥
चारों गतियों में गोते लगाता था मैं।
अपना दुख दर्द सबको सुनाता था मैं॥
अब लगी वीतरागी से सच्ची लगन, दरपै आना पड़ा।
हो, हो, हो आज आना पड़ा॥
शान्त मूरत प्रभू की है कैसी भली।
खिल गई दर्श पाते ही मनकी कली॥
है यही चाह अरचू मैं नित जिन चरण, मनको भाना पड़ा।
हो, हो, हो आज आना पड़ा॥
वह सुपथ वाहिनी जिन की वाणी सुनी।
जिसको रटते निरन्तर ऋषि औ मुनी॥
जिसने अपना लिया सच्चा जिनपथ 'रतन' मुक्ति पाना पड़ा।
हो, हो, हो आज आना पड़ा॥

फानी दुनिया

भजन नं० ४६

प्राणी यह दुनिया है फानी ।
क्षणभंगुर जग की ममता में, क्या है आनी जानी ।
जन्म धार इक दिन आता है, ढोल सुनाने बजवाता है ॥
वंश नाम रखने को मानो, प्रगटी एक निशानी ॥प्राणी०॥
जब जग कूँच नकारा बजता, ठाठ सुनहरी मनुआ तजता ।
मरघट में जाकर हो जाती, तेरी पूर्ण कहानी ॥प्राणी०॥
झूंठा जग झूंठे सब नाते, स्वास गये फिर आग लगाते ।
मुर्दा होने पर बतला फिर, कौन करे मेहमानी ॥प्राणी०॥
दूषित कार्य सदा तू करता, नर्क यातना से नहीं डरता ।
धर्मनीति सत्-पथ पर चल, मत कर मनुआं नादानी॥प्राणी०॥

भजन नं० ५०

तर्ज—(तू मेरा सांवरा कातिल है यह दिल तेरा है)
किसे तू अपना समझता है कौन तेरा है ।
जगत सराय है दो दिन का यहाँ डेरा है ॥
ज्यों वनके पंछी बसेरा हैं रात्रि भर करते ।
त्यों जग भी तेरे लिए रैन का बसेरा है ॥
यह जिन्दगी का शमा जलता रहेगा कब तक ।
लगेगा काल का झोंका तो फिर अँधेरा है ॥
मोहकी मदिरा को पी आज हो रहा गाफिल ।
होश आने पै कहेगा न कोई मेरा है ।

भीम अर्जुन न रहे, ओ, न रहे 'रामो लखन' ।
सभी को काल ने इक रोज आन घेरा है ॥
न साथ लाया तू कुछ, साथ न कुछ जाने का ।
यहीं रहेगा पड़ा ठाठ यह सुनहरा है ॥
इसलिये मान 'रतन' वीर भजन अब करले ।
सिवा भगवान की भक्ति के सब बखेड़ा है ॥

भजन नं० ५१

तर्ज—(दम भर तो नजर तू फेरे)

जिनवर के भजन तू करले, ओ बन्दे ···वे भवसे पार कर देंगे ।
पाप का भार हर लेंगे ॥

नित चलता है पाप के रस्ते, कर विषयों का तू साथ ।
विषय नरक की खान है बन्दे, यह है सच्ची बात ॥
सत्पथ पै अब लग जारे, ओ बन्दे ···वे भवसे पार कर देंगे ।
पापों का भार हर लेंगे ॥

तू कौन यहाँ क्यों आया, कुछ इसका तो कर ध्यान ।
इस जगती की माया में तू, क्षण भर का मेहमान ॥
इसलिये पहुँच जिन शरने, ओ बन्दे···वे भवसे पार कर देंगे ॥
पापों का भार हर लेंगे ॥

जग माया में फँसकर तू, सद् राह न जाना भूल ।
वीर भजन नित करना बन्दे, यह जीवन का मूल ॥
तू 'रतन' जिनन्द गुण गा रे, ओ बन्दे ···वे भवसे पार कर देंगे ॥
पापों का भार हर लेंगे ॥

भजन नं० ५२

वीर की महिमा

(तर्ज—वह देखो कयामत चली आ रही है !)

महावीर तेरी निराली है महिमा,
महिमा को सारा जहाँ गा रहा है।
अहिंसा का तुमने दिखाया था जलवा,
उसी का सुयश विश्व में छा रहा है ॥
महाकाल विकराल था जब समय तब,
लिया था जनम तुमने कुण्डल नगर में।
हुई धन्य त्रिशला वह जननी तुम्हारी,
कि जिसने जने तुमको जगदुःख हरने।
पिता धन्य सिद्धार्थ राजा कि जिनके,
हुये वीर से पुत्र नयनों के तारे।
वह धरणि भी है धन्य के योग्य सचमुच,
चरणचिन्ह अंकित है जिनपर तुम्हारे ॥
स्वयं धन्य हो तुम, महामोक्ष वासी।
ये मस्तक नमन को झुका जा रहा है ॥ महावीर०॥
यूँ बचपन को तजकर हुये जब युवा तुम,
किया गौर दुनियां के वातावरण पर।
लगा गहरा आघात दिल पर लखी क्रूर,
हिंसा की ज्वाला धधकती धरणि पर ॥

मचा त्राहि-त्राहि का कोहराम चहुँ दिशा,
नहीं शांति की ठौर जगमें थी बाकी।
किया दानवी रूप मानव ने धारण,
मिटी शाख दुनियां से मानों दया की॥
और मानव का देखा अजब हाल तुमने,
कि विपरीत पथ पर बढ़ा जा रहा है॥महावीर०॥
यूं पाखण्ड मिथ्यात्व फैले थे जगमें,
निरादर था होता सती नारियों का।
सदाचार को भूल बैठी थी दुनियां,
था बेहद बढ़ा जोर बदकारियों का॥
हुआ करती थी रात-दिन हर तरफ धर्म,—
के नाम पर मूक पशुओं की हिंसा।
बहा करती नदियां रुधिर की प्रबल,
कर गई कूच मानो जगत से अहिंसा॥
दशा देश की लख किया दिल में निश्चय,
वतन का पतन अब हुआ जा रहा है॥महावीर०॥
उदासीन हालत जो देखी तुम्हारी,
तो बोले पिता—बात क्या है बताओ।
क्या चिन्ता लगी है तुम्हें लाडले,
साफ कहदो न हमसे जरा भी लजाओ।
अब बैठो सिंहासन, सँभालो यह शासन,

हमें दो धरम ध्यान करने का मौका।
यह जीवन है शबनम के मानिन्द आखिर,
कि क्या जाने किस वक्त दे जाय धोखा।
करो व्याह शादी, न डोलो कुंवारे,
उमर का तकाजा यह बतला रहा है ॥महावीर०॥
पिता के वचन सुन कहा तुमने भगवन,
कहो किस तरह व्याह शादी रचाऊं ?
यह प्यारी प्रजा तो पड़ी कंटकों में,
औ मैं रंग–महलों में मौजें उड़ाऊं।
तड़फते सिसकते यूं मुर्दा दिलों पै,
कहो किस तरह आज शासन जमाऊं।
नृपति-पुत्र हूँ तो हुआ 'हूँ मैं मानव',
हृदय बज्र का किस तरह से बनाऊं।
यूं माता–पिता का उपदेश प्रभु के,
दिलको जरा भी नहीं भा रहा है ॥महावीर०॥
नृपति-पुत्र थे तुम कमी क्या तुम्हें थी,
खजाने भरे थे धनो मालो जर से।
मगर रो पड़ा तब हृदय देश के हित,
निकल ही पड़े एक दिन अपने घर से।
कुसुम से सुकोमल तजी तुमने सईया,
तजे राज महलों के सब सुख सुहाने।

तजा प्रेम माता पिता का स्वजन का,
तजे सब परिग्रह औ' मालो खजाने।
था देखा सभी ने कि सिद्धार्थ-नन्दन—
साधुत्व धारण किये जा रहा है ॥महावीर०॥
कठिन की तपस्या भयानक वनों में,
औ बारह बरस में महाज्ञान पाया।
उसी ज्ञान बलसे मनुष्यों को ही क्या,
पशु पच्चियों को भी अपना बनाया।
न मारो किसी को करो रहम सब पर,
यही सत्य सन्देश जग को सुनाया।
औ अज्ञानियों को कुपथ से हटाकर,
सही ज्ञान के पथ पे चलना सिखाया।
मगर आज फिरसे वही देश भारत,
रसातल में दिन-दिन धसा जा रहा है ॥महावीर०॥
बने आज मानव महामूढ़ दानव,
धरम छोड़ कर दुष्करम कर रहे हैं।
औ हिंसा का लेकर सहारा अधम जन,
घड़े पाप के रात दिन भर रहे हैं।
उपासक तो है वीर तेरे मगर हम,
नहीं सत्य सन्देश अपना रहे हैं।
ज्यों चलती हैं दुनियाँ में दूषित हवायें,
'रत्न' नित उसी में बहे जा रहे हैं ॥महावीर०॥

भजन नं० ५३

राजुल के हृदयोद्गार

तर्ज—(मोहब्बत में ऐसे कदम डगमगाये)

शैर—मेरी तकदीर में कैसी फिजां आई है।
प्यारे नेमि ने मेरे साथ की निठुराई है॥
इसे समझूँ है यह परिणाम अशुभ कर्मों का।
मेरी बिगड़ी हुई किस्मतकी यह रुसवाई है॥
मोहब्बत अगर थी कदम क्यों डिगाये।
जमाना क्या समझेगा व्याहने क्यों आये॥ ॥ १ ॥
दया कर चले 'मूक पशु' आंसुओं पै।
मेरे आंसुओं पै रहम कछु न लाये, जमाना क्या····॥२
पसीजे थे पशुओं की चीत्कार सुनकर।
वहींसे गये लौट यहाँतक नआये, जमाना क्या···॥३
नव भव रहे मेरे जीवन के साथी।
औ दसवें में जाते हो प्रीती छुड़ाये, जमाना क्या····॥४
छुपोगे कहां तक बन तपस्वी यूं नेमि।
'रतन' बन तपस्विन यह 'राजुल' भी आये, जमाना ···॥५

भजन नं० ५४

तर्ज—(तेरे प्यार का आसरा....)

विषयों में फँसकर सुख चाहते हो।
बड़े नासमझ हो यह क्या चाहते हो॥ टेक॥

झूठे हैं माता झूठे पिता हैं,
झूठी ये सारी दुनिया यहाँ पर।
नहीं साथ में तेरे कोई भी जाये,
कि नाता तुम इन से जोड़ना चाहते हो ॥ बड़े....
जरा सोच लो पाप करने से पहिले,
कि जाना भी पड़ता है नर्कों में पहले।
इजाजत तो लेलो अपने से पहिले,
कि तुम पाप को बाँधना चाहते हो ॥ बड़े....
सप्त व्यसन को जड़ से त्यागो
कंदमूल को भी जड़ से त्यागो।
झूठ कपट से मोह हटाओ,
अगर 'खेम' मुक्ति को पाना चाहते हो ॥ बड़े....

भजन नं० ५५

तर्ज—(है अपना दिल तो आवारा)

है मेरा मन तो वीर में, न जाने और को अब ये ॥टेक॥
दुनिया ने भुलाया, विषयों में फँसाया,
बहुतों ने कहा ये तो भी न माना।
हूं मैं भक्त अब तेरा, न जाने औरको अब ये ॥ १ ॥
अजब है चेतन न इसकी गिनती,
दुनिया से बेगाना, तन से जुदा।
है दीवाना ये वीरा का न जाने औरको अब ये ॥२॥

जमाना देखा सारा कोई न हमारा,
ये मन मेरा न हुआ किसी का।
है भक्ति मैं ये दीवाना न जाने औरको अब ये ॥३॥
जब मन ने चाहा तुमको मिलते तुम हमको,
जहां पै गया वहीं ये हारा।
'खेम' जमाने भरका पापी है नजाने और को अब ये ॥४॥

भजन नं० ५६

दीपावली महोत्सव मिलकर मनाओ भाई।
महावीर निर्वाण मिलकर मनाओ भाई॥
जन्में थे वीर भगवन देवों ने रत्न वर्षाए,
स्वर्गों से देवता और इन्द्र भी तो आए॥
ले गये थे उनको पांडुक शिला पै भाई॥ दीपावली

महावीर स्वामी ने बचपन में दीक्षा धारी,
कीना घोर तप उन केवलज्ञान को तो धारा।
महावीर गये थे मुक्ती इस दिन ही तो भाई ॥दीपावली

अमावस्या के दिन ही तो महावीर ने मुक्ति पाई।
दीपावली के दिन देवों ने रोशनी करवाई।
इसलिये ही दीपावली मिलकर मनाओ भाई ॥दीपावली

मायाजाल को गर छोड़ोगे नहीं तुम,
पाओगे नहीं सुख संसार में तो अब तुम।
'खेम' वीर महोत्सव सबसे बड़ा है भाई॥ दीपावली

भजन नं० ५७

तर्ज—(तेरे प्यार का आसरा चाहता हूं)

दुनियां में रहकर मुक्ति चाहते हो।
बड़े ना समझ हो तुम सुख चाहते हो ॥ टेक ॥

लाख चोरासी योनियों में फँसकर,
बहुत दुःख पाया तूने वहां पर,
नहीं सुख तूने वहाँ पै तो पाया,
फिर भी योनियों में फँसना चाहते हो ॥ बड़े०

जो भी फँसता है विषयों में आकर,
वोही रुलता है दुनियाँ में आकर,
नहीं फँसना तुम विषयों में आकर,
इनसे अगर छूटना चाहते हो ॥ बड़े ० ॥

पर की स्त्री को तम त्यागो,
वेश्या – सेवन को भी त्यागो,
नहिं करना तुम पाप यहाँ पर
अगर सुख को पाना चाहते हो ॥ बड़े० ॥

गलत सारे दावे गलत सारी दुनियाँ,
निभेगी नहीं यहां हर जीवन की घड़ियां,
वहां जिन्दगी है कर्मों के वश में
कि 'खेम' कर्म को बांधना चाहते हो ॥ बड़े० ॥

भजन नं० ५८

तर्ज—(ओ नाग कहीं जा बसियो रे)

हो मगन प्रभू को भजियो रे, सब जंजाल को तजियो रे,
सब माया जाल को तजियो रे, प्रभु का नाम सुमरियो रे ।।टेक।।
पाया है नर तन तूने चेतन भजले वीरा प्रभु को,
वीरा प्रभु ही सच्चे हैं साथी वो तारेंगे तुझको ।
तू उनका नाम नित जपियो रे ।। प्रभु...
पाया था मुसकिल से तूने नरतन को ये चेतन,
मत फँसना दुनियां के अन्दर, अब तो ये चेतन ।
विषयों में कभी मत फँसियो रे ।।प्रभु...
जब भी तुझ पर संकट आये उनका नाम सुमरियो,
गरसच्चा सुख चाहो रे चेतन, तो वीर प्रभू को भजियो,
तू निशि में कभी न खइयो रे ।। प्रभु...
भक्तों पर जब संकट आये, वो ही उनके कष्ट मिटाये,
गर तुझ पर भी संकट आयेगा वो ही दूर हटायें,
नित वीर प्रभू को भजियो रे ।। प्रभु...
तारे तुमने लाखों पापी, हमको भी पार उतारो,
'खेमचन्द्र' की अर्जी सुनिये, मुझको पार उतारो ।
नित स्वाध्याय को करियो रे ।। प्रभु...

भजन नं० ५६

तर्ज—(मोरी छम छम बाजे पायलिया)

मोरी पार लगादो नावरिया, तोरी शरण है कौंवरिया ॥टेक॥

अष्ट कर्मों ने हाय सताया मुझे,
गति चार चौरासी रुलाया मुझे।
भू जल अग्नि हुआ, वायु वनस्पति हा,
धारी इक इन्द्रिय काया स्थावरिया ॥ १ ॥

जैसे मुश्किल से मिलता है चिन्तामणी,
तैसे पर्याय पाई कभी त्रस तनी।
हा दो इन्द्री भया, ते चौइन्द्री थया,
भया लट और कीड़ी में भांवरिया ॥ २ ॥

कभी पंचइन्द्रिय होकर पशु जो हुआ,
छेदन भेदन व बंधन का है दुःख सहा।
खाई नरकों की मार, जहाँ कष्ट अपार,
मोरी पापों की डूबी जो गागरिया ॥ ३ ॥

कभी स्वर्ग मिला तो भी न पाया चैन,
हा मनुष्य गति है प्रकट दुःखदैन।
ऐसे भ्रमता फिरा, कहीं सुख न मिला,
मैंने शिवपुर की पाई न डागरिया ॥ ४ ॥

भजन नं० ६०

तर्ज—(तेरे प्यार का आसरा चाहता हूं)

प्रभु वीर का आसरा चाहता हूं, यही नाम हरदम रटा चाहता हूं।।
प्रभू नाम को जो रटा चाहते हो।
तो दुनियां में फिर क्यों फँसा चाहते हो ।।टेक
मुझे दुष्ट पापी कर्म हैं सताते।
कभी नरक के नारकी हैं बनाते ।।
करूं क्या मैं वर्णन जो दुख हैं दिखाते।
नरक वेदना से बचा चाहता हूँ ।। १।।
पशू की जो काया कभी मैंने धारी।
मरा भूखा प्यासा लदा बोझ भारी।
छेदन की भेदन की मारें करारी।
प्रभू उन दुखों से हटा चाहता हूं ।। २।।
गति देवता की अगर मैंने पाई।
झुरा देख कर के मैं सम्पत पराई।
मैं छह मास रोया निकट मौत आई।
मैं सुरपद न ऐसा लिया चाहता हूं ।। ३ ।।
मनुष्य जन्म पाकर रहा तन का रोगी।
अनिष्ट और इष्ट संयोगी वियोगी ।।
रहा रात दिन मैं तो विषयों का भोगी।
चहुँ गति से होना रिहा चाहता हूँ ।। ४ ।।

खतम जब तलक ना यह आवागमन हो।
तेरी भक्ति में मन ये निश दिन मगन हो।
'शिवानन्द' पाऊँ यह हरदम लगन हो।
कि तुझ जैसा मैं भी हुआ चाहता हूँ ॥ ५

भजन नं० ६१

तर्ज—(बांसुरिया फिर से बजा दो…)

विषयों में मत तू लुभा, हो जिया विषयों में मत तू लुभा।
होगा न तेरा भला, हो जिया होगा न तेरा भला ॥टेक॥

कर्मों के बन्धन से जकड़ा हुआ है,
माया के जालों से पकड़ा हुआ है,
बतला तुझे क्या मिला–हो जिया…॥ १ ॥

सुन रे अयाने, क्यों नहाहिं माने,
कर्तव्य को अपने क्यों नाहिं जाने,
जीवन की ज्योती जगा–हो जिया…॥ २ ॥

काहे को तू करता है मेरा मेरा,
ये तो है चिड़ियों का रैन बसेरा,
अब तो 'अभय' मन लगा–हो जिया'॥ ३ ॥

भजन नं० ६२

तर्ज—(जरा नजरों से कह दो जी)

कोई जा करके कहदो जी, पिया गिरनार ना जाये।
हुई क्या भूल है मुझसे, कोई इतना तो समझाये ॥टेक॥
कोड़ छप्पन चढ़े यादव, सजी बारात थी भारी।
आये कृष्ण बलभद्र, हुई तोरण की तैयारी।
शोर बारात का सुनकर, पशू थे हाय चिल्लाये ॥१॥
लगे तब पूछने नेमी, रुके हैं किस लिये हैवां।
कहा तब सारथी ने यूं, हैं चंद घड़ियों के ये महमां।
मांसाहारी कई राजा, प्रभो बारात में आये ॥२॥
वचन ऐसे प्रभू सुनके, हुए तत्काल वैरागी।
दुखी पशुओं को जो देखा, तुरत दिल में दया जागी।
हा कँगना हाथ का तोड़ा, प्रभू गिरनार को धाये ॥३॥
दया पशुवों पै थी आई, नहीं मुझ पै तरस खाया।
मेरी नवभव की प्रीती को, सखी इक छिनमें विसराया।
बड़ी मैं तो अभागिन हूं, प्रभूदर्शन नहीं पाये ॥४॥
उतारे वस्त्र आभूषण, धरा मुनिराज का बाना।
तजा है राजवैभव को, अथिर संसार है जाना।
मेरी कोई सखी मुझको, डगर गिरिवर की बतलाये ॥५॥
मुझे आतम की सुधि आई, नहीं भोगों की है इच्छा।
प्रभू चरणों में जा करके, धरूंगी मैं भी जिनदीक्षा।
सती धनि है तुझे राजुल, तेरा'शिवराम'गुण गाये॥६॥

भजन नं० ६३

तर्ज—(सब कुछ सीखा हमने)

आए हैं अब स्वामी जी शरण तिहारी।
सुधि लेना अन्तरयामी, हैं दर के पुजारी ॥टेक॥
कर्मों ने हमको है सताया, लाख चौरासी में भटकाया।
नरक गति में कभी लेजाकर कष्ट है नाना जो दिखलाया।
कथा हा उसकी हम से तो जावे न उच्चारी ॥१॥
पशुगति में अति दुख पाए, भूखे प्यासे हैं तड़फाए।
छेदन भेदन बंधन भारी, किसी ने खंजर कंठ चलाए।
है सर्दी गर्मी झेली, हा मार है करारी ॥२॥
मनुष्य गति में इष्ट वियोगी, कभी हुये हैं अशुभ संयोगी।
कोई पुत्र बिना नित झूरें, कोई दरिद्री तन के रोगी।
सन्तान है पाई खोटी, और नारी कलिहारी ॥३॥
सुरगति में भी नहीं सुखपाए, परसम्पत्ति लखकर खुन्साये।
गले की माला जब मुरझाई, मरण समय में है विल्लाये।
शिवपुर पहुँचादो अब तो, यह अरज हमारी ॥४॥

भजन नं० ६४

तर्ज—(तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो)

तुम्हीं हो स्वामी हितू हमारे,
हितू न कोई सिवा तुम्हारे ॥ टेक ॥
नहीं हो रागी नहीं हो द्वेषी, हो विश्वज्ञाता पर हितैषी।
हो दीन जनके तुम्हीं सहारे, हितू न कोई सिवा तुम्हारे ॥१

हो वीतरागी फिरभी दया कर, तुमने उभारे हैं भील तस्कर।
पशु और पत्ती हैं तुमने तारे, हितू न कोई० ॥२
शरण तुम्हारी जो कोई आये, हैं कष्ट उसके तुमने मिटाये।
तुम्हींने सब के कारज सँवारे, हितू न कोई० ॥३
हैं तुमने तारे हजारों धर्मी, हां पार करदो ये इक अधर्मी।
शिवराम इतनी अरज गुजारे, हितू न कोई० ॥४

भजन नं० ६५

तर्ज—(जब प्यार किया तो डरना क्या)

अब कर्म बली से डरना क्या, अब कर्म बली से डरना क्या?
है सामने मूरत वीर प्रभू की, उनकी छबि का कहना क्या?
अब कर्म बली से डरना क्या ॥टेक॥
मैना सती ने तुमको ध्याया, अपने पती का कुष्ट मिटाया।
सीता ने जब ध्यान किया तो, पावक का जल होना क्या ॥१
सेठ के मन में पाप जो आया, सागर में श्रीपाल गिराया।
नौका उसकी पार लगाकर, शील की रत्ता करना क्या ॥२
जो भी कोई शरणे आया, इच्छित फल को उसने पाया।
'अभय' यही विश्वास हृदय में, ध्यान बिना अब जीना क्या॥ ३

भजन नं० ६६

तर्ज—(महफिल में जल उठी शमा परवाने के लिये)

रत्ताबन्धन आया है जग जीवन के लिये।
प्राणिमात्र को जीवदया सिखलाने के लिये ॥टेक॥
बलि ने अत्याचार किया, तब आसन देव कँपाये थे।

विष्णुकुमार ने सप्त शतक, मुनियों के प्राण बचाये थे ॥
बली पीठ पर डम रक्खी, मुनिरक्षा के लिये, प्राणि...॥१॥
वीरो हम सबको मिल करके, यह सन्देश सुनाना है ।
घर-घर में जाकर फिर से, वह रक्षापाठ पढ़ाना है ॥
देश धर्म का मस्तक उन्नत, करने के लिये, प्राणि...॥२॥
चेतो वीरो मोह नींद में, पड़े क्यों सोते हो ।
'अभय' बनो तुम निस्पृह, होकर रहा सहा क्यों खोते हो ॥
कर दो तन मन धन सब, अर्पण परहित के लिये, प्राणि...॥३॥

भजन नं० ६७

तर्ज—(तेरे सुर और मेरे गीत)

सुन मेरे मनवा जग की ये रीत,
कोई किसी का न है झूठी प्रीत ॥टेक॥
कर्मों का है साम्राज्य यहां—चोर लुटेरों का डेरा यहां,
पाके समय तुझको लूटेंगे तब-पुकारेगा किसको बता तू यहां,
कर्मों के आगे न हो तेरी जीत—कोई किसी...॥१।
जाल विषय का है छाया हुआ—चक्कर में इनके तू आया हुआ,
रूप अपना तूने न जाना कभी—चारों गती भरमाया हुआ,
गाता रहा मोह के ही तू गीत—कोई किसी...॥२॥
प्रभु की शरण जो नहीं आयगा—पीछे से फिर तूही पछतायगा,
'अभय' समझले प्रभुबिन यहाँ—नहीं कोईभी तेरे काम आयगा,
जो धारे संयम हो शिव मीत—कोई किसी''॥३॥

भजन नं० ६८

तर्ज—(वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया)

कुण्डलपुर का श्री महावीरा, जग की आंखों का तारा।
त्रिशला नंदन, हरिकृत वंदन, सिद्धारथ का राज दुलारा ॥टेक
धर्म नाम पर हवन यज्ञ में, पशु बलियें दी जाती थीं।
बेजवान पशुओं के खूं से, होली खेली जाती थी।
दीन दुखी जीवों का भगवन, आकर तुमने कष्ट निवारा ॥१
जब जब तेरे भक्तों पर भी, संकट कोई आया था।
बने तुम्हीं ही संकटमोचन, तुमने कष्ट मिटाया था॥
सीता मनोरमा चन्दना का, दृष्टान्त दे रहा ग्रन्थ हमारा ॥२
तेरे इस उपदेश को भगवन, हम फिर भूले जाते हैं।
विचलित हुए धर्म से अपने, इस कारण दुख पाते हैं।
सत्यमार्ग पर लाए हमें जो, तुम बिन भगवन कौन हमारा ॥३
अन्धकार के बीते युग में, तूने शमा जलाई थी।
भक्त जनों की नैया भगवन, तुमने पार लगाई थी।
मेरी नाव भी पार लगादो, है कैलाश ने आन पुकारा ॥४

भजन नं० ६९

अध्यात्म के शिखर पै, सबको दिखाओ चढ़के।
यह धर्म है निरापद, धारो हृदय से बढ़के॥ टेक॥
जड़ से लगाके प्रीती, अब तक करी अनीती।
अपने को आप देखो, आतम से जोड़ नीती।

भवभ्रमण से बचोगे, सन्मार्ग को पकड़ के ॥ १ ॥
जग भोग रोग घर है, पद पद में इसमें डर है ।
रागादि भाव तज दो, नरकों की ये भँवर है ॥
ऊँचे तुम्हें है उठना, माया से युद्ध लड़के ॥ २ ॥
ज्यों अंजली का पानी, ढलती है जिन्दगानी ।
मुश्किल है हाथ लगना, ऐसी घड़ी सुहानी ॥
'सौभाग्य' सजले माला, रत्नत्रयी की गढ़ के ॥ ३ ॥

भजन नं० ७०

इन कर्मों के धोके में, कोई न आये ।
ये इक दिन हँसाये, तो सौ दिन रुलाँये ॥
सुबह राज का ताज, शिर पर धरा था ।
मगर कर्म का चक्र, उल्टा फिरा था ॥
दुपहरी में श्री राम, वन को सिधाये ॥ टेक ॥
हरिश्चन्द्र राजा, बड़े सत्यधारी ।
की चण्डाल के, कर्मवश तावेदारी ॥
इन कर्मों ने पुत्रादि, भी हैं बिकाये ॥ टेक ॥
इन कर्मों के धोखे में, जो कोई आये ।
उसे नाच नाना , तरह से नचाये ॥
'रतन' कर्म से अब , प्रभू ही बचाये ॥ टेक ॥

भजन नं० ७१

जन्म सफल भयो आज, प्रभु दर्शन पायो ।
जागो जब ज्ञानसूर, भागो मिथ्यात्व दूर ॥
आया प्रभु के दरबार, सकल दुख गमायो ॥ टेक ॥
जाको यश जग मँझार, वरणत सुर नर अपार ।
लखि के छवी बार बार, चरणन चित लायो ॥ टेक ॥
प्रणमत चरणारविन्द, छूटत बहु कर्मफन्द ।
हाथ जोड़ "रतनचन्द्र" प्रभु को शिर नायो ॥ टेक ॥

भजन नं० ७२

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर, इक दरस भिखारी आया है।
प्रभु दर्शनभिक्षा पाने को, दो नैन कटोरे लाया है ॥ टेक ॥
नहिं दुनियां में कोइ मेरा है, आफत ने मुझको घेरा है ।
बस एक सहारा तेरा है, जग ने मुझको ठुकराया है ॥ १ ॥
धन दौलत की चाह नहीं, घरबार लुटे परवाह नहीं ।
मेरी इच्छा है तेरे दर्शन की, दुनिया से चित घबराया है ॥ २ ॥
मेरी बीच भँवर में नैया है, प्रभु तूं ही एक खिवैया है ।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने, भवसिन्धु से पार लगाया है ॥३॥
आपस में प्रीति वा प्रेम नहीं, प्रभु तुम बिन हमको चैन नहीं ।
अब भी तुम आकर दर्शन दो, त्रिलोक प्रभो अकुलाया है ॥४॥

भजन नं० ७३

चलो नाभि राजा के द्वार वधाई, बोलो वधाई है वधाई है।
ऋषभदेव ने जन्म लिया है, तीन लोक आनंद किया है
घर घर खुसियाँ मनाई हैं म० ॥ टेक ॥
सब नरनारी मंगल गावें, नृत्य करें, अरु ताल बजावें।
ऐसी लगन लगाई है, लगाई० ॥ टेक ॥
क्षीरोदधि सों जल भर लाये, सहस अठोत्तर कलश ढुराये,
निर्मल धार वहाई है० वहाई है ॥ टेक ॥
मुझको तेरा सरण बड़ा है, चरणों में गंभीर खड़ा है।
मुद्दत से आश लगाई है, लगाई है ॥ टेक ॥

भजन नं० ७४

तेरे दर का ये पुजारी, अब वे करार है।
चरणों में आन करके, करता पुकार है ॥ टेक ॥
संसार में भटकते, परेशान हो गया: हाँ परे०।
जो कष्ट मैने पाये, उनका न पार है ॥ टेक ॥
नर्कों की मार खाई, पशुओं के दुख सहे, हाँ पशु०।
स्वर्गों में सुख न पाया, नरतन असार है।
मेरी कहानी दुख की, तुमसे छिपी नहीं, हाँ तुमसे०।
विपदा में एक तूं ही, 'शिवराम' अधार है ॥ टेक ॥

भजन नं० ७५

महावीर स्वामी, मैं क्या चाहता हूं ?
नाथ तेरी शरण में, रहा चाहता हूं ।
दुखी दुनियाँ से, जुदा चाहता हूं ॥
कर्मों ने घेरा, मुझे डाकू बन के ।
अब इनसे छुड़ा दो, यही चाहता हूं ॥
नहीं और कोई, सहारा जहाँ में ।
कि तुम जैसा मैं भी, बना चाहता हूं ॥ टेक ॥
पड़ी है प्रभु मेरी, नैया भंवर में ।
लगादो किनारे, यही चाहता हूं ॥
न दुनियाँ की, दौलत मुझे चाहिये ।
कहें गंभीर केवल, मोक्ष निधि चाहता हूं ॥

भजन नं० ७६

मेरे मन मंदिर में आन, पधारो महावीर भगवान ।
भगवन तुम आनंद सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर ॥
निश दिन रहे तुम्हारा ध्यान ॥ टेक ॥
सुर, किन्नर, गणधर गुण गावें, योगी तेरा ध्यान लगावें ।
गाते सब तेरा यशगान ॥ टेक ॥
जो तेरे शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया ।
तुम हो दयानिधी भगवान ॥ टेक ॥

भजन नं० ७७

क्या मैं कहूँ भगवान, तेरी शरण में आके ।
गति कर्म ने कर दी, जो मेरी हाय ! सता के ॥१॥
मैं सोच रहा था सदा, अब सुख से रहूंगा ।
आनंद की धारा में, यहाँ निर्भय वहूँगा ॥
ये क्या थी खबर कर्म को, होगी न दया भी ।
रख देगा किसी दिन, मेरे अरमान मिटाके ॥ टेक ॥
उम्मीद थी मुझको, सभी अनुकूल रहेंगे ।
जीवन में शूल भी मेरे, तो फूल रहेंगे ॥
पर बन गये हैं आज, सभी अपने विगाने ।
वे सेकते हैं हाथ घर, में आग लगाके ॥ टेक ॥
अफसोस क्या करूं है, सुनी मैंने कहानी ।
श्रीपाल को कब लील सका, सिन्धु का पानी ॥
शूली न सुदर्शन को, कहीं काट सकी थी ।
बच जाते तेरे नाम की, सब टेर लगाके ॥ टेक ॥
आफत में पड़ रहा हूँ, लाचार हो गया ।
तेरे चरण का बस मुझे, आधार हो गया ॥
'कुमरेश' पर तू कर नजर, प्रभु अब तो दया की ।
दुख दर्द मिटा दे, मुझे विश्वास दिलाके ॥ टेक ॥

भजन नं० ७८

क्यों वीर लगाई देर, सुनी नहिं टेर, हमें न उबारा ।
दुनियाँ में कौन हमारा ।
ये दुख के बादल छाये हैं, हम बेबस हैं घबराये हैं
अब तुम्हीं कहो कित जांय, कहीं न सहारा ॥ टेक ॥
हम माया पर इतराये हैं, इस करनी पर पछताये हैं।
यह तुम्हीं देख लो, वही हाय दृग धारा ॥
दुनियाँ में कौन हमारा ॥ १ ॥
विषयों ने हमें लुभाया है, अज्ञान अँधेरा छाया है ।
अब सूझ रहा है, देव कहीं न किनारा ॥
दुनियाँ में कौन हमारा ॥ २ ॥
तुमने सब संकट टारे हैं, पापी से पापी तारे हैं ।
हम किस गिनती में रहे, हमें न सहारा ॥
दुनियाँ में कौन हमारा ॥ ३ ॥
हम तेरा दृढ़ विश्वास लिये, 'कुमरेश' हृदय में आश लिये।
अड़ गये पकड़कर यहीं, तुम्हारा द्वारा ॥
दुनियाँ में कौन हमारा ॥ ४ ॥

भजन नं० ७९

आज तो फसाना ये, सुनाना हो गया ।
जागो जागो सोते तो, जमाना हो गया ॥ टेक ॥

अर्जुन के तेज की वो, रही ना निशानी,
पड़ गये चेहरे पीले, मरी है जवानी।
वेष नौ जवानों का, जनाना हो गया ॥ १ ॥
राणा प्रताप से स्वदेश अभिमानी,
जाते रहे आज कहां भामा से वो दानी।
भारत चमन का वीराना हो गया ॥ २ ॥
आज तो सुहाते ना अध्यात्म के गाने,
किस्से पुराणों के तो हुए हैं पुराने।
अब तो सिनेमों का तराना हो गया ॥ ३ ॥
हिंसा की होती जाती है आज बढ़वारी,
मछली और अण्डों की बढ़ी पैदावारी।
आज बम्ब एटम निशाना हो गया ॥ ४ ॥
करते न माता पिता गुरुओं का आदर,
इसीलिये खाते हैं दर दर की ठोकर।
धर्म और कर्म तो रवाना हो गया ॥ ५ ॥
लड़कों की नीलामी का बाजार गर्म है,
खोल खोल सौदा करें आती न शर्म है।
लड़का नहीं मानता बहाना हो गया ॥ ६ ॥
"शिवराम" गला फाड़ फाड़ के चिल्लायो,
होता ना असर चाहे दवा लाख लाओ।
कौम का तो मर्ज ये पुराना हो गया ॥ ७ ॥

श्री वर्णीजी की अमर कहानी



सुनो सुनो ओ दुनियां वालो, वर्णी जी की अमर कहानी।
थे वर्णी जी पूज्य हमारे, और प्रमुख जो विज्ञानी ॥ टेक ॥

झांसी जिला बुन्देलखण्ड है, मध्यप्रदेश किनारा।
महरौनी तहसील मनोहर, ग्राम हँसेरा प्यारा॥
हीरालाल वैश्य के गृह में, थीं उजियारी दारा।
उनके गृह शुभ जन्म लिया था, नाम 'गणेश' दुलारा॥
धन्य-धन्य पुर मात-तात को, प्रकट किया जिन यह ज्ञानी ॥ टेक ॥

वीरमुक्ति संवत चौबिस सौ, अधिक एक बतलाया।
आश्विन कृष्ण चौथ दिन जन्में, सबका मन हर्षाया॥
जाति असाटी धर्म वैष्णव, इनके कुल में गाया।
आठ वर्ष की वय पाते ही, शिक्षारस लहराया॥
आदिम शिक्षाहित मडावरा, वसे साथ सब गृह प्रानी ॥ टेक ॥

शालानिकट जैनमंदिर में, हार्दिक नेह लगाया।
पितापुत्र प्रवचन सुनते थे, सुतचित धर्म समाया॥
दशवर्षीय स्वल्पवय में ही, निशिभोजन ठुकराया।
जैनधर्म प्रति प्रेम आपका, किन्तु न मां मन भाया॥
बनी रहे बस इसी हेतु मां, बेटे में खेंचातानी ॥ टेक ॥

तत्परता से पढ़ें कभी ना, डाट किसी की खाई।
चौदह वर्ष तनी आयू में, मिडिल पास की भाई॥
ज्ञान पिपासा यदपि अधिक थी, थी साधन दुचिताई।
करते सोच विचार असार, वर्ष पुनि चार बिताई॥
वर्ष अठारह में विवाह करने की अब धुन ठानी ॥ टेक ॥

ग्राम मलहरामें कुलीन, कन्या से परिणय कीना।
दैवयोगवश पिता भाइ ने, स्वर्गवास झट लीना।
मृत्युसमय धार्मिक सुपिता ने, दृढ़तर समझा दीना।
णमोकार पर प्रिय दृढ़ रहना, भूलो इसे कभी ना॥
तातवचन उरधार गहा शिर, बोझ बनज अति दुखदानी॥ टेक॥

ग्राम मदनपुर की शाला में, फिर पढ़ने को आये।
चार साल के बाद नार्मल, ट्रेनिंग को अकुलाये॥
गये आगरा एक मास में, नार्मल पढ़ पा आये।
इकदिन किसी जातिभाई ने, भोजनहेतु बुलाये।
भोजनहेतु निषेध सुना जब, माता रिप बहु उमड़ानी॥ टेक॥

पंचों ने तत्काल आपका, बहिष्कार जब कीना।
छोड़ जन्मभू शीघ्र आपने, बास 'जतारा' कीना॥
वर्णी मोतीलाल कड़ोरेलाल, संग वहाँ कीना।
और जिनागम के अध्ययन में, उनके सह चित दीना॥
शाला में फिर वहाँ सुशिक्षक, हुये जिनागम विज्ञानी॥ टेक॥

थी सिंघैन ग्राम सिमरा में, एक चिरोंजावाई।
तुमको पुत्रसमान गिना जिन, तुमने धार्मिक भाई॥
लाखों की सम्पत्ति उन्होंने, तेरे हेतु गमाई।
तो भी खेद न लाई मन में, एक रती भर भाई॥
जयपुर भेजा तुम्हें उन्होंने, पढ़ने को वर जिनवानी॥ टेक॥

पढ़कर लश्कर रुके धर्म, शाला में सुख पाया।
दैवयोग से किसी चोर ने, सब सामान चुराया।
आना पांच जेब में निकले, उनने काम बनाया॥
चना चबा इक इक पैसे के, उनका हुआ सफाया॥
छाता छह आने विक्रय कर, फिर भी आगे की ठानी॥ टेक॥

गये न सिमरा लाज विवश हो, था सामान गमाया ॥
मित्र साथ हो गये खुरई फिर, नर्तन कर्म नचाया ।
देख आपको भोला भाला, जान असाटी काया ॥
पण्डित पन्नालाल किया अप, मान कोप मय कटुवानी ॥ टेक

पा अपमान खिन्नचित होके, अपने पुर फिर आये ।
मां ने सोचा खाय ठोकरें, बुद्धि ठिकाने लाये ॥
तीन दिवस घर रह नयनागिर, कुण्डलपुर को धाये ।
आगे आगे बंदे तीरथ, कष्ट अनेक सताये ॥
आये फिर बैतूल नगर में, देखो कर्म निशानी ॥ टेक ॥

लोभविवश हो द्यूतखेल में, कतिपय दाव लगाये ।
गांठ मांहि थे तीन रुपैया, क्षण में वहां गमाये ॥
कौड़ी पास बची जब नाहीं, मजदूरी ललचाये ।
कोमलतन तनुधूप लगे ही, कमल यथा कुम्हलाये ॥
तज मजदूरी भूखे प्यासे, गजपन्था की धुन ठानी ॥ टेक॥

आर्वीवासी एक सेठ से, हुआ समागम प्यारा ।
साथ आपको लेकर के वह, मुम्बापुरी सिधारा ॥
वहां आठ आना देकर के, उसने लिया किनारा ।
किन्तु दैव ने वहां आपको, झट ही दिया सहारा ॥
गुरुदयाल बाबा खुरजा से, मेल मिला सुखदानी ॥ टेक ॥

बाबा जी को शुभसम्मति से, कापी-विक्रय करते ।
जैसे तैसे आधा पौना, उदर आपना भरते ॥
शिक्षालाभ करें तन मन से, कष्ट अनेकों सहते ।
जीवाराम गुरू ढिग में वहां, शब्दशास्त्र भी पढ़ते ॥
कर प्रयाण फिर जैपुर पहुँचे, पढ़ने को जिनवानी ॥ टेक ॥

पत्र मिला जैपुर में सहसा, पत्नी स्वर्ग सिधारी ।
खेद किया ना नेक विचारा, शल्य मिटी यह भारी ॥

तब गोपाल बरैया जी की, आज्ञा माथे धारी।
जम्बू-मुक्तिपुरी मथुरा जा, किया परिश्रम भारी॥
जैनागम के गूढ़तत्त्व के, बने वहाँ पर सुज्ञानी॥ टेक॥

मोती माणिक वर्णी पंडित, सहचर वहाँ सुपाये।
दोय वर्ष पढ़ खुरजा जा हो, पास परीक्षा आये॥
पा वैदुष्य विपुल भी नाहीं, निज कर्त्तव्य भुलाये।
वातावरण आज जैसा कछु, नेक न निजचित लाये॥
भव की भंगुरता लख के, गिरराज गमन की ठानी॥टेक॥

गिरिराज बन्द शुभ भाव, स्वपुर मग लीना।
भूले मग तब तृषा देवि ने, कंठ सुखा दुख दीना॥
होता प्रान-पयान दिखे, तो भी वारि दिखे ना।
इष्टस्मरण किया झट देखो, दैवी गती नवीना।
कछु चल आगे पाया ठण्डा, शुभ भरा कुण्ड में पानी॥ टेक॥

टीकमगढ़ में न्यायशास्त्र की, की थी प्रबल पढ़ाई।
पशुबलि धर्म बता शिष्यों ने, की तुम साथ लड़ाई॥
पढ़ना छोड़ गये जब सिमरा, माता की आज्ञा पाई।
हरिपुर में जाकर के तुमने, शिक्षा फिर से दुहराई॥
साथी एक मिला ताकी अब, कथा सुनो सुखदानी॥ टेक

कहा मित्र ने भंग नशा से, शिवजी शीघ्र दिखावें।
वर्णी जी ने सोचा हम भी, यों जिन-दर्शन पावें॥
पिया भंग परिणाम भयंकर, शिर में चक्कर आवें।
मादक द्रव्य तजा उस दिन से, नाम सुने थर्रावें॥
कौतुकयुत ऐसी प्रकृती की, यह अब तक बनी निशानी॥ टेक

ज्ञानपिपासा शांतिहेतु अब, आ काशी गुणधारी।
पंडित जीवननाथ मिश्र के, पहुँचे गेह मँझारी॥

मिश्रा को जब ज्ञान हुआ यह, है जैनत्व-पुजारी ।
कर अपमान भगाया तब ही, कर्मों की गति न्यारी ।।
घर आ रोये अश्रु झरे ज्यों, मेघ झरे अविरल पानी ।। टेक

सोते समय रात में आया, स्वप्न अहा इक सुखकारी।
यहाँ एक शिक्षालय खोलो, होय सफलता भारी ।।
पत्र लिखा भागीरथ बाबा, बुलवाये सहकारी ।
श्रुत पांचें को शिक्षालय तब, हुआ बनारस में जारी ।।
सर्वाधिक जिसने जिनवृष के, जने अनेकों बहुज्ञानी ।। टेक

इस संस्था की प्रथम छात्रता अहो आपने ही पाई ।
अम्बादास नाम गुरु को पा, ज्ञानपताका फहराई ।।
उनहत्तर विक्रम संवत में, तीर्थपरीक्षा तर पाई।
हुये वहाँ विद्वान अनेकों, तो सम एक न विज्ञानी ।। टेक

नाम विश्वविद्यालय धारी, संस्था काशी में भारी ।
मोतीलाल नेहरू को कर, अपना उत्तम सहकारी।।
उसके पठनक्रम में तुमने, जैनागम करवा जारी ।
अपना पौरुष दिखा दिया तब, जनता के आगे भारी ।।
जैन समाज ऋणी है तेरा जिन-वृष के वर श्रद्धानी ।। टेक

शान्तिलाल के साथ चकौती, दरभङ्गा चल दीने।
श्री सहदेव गुरू ने तुमको, न्यायागम पटु कीने ।।
मांसभोज आधिक्य वहां लख, नवद्वीप चल दीने।
वही हाललख वहां आप फिर, कलकत्ता चल दीने ।।
कहीं न मन थिर रहा आपका, आय बनारस विज्ञानी ।। टेक

करें पास आचार्य छहों खंड, थी यह इच्छा भारी।
मोहविवश हो प्रांतोन्नतिहित, हुई सदिच्छा प्यारी ।

उन्हीं दिनों में मात चिरोंजा, सागर आन पधारीं।
सागर आय मिले माता से, कही स्ववार्ता सारी॥
पढ़ने का विच्छेद हुआ यों, देखो कर्म – निशानी॥ टेक

जँह जँह पादपूत भूमी को, हुआ ज्ञान परचारा।
सागर द्रोणगिरी जब्बलपुर, वरुआसागर प्यारा॥
पटनागंज अहार शाहपुर, वा बड़गांव सुसारा।
हीरापुर दरगुवां शाहगढ़, फिर बरायठा द्वारा॥
खुली अनेकों शिक्षा संस्था, पा सहाय तव पानी॥ टेक

भक्तामर वा सूत्रमात्र भी, नहीं कोई था पढ़ सकता।
उस बुन्देल भूमि में अवतो, विद्वानों का गुरुतांता॥
उद्भट बहु विद्वान् यहां के, सारा जैनवर्ग गाता।
प्रान्त और बुधवर्ग इसीसे, गुणगाथा तेरी गाता॥
तेरे से सतगर्व प्रांत को, तूं था प्रान्त निशानी॥ टेक

संवत उन्निस सौ सैंतिस में, आप जबलपुर आये।
भारतरक्षा के चन्दा में, तुम करकंज बनाये॥
एकमात्र निज चादर देके, मन्द मन्द मुसकाये।
चादर बना महादर रुपया, चार हजार गिनाये॥
धन्यधन्य कह उठी सभा सब, गूंजी जय जय बानी॥ टेक

उमर गई पर कभी न तुमने, शिक्षा से मुख मोड़ा।
तीनों पन में बाल्यभाव से, कभी न नाता तोड़ा॥
परिग्रह पाप व्यसन आदिकसे, कभी न नाता जोड़ा।
किया द्रविणसंग्रह लाखों का, वहीं वहां का छोड़ा॥
'रतनचंद्र' सिंहुड़ी वासी ने, भक्ति विवश गूंथी वानी॥ टेक



अनुक्रमणिका



॥ श्री वीराय नमः ॥

****

* पूजन-अर्घ-संग्रह *

****

प्रकाशक :-

श्री प्यारे लाल जैन, F.I.C.A. Rtd.

जैन कुटिया, ६-रामा पार्क,

पुरानी रोहतक रोड, दिल्ली-६



वीर निर्वाण सम्वत् २४६१,

दश लक्षण-पर्व भाद्रपद शुक्ल ५

दिनांक—३१ अगस्त, सन् १६६५

प्रतियां—१००० मूल्य—धर्म प्रचार

ध्यान रखने योग्य बातें

१—दर्शन करते समय अपनी दृष्टि (निगाह) भगवान की प्रतिमा पर ही रखना चाहिए।

२—परिक्रमा देते समय यदि कोई स्त्री या पुरुष धोक दे रहा हो तो उसके आगे से न निकलें, पीछे की ओर से निकलें।

३—दर्शन करते समय इस तरह खड़े होना चाहिए जिससे दूसरे व्यक्तियों को दर्शन पूजन में विघ्न न पड़े।

४—भगवान के सामने खाली हाथ न आना चाहिए, चावल चढ़ाने का अभिप्राय यही है कि जिस तरह धान से छिलका उतर जाने पर फिर धान में उगने की शक्ति नहीं रहती, इसी प्रकार भगवान के दर्शन भक्ति करने से मेरी आत्मा भी संसार में फिर जन्म लेने योग्य न रहे।

५—गन्धोदक लगाते समय पढ़ना चाहिए :

"निर्मलं निर्मलीकरणं पवित्रं पापनाशकम्।
जिनगन्धोदकं वन्दे अष्टकर्म विनाशकम्॥

या

निर्मल से निर्मल अती, अघनाशक सुखसीर।
बन्दूं जिन अभिषेक कृत, यह गन्धोदक नीर॥"

—()०()—

❀ दो शब्द ❀

इस पूजा-अर्घ-संग्रह पुस्तक में अर्घ चढ़ाने के पद्यों का संग्रह किया गया है। इसमें देव, शास्त्र, गुरु, बीस तीर्थंकर, सिद्ध-चक्र, बीस विहरमान, सरस्वती, पंच-मेरु, श्री नन्दीश्वर द्वीप (अष्टान्हिका) जी, सोलह कारण जी, दश लक्षण धर्म जी, रत्नत्रय जी, क्षमावरणी, चतुर्विंशति तीर्थंकर-निर्वाण क्षेत्र जी, सप्त ऋषि जी, अर्घ उदक चन्दन०, चौबीसी, अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय, पंचपरमेष्ठी जी, निर्वाण क्षेत्र जी, अकृत्रिम अर्घ तथा चौबीस अर्घ और इष्ट प्रार्थना, शास्त्र जी को नमस्कार करने की कविता, जिनवाणी की स्तुति, गन्धोदक लगाते समय क्या पढ़ना चाहिए, ध्यान रखने योग्य बातें, शान्ति गीत, तथा भजन नं० १, २, ३, ४ व ५। भावना— राग द्वेष, मोह, ममता-रहित अपनी आत्मा को शुद्ध करने की होनी चाहिए ॥

भगवान की मूर्ति हमारी भावना को शुद्ध करने का साधन है।

सेवक ने अपनी "जैन कुटिया, ६-रामा पार्क, पुरानी रोहतक रोड, दिल्ली-६" पर एक छोटा सा चैत्यालय

बनाया है; जहां दर्शन करने के लिए श्री १०८ मुनि श्री सीमन्धर सागर जी एवं श्री १०८ मुनि सुबाहु सागरजी महाराज पधारे थे, उनके चरणकमलों से इस स्थान का कोना-कोना पवित्र हुआ है। उसके उपलक्ष में यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। निवेदन है कि अगर किसी भाई व बहिन को इस पुस्तक की अधिक जरूरत हो तो ऊपर के पते से मंगवा सकते हैं, निवेदन है कि इस चैत्यालय जी के दर्शन भी अवश्य करें।

आशा है कि आप इस पुस्तक से अवश्य ही धर्म-लाभ उठायेंगे।

दोहा—लघुधी तथा प्रमादते, शब्द अर्थ को भूल।
सुधी सुधार पढ़ो सदा, जो पावो भव–कूल ॥

—:o:—

प्रेम ठण्डा नीर है, पीने पिलाने के लिए।
कष्टरूपी प्यास को, क्षण में बुझाने के लिए ॥

निवेदक :
प्यारे लाल जैन,
F. I. C. A., Rtd.,
ता० ३१-८-१९६५ जैन कुटिया, ६—रामा पार्क,
पुरानी रोहतक रोड, दिल्ली—६



❀ पूजन–अर्घ–संग्रह ❀

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

अर्थ—अरिहन्तों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और लोक के सब साधुओं को नमस्कार हो।

ॐ अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः

चत्तारि मंगलं–अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि–अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धं सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।

१ देव शास्त्र गुरु का अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरू ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनमके पातक हरू ॥
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि,करत शिवपंकति मचू ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर-ग्रन्थ नित पूजा रचू ॥

दोहा—वसुविधि अर्घ संजोयकें अति उछाह मन कीन ।
जासो पूजो परम पद देव शास्त्र गुरु तीन ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

२ बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जल फल आठों दर्व, अर्घ कर प्रीति धरी है ।
गणधर इन्द्रनिहूते, थुति पूरी न करी है ॥
द्यानत सेवक जानके जगतैं लेहु निकार ।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मझार ॥
श्री जिनराज हो, भव-तारण तरण जिहाज ॥

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्य पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

३ सिद्ध चक्र का अर्घ

जल फल वसुवृन्दा, अर्घ अमंदा, जजत अनंदा के कन्दा,
मेटो भव फंदा सब दुखदंदा, 'सेवक चन्दा' तुम बंदा ।

त्रिभुवनके स्वामी,त्रिभुवन नामी, अंतरजामी अभिरामी ।
शिवपुरविश्रामी निजनिधि पामी,सिद्ध जजामीसिरनामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

४ बीस विहरमान तीर्थंकरों का अर्घ

वर नीर चंदन विमल तन्दुल, पुष्प चरु मन भावने ।
पुनि दीप धूप पवित्र फल ले, अर्घ सजि गुण गावने ।।
सीमन्धरादिक शास्वते जिन, बीस क्षेत्र विदेहके ।
पूजि मन वच कायतें भवि, चलो क्षेत्र अदेहके ।।

ॐ ह्री अढाईद्वीप सम्बन्धी श्री सीमन्धरादि बीस विहरमान जिनेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

५ सरस्वती जी का अर्घ

जल चंदन अच्छत, फूल चरु चित,
दीप धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत,
सो नर द्यानत सुख पावै ।।
तीर्थंकर की धुनि, गणधरने सुनि,
अंग रचे चुनि ज्ञान-मई ।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी,
त्रिभुवन मानी, पूज्य भई ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यम् निर्वपा० ।

६ पंच मेरु जी का अर्घ

आठ दरबमय अर्घ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिनधाम,सब प्रतिमाजीको करों प्रणाम।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
ॐ ह्री पञ्च मेरु सम्बन्धि जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

७ श्री नन्दीश्वर द्वीप जी का अर्घ

यह अर्घ किंयो निज हेत, तुमको अरपत हों।
'द्यानत' कीनो शिव खेत, भूमि समरपत हों॥
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनद भाव धरों॥
ॐ ह्री श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिण द्विपचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्योऽनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥

८ सोलह कारण का अर्घ

जलफल आठों दरब चढाय,'द्यानत' बरत करों मन लाय,
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध आदि षोडशकारणेभ्योऽनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा॥

६ दश लक्षण धर्म का अर्घ

आठों दरब संवार, द्यानत अधिक उछाहसों ।
भव आताप निवार, दशलच्छन पूजौं सदा ॥
ॐ ह्री उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मायार्घ्यं निर्वपा० ॥

१० रत्नत्रय का अर्घ

आठ दरब निरधार, उत्तमसौं उत्तम लिए ।
जन्मरोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ॥
ॐ ह्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामी० ।

११ क्षमावणी का अर्घ

जलफल आदि मिलायके, अर्घ करों हरषाय ।
दुःख जलांजलि दीजिये, श्री जिन होय सहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ॥टेक॥
ॐ ह्री अष्टांग सम्यग्दर्शन, अष्टांग सम्यग्ज्ञान त्रयोदश विध सम्यक्चारित्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपा० ॥

१२ चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र का अर्घ

जल गंध अक्षत फूल चरु फल दीप धूपायन धरों ।
'द्यानत' करो निरभय जगततें, जोड़ कर विनती करों ॥
सम्मेदगिरि गिरिनार चम्पा, पावापुरि कैलासको ।
पूजों सदा चौबीस जिन-निर्वाण-भूमि निवास को ॥
ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्व० ।

१३ सप्त ऋषि जी का अर्घ

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना॥
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥
ॐ ह्रीं श्री मन्वादि सप्तर्षिभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नोट—यदि पूजा करने वाला कोई और अर्घ चढ़ाना चाहे तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर और यथायोग्य मन्त्र बोल कर अर्घ चढ़ा देवे।

१४ अर्घ

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैः, चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥
ॐ ह्रीं .... अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

१५ अर्घ कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीं-गतान्।
वन्दे भावनव्यन्तरद्युतिवरस्वर्गामरावासगान्॥
सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः।
द्रव्यैर्नीरमुखैर्यजामिसततं दुष्कर्मणां शांतये॥
ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालय-सम्बन्धिजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

१६ पंच परमेष्ठी का अर्घ

मनमांहि भक्ति अनादि नमि हों देव अरहंत को सही।
श्री सिद्ध पूजूं अष्टगुनमय सूरि गुण छत्तीस ही ॥
अंगपूर्वधारो जजूं उपाध्याय साधुगुन अठवीस जी।
ये पंचगुरु निर्ग्रन्थ पूजूं सुमंगल दायी जगदीश जो ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तसिद्ध आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु पञ्च-परमेष्ठिभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

१७ अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ

जल चन्दन तन्दुल कुसुमरु नेवज,
दीप धूप फल, थाल रचौं।
जयघोष कराऊं, बीन बजाऊं,
अर्घ चढाऊ खूब नचौं ॥
वसुकोटि सुछप्पन लाख सत्ताणव,
सहस चारसत इक्यासी।
जिनगेह अकृत्रिम तिहुं जगभीतर,
पूजत पद ले अविनाशी ॥

ॐ ह्री त्रैलोक्य सम्बन्ध्यष्ट कोटिषट्, पंचाशल्लक्षसप्तनवति-सहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिन चैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ चौपाई

अधो लोक जिन आगम साख,
सात कोड़ि अरु बहत्तर लाख ।

श्री जिन भवन महा छवि देइ,
ते सब पूजौं बसुविध लेइ ।।

ॐ ह्रीं अधो लोक सम्बन्धि सप्तकोटि द्विसप्ततिलक्षाकृत्रिम श्री जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मध्यलोक जिन मन्दिर ठाठ, साढ़े चारशतक अरु आठ।
ते सब पूजौं अर्घ चढ़ाय, मनवचतन त्रयजोग मिलाय ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोक सम्बन्धिचतुः शताष्टपञ्चाशत् श्री जिन-चैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामी ति स्वाहा ।

अडिल्ल—ऊर्ध्वलोक के माहि भवन जिन जानिये ।
लाख चुरासी सहस्र सत्याणव मानिये ।।
तापै धरि तेईस जजों शिर नायकें ।
कंचन थाल यभार जलादिक लायकें ।।

ॐ ह्री ऊर्ध्वलोक सम्बन्धि चतुरशोतिलक्ष सप्तनवति सहस्रत्रयोविंशति श्री जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं० ।

१८ अर्घ चौबीसी

जलफल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोच्छ वरो ।।
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही ।
पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्षमही ।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तचतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

१ अर्घ श्री आदिनाथ जी

जल फलादि समस्त मिलायकें, जजत हों पदमंगल गायकें।
भगतवत्सल दीनदयालजो, करहु मोहि सुखी लखि हालजी

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घम्०।

२ श्री अजित जिनेन्द्र जी

जल फल सब सज्जै बाजत बज्जै,
गुनगनरज्ज मन मज्जे।
तुअ पद जुग मज्जै सज्जन जज्जै,
ते भव भज्जै निज कज्जे।।
श्री अजित-जिनेशं नुतनाकेशं,
चक्रधरेशं खग्गेशं।
मन-वांछित दाता त्रिभुवनत्राता,
पूजौं ख्याता जग्गेशं।।

ॐ ह्रीं श्री अजितजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ०।

३ श्री शंभवनाथ जी

जल चन्दन तन्दुल पुष्प चरु,
दीप धूप फल अर्घ किया।
तुमको अरपों भाव भगति धर,
जै जै जै शिवरमनि पिया।।
शंभव जिनके चरन चरचतें,
सब आकुलता मिट जावै।

निज निधि ज्ञान दरश सुख वीरज,
निराबाध भविजन पावैं ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं० ।

४ श्री अभिनन्दन जी

अष्टद्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही ।
नचत रचत जजों चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही ॥
कलुषताप निकन्द श्री अभिनन्द, अनुपम चन्द है ।
पदवंद 'वृन्द' जजे प्रभु भवदन्द फन्द निकन्द है ॥

ॐ ह्री श्री अभिनन्दन जिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घं० ।

५ श्री सुमतिनाथ जी

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु,
दीप धूप फल सकल मिलाय ।
नाचि राचि शिरनाय समर्चों,
जय जय जय जय जय जिनराय ॥

हरिहर वन्दित पापनिकन्दित,
सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय ।
तुम पद-पद्म सद्म शिवदायक,
जजत मुदित मन उदित सुभाय ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं० ।

६ श्री पद्म प्रभ जी

जल फल आदि मिलाय गाय गुन,
भगत भाव उमगाय ।
जजों तुमहिं शिव तियवर जिनवर,
आवागमन मिटाय ॥
पूजों भावसों, श्री पद्मनाथ पदसार, पूजों भावसों ।२।

ॐ ह्री श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ० ।

७ श्री सुपार्श्वनाथ जी

आठों दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय ।
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥
तुम पद पूजों मनवचकाय, देव सुपारस शिव पुरराय ।
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

८ श्री चन्द्रप्रभ जी

सजि आठौं दरब पुनीत, आठों अङ्ग नमों ।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों ॥
श्री चन्दनाथ दुति चन्द, चरनन चन्द लगे ।
मन वच तन जजत अमंद, आतम जोति जगे ॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

९ श्री पुष्पदन्त जी

जल फल सकल मिलाय मनोहर मनवचतन हुलसाय ।
तुम पद पूजों प्रीति लायके, जय जय त्रिभुवन राय ॥

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिन राय, मेरी० ॥
ॐ ह्री श्री पुष्तदन्त जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

१० श्री शीतलनाथ जी

क श्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे ।
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ॥
रागादि दोष मलमर्द्दन हेतु येवा ।
चर्चो पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ॥
ॐ ह्री श्री शीतलनाथ जिनन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्नये अर्घ ॥

११ श्री श्रेयांसनाथ जी

जलमलय तन्दुल सुमनचरु अरु दीप धूप फलावली ।
करि अर्घ चरचो चरन जुग प्रभु मोहि तार उतावली ॥
श्रेयांस नाथ जिनन्द त्रिभुवन वन्द आनन्द कन्द है ।
दुख दन्द फन्द निकन्द पूरनचन्द जोति अमन्द है ॥
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ।

१२ श्री वासुपूज्य जी

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठो अङ्ग नमाई ।
शिवपद राज हेत हे श्री पति ! निकट धरो यह लाई ॥
वासुपूज्य वसुपूज्य-तनुजपद, वासव सेवत आई ।
बाल ब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।
ॐ ह्री श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ ॥

१३ श्री विमलनाथ जी

आठों दरब संवार, मनसुखदायक पावने ।
जजों अर्घ भरथार, विमल विमल शिव तिय-रमन ॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

१४ श्री अनन्तनाथ जी

शुचि नीर चन्दन शालि शंदन, सुमन चरु दीवा धरों।
अरु धूप जुत मैं अर्घ करि, कर जोर जुग विनती करों ॥
जगपूज परम पुनीत मीत, अनंत सन्त सुहावनों ।
शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावों, भ्रन्ततन्त नशावनों ॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ।

१५ श्री धर्मनाथ जी

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई ।
बाजत दृम-दृम-दृम मृदङ्गगत, नाचत ता थेई-थेई ॥
परम-धरम-शम-रमन-धरम-जिन अशरनशरन निहारी ।
पूजों पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौ मैं दै दै तारी ।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

१६ श्री शान्तिनाथ जी

जल फलादि वसुद्रव्य संवारे, अर्घ चढ़ाये मङ्गल गाय ।
सेवक के हो तुम ही साहिब, दीजे शिवपुर राज कराय ॥

शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर, द्वादश मदन तनो पद पाय।
जिनके चरण कमल के पूजे रोगशोग दुख दारिद्र जाय ॥
ॐ ह्री श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

१७ श्री कुन्थुनाथ जी

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरू, दीप धूप लेरी।
फलजुत जजन करों मन सुख धरी, हरो जगत फेरी।
कुंथु सुन अर्ज दास केरी, नाथ सुनि अर्ज दास केरी ॥
भवसिंधु पर्यो हों नाथ, निकारो, बांह पकर मेरी।
प्रभु सुन अर्ज दास केरी, नाथ सुनि अर्ज दास केरी ॥
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

१८ श्री अरहनाथ जी

शुचि स्वच्छ पटीरं गंधगहीरं, तन्दुलशीरं पुष्प चरूं।
वर दीपं धूपं आनंद रूपं, लै फल भूपं अर्घ करम् ॥
प्रभु दीन दयालं अरि कुलकालं, विरदविशालं सुकुमालम्।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अर गुनमालं वरभालम् ॥
ॐ ह्री श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं ॥

१९ श्री मल्लिनाथ जी

जलफल अर्घ मिलाय गाय गुन, पूजों भगति बढ़ाई।
शिव पदराज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई ॥

राग-दोष-मद-मोह हरन को, तुम ही हो वरबीरा।
यातें शरन गही जगपति जो, वेग हरो भव पीरा।
ॐ ह्री श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं।

२० श्री मुनिसुव्रत जी

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरब अर्घ सजों वरों।
पूजों चरन रज भगत जुत, जातें जगत सागर तरों॥
शिव साथ करत सुनाथ सुव्रतनाथ, मुनि गुन माल हैं।
तस चरन आनन्द भरन तारन-तरन विरद विशाल हैं॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं॥

२१ श्री नमिनाथ जी

जलफलादि मिलाय मनोहरं,अर्घं धारत ही भय भौ हरं।
जजतु हों नमिके गुनगायकें,जुगपदांबुज प्रीति लगायकें॥
ॐ ह्री श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं।

२२ श्री नेमिनाथ जी

जलफल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्टम छितिके राजकरनकों, जजों अङ्ग वसु नाय॥
दाता मोक्षके, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं॥

या जग मन्दिर में अनिवार,
अज्ञान-अंधेर छयो अति भारी ।
श्री जिनकी धुनि दीप शिखासम,
जो नहिं होत प्रकाशनहारी ॥
तो किस भांति पदारथ-पांति,
कहां लहते ? रहते अविचारो ।
या विधि सन्त कहैं धनि हैं धनि हैं
जिन-बैन बड़े उपकारी ॥
जिन-वाणी के ज्ञान से, सूझे लोकालोक ।
सो वाणी मस्तक चढ़ो, सदा देत हूं धोक ॥

—❀—

❀ जिनवाणी की स्तुति ❀

करों भक्ती तेरी, हरो दुख माता भ्रमण का ।
भ्रमावत हैं मोकों, कर्म दु.ख देते जन्म का । करों०।
अकेला ही हूं मैं, कर्म सब आये सिमट कें ।
लिया है मैं तेरा, शरण अब माता सटक कें ॥
दुखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूं जगत में ।
सहा जाता नाहीं, अकल घबराई भ्रमण में ॥
करों क्या मां मेरी, चलत वश नाहीं मिटन का । करों०।

सुनो माता मेरी, अरज करता हूं दरद में ।
दुखी जानो मोको, डरप कर आयो शरण में ।
कृपा ऐसी कीजे, दरद मिट जावे मरण का । करों०।
मिटावे जो मेरा, सर्व दुख सारे फिरन का ।
परों पावों तेरे, हरो दुख भारी फिकर का ।
करों भक्ती तेरी, हरो दुख माता भ्रमण का । करों०।

(❀)

टेक–मिथ्यातम नाशवे को, ज्ञानके प्रकाशवेको, आपा-पर भासवे को, भानुसी बखानी है । छहों द्रव्य जानवे कों, बन्ध विधि भानवे कों, स्वपर पिछानवे कों, परम प्रमानो है ॥ अनुभव बतायवे कों, जीव के जतायवे कों, काहू न सतायवे कों, भव्य उर आनी है । जहां तहां तारवे कों, पारके उतारवे कों,सुख विस्तारवे कों,येही जिनवाणीहै ॥

(❀)

जिनवाणी की स्तुती, अल्प बुद्धि परमान ।
पन्नालाल विनती करे, देहु मात मोहि ज्ञान ॥
हे जिनवाणी भारती, तोहि जपों दिन रैन ।
जो तेरो शरणा गहे, सो पावे सुख चैन ॥
जिनवाणी के ज्ञान तै, सूझे लोकालोक ।
सो वाणी मस्तक धरों, सदा देत हों धोक ॥

❀ शान्ति गीत ❀

(श्री १०५ क्षु० जिनेन्द्र वर्णी जी)

मधुमादक रस पी पी चेतन, मधुर-मधुर गायन हम गायें।
शान्ति सुधाके शीतल सरमें, डूब-डूब संगीत सुनायें।टेक।
क्यों चिन्तायें जोड़ रहा है, भार व्यर्थ का ओढ़ रहा है।
देख सम्पत्ति औरनकी तू, खुद से क्यों मुख मोड़ रहा है॥
या सब छलिया रैन बसेरा, क्यो भ्रमर बन भोर रहा है।
तू तूही है, और-और है, क्यों औरन पे तू ललचाये।१।
बन्दि बना औरनको अपना, बन सकता स्वाधीन न कोई।
जो छीनेहै पर की सम्पति, खो लेता निज वैभव वह ही॥
यह जग है प्रतिक्रिया-शाला, जैसी करनी भरनी सोई।
ओ ! छोड़ अभी को निज बन्धन से,
स्वराज्य-पति तू भी हो जाये।२।
निज परका सब भेद भुलाकर, चर्चा ज्ञानविज्ञान बिसराकर।
ललित विकृतका भाव मिटाकर, कर्मकलाप प्रपंच हटाकर॥
मोह क्षोभके बन्धन कटकर, नाम रूपसे पृथक् छुटकर।
आ अपने में भीतर रमकर, मधुशाला रमनीक बनायें।३।
रस पीपी मन नाच रहा है, जगको उरमें साज रहा है।
मधु मधुशाला मधुबाला खुद, भावअभिन्नमें राच रहा है॥
सब अपने में आप सभीमें, अद्भुत लीला राच रहा है।
यह लीला समभाव मिलन की,
यह लीला सब नित्य मनायें।४।

— भजन प्रकरण —

॥ भजन न० १ ॥

गुणी बन गुण को लेना है, हमें दुर्गुण से क्या मतलब ।
कुएं से नीर पीना है, हमें कचरे से क्या मतलब ।टेक।
हम तो गाहक हैं चन्दन के, भले ही सांप लिपटे हों ।
मुग्ध है पुष्प सुरये पर, हमें कांटों से क्या मतलब ।गु०
छाछ खट्टी भले ही हो, हम तो मक्खन के भूखे हैं ।
ईखके रस के प्यासे है, हमें छिलकों से क्या मतलब ।गु०
न खल से काम बिलकुल है, हमें तो तेल लेना है ।
आम खाने के इच्छुक है, हमें गुठलीसे क्या मतलब ।गु०
मणी के हम तो गाहक है, सांप जहरीले भले ही हों ।
गोल मोती के गर्जी है, सीप बाकी से क्या मतलब ।गु०
रूप कोयल का काला है, तो भी मिठास ले लेना ।
काम तकिए को रू से है, हमें खोली से क्या मतलव ।गु०
मिलै गुण जिस कदर जिससे, हम तो तैयार है लेलें ।
चाहे किसी भी मजहब का हो,
हमें मजहब से क्या मतलब ।गुणी०

....

॥ भजन न० २ ॥

हीरे जैसी जिन्दगानी खो रहा है क्यों ?
बुरे पाप के बीज बो रहा है क्यों ॥

तूने चीनी कितनी खाई, कितनी खा गया मिठाई ।
फिर भी जीभ से तू भाई, जहर बिलौ रहा है क्यों ॥
तूने दूध मनो पी डाला, तूने दही मनो खा डाला ।
फिर भी मन तेरा मटियाला, काला हो रहा है क्यों ॥
तूने घी भी काफी खाया, लेकिन दिल चिकना न बनाया ।
खा खा हिंसा पाप कमाया, फिर भी रो रहा है क्यों ॥
तजदे बातों की सफाई, तजदे हाथों की सफाई ।
करले अन्दर की सफाई, फिर भी सो रहा है क्यों ॥

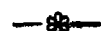
....

॥ भजन न० ३ ॥

किसको विपद सुनाऊं, हे नाथ तू बतादे ।
तेरे सिवा न कोई, जो कष्ट को मिटादे ॥टेक॥
अपराध नाथ बेशक, मैंने किए है भारी ।
हो दीन के दयालु, उनकी मुझे क्षमा दे ॥
यह कर्म दुष्ट मुझको, भटका रहे है दर-दर ।
जीवन-मरण के दुख से, हे नाथ तू बचा दे ॥
धन ज्ञान अपना खोकर, परेशान हो रहा हूं ।
शांति हृदय में आवे, वो उपाय तू सुझा दे ॥
टाला नही है टलता, विधि का उदय किसी से ।
सेवक शोक चिन्ता, तू चित्त से हटा दे ॥
दोहा—मत जिय सोचे चिंतवै, होनहार सो होय ।
जो अक्षर विधना लिखे, ताहि न मेटै कोय ॥

॥ भजन नं० ४ ॥

हूँ बेहाल क्या करूं तुम कृपाल हो प्रभो ।
मेरे हाल पे दयालु कुछ तो खयाल हो ॥टेक॥
दुष्ट कर्म पड़ा ये पीछे, इससे कौन बचाये ।
लख चौरासी योनि के अन्दर, नाना नाच नचाये ॥
काल अनन्त निगोद में बीता, जामन मरन सताये ।
नरक वेदना कौन उच्चारे, घोर महा दुख पाये ॥
भूख प्यास और छेदन-भेदन कष्ट पशु पर्याये ।
सर्दी-गर्मी वध और बन्धन, भारी भार उठाये ॥
चाह-दाह में जरे हमेशा, यद्यपि देव कहाये ।
गल की माला जब मुरझाई, मरन समय बिललाये ॥
मनुष्य जन्म में रोगी-सोगी, निर्धन हो दुख पाये ।
है कलहारी नारी घर में, पुत्र मिला दुख दाये ॥
हो करके कलकान बहुत, सेवक शरण तुम्हारी आये ।
कर्म से पिंड छुड़ादो स्वामी, तुमने कर्म खपाये ॥



॥ भजन नं० ५ ॥

जनमे लकड़ी मरते लकड़ी अजब तमाशा लकड़ी का ।
दुनियां-वालो तुम्हें बतायें जग है वासा लकड़ी का ॥
जिसदिन जनम हुआ था तेरा पलंग बिछा था लकड़ीका ।
तुझे झूलने को मंगवाया एक पालना लकड़ी का ॥

खेल खिलौने लकड़ी के हाथी घोड़ा लकड़ी का।
पकड़-पकड़कर खड़ा हुआ जब वो था रहलुवा लकड़ी०
खेल खेलने एक दिन लिया गिल्ली डण्डा लकड़ी का।
पढन चला लकड़ी की पट्टी और कलम था लकडी का।।
तुझे पढ़ाने शिक्षक ने डर दिखलाया लकडी का।
पत्र लिखकर जब ब्याहन चला रेल का डिब्बा लकड़ी०
हाथमें कङ्गन लकड़ी का और था श्रीफल लकड़ी का।
सासू जी के द्वारे पर बन्धनवार था लकड़ी का।।
तारन जिसपर मारा था वो बिछा पाटला लकड़ी का।
भावर तेरी पड़ी मांही जब खम्भ खडा था लकड़ी का।।
ब्याह करके जब घरको लौटा दाव भूलगया लकडी का।
तान चीजका फिकर हुआ जब नून-तेल अरु लकड़ी का।।
वृद्ध भया तब चलन लगा पकड़ सहारा लकड़ी का।
खत्म हुई दुनिया की झझट टूटा जाला मकड़ी का।।
चारो मिलकर काधा लागा वह डोला भी लकड़ी का।
धूंधूकर जल उठी चिता वह बना चबूतरा लकड़ी का।।
जनमे लकड़ी मरते लकड़ी अजब तमाशा लकड़ी का।।



मेराडाइज आर्ट प्रेस पहाड़ी धीरज, देहली।

भजन संग्रह

[illegible] भजनों का संग्रह

[illegible]

प्रकाशक—श्री दि० जैन [illegible]
श्री महावीरजी ([illegible])



भजन-संग्रह

[अनेक कवियो के चुने हुये नवीन भजन आरती बारहमासी चालीसे का अनुपम सग्रह]

भूमिका लेखक —

विद्यानन्द मुनि

सम्पादक—

चक्रेश्वरकुमार जैन 'मित्तल'

२३२६ धर्मपुरा. दिल्ली-६

प्रकाशक—

श्री दिगम्बर जैन वीर पुस्तकालय

मङ्गलसैन जैन विशारद,

श्रीमहावीरजी (सवाईमाधोपुर) राजस्थान।

वी० नि० २४६१ | रक्षाबन्धन १६६६ | मूल्य १·४०

मुद्रक—महावीर प्रेस, किनारी बाजार, आगरा-३

भूमिका—



श्री चक्रेश्वर कुमार जैन द्वारा सम्पादित 'भजन संग्रह' में आधुनिक शैली के भक्ति-गीतों का संकलन किया गया है। आजकल लोगों की जिव्हा पर चित्र-जगत के गीत मिठाई के स्वाद की तरह लगे हुए हैं। शब्दों से भावस्मरण होकर अथवा सुसंस्कार आरोपित होते हैं। जब कोई व्यक्ति सिनेमा के किसी श्लील-अश्लील गीत को गाता-गुनगुनाता है, तब वह गीत के 'दृश्यांकन को अजाने ही अन्तर्मानस-पट पर देखता है और मानसिक अनाचार को अन्तमुक्त करता है। वह नैतिक पतन की सूचना है। इस प्रकृति को निषेध द्वारा उन्मूलित नहीं किया जा सकता किन्तु उन्हीं छन्दों की लय पर शब्द विन्यास बदला जाकर सुरुचि पूर्ण गीत दिये जा सकते हैं। प्रस्तुत संग्रह में यही प्रयत्न किया गया है। जिनकी जिव्हा पर फिल्मी गीतों ने बल पूर्वक स्थान बना रखा है वे उसी धुन में इन भक्ति के गीतों को पढ़ें और अपनी सुरुचि का संवर्धन करें।

महावीर जयन्ति   —विद्यानन्द मुनि

तारीख २ सितम्बर '६९

समर्पण !

जिनकी भक्ति मे वशीभूत होकर तथा जिनकी शुभ कामनाओ
सहित शुभ आशीवाद पाकर प्रस्तुत राम्करण को
आधुनिक ढङ्ग का भक्ति-श्रोत बना सका।
पूज्य श्री दि० जैन मुनि श्री १०८ पूज्य विद्यानन्दजी
महाराज के कर-कमलों मे सवन्दनीय........

—चक्रेश्वरकुमार जैन 'मित्तल'

विषय-सूची

भजन-संग्रह

भजन नं० १

तुम हो त्रिशला कुँवर, जनमे कुण्डल नगर, वीर प्यारे।
मेटो मेटो ये संकट हमारे ॥ टेक ॥ तुम०
तुमने सन्मार्ग आ[illegible] दिखाया, जग से अज्ञान तम को हटाया।
तुम न आते अगर कौन लेता खबर, वीर प्यारे ॥ मेटो० ॥
बीच में [illegible] ज नैया, कौन तुम बिन है इसका खिवैया।
गहरे गम के भंवर 'आ' न आते नजर हैं किनारे ॥ मेटो० ॥
झूठ विषयों से [illegible] रहे है, जग मे फस कर सुपथ खो रहे है।
यूँ दुखी जानकर हो रतन पै महर वीर प्यारे ॥ मेटो० ॥

———=

भजन नं० १ स्तुति चौबीसों भगवान की

आओ दिखाएं [illegible] शुभनगरी, भारत देश महान की।
आदिनाथ से वीर प्रभू तक, चौबीसों भगवान की ॥टेक॥
नगर अयोध्या है ये देखो ऋषभनाथ ने जन्म लिया,
है सम्मेद शिखर ये तीरथ, 'अजितनाथ' निर्वाण हुआ।
पुरी श्रावस्ती नगरी मे, संभव ने आके जन्म लिया,
शुक्ला छट वैशाख अयोध्या, श्री अभिनंदन ज्ञान हुआ।
फिर देखो सम्मेद शिखर ये सुमतिनाथ निर्वाण की ॥आदि०
'पदम' पुरी कौशाम्बी मे, कार्तिक की तेरस को आये,
वाराणसी में 'सुपार्श्व' नाथ है, सुप्रतिष्ठ के घर आये।

भजन-संग्रह

भजन नं० १

तुम हो त्रिशला कुँवर, जनमे कुण्डल नगर, वीर प्यारे।
मेटो मेटो ये संकट हमारे ॥ टेक ॥ तुम०
तुमने सन्मार्ग आकर दिखाया, जग से अज्ञान तम को हटाया।
तुम न आते अगर कौन लेता खबर, वीर प्यारे ॥ मेटो० ॥
बीच मँझधार में आज नैया, कौन तुम बिन है इसका खिवैया।
गहरे गम के भँवर 'ओ' न आते नजर हैं किनारे ॥ मेटो० ॥
झूँठे विषयों से रम रहे हैं, जग में फसकर सुपथ खो रहे हैं।
यूँ दुखी जानकर हो रतन पै महर वीर प्यारे ॥ मेटो० ॥

भजन नं० १ स्तुति चौबीसों भगवान की

आओ दिखाए तुम्हें शुभनगरी, भारत देश महान की।
आदिनाथ से वीर प्रभू तक, चौबीसों भगवान का ॥टेक॥
नगर अयोध्या है ये देखो, ऋषभनाथ ने जन्म लिया,
है सम्मेद शिखर ये तीरथ, 'अजितनाथ' निर्माण हुआ।
पुरी श्रावस्ती नगरी में, सभव ने आके जन्म लिया,
शुक्ला छट वैशाख अयोध्या, श्री अभिनदन ज्ञान हुआ।
फिर देखो सम्मेद शिखर ये सुमतिनाथ निर्वाण को ॥आदि०
'पदम' पुरी कौशाम्बी में, कार्तिक की तेरस को आये,
वाराणसी में 'सुपार्श्व' नाथ है, सुप्रतिष्ट के घर आये।

चन्द्रपुरी में 'चन्द्र' हैं जन्मे, रत्न देवो ने बरषाये,
काकन्दी में 'पुष्प दन्त' ने जन्म लिया सब हरषाये ॥
चैत बदी अष्टम ये मिलता शीतल' जन्म स्थान की । आदि०

यहाँ सुशोभित सिंहपुरी, 'श्रेयांसनाथ' अवतार लिया,
चम्पापुरी में 'वासुपूज्य' आये तब, मंगलाचार हुआ ।
'विमलनाथ' को कम्पिला में, माघ सुदी छट ज्ञान हुआ,
नगर अयोध्या को फिर देखो, 'अनंतनाथ का जन्म हुआ ॥
रतनपुरी है सुन्दर नगरी धरम के तप कल्याण की । आदि०

हस्तिनापुर है जग में नामी, शान्तिनाथ' अवतार लिया,
'कुन्थनाथ' को मंगसिर शुभ, दशमी को केवल ज्ञान हुआ।
देखो तीजी बार शिखर जी 'अरहनाथ' निर्वाण हुआ,
'मल्लिनाथ' की जनकपुरी है, जन्म सुतप और ज्ञान हुआ ॥
जन्मे भूमि कुशांग्र सु नगरी, 'मुनिसुव्रत' भगवान की ।आदि०

जनकपुरी ही में भगवन, 'नमिनाथ' का जन्म हुआ,
चढ़ गिरनार तपस्या कीनी, 'नेमनाथ' को ज्ञान हुआ ।
वाराणसी या काशी जी में जन्म जो 'पारसनाथ हुआ,
'सन्मति' कुन्डल पुर में जन्मे, पावापूर निर्वाण हुआ ॥
जीवन सफल 'कैलाश' हो तेरा, भजमाला इस नाम की ।आदि०

भजन नं० ३ सुख और दुख

दुख भी मानव की सम्पत्ति है, तू क्यों दुख से घबराता है ।
दुख आया है तो जायगा सुख आया है तो जाएगा
दुख जाएगा तो सुख देकर सुख जाएगा तो दुख देकर
सुख देकर जाने वाले से रे मानव, क्यों भय खाता है ।

सुखमें हैं व्यसन-प्रमाद भरे दुख में पुरुषार्थ चमकता है
दुख की ज्वाला में पड़कर ही कुन्दन-सा तेज दमकता है
सुख में सब भूले रहते है, दुख सब की याद दिलाता है।
सुख संध्या का वह लाल क्षितिज जिसके पश्चात् अंधेरा है
दुख प्रातः का भुटपुटा समय जिसके पश्चात सबेरा है
दुख का अभ्यासी मानव ही सुख पर अधिकार जमाता है।
दुख के सम्मुख जो सिहर उठे उनको इतिहास न जान सका।
जो दुख में कर्मठ, धीर रहे उनको ही जग पहचान सका।
दुख एक कसौटी है, जिस पर मानव परखा जाता है।

———

भजन नं० ४

श्री भगवान् पार्श्वनाथ जो की स्तुति

तुम से लागी लगन ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा, मेटो मेटो जी, संकट हमारा॥
निशिदिन तुमको जपूँ, पर से नेहा तजूँ।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा।
अश्वसेन से राजदुलारे, बामादेवी के सुत प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोड़ा. जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा॥ १॥
इन्द्र और धरणेंद्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक थारा॥ २॥
जग के दुखकी तो परवाह नहीं है, स्वर्ग-सुखकी भी चाह नहीं है।
मेटो आमन-मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा॥ ३॥
लाखों वार तुम्हें शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया लागे खारा॥ ४॥

भजन नं० ५

चाल:—बड़ी देर भई नन्द लाला (फिल्म खानदान)

ओ वीर नाम की माला, तू क्यों न जपे मतवाला।
जिसका सुमरण करने से सब, कटे कर्म जंजाल रे॥
जब दुनियाँ में जुल्म बढा था, उसको दूर हटाने को,
भारत में जिन जन्म लिया था, सत्य धरम बतलाने को।
जीव मात्र का रक्षक था वो, वीर अहिंसा वाला रे॥१॥

खुद जीवो जीने दो सबको, पाठ यही सिखलाया था,
स्याद्वाद सिद्धान्त सुनाकर, मतों का भेद मिटाया था।
आतम से परमातम होना, जिसका तत्व निराला रे॥२॥

अपने किये को खुद ही भोगे, कोई नहीं फलदाता है,
जैसे कर्म कमाये कोई वैसा ही फल पाता है।
बन्ध उदय का मर्म बताया, कर्म फलसफा आला रे॥३॥

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, गुण अनन्त भंडारी है,
वीर महा अतिवीर सुसन्मति, वर्द्धमान सुखकारी है।
पंच नाम 'शिवराम' जपे जो, उसका भाग्य विशाला रे॥४॥

भजन नं० ६

चाल—हम ममेर मान भी जाओ (फिल्म मेरे सनम)

भगवन अपना दर्श दिखाओ, प्यासे हैं दीदार के
हम लेके आए, आशा झोली, क्या खाली जाए द्वार से॥टेक॥
तुम वीतरागी हो प्रभू, यह तो सुनते हैं,
फिर भी वा े के यहाँ, कार्य सुधरते हैं।

अजो तारे हैं अधम, क्यों रह गए हम,
जरा ये नाथ बतलाओ, निवेदन आज करते हैं ॥१॥
अजन तस्कर से प्रभो तुमने तारे हैं,
नर को तो है क्या कथा, पशु उभारे हैं।
ये जानते हैं हम, उनके सुधारे हैं अन्य,
हमें भी पार लगाओ हम भी दास तुम्हारे हैं ॥२॥
तुमको जो ध्यावे प्रभू, तुम से हो जाते,
इसलिए शिवराम हम तुमको हे ध्याते।
अब काटे जो करम, पद पावे जो परम,
हम वरदान यही चाहें, नहीं कुछ और चाहते ॥३॥

भजन नं० ७

(तर्ज-बड़ी देर भई नन्द लाला—खानदान)

बडी देर भई प्रभू आला, तेरी राह तके मतवाला।
कोई न पाये मोक्ष मार्ग को छोड़ के तेरी वाणी को,
तरस रहे हैं जग के वासी दरश तेरा अब पाने को।
अब तो दरश दिखादो स्वामी क्यों दुविधा में डालारे ॥१॥
सकट में है आज वो धरती, जिस पर तुमने उपदेश दिया,
पूरा करदो आज वचन वो जो जिनवाणी में तुमने दिया।
तुम बिन कोई नहीं है स्वामी रघुजंन का रखवाला रे ॥२॥

भजन नं० ८

चाल—तुम्हो मेरे मन्दिर तुम्हो मेरी पूजा (फिल्म खानदान)

तुम्हीं मेरे भगवन, तुम्ही नाथ माता तुम्ही तो पिता हो
तुम्हीं नाथ मेरे, हितू एक सच्चे, परम देवता हो ॥टेक॥

चौरासी के चक्कर बहुत मैंने खाए
गति चार में है बड़े कष्ट पाये
नहीं कष्ट मेरे छुपे नाथ तुमसे
हो सर्वज्ञ तुम तो सभी जानते हो ॥ १ ॥

अधम भील तस्कर हैं पापी उतारे
पशु और पक्षी तुमने उभारे
विरद ऐसा मैंने सुना आपका है
क्या सच्चा नही है यह मुझको बता दो ॥ २ ॥

अग्न कुन्ड सीता का शीतल बनाया
सती द्रौपदी का है चीर बढ़ाया
सुदर्शन की सूली सिंहासन बनी वो
ये नैया भी मेरी किनारे लगादो ॥ ३ ॥

हां तारो न तारो यह मरजी तुम्हारी
ये चरणों में मैंने है अरजी गुजारी
शिवराम तेरे दर का भिखारी
दयालू जो तुम हो तो क्यों न दया हो ॥ ४ ॥

भजन नं० ९

चाल—धीरे रे चलो मोरी बांकी हिरनिया (फिल्म गोआ)

लीजिये प्रभो टुक हमरी खबरिया।
हम भव भटके सुनोजी सांवरियां ॥ टेक ॥
लाख चौरासी भटक भटक के दर पै हैं तेरे आये,
कैसे करें जी वर्णन उनका जो जो कष्ट हैं पाये।
तुम सब जानते हो प्रभु जो दुःख पाये हैं विभू,
तेरे आगे तो है कुछ भी नहीं है छिपा ॥१॥

वीतराग है, नाम तिहारा तू जग का हित कारी,
दीन दयाल तू है स्वामी महिमा तेरी न्यारी।
वीतरागी हितकार करते जीवों का उद्धार,
ये विरद तिहारा मन भा ही गया ॥२॥

हमने सुना है दुष्ट अधर्मी तुमने पार उतारे,
अर्ज करे शिवराम चरण में सकट काट हमारे।
तुमसे लगी है लगन अपनी राखो जी शरण,
ये दास तेरा गुण गाय रहा ॥३॥

———

भजन नं० १०

चाल—छू लेने दो नाजुक होठों को (फिल्म काजल)

छू लेने दो प्रभू चरणों को; हम दर के पुजारी नाथ हैं ये
कर लेने दो दर्शन आखों को, अब दर्श की प्यासी नाथ है ये ॥टेक॥

है धन्य जुगल पद आज भये, जो चलकर तेरे दर आये
जिन चरनन में जो ये शीश झुका धन्य भया अब माथ हैं ये ॥१॥

आज कृतारथ रसना है, भगवान का जो गुणमान किया
है नाथ तिहारा पूजन करके सफल भये अब हाथ हैं ये ॥२॥

कर्ण हमारे धन्य भये, जिन बैन सुने जो आ करके
चरण कमल जो मन में धरे, है धन्य हृदय भया नाथ है ये ॥३॥

चाह नहीं कुछ और हमें, मन मन्दिर में तुम आन बसो
भव भव में प्रभु दर्श मिलें, शिवराम की बस अरदास है ये ॥४॥

———

भजन नं० ११

चाल—समय कब ऐसा मिलेगा भगवन

शरण में तेरी हम आन करके, शीश अपना झुकाएं भगवन
है तेरे दर के बने भिखारी, तुमे छाडकरके कहाँ जाए भगवन ।।टेक।।
फिरे भटकते चतुर गति म, नहीं चैन पाया कहीं भी हमने
कर्म लुटेरे पडे हैं पीछे, हमें अब तो इनसे बचाएं भगवन ।।१।।
धन ज्ञान सारा हर है हमारा, हमें बनाया है नाथ निर्धन
लूटी हमारी निधीओ स्वामी, किस तौर वापिसवे लाए भगवन ।।२।।
तुमने है सारे कर्म निवारे, आतम विभूति को पा लिया है
हमें भी युक्ति बतादो वो ही, कर्मके बन्धनसे छुट जाए भगवन ।।३।।
हो वीतरागी फिर भी दयालू, महिमा तुम्हारी सुनी है हमने
दुखों से अब तो करो किनारा, शिव पद हमारा दिलाये भगवन ।।४

भजन नं० १२

चाल—ये दो दिवाने मिलके (फिल्म गोवा)

श्री नेमी जी दुल्हा बनके, चले हैं बन ठन के ।
चले हैं, चले हैं, चले हैं सुसराल ।। टेक ।।
सजे हैं यादव सारे, देखो बराती, सजे हैं देखो घोड़े, और ये हाथी,
है धूम कैसी छाई, है बज रही शहनाई, चले हैं, चले है,
चले हैं सुसराल ।। १ ।।
संग में आये जिनके कृष्ण मुरारी,
श्री बलदेव जिनकी शोभा है न्यारी,
चले हैं तन तन के, मन मोहे जन जन के ।। २ ।। चले हैं.......
झूना गढ़ जब नेमी पधारे,

बन्धे पशु है दुखित निहारे,
हृदय में दया आनी, तत्काल भये वैरागी ॥ ३ ॥ चले हैं.........
तोरन से रथ को वापिस है मोड़ा,
मोड़ मरोड़ा, कंकन है तोड़ा,
गिरनार को सिधारे, महा व्रत धारे ॥ ४ ॥ चले हैं.... ..
राजुल ने जब, खबर यह पायी,
पति दर्शन को गिर पर है धायी,
तत्काल हो वैरागन, किया है जग त्यागन ॥ ५ ॥ चले हैं.......
नेमि ने तप कर, वरी शिवनारी,
राजुल ने भी जगत सुधारी,
शिवराम हम उनके हैं दास चरणन के ॥ ६ ॥ चले हैं.........

भजन नं० १३

चाल—दिन है बहार तेरे मेरे इकरार के (फिल्म वक्त)
मौसम बहार का, वीर अवतार का
जन्म दिवस प्यारे याद करो
सिद्धारथ दुलार का त्रिशला के शुभ प्यार का ॥ जन्म० ॥
चैत की शुक्ला तेरस कैसी थी प्यारी
कुण्डलपुरी की शोभा कैसी थी न्यारी
समय सुहाना था वो जग के उद्धार का ॥ जन्म० ॥ १ ॥
भर जोवन में जिसने दीक्षा थी प्यारी
राज वैभव का जिसने ठोकर थी मारी
तप करके ज्ञान पाया सूर्य संसार का ॥ जन्म० ॥ २ ॥
तिमर अज्ञान जिसने जग का मिटाया
मुक्ति का सीधा रस्ता, जिसने दिखाया
उपदेश दिया आत्म सुधार का ॥ जन्म ॥ ३ ॥

सत्व है स्याद्वादी जग से निराला
सिद्धान्त जिनका सबसे है आला
जीवों जीने दो सबको, मिशन प्रचार का ॥ जन्म० ॥ ४ ॥
वीर जयन्ति आओ मिलकर मनायें
महिमा शिवराम उनकी कैसे सुनायें
पार न पावे कोई उनके उपहार का ॥ जन्म० ॥ ५ ॥

भजन नं० १४

चाल—मेरे महबूब तुझे (फिल्म मेरे महबूब)

मेरे भगवान मुझे आज है तेरी ही शरण,
पड़ा मझदार हूं में-सागर का किनारा दे दे
आपने हाथों का मुझे हे नाथ सहारा दे दे ॥टेक॥
मोह मिथ्यात की घनघोर घटा है छाई,
और अज्ञान का तूफान उठा है भारी।
हाय मैं डूब चला कैसी मुसीबत आई,
अब हे नाथ करो रक्षा दया के धारी।
कृपा अपनी का मुझे एक इशारा दे दे ॥ १ ॥
कौन है तेरे सिवा जिसकी शरण जाऊँ,
गति चार और चौरासी में हूँ भटका स्वामी।
ऐसा कोई न मिला जिसको विपत्ति सुनाऊँ,
वीतरागी है तू ही और दया निधि नामी।
हे नाथ मुझे भी भव का किनारा दे दे ॥ २ ॥
तुमने अंजन को किया है हे नाथ निरंजन,
और भवपार किये हैं लाखों ही अधमी।

महिमा तेरी ये सुनो हैं संकट मोचन,
चरणों मे आन पड़ा दास तेरा दुष्कर्मी।
दया दृष्टि का शिवनाथ नजारा दे दे ॥ ३ ॥

भजन नं० १५

चाल—ये चांद सा रौशन चेहरा (फिल्म-काश्मीर की कली)

सिद्धार्थ का राज दुलारा, त्रिशला का आँख का तारा।
कुंडल पुर की शोभा, महावीर नाम है प्यारा।
ऐहसान बड़ा है तेरा, आदर्श हमें है दिखाया ॥ टेक ॥
भर योवन दीक्षा धारो, है राज को ठोकर मारी।
और करके कठिन तपस्या है तन की ममता टारी।
अहसान बड़ा है तेरा, तूने सोता विश्व जगाया ॥ १ ॥
यज्ञों में हिंसा भारी करते थे पापा चारी।
हिंसा है दूर हटाई, तू वीर बड़ा उपकारी।
अहसान बड़ा है तेरा, तूने धर्म दया बतलाया ॥ २ ॥
तू वीतराग हितकारी, है लोका लोक निहारी।
तेरी स्याद्वाद है वाणी, सब झगड़ा मिटाने वाली।
अहसान बड़ा तेरा, है समता पाठ पढ़ाया ॥ ३ ॥
प्रभु वीर अगर न आते, सिद्धान्त कर्म न बताते।
पाखंडों में फस करके, सब जीव महा दुःख पाते।
अहसान बड़ा है तेरा, शिव राह हमें दिखलाया ॥ ४ ॥

भजन नं० २६

चाल—मैं इक नन्हा सा (फिल्म-हरिश्चन्द्र तारामती)

मैं एक अदना सा, मैं इक छोटा सा चाकर हूँ।
तुम हो दया के निधान, प्रभु जी मेरी अरज सुनो ॥टेक॥

जो अपराध किये है मैंने, जाये न सो उच्चारे।
वो ता स्वामी ज्ञान मे तेरे, झलक रहे हैं सारे॥
क्षमा करो जी भगवान, प्रभुजी मेरी अर्ज सुनो ॥१॥ मैं०

मैंने सुना है तुमने है तारे अजन पापी चोर।
पशु और पक्षी भी हैं उभारे, लखो जो मेरी ओर॥
रक्खो जी मेरा ध्यान प्रभु जी मेरी अर्ज सुनो ॥२॥ मैं०

वीतराग है नाम तिहारा, नहीं है राग और द्वेष।
धर्मी तारे तारे अधर्मी, काटे है सबके क्लेश॥
मेरा भी करो कल्याण, प्रभु जी मेरी अरज सुनो ॥३॥ मैं०

भजन नं० १७

चाल—तेरे मन की गगा (फिल्म संगम)

दीनो का सहारा, महावीर नाम प्यारा, तू बोल मुख से बोल,
आयु जाय रे चली, चली चली ॥टेक॥

बचपन खोया खेल कूद में, बीते दिन नादानी मे।
विषय भोग में लीन रहा तू, हाये मस्त जवानी में॥
खोऐ रत्न अमोल, आयु जाय रे चली ॥१

पर निन्दा बकवाद वृथा में नाहक समय गंवावे तू।
एक घड़ी भगवान भजे नहीं, धन को व्यर्थ लुटावे तू।
काहे मचावे रोल, आयु जाय रे चली ।।२
सत्य अहिंसा का कर पालन, तज मिथ्यात अन्याय तू।
पर-धन पर-वनिता पर अपना, मतना चित्त चलावे तू।।
लोभ कीच न घोल, आयु जाय रे चली ।।३
जाना है परलोक तुझे अब, कुछ तो धर्म कमाले तू।
काल खड़ा शिवराम है मर पर, क्यों ना होश सम्भाल तू।
अब तो अँखियाँ खोल आयु जाय रे चली ।।४

भजन नं० १८

चाल—वो दिल कहाँ से लाऊँ (फिल्म-भरोसा)

जिनराज आज तेरे चरणों में हम हैं आये।
कोई हितू न पाया, हे नाथ तुम सिवाये।।टेक
कर्मों ने नाथ हमको, गति चार में रुलाया।
कैसे करें बया हम, जो कष्ट हैं दिखाये।।१
कोई जगह न ऐसी, बाकी रही है स्वामी।
जिस ठौर न मरे हों, जिस ठौर हम न जाये।।२
आवागमन के चक्कर, से हो गये हैं हैरा।
शक्ति मिले हमें वो, जो कर्म से छुड़ाये।।३
तुमने कर्म निवारे परमात्म पद है पाया।
भूले हुए थे प्राणी, शिव पंथ पे लगाये।।४
हमने सुना है तुमने, लाखों हैं तारे पापी।
हमको भी तार दीजे, शिवराम सिर नवाये।।५

भजन नं० १६

चाल—जो वायदा किया (फिल्म-ताजमहल)

तुम्हें कष्ट मेरा मिटाना पड़ेगा । कष्ट मिटाये सबके, मेरा तो भी दुख ये मिटाना पड़ेगा ।। टेक

कर्म दुष्ट बैरो हैं मुझको सताते । चौरासी के अन्दर है नाच नचाते नाथ जरा करके दया, कर्म हटाना, दुख ये मिटाना पड़ेगा ।।१

कभी नरक का है, नारकी बताते, पशु पर्याय के है, कष्ट दिखाते सुर-नर हुआ-सुख न मिला-हुआ कष्ट पाना दुख ये मिटाना पड़ेगा२

दुष्ट भील तस्कर हैं पार उतारे, पशु और पक्षी हैं तुमने उभारे-बार मेरी ढील करी,क्यों जी नाथ बताना, दुख ये मिटाना पड़ेगा ३

हे 'शिवनाथ' कृपा अब कीजे, मेरी भी तो ठुक सुध लीजे । दास तेरा अरज करे संकट हटाना, दुख ये मिटाना पड़ेगा ।।४

भजन नं० २०

(चाल—एक घर बसाऊँगा तेरे घर के सामने)

आसन जमाऊँगा तेरे दर के सामने ।
धूनी रमाऊँगा तेरे दर के सामने ।।टेक
तेरे दर्शन के बिना, मुझको तो आराम नही ।
तेरी भक्ति के सिवा मुझको कोई काम नही ।
तेरे पूजन के लिए मुझ पं तो सामान नहीं ।
और पूजन की विधि का भी तो मुझे ज्ञान नही ।
हृदय दिखाऊँगा तेरे, दर के सामने ।।१।।
तेरे दर्शन जो मिले धन्य ये मेरे भाग हैं ।
कैसे रिझाऊं तुम्हे, आप वीतराग हैं ।

धन सम्पदा मांगू नहीं, यह तो मिट्टी धूल है।
सुख अगर दुनिया का चाहूँ, ये तो मेरी भूल है।
आशा मिटाऊंगा तेरे दर के सामने ॥२॥
स्वर्ग के भोगों की भी मुझे नहीं है चाहना,
तेरे जैसा में बनूं, बस यही है कामना।
नाथ 'शिव' सरूप का, पूरण विकास हो,
जन्म मरन से छूटूं, शिवपुर का वास हो।
फिर जग में न आऊँगा तेरे दर के सामने ॥३॥

भजन नं० २१

चाल—तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो (फिल्म-मैं चुप रहूंगी)
तुम्हीं हो स्वामी हितू हमारे।
हितू न कोई सिवा तुम्हारे ॥टेक॥
नहीं हो रागी नहीं हो द्वेषी, हो विश्व ज्ञाता परम हितैषी।
हो दीन जन के तुम्हीं सहारे हितू न कोई सिवा तुम्हारे ॥१॥
हो वीतरागो फिर भी दया कर, तुमने उभारे हैं भील तस्कर।
पशु और पक्षी हैं तुमने तारे, हितू न कोई।०॥२॥
शरण तुम्हारी जो कोई आये, हैं कष्ट उसके तुमने मिटाये।
तुम्हींने सबके कारज संवारे, हितू न कोई० ॥३॥
हैं तुमने तारे हजारों धर्मी, हां पार करदो ये इक अधर्मी।
"शिवराम" इतनो अरज गुजारे, हितू न कोई० ॥४॥

भजन नं० २२ वीर जयन्ति

चाल—हमने जफा न सीखी (फिल्म–जिन्दगी)

प्रभु वीर की जयन्ति आओ मनायें भाई।
तिथि चैत की सुतेरस मंगल घड़ी है आई ।।टेक

कुंडलपुरी के राजा, राय सिद्धार्थ के घर।
त्रिशला के कूख से थी, जिसने झलक दिखाई ।। १

जब धर्म नाम पे थी, बहती लहू की नदियाँ।
महावीर ने तब आकर, करी जुल्म की सफाई ।।२
सद्धर्म है अहिंसा, प्रभु वीर ने बताया।
श्री फिलासफी कर्म को, अद्भुत् हमें दिखाई ।।३
कान्तवाद से ही, होता विरोध जग मे।
झगड़ा मिटाने वाली, आनो हमें सुनाई। ४
समता का पाठ जिसने, संसार को पढाया।
परमात्म पद के पाने, का युक्ति थी सुझाई ।।५
उपकार जो किये हैं, कैसे उन्हें सुनावे।
"शिवराम" वीर महिमा, जाये न हमसे गाई ।।६

भजन नं० २३

चाल—मोरी छम छम बाजे पायलिया (फिल्म-घूँघट)

मोरी पार लगादो नावरिया, तोरी शरण हैं सांवरिया ।।टेक
अष्ट कर्मों ने हाय सताया मुझे,
गति चार चौरासी रुलाया मुझे।
भू जल अग्नि हुआ, बायु बनस्पति ही,
धारी इक इन्द्रिया काया स्थावरिया ।।१

जैसे मुश्किल से मिलता है चिन्तामणि,
जैसे पर्याय पाई कभी त्रस तनी।
हाँ दो इन्द्री भया, ते चौइन्द्री भया,
भया लट और कोड़ा मे भावरिया ॥२
कभी पंचइन्द्रिय होकर पशु जो हुआ,
छेदन भेदन व बन्धन का है दुख सहा।
खाई नरकों की मार, जहाँ कष्ट अपार,
मोरी पापों की डूबीजी गागरिया।
कभी स्वर्ग मिला तो भी न पाया चैन,
हा मनुष्य गति है प्रकट दुःख देन।
ऐसे भ्रमता फिरा, कहीं सुख न मिला,
मैंने शिवपुर की पाई न डगरिया ॥४

भजन नं० २४

चाल—अहसान तेरा होगा मुझ पर (फिल्म—जंगली)

अहसान तेरा महावीर प्रभु, हम कैसे बतायें जमाने को।
उपकार किये हैं जो तुमने, वे कैसे सुनायें जमाने को ॥टेक
धर्म कर्म था नष्ट हुआ जब, आचार जगत का बिगड़ चला।
तब आपका था शुभ जन्म हुआ, उद्धार जगत कर जाने को ॥१
यज्ञ में लाखों पशुओं का, बलिदान यहाँ जब होता था।
तब आपने सद् उपयोग दिया, उस जुल्म सितमके मिटाने को ॥२
थी द्वेष की अग्नि भड़क रही, जब धर्म के नाम पे लड़ते थे।
तब स्याद्वाद परचार किया, मत भेद जगत का मिटाने को ॥३
भटक रहे थे जब भव वन में, अज्ञान अँधेरा छाया था।
तब ज्ञान का था प्रकाश किया, 'शिव' राह हमें दिखलाने को ॥४

भजन नं० २५

चाल—चाहे कोई मुझे जंगली कहे (फिल्म—जंगली)

चाहे कोई हमें दीवाना कहे, कहने दो जी कहते रहे।
हम वीर के मतवाले हैं अरे, माना करो ॥टेक

वीर स्वामी, की ही भक्ति, मन अपने बसी दिन रैन।
प्रभु दर्शन, के बिना तो, नहीं हमको पडे टुक चैन।
'जय वीर' यही, ध्वनि गूंज रही ॥ १

प्रभु पूरे हैं हमारे, आज सभी अरमान।
नाचें क्यों न, नाचें क्यो न हमें मिले हैं भगवान।
धन्य - धन्य प्रभु, तिहुँ लोक विभु ॥ २

आज आंखों में समाया, रूप प्यारा ये अभिराम।
झुक-झुक के रुक-रुक के, 'शिवराम' करो प्रणाम।
वीर भक्ति करें, भव सिन्धु तरे ३॥

भजन नं० २६

चाल—बन्दा परवर थाम लो जिगर (फिल्म—फिर वही दिल लाया हूं)

कीजिए इधर, मेहर की नजर, बन के दास मैं आया हूँ।
चरणों में, आपके प्रभो, अर्ज यही इक लाया हूँ ॥ टेक

कर्मों ने हां, दुःख जो दिया, पार नहीं है उसका।
लख चौरासी योनि के अन्दर, बार अनन्ता ही भटका।
अब तो तेरी शरण गही, कष्ट हरण इक नाथ तू हो।
भिखारी तेरे द्वार का, प्यासा हूँ दीदार का ॥१ अर्ज यही ...

तुमने अन्जन किये निरंजन, दुष्ट अधम हैं तार दिये ।
सिंह और शूकर, गज और कूकर, भव से हैं पार किये ।
मेरी बिरिया ढील हैं क्यों, यह जरा 'शिव नाथ बतावो' ।
आसरा दरबार का, तेरी ही सरकार का ॥ १ अर्ज यही'''

भजन नं० २७

त्रिशला अवतारी रे ।
चाँदनपुर में प्रगट भये प्रभु सङ्कट हारी रे ॥ टेक ॥
हे ! सिद्धार्थ घर जन्म लियो प्रभु वर्द्धमान महावीर ।
बाल्यकाल में करो तपस्या, बन गये सन्मति वीर ॥
दुनिया तब से तेरी पुजारी रे ॥ चाँदनपुर० ॥
हे ! चाँदनपुर में गाय ग्वाल की, नित चरने को जावे ।
देव कृपा से दूध गाय का, टीले पर झर जावे ॥
ग्वाला है अचरज मय भारी रे ॥ चाँदन० ॥
हे ! देश २ के यात्री आवें, मन में लेकर भक्ति ।
मन-चाहे कारज हों पूरे प्रभू आपकी शक्ति ॥
लीला सब देवन से न्यारो रे ॥ चाँदन० ॥
हे ! सेवक प्रभू द्वारे पर आया मन में आशा भारी ।
अपना सम प्रभु मोहे बनालो, मेटो दुविधा सारी ॥
हम सब शरण तिहारी रे ॥ चाँदन० ॥

भजन नं २८

चाल—अहसान तेरा होरा होगा मुझ पे (फिल्म जङ्गली)
भगवान दया कर तू मुझ पे, मुझे शरण में अपनी रहने दे ।
मैं भटक रहा हूँ दुनियाँ में, मेरी व्यथा तो मुझको कहने दे ॥टेक
कर्मों ने है कलकान किया, परेशान किया मुझको भारी ।
मैंने कष्ट अपार हैं नाथ सहे, अब और तो कष्ट न सहने दे ॥१

कभी नरक गया था पशु बना मैं, तहां चैन न पाया एक घड़ी।
चिदानन्द का स्रोत हृदय मेरे, हे नाथ ! जरा तो बहने दे ॥२
मैं आतम-बल को था भूल रहा, हैं कर्म विचारे कौन अरे।
अब आतम-ध्यान की अग्नि में, 'शिवराम' इन्हें तो दहने रे ॥३

भजन नं० २६

रसिया

महावीरा झूले पलना, नेंक होले झोटा दीजो। महा०।
कोन के घर तेरो जन्म भया है- कोन ने जाये ललना। नेंक०।
सिद्धार्थ घर तेरो जन्म भयो है शिशला ने जाये ललना।नेंक०।
काहे को तेरो बना रे पालना, काहे के लागे फुंदना। नेंक०।
अगर चन्दन को बना रे पालना, रेशम लागे फुंदना।नेंक०।
पैर में घुंघरू, हाथ में झुंझना, आँगन में चाले चलना।नेंक०।
अन्दर से बाहर ले आवे, बाहर से अन्दर ले जावे।
नजर न लग जाये ललना। नेंक०।

भजन नं० ३०

चाल—मुझे दुनिया वालो (फिल्म लीडर)

मुझे दुनिया वालो दीवाना न समझो,
मैं पागल नहीं धुन समाई हुई है।
मैं अपने प्रभु की हूँ सूरत पै शंदा
छवि उनकी मन में तो छाई हुई है।। टेक
परम शान्त मुद्रा लगे मुझको प्यारी
छवि वीतरागी जगत से है न्यारी।

तसवीर इनकी तो देखी है जब से,
तभी से तो मन मेरे भाई हुई है ॥ १
धरे हाथ पै हाथ बैठे हैं ऐसे,
कि कुछ करना इनको रहा है न जैसे।
कैसा ये देखो धरा पदम आसन,
कि नाशा पै दृष्टि लगाई हुई है ॥ २
ये तसवीर अपने मन में बसा लूँ,
यही एक नकशा मैं दिल में जमा लूँ।
ये है ध्यान आतम की शुद्धि का कारण,
कर्मों की इससे सफाई हुई है ॥ ३
मैं ध्याऊँ इन्हीं को इन्हीं सा हो जाऊँ,
शिवपुर में जाकर शिवानन्द पाऊँ।
कभी न कभी तो वो शिवपद मिलेगा,
यह परतीत मन मेरे आई हुई है ॥ ४

भजन नं० ३१

तर्ज—वार-बार तोहे क्या समझाएँ पायल की झंकार (आरती)

वीरनाथ भगवान हमारी, सुन लेना जो पुकार,
तेरे बिन स्वामी मेरा कौन करे उद्धार।
भटक चुका हूँ लख चौरासी आया तेरे द्वार,
तुम जग नामी, सङ्कट मोचन हार ॥ टेक
दुष्ट ये पापी, आये सँभल संभल,
कष्ट ये मुझको दे रहे, हाय! अचल अचल।
लूट लिया है सारा मेरा ज्ञान दर्श भण्डार। १

तेरे दर को छोड़ मैं, अब जाऊँ कहां,
तुमसा दयालु और मैं, अब पाऊँ कहां।
वीतराग सर्वज्ञ तुम्हीं हो, तीन लोक हितकार ॥ २
और अञ्जन से, हैं पापी अधम तरे,
तेरी भक्ति से हैं सबके कर्म टरे।
अब 'शिवराम' शरण में आया करदो बेड़ा पार ॥३

भजन नं० ३२ (राजुल रुदन)

चाल—दो हंसों का जोड़ा बिछुड़ गयो रे (फिल्म गंगा जमुना)

नौ जन्मो का जाड़ा बिछुड़ गयो री,
गजब भयो सजनी जुलम भयो री ॥ टेक
दुष्ट कर्मों ने सखो, भरतार मोरा छीन लिया।
छीन सुख चैन लिया, आधार मोरा छीन लिया ॥
पिया बिन तड़फे जिया, दिन रैन बिताऊं कैसे।
नेमि हाय रूठ चले, उनको मनाऊँ कैसे ॥
आ करके वो तोरण से मुड़ गयो री ।।१
शोर बरात का सुन वन्द पशु चिल्लाये ।
उनको देखा जो दुःखी, भाव दया चित लाये ॥
मोड़ सिर से पटक. हाथ का कङ्गन तोड़ा।
जाय गिरनार चढ़े, मुझको बिलखती छोड़ा ॥
मोरी शादी का ठाठ बिगड़ गयो री ॥ २
प्रीति नव भव की मोरी, एक छिन में तोरी।
नहीं बतलाया मुझे, भूल हुई क्या मोरी ॥
सौतन मुक्ति ने सखी, कन्थ हमारा मोहा।
जन्म वसवें में अरी, उनसे हुआ है बिछोहा ॥

मेरी आशा का गुलशन उजड़ गयो री ॥१
तारो गहना मेरा मैं भी धरूँगी दीक्षा।
भोग विषयो की नही, मुझको रही है इच्छा।
लाओ मेरे लिए, पीछी कमण्डल साड़ी।
चढ गिरनार करूँ, मै भी तपस्या भारी॥
शिवराम' जनम यह सुधर गयो री ॥४

भजन नं० ३३ (पूजन रहस्य)

चाल—वो दिल कहाँ से लाऊ (फिल्म भरोसा)
कैसे म्हे रिझाऊँ हे नाथ! यह वतादो।
वस्तु क्या भट लाऊँ, यह तो जरा जिता दो ॥ टेक ॥

यह जानता हूँ तुमको कुछ भी नही है इच्छा।
भावो को होवे शुद्धि, वह माग तो सुझा दो ॥ १ ॥
नही चाहते हो तुम तो नेवैद्य या मिठाई।
चरु ले चरण चढाऊँ, मेरी क्षुधा मिटादो ॥ २ ॥
दरकार है न तुमको, दीपक की रोशनी यह।
किया मोह नाश तुमने, मोह-तम भगादो ॥ ३ ॥
है काम वासना के, कारण यह फूल सारे।
किया नष्ट काम तुमने, मेरे काम को नशादो ॥ ४ ॥
चर्णों मे धूप खेके, करूँ प्रार्थना मैं इतनी।
जलायें है कर्म तुमने, मेरे कर्म जलादो ॥ ५ ॥
अक्षत उदक सु चन्दन, फल को न तुमको इच्छा।
पूजन का फल यह पाऊँ, 'शिव' फल मुझे दिलादो ॥ ५ ॥

भजन नं० ३४ (राजुल पुकार)

(प्रिय छात्र निर्मलकुमार जैन खातेगाँव द्वारा रचित)

चाल—लागी छूटे ना (फिल्म कालो टोपी लाल रूमाल)

नैमि जाओ न देकर के गम लौट आओ पिया, तुम्हे मेरी कसम-टेक

ओ तुमको पुकारू॑, बन के दीवानी मानो जी पिया।
नव भव की मेरी प्रीत न तुम ठुकराना रसिया।
नाम तेरा हा नाम तेरा रटूँ हरदम ॥ १ ॥
ओ तुम तो बसो गिरनार शिखर किया ढूँढूजी कहाँ।
राजुल रुदन करत है, 'निर्मल' आओ जी यहाँ।
शरण रखो मोहे शरण रखो, मेरा सुधरे जनम ॥ २ ॥

भजन नं० ३५ (लकड़ी का)

जनमें लकड़ी मरते लकड़ी अजब तमाशा लकड़ी का।
दुनियाँ वालों तुम्हें बतायें जग है वासा लकड़ी का ॥
जिस दिन जनम हुआ था तेरा पलँग बिछा था लकड़ी का।
तुझे झूलने को मंगवाया एक पालना लकड़ी का ॥
खेल खिलौने लकड़ी के हाथी घोड़ा लकड़ी का।
पकड़ २ कर खड़ा हुआ जब वो था रहलुवालकड़ी का ॥
खेल खेलने एक दिन चाला गिल्ली डंडा लकड़ी का।
पढ़न चला लकड़ी की पट्टी और कलम था लकड़ी का ॥
तुझे पढ़ाने शिक्षक ने डर दिखलाया लकड़ी का।
पढ़ लिखकर जब व्याहन चाला रेल का डिब्बा लकड़ी का ॥
हाथ में कंगन लकड़ी का और था श्रीफल लकड़ी का।
सासूजी के द्वारे पर बंधनवार था लकड़ी का।
तोरन जिस पर मारा था वो बिछा पाटला लकड़ी का।

भांवर तेरी पड़ी माँहीं जब खंभ खड़ा था लकड़ी का ॥
ब्याह करके जब घर को लौटा दाव भूल गया लकड़ी का ॥
तीन चीज का फिकर हुआ जब नोन तेल और लकड़ी का ॥
वृद्ध भया तब चालन लागा पकड़ सहारा लकड़ी का ।
खत्म हुई दुनियाँ की झंझट टूटा जाला मकड़ी का ॥
चारों मिलकर कांधा लाया वह भी डोला लकड़ी का ।
धूंधूंका जल उठी चिता वह बना चबूतरा लकड़ी का ॥
जनमें लकड़ी ॥

भजन नं० ३६

वीर स्वामी का विवाह

करके मर्द्दन मान का उबटन लगा कर चल दिये ।
पाँचों महा व्रतों का तन जामा सजा कर चल दिये ॥
धर्म दश लक्षण का सर सेहरा सजा कर चल दिये ।
कर में रत्नत्रय का वो कंगना बँधा कर चल दिये ॥
शिव नार ब्याहन वीर बन दुल्हा दिलावर चल दिये ॥ १ ॥
सम्बर के पहरेदार थे अम्बर के थे तम्बू तने ।
भावना बाहर के जिसमें वाहर दरवाजे बने ॥
सोलह कारण थे बराती अपने आसन पर तने ।
बीच में सरकार बैठे दिगम्बर बन्ना बने ।
करके अगवानी को सुरपति सर झुका कर चल दिये ॥ २ ॥
दुल्हा की जीवन बार की तैयारियाँ होने लगी ।
कर्म के ईंधन में अग्नि ध्यान से जलने लगी ।
शील के चूल्हे पे अनुभव की कढ़ाई चढ़ गई ।
मुक्तियाँ निज गुण की घृत आराधना में तल रही ।
चासनी सोहम में समता जल मिला कर चल दिये ॥ ३ ॥

पाच सुमती तीन गुप्तो गोलियाँ माने लगी।
भ्रम क्रोध मोह प्रसाद को वह सीग दिखलाने लगी।
लख निज कुटुम्ब की हार कुमती नार खिसयाने लगी।
सुमती सखी शिव नार से घुल-घुल कर बतलाने लगी।
सुन गालियाँ चारो ही निज गर्दन झुका कर चल दिये ॥४॥
अब ध्यान शुक्ल मझार शाखा चार जब होने लगे।
मुक्ति रानी के तभी श्रृंगार सब होने लगे।
पड चुकी भावर तो नेगाचार कम होने लगे।
दुल्हन चलो तो घातिया रो-रो के जा खोने लगे।
बोले अघाती नाथ क्यो जल्दी मचा कर चल दिये ॥ ५ ॥
चारो अघाती प्रभु से कर जोड मृदु वाणी करी।
ठहरो दुल्हा कुछ और नही कुछ हमने महमानी करो।
सुन प्रार्थना बढाय को ठहरे ता जिनवाणी खिरी।
मणिक फिर योग निरोग हो जब चौथवी सीढी चढी।
स य शिव सुन्दर का अपने सग लिवा कर चल दिये ॥ ६ ॥

— —

भजन न० ३७

चाल—रेशमी सलवार (नया दौर)

वीरनाथ भगवान जग हितकारी तू,
महिमा कही न जाय दुख परिहारी तू ॥ टेक ॥
देश पडा था सोता अज्ञान नीद मे सारा,
बढी थी हिंसा भारी मचा था हाहाकारा,
हुआ अवतारी तू ॥ १ ॥
तूने है ज्ञान बताया सद्धर्म अहिंसा प्यारा,
खुद जीवो और जीने दो ये था सन्देह तुम्हारा।
दयालू भारी तू ॥ २ ॥

स्याद्वाद समझाया मतभेद मिटावन हारा,
साम्यवाद सिखलाया सिद्धांत कर्म का न्यारा।
पर हितकारी तू ॥ ३ ॥
भूले हुए थे प्राणी मुक्ति मार्ग को सारे,
राह उन्हें दिखलाकर शिवधाम को आप सिधारे।
'शिव' सुखकारी तू ॥ ४ ॥

भजन नं० ३८

चाल—रेशमी सलवार (फिल्म नया दौर)

भेष दिगम्बर धार—तू खुशहाली का।
मजा कहा नही जाये इस कंगाली का ॥ टेक ॥

बच्चा हो या बच्चा उसे निंदिया आये अच्छी,
पास न होवे लगोटी उसे चिन्ता हो फिर किसकी।
न भय रखवाली का ॥ १ ॥

छोड़े जो परिवार नही हो ममता उसे धन की,
तजे परिग्रह सारा फिर चाह मिटे सब मन की।
न फिकर घरवाली का ॥ २ ॥

धन्य दिगम्बर साधु, नग्न है वन में रहते,
खड़े-खड़े इकबारा हाथ मे भोजन करते।
काम क्या थाली का ॥ ३ ॥

तज के सारी दुविधा, जो निज आतम ध्यावे,
धन्य जन्म है उनका वो 'शिव' आनन्द को पावे।
मुकततुर वाली का ॥ ४ ॥

भजन नं० ३९

चाल—चौदहवी का चाँद हो (फिल्म चौदहवीं का चाँद)

तुम सिद्धार्थ नन्द हो, त्रिशला के लाल हो,
कुण्डलपुरी के वीर तुम, स्वामी दयाल हो ॥ टेक ॥
जब मौज-शौक के लिये या धर्म नाम पे,
चलते हो थे जवानो पे खजर दुधार थे।
उस जुल्म को मिटा दिया रक्षपाल हो ॥ १ ॥
स्याद्वाद तत्व को, तुमने सुझा दिया,
एकान्तवाद को प्रभो, तुमने भगा दिया!
सिद्धान्त कर्म के तुम्हीं वक्ता विशाल हो ॥ २ ॥
भेद ऊँच नीच तुमने दिखा दिया,
खुद ही बनो परमात्मा, रस्ता मिटा दिया,
हर एक इल्म का तुम्हीं, रखते कमाल हो ॥ ३ ॥
तेरे समान हम बने, ये ही है भावना,
'शिवराम' इस लिये करे शत वार बन्दना।
मेरे हाल पे प्रभो, अब तो कृपाल हो ॥ ४ ॥

भजन नं० ४०

चाल—मोरी छम-छम बाजे पायलिया (फिल्म घूँघट)

मोहे तज गये नेमि साँवरिया,
आज हुई में तो बावरिया ॥टेक॥
वो नौ भव के साथी, सहारे मेरे,
आके तोरन पे हाय वो वापिस फिरे।
रथ मोड़ लिया, कंगन तोड़ दिया,
गिरनारी की पकड़ी डागरिया ॥१॥

सजधज करके बैठी थी मैं तो सखी,
पिया दर्शन की थी आशा लगी।
हाय यह क्या हुआ, जो मुझको तज,
सखी फेरे फिरे न भावरिया ॥२॥
हा पशु जो पुकारे, दया आ गई,
मेरी नौ भव की प्रीति भुला दी गई।
सौतन मुक्ति ने हा कैसा जादू किया,
मेरी स्वामी ने लीनी न खाबरिया ॥३॥
सखी चल करके दीक्षा दिलादो मुझे,
साड़ी पीछे कमंडल मंगादो मुझे।
मत माँग भरो न सिंगार करो,
मैं जाऊँ गये जहाँ साँवरिया ॥४॥
धन्य-धन्य है धन्य तू राजुल मती,
'शिवराम' है सतियों में मोटी सती।
है संयम लिया घोर तप हे किया,
मिली भवदधि तरण को नावरिया ॥५॥

भजन नं० ४१

दयालु प्रभु से दया माँगते हैं।
अपने दुखों की हम दवा मांगते हैं ॥टेक॥
नहीं हम-सा कोई, अधम और पापी।
सत कर्म हमने ना, किये हैं कदापी ॥
किये नाथ हमने अपराध भारी।
उनकी हृदय से हम क्षमा माँगते हैं ॥
प्रभु तेरी भगति मे मन यह मगन हो।
निजातम चिंतन की हर दम लगन हो ॥

मिले सत सगम कर आत्म चिन्तन।
बरदान भगवान ये सदा माँगते हैं ।।
दुनियाँ के भोगो की ना कुछ कामना है।
स्वर्ग के सुखो की ना कुछ चाहना है।
यही एक आशा है, बन जाये तुम से।
'शिवराम' पैसा ना टका माँगते है ।।

भजन नं० ४२

चाल—प्यार करले (फिल्म जिस देश मे गङ्गा)

प्यार करले धर्म से ही सुख पायेगा,
पार करले भव सिन्धु तारयेगा ।।टेक।।
काम नही आये कोई, तेरे सूत नारी ये,
पडे रह जाये तेरे, कोठी भडार ये।
विचार करले तू अकेला ही जायेगा ।। १ ।।
आदत बिगाडी तूने अपनी अज्ञान से,
पाप कमाया तूने लाभ और मान से।
सुधार करले, नही तो पीछे पछतायेगा ।। २ ।।
नर भव ये आया तेरे मुश्किल से हाथ है,
धर्म जैन पाया, सौभाग्य की बात हे।
उद्धार करले ऐसा अवसर न पायेगा ।। ३ ।।
हाथों से दान कर, नाम ले भगवान का।
'शिवराम' तू कल्यान कर अपना जहान का।
प्रचार करले जग तेरा, यश गायेगा ।। ४ ।।

भजन नं० ४३

(तर्ज—चुप चुप खड़े हो)

भव भव रुला हूँ न पाया कोई पार है,
तेरा ही आधार है तेरा ही आधार है।
सीता के शील को तुमने बचाया है,
सूली से सेठ को आसन बिठाया है॥
खिली २ कलियाँ किया नागहार है 'तेरा'
जीवन की नाव वे कर्मों के भार से,
अटकी है कीच बीच रतियो की मार से।
रही सही पत का तू ही पतवार है तेरा ही'''
महिमा का पार जब सुर नर न पा सके,
"सौभाग्य" ये प्रभु गुण तेरे गा सके।
बार बार आपको सादर नमस्कार है, तेरा''''

भजन न० ४४

चाल—बेगानी शादी मे (फिल्म जिस देश मे गङ्गा).

निराली शान्ति पे हूँ मैं तो दिवाना।
वीतरागी प्रभु झलक टुक दिखाना ॥टेक
दर्शन जो पाऊँ मैं, धन्य कहाऊँ मैं।
फूला न अङ्ग मे, अपने समाऊँ मैं।
मङ्गल नायक हो, परम सहायक हो।
चिन्तामणि एक सब सुखदायक हो॥ १
आसन जमाया है, ध्यान लगाया है,
हाथ पे हाथ ये कैसा धराया है।

हमको बताता है, ये जितलाता है,
काम करना न कुछ भी बाकी रहता है ।। २
भूषण न कोई है, दूषण न कोई है,
हथियार तो इनके हाथ न कोई है ।
न द्वेषी न रागी हैं, ये वीतरागी हैं,
मोह की सेना इनसे डर करके भागी है ।। ३
आदर्श स्वामी हैं, क्रोधी न कामी हैं
लोभी न मानी ये जिनवर नामी हैं ।
इनको जो ध्याता है, इनसा हो जाता है,
भक्ति से इनकी वो शिव-पद पाता है ।। ४

भजन नं० ४५

चाल—कोई बताते दिल है जहाँ (फिल्म मैं चुप)

कोई बता दे नेमि कहाँ, गये सखीरी ले चल वहाँ ।
मुझे मिलादे जरा तो चलके, नेमि प्यारी गये हैं जहाँ ।। टेक
ब्याहन आये नेमि प्रभू तो, बारात वो भारी लाये थे ।
छप्पन करोड़ जुड़े यादव-गण, सङ्ग मुरारी आये थे ।। १
तोरण पै जब आये प्रभु तो, बंधे पशु चिल्लाये हैं ।
देख दुखी उनको नेमि, वैराग्य हृदय में लाये हैं ।। २
रथ को मोड़ा कंगना तोड़ा, वस्त्राभूषण डारे हैं ।
छोड़ मुझे गिरनारी जाकर, पञ्च महाव्रत धारे हैं ।। ३
दया न मुझ पर आई उन्हें, अफसोस यही इक भारी है।
नवभव से मेरी प्रीति लगी, क्यों छिनमें नाथ बिसारी है ।। ४
मैं भी निज कल्याण करूँ, जग ये झूठा सारा है ।
धन्य सती तू है राजुल, शिवराम जो पन्थ चितारा है ।।५

भजन नं० ४६

चाल—ओ बसन्ती पवन पागल (फिल्म जिस देश में)

हा ! गये गिरनार साजन जाओ री जाओ रोको कोई ॥ टेक
लाये थे बरात भारी, थे मुरारी साथ मे,
म्हौर माथ पर बँधायाँ और कँगना हाथ मे,
है रँगीला मास सावन, जाओ री जाओ रोको कोई ॥ १
शोर सुन पशुगण पुकारे, जो रुके थे राह मे,
कहा रथी ने घात होगा, इनका आपके ब्याह मे ।
सुन लये वैराग्य भावन, जाओ री जाओ रोको कोई ॥ २
डार वस्त्राभरण सारे जा चढ गिरनार पे,
प्रीति नव भव की थी मेरी, तज गये भरतार वे ।
मैं करूँ अब भोग त्यागन जाओ री जाओ रोको कोई ॥ ३
छोडकर अब जगत आशा, तज दिया परिवार है,
धन्य है 'शिवराम' राजुल, जिन किया पथ सार है ।
है सती का चरित्र पावन, जाओ री जाओ रोको कोई ॥ ४

भजन नं० ४७

चाल—तेरी राहों मे खड़े हैं (फिल्म छलिया)

तेरे चरणो मे पडे हैं हम आन के ।
स्वामी हम हैं भिखारी मुक्तिदान के ॥
प्रभु ज्ञान से भरपूर, पाया आनन्द सरूर ।
वीतराग मशहूर, फिर भी हितु हो जरूर ॥ टेक
धन और दौलत हम नही चाहे, सुरपति का भी पद नही चाहे ।
चाह यही तुमसे ही हो जायें ॥ १
और नही कुछ भी है तमन्ना, सच्ची यह अरदास समझना ।
होवे नहीं अब बीच भटकना ॥ २

जब लग मुक्ति न आवे मेरी, और मिटे न भव की फेरी।
तब लग हृदय भक्ति ही तेरी ॥ ३
नाथ निवेदन हम ये लाये, कोई हविस न हमको सताये।
शिव-पद हमका अब मिल जाये ॥ ४

भजन नं० ४८

तुम करदो जी मेरा उद्धार, भगवन् वीर प्रभु ॥टेक
चहुँगति अन्दर दुख बहु पाया, इसमें अपना कोई न पाया।
फिर मैं आया तेरे द्वार, भगवन् वीर प्रभु ॥ १
दीनन के दुख टारन हारे, भक्त के कष्ट निवारन हारे।
अब मेरी ओर निहार, भगवन् वीर प्रभु ॥ २
बहुत अधर्मी तुमने तारे, अञ्जन जैसे पार उतारे।
अब ढील क्यों मेरी बार, भगवन वीर प्रभु ॥ ३
बीच भँवर में फँसी है नैया, तुम्हीं स्वामी इसके खिवैया।
करदो जी बेड़ा पार, भगवन वीर प्रभु ॥ ४
शरण में तेरे जो कोई आया, 'बाबू' उसका कष्ट मिटाया।
जीवन के आधार, भगवन् वीर प्रभु ॥ ५

भजन नं० ४९

चाल—चौदहवीं का चाँद हो (फिल्म चौदहवीं का चाँद)।
भक्ति वीर में भरा जादू महान है।
भक्ति से भक्त हो गया भगवत समान है ॥ टेक
वीतराग है मगर तारण-तरण सही।
भवसिन्धु पार हो गया जिसने शरण गही ॥
जिसने लाखों हजारों का किया कल्याण है ॥१
अञ्जन से चोर तर गये पापी महा अधम।

नर की तो कौन है कथा पक्षी पशु न कम ॥
जिनका प्रभु की भक्ति से हुआ उत्थान है ॥२
जो सिंह दुष्ट था कभी पापी दुरात्मा ।
वो ही तो वीर बन गया है परम आत्मा ॥
पूजक हो पूज्य होता है आगम प्रमाण है ॥३
ऐसा निहार के प्रभो चरणों में आ पड़े ।
तारक न कोई और है स्वामी सिवा तेरे ॥
'शिवराम' आज धर लिया तेरा ही ध्यान है ॥४

भजन नं० ५०

चाल—मोहें पनघट पर नंदलाल छेड़ गयो रे (फि० मुगलेआजम)

मोहे नेमी बिलखती को छोड़ गयो री ।
रथ तोरण पे आकर के मोड़ गयो री ॥ टेक
दया के भाव धारे, दुखिया पशु निहारे ।
हाय ! कानन में उनके, जो शोर गयो री ॥ १
नो भव की प्रीति मोरी, एक छिन बीच तोरी ।
वो तो हाय ! गिरनारी को, दौर गयो री ॥ १
हा ! वस्त्र हैं उतारे, भूषण भू पर डारे ।
हाये ! हाथों का कँगना, वो तोड़ गयो री ॥ ३
बिना पिया घर न रहना, मेरा उतारो गहना ।
एरी नेमी बताओ, किस ठौर गयो री ॥
सखी री लाओ साड़ी, कमण्डल पीछी प्यारी ।
मोरी चुरी सुहाग को, फोर गयो री ॥ ५
करूँगी मैं भी तप को, तजूंगी भोग व्यसन को ।
शिव-नारी से नेहा, वो जोर गयो री ॥ ६



भजन नं० ५१

चाल—तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ (फि० धूल का फूल)

प्रभू वीर का आसरा चाहता हूँ
चरण में पड़ा हूँ शरण चाहता हूँ ॥टेक॥

चारो ही गतियो मे भटका फिरा हूँ
सदा मोक्ष मन्जिल पे अटका रहा हू
कहीं ना मिला सच्चे पथ का प्रदर्शक,
कृपा दृष्टि तेरी सदा चाहता हुँ। चरण मे० । १ ।

बीच भँवर मे है मेरी नाव माँझी,
चहुं ओर से चल रही है वो आँधी,
अरे कौन है जो आके पतवार थामे,
मिलादे तू साहिल यही चाहता हू। चरण मे० । ।

महर की नजर करदे मेरे वीर प्यारे,
तू भव से तिरादे मिटा दे कष्ट सारे,
'अभय' बन भिखारी खड़ा तेरे द्वारे,
मैं झोली मेरी भरना चाहता हूँ। चरण मे० ॥ ३ ॥



भजन नं० ५२

चाल—जब प्यार किया तो डरना क्या (फिल्म मुगले आजम)

अब कर्म बली से डरना क्या—अब कर्म बलो से डरना क्या,
है सामने मूरत वीर प्रभू की, उनकी छवी का कहना क्या,
अब कर्म बली से डरना क्या। टेक

मैना सती ने तुमको ध्याया, अपने पति का कुष्ट मिटाया।
सीता ने जब ध्यान किया तो, पावक का जल होना क्या ॥अब०

सेठ के मन मे पाप जो आया, सागर मे श्रीपाल गिराया।
नौका उसको पार लगाकर शील को रक्षा करना क्या ॥अब०
जो भी कोई शरणे आया, इच्छित फल को उसने पाया।
'अभय' यही विश्वास हृदय मे, ध्यान बिना अब जीना क्या ॥अब.

भजन नं० ५३

चाल—आ जाओ तड़पते हैं अरमा (आवारा)

गुण गाओ सदा उस नन्दन के
त्रिशला जिसकी महतारी है।
यह भूमि महा पावन है जहाँ,
तब वीर भये अवतारी हैं॥
हमदर्द न था कोई भी यहाँ,
औ' मानव भी पथ भ्रान्त हुए।
जब वीर ने जग पे डाली नजर,
सुख शांति कहीं भी ना आई नजर।
तब तजा मोह झूठे जग का,
वैभव के ठोकर मारी है।
निज जीवन का उद्धार किया
सारे जग का उपकार किया।
लाखो को भव से तार दिया,
अब आज रतन की बारी है॥

भजन नं० ५४

चल दिया छोड घर बार, कुटम परिवार धारि मुनि बाना।
समझाया वीर न माना ॥टेक॥
माता त्रिशला रुदन मचाती है, यो बार-बार समझाती है।
बेटा कुछ दिन पीछे ही बन को जानो॥ समझाया० ॥१॥

बोले माता क्यों रोती है, जो होनहार सो होती है।
उठ गया मेरा इस घर से पानी दाना ॥ समझाया० ॥२॥
सिद्धारथ नृप समझाते यों, बेटा तुम बन को जाते क्यों।
क्या घर में है कुछ कमी हमें बतलाना ॥ समझाया० ॥३॥
मेरी है वृद्ध अवस्था ये, घर की को करे व्यवस्था ये।
ले राज-पाट तू सब पर हुक्म चलाना ॥ समझाया० । ॥४
मेरा घर से कुछ काम नहीं, पल भर लूंगा आराम नहीं।
इस सोते हुए जगत को मुझे जगाना। समझाया० ॥ ५ ॥
यहाँ खून से होली खिलती है, हिंसा की ज्वाला जलती है।
यह दृश्य देखकर हृदय मेरा अकुलाना। समझाया ॥ ६ ॥
पशुओं पर खंजर चलते हैं, लाखों यज्ञों में जलते हैं।
कहते इनको मिल जायगा स्वर्ग विमाना। समझाया० ॥७॥
हिंसा मे धर्म बताते हैं वेदों को खोल दिखाते हैं।
उन बेअक्लों की अक्ल ठिकाने लाना। समझाया० ॥ ८ ॥
'मक्खन' अघ के घन छाये हैं, भू-नभ सुमेरु थरांये हैं।
मैं भोगूं कैसे भोग पड़ा मस्ताना। समझाया० ॥ ९ ॥

भजन नं० ५५

चाल—चलेंगे तीर जब दिल पर तो अरमानों (फिल्म कोहनूर)

शेर—सौम्य गुण शान्ति मूरत है, सदा जो सौख्यकारी है।
लगी नासा पे दृष्टि है, चिदानन्द रूप धारी है।
वीतरागी हो तुम्हीं, मैंने शरणा आन लिया।
नहीं तुमसा दानी, प्रभु मैंने यह जान लिया।
हमें महावीर जलवे ने मस्ताना बना डाला।
अरे उस मोहनी मूरत ने दीवाना बना डाला ॥ टेक।

न रागी है न द्वेषी है हितैषी हो कोई ऐसा।
सुना है देव दुनियाँ मे कई हैं पर नही ऐसा।
शरण मे जो कोई आया तो शिववाला बना डाला-हमें ॥१
लाख खोजा लाख ढूंढा समझ मे न कोई आया।
खाक दुनियाँ की हमने छान ली पर नहीं पाया।
जो देखा दिल के परदे मे तो मतवाला बना डाला-हमे ॥२
देख रंगीनियाँ मत भूल जीवन की जों फानी है।
'अभय' सुन जो सभल पाया सीख तूने जो मानी है।
जो आया शरण मे मुक्ती का परवाना बना डाला।
हमे महावीर के । ३ ॥

भजन नं० ५६

चाल—मैं तो तुम सग नन मिला के (फिल्म मनमौजी)

मैं तो चरणो मे आके शरण गही स्वामी ॥ टेक ॥

दुष्ट कर्म ने मुझ को सताया, लख चोरासी मे भटकाया
है दुख पाये चहुंगति लाके ॥ १ ॥

हो वीतरागी पर हितकारी, महिमा तेरी जग से न्यारी
गणधार भक्ति करे यश गाके ॥ २ ॥

अजन जैसे तस्कर तारे, दुष्ट अधम-जन तुमने उभारे
पात्र भये सब तेरी कृपा के ॥ ३ ॥

अब शिवनाथ हमे निस्तारो, स्वामी अपना विरद निहारो
हार गया हूँ टेर लगा के ॥ ४ ॥

भजन नं० ५७

चाल—तेरा जादू न चलेगा ओ सपेरे (फिल्म डैस्ट हाउस)

प्रभु दर पे खड़ा हूँ मैं तेरे अब काट दे तू जग के फेरे
सब कर्म खड़े मुझे घेरे, यह नयना है तुझको हेरे ।टेक।
जग के मोह मे मैं हूँ फँसा, कौन जो मुक्त कराये
विषय कीच मे मैं हूँ धँसा, कौन जो मुझको बचाये
दास तेरा अब तुझको पुकारे—प्रभु ॥ १ ॥
दुःख को ही सुख माना है मैंने सुमति कभी नही आई
सारा हो जग छाना है मैंने, शान्ति कही नही पाई
अब 'अभय' खड़ा तेरे द्वारे—प्रभु ॥ २ ॥

भजन नं० ५८

श्री जिनदेव के चरणो से तेरा ध्यान हो जाता,
तो इस ससार सागर से तेरा कल्याण हो जाता ।।टेक।।
न बढती कर्म बीमारी, न होती जगत मे ख्वारी।
कामना पूजता सारा, गले का हार हो जाता ।।
।। श्री० ।।
परेशानी न हैरानी, दफा हो जाती मस्तानी।
धर्म का प्याला पी लेता तो बेडा पार हो जाता ।।
।। श्री० ।।
रोशनी ज्ञान की मिलती, दिवाली दिल मे हो जाती।
हृदय मदिर मे भगवान का, तुझे दीदार हो जाता ।।
।। श्री० ।।
जमी पर बिस्तरा होता तो चादर आसमान बनती।
मोक्ष गद्दी पर फिर प्यारे तेरा घरबार हो जाता ।।
।। श्री० ।।

लगाते देवता तेरे चरण की धूलि मस्तक पर।
अगर भगवान की भक्ति मे, तेरा ध्यान हो जाता ॥
॥ श्री० ॥
भक्त जपता अगर माला, प्रभू की एक भक्ति से।
तो तेरा घर भी भक्तो के, लिए दरबार हो जाता ॥
॥ श्री० ॥

भजन नं० ५९

चाल -जादूगर सैया छोड मेरी (फिल्म नागिन)

डब रही नैया, कोई न खिवैया, हे जी दीनानाथ तनक सहारा दो
तू ही प्रभु मेरा दास हूँ मैं तेरा, रक्षा है तेरे हाथ, तनक सहारा दो
छाया अँधियारा सूझे न किनारा, मजिल मेरी बडी दूर है
दीन दयाल करुणा सागर, नाम तेरा मशहूर है
तू ही तो निभावे साथ। १।
दास ये पुकारे अर्ज गुजारे, माला रटे तेरे नाम की।
देर करो मत, आओ जी स्वामी, विपत हरो 'शिवराम' की ॥
हे नाथ नमाऊँ माथ। २।
(प्रिय शिष्या जयमाला द्वारा रचित)

भजन नं० ६०

चाल—नगरी २ द्वारे २ (फिल्म मदर इण्डिया)

जङ्गल-जङ्गल पर्वत-पर्वत ढूंढूं रे सांवरियां।
नेमी-नेमी रटते-रटते हो गई रे बावरिया। टेक।
शौरीपुर से व्याहन आये, स्वामी नेमि कुमार री।
तोरण से रथ को है मोडा, जीव दया चित धार री।
मोड़ तोड़ गिरनार चढ़े तज जूनागढ़ नगरिया ॥ १ ॥

चूड़ी उतारो साड़ी उतारो-उतारो सब सुन्दर श्रृङ्गार री
मतना माँग भरो तुम सखियो, आऊँगी गिरनार री ।।
कोई चलके आज बतादो, गिरवर की डिगरिया ।।२।।
नौ भव बालम सङ्ग रही है, छोडा क्यों इस जन्म में ।
मुझ पर स्वामी दया न आई. बियोग लिखा क्या कर्ममें ।
पल-पल मनवा रोवे छल के नंनो की गगरिया ।। ३ ।।
तुमने बिसारा स्वामी मुझको, मैं भी त्यागूं आपको ।
हाथ कमडल पीछी लेकर, मैं धारूं वैराग को ।
चरणो मे रहकर के संभालूं, जीवन की गठरिया ।।४।।
धन्य सती तू राजुल देवी, धारा आत्म ज्ञान है ।
छेदन कर स्त्री लिंग तूने, पाया स्वर्ग महान है ।
अब तो चेत अरी 'जयमाला' बीतो ये उमरिया ।।५।।

भजन नं० ६१

चाल—ऐ मालिक तेरे वन्दे हम (फिल्म दो आँख बारह हाथ)
ऐ स्वामी तेरे भक्त हम, तेरी भक्ति से काटे करम ।
सब पाप तजें, तेरा नाम भजे, हम अपना सुधारें जनम ।। टेक ।।
हमें हर एक से प्यार हो, नहीं दुष्ट का अपकार हो ।
गुणीजन को सदा, देख हर्षे हिया, प्रेम भावों का संचार हो ।
हरें दुखिया का दुख दर्द हम, दूर दुनियां के करदें जुलम ।। १ ।।
है मन की यही कामना, हर मुश्किल का हो सामना ।
कोई हो ना दुखी, रहे सब ही सुखी, हो दिन रात ये भावना ।
बम्ब ऐटम को करदें खतम, माने दुनियां अहिंसा धरम ।। २ ।।
नित शास्त्रों का होवे पठन, "शिवराम" हो गुणा का ग्रहण ।
पर निंदा करे, सतसङ्ग करे आत्म तत्व का हो चितवन ।
सारे नष्ट करें, दुष्करम, जिससे मिल जावे पदवी परम । ३ ।



भजन नं० ६२

चाल—होंठ गुलाबी गार कटोरे (फिल्म घर-संसार)

अग्रसेन के लाल-तुम्हारी अजब निराली शान—
ओय बलिहारी जांवा,
हम है सार, भक्त तुम्हारे, पार्श्व प्रभु भगवान—
ओय बलिहारी जांवा " टेक "

देखे देव जगत के हम सब, तुमसा देव नही है और
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी-ढूंढ चुके हैं हम सब ठौर।
कही नही पाया, जग भरमाया, होय रहा हैरान ॥ १ ॥
कामदेव को नष्ट किया है, नहो है किंचित माया मान।
क्रोध लोभ का नाम नही है, राग द्वेष का नही निशान।
तप कर सारे, कर्म निवारै, पद पाया निर्वाण ॥ २ ॥
परम शान्तमय इनकी मुद्रा, नग्न दिगम्बर है अधिकार।
इनकी मूरत जग से न्यारी, पद्मासन है ध्यानाकार।
ना कोई भूषण, ना कोई दूषण, हैं आदर्श महान। ३।
परम अहिंसा तत्व है इनका, स्याद्वाद तुम सुन जाना।
साम्यवाद सिद्धान्त प्रभुका, शिवराम कभी न विसराना।
इनको ध्यावे, शिवपद पावे, हो जावे भगवान ॥ ४ ॥

भजन नं० ६३

चाल—मेरा नाम राजु (फिल्म जिस देश में गङ्गा बहती)

भजो वीर स्वामी सुहाना है नाम।
भक्ति से पावोगे मुक्ति का धाम ॥ टेक ॥

स्वार्थ की दुनियांसे दिलको हटाना, महावीर चरणोंमें चित्त लगाना
आदर्श अपना उन्हीं को बनाना, गुण गान रहे नित ध्यान रहे।
दूर मान रहे, ये जबाँ पे तराना।

जय वीर प्रभु, महावीर प्रभु, अतिवीर प्रभु का यश गाना ॥१॥
मनुष्य जन्म को नही व्यर्थ गँवाना, परोपकार मे जीवन बिताना
निज और पर का विवेक जमाना ।
अज्ञान हरो, पहिचान करो, निज ध्यान धरो, समय को कमाना
भज नाम अरे 'शिवराम' तेरे सब काम सरे, हा मुक्ति को जाना-२

भजन नं० ६४

चाल—तेरी प्यारी २ सूरत को (फिल्म ससुराल)

तेरी प्यारी-प्यारी मूरतिया मुझको सुहानी लगे शांति भरपूर ।
तेरी परम दिगंबर सूरतिया मुझको सुहानी लगे शांति भरपूर ।
॥ टेक ॥
पद्मासन बैठे ऐसे, करना कुछ नाही जैसे ।
हाथ नहीं हथियार है कोई, मारे दुष्ट कर्म कसे ।
राग द्वेष का नाम नहीं हैं ज्ञान में भगवान पगे । शांति भरपूर-१
तेरे दर्श किया करूँ, शांति सुधा रस पिया करूँ ।
तुमको निज आदर्श बनाके आतम आनन्द लिया करूँ ।
मुझमे-तुझमें फर्क नहीं जब हृदय में ज्ञान जगे । शांति भरपूर-२
तुमको जो नर ध्याता है, तुमसा ही हो जाता है ।
भक्ति भाव से मेंढक भी तो सुर पदवी को पाता है ।
'शिवराम' शरण में जो भी आये, उसके सारे कर्म भगे । शांति-३

भजन नं० ६५

चाल—इक सवाल मैं करूँ (फिल्म ससुराल)

हूँ बेहाल क्या कहूँ तुम कृपाल हो प्रभो ।
मेरे हाल पे दयालु कुछ खयाल हो ।टेक।

दुष्ट कर्म पड़ा ये प छे, इससे कौन बचावे ।
लख चौरासी योनि के अन्दर, नाना नाच नचाये ।
काल अनन्त निगोद मे बीता, जामन मरन सताये ।
नरक वेदना कौन उच्चारे, घोर महा दुख पाये ।।१
भूख प्यास और छेदन-भेदन कष्ट पशु पर्याये ।
सर्दी-गर्मी बध और बधन, भारी भार उठाये ।।
चाह-दाह मे जरे हमेशा, यद्यपि देव कहाये ।
गल की माला जब मुरझाई, मरन समय बिल्लाये।।२
मनुष्य-जन्म मे रोगी-सोगी, निर्धन हो दुख पाये ।
है कलहारी नारी घर में, पुत्र मिला दुख दाये ।।
हो करक कलकान बहुत,'शिवराम' शरण मे आये ।
कर्म से पिंड छुड़ादो स्वामी तुमने कर्म खपाये ।२

भजन न० ६६

चाल—जो वायदा किया वो निभाना पड़ेगा (फिल्म ताजमहल)

प्रभू की शरण मे तुमको आना पड़ेगा
छोड़के सारे द्वारे सुन मेरे प्यारे सर- झुकाना पड़ेगा ।। टेक
अब तक भुलाया तूने- भूल है भारी,
प्रभु की लगन क्या है किसके बिसारो ।
नेहा प्रभु से, लगाना पड़ेगा तुमको प्यारे लगाना पड़ेगा—१
कुटुम परिवार सबही मतलब के नाती,
आये बुलावा कोई बनेगा ना साथी ।
मोह का पर्दा तुझे अपने दिल से भइया मेरे हटाना पड़ेगा—२

जिनको कहे तू अपना वो स्वारथ का मेला,
प्रभु के भजन बिन रहेगा अकेला।
वीर गुण गान तुमको गाना पड़ेगा तुमको आना पड़ेगा—३
अज्ञानता का छाया अन्धेरा,
'कैलाश' कर ले जीवन में सवेरा।
ज्ञान का दीया तुझे अपने मन में प्यारे जलाना पड़ेगा—४

भजन नं ६७

चाल—वो दिल कहाँ से लाऊँ (फिल्म भरोसा)

किसको विपद सुनाऊँ, हे नाथ तू बतादे।
तेरे सिवा न कोई, जो कष्ट को मिटा दे ॥टेक॥
अपराध नाथ बेशक, मैंने किये हैं भारी।
हो दीन के दयालु, उनको मुझे क्षमा दे। १
यह कर्म दुष्ट मुझको, भटका रहे हैं दर-दर।
जीवन-मरण के दुख से, हे नाथ तू बचा दे। २
धन ज्ञान अपना खोकर परेशान हो रहा हूँ।
शांति हृदय में आवे, वो उपाय तो सुझा दे। ३
टाला नहीं है टलता, विधि का उदय किसीसे।
'शिवराम' शोक चिंता, तू चित्त से हटा दे। ४

भजन नं० ६८

चाल—जो वायदा किया (फिल्म ताजमहल)

परम शान्त मुद्रा है तेरी निराली
मूर्ती हजारों देखी ऐसी न मूरत कोई
परम ध्यान वाली (अचल ज्ञान वाली)। टेक

हाथ पे हाथ धरे बैठे ऐसे, करना न कुछ भी रहा न इनको जैसे ॥
कैसा अहा, ध्यान धरा, है नासा पे दृष्टि परम ध्यान वाली । १
हाथ नहीं हथियार है कोई, काम और क्रोध विकार न कोई ॥
राग तथा द्वेष जरा, नहीं दोष कोई परम ध्यान वाली । २
है ये आत्मा के ध्यान का नक्शा, ज्ञान वैराग्य की मिलती है शिक्षा
सीखो सदा, पाठ यहाँ जो सूरत ये देती परम ध्यान वाली । ३
इनको जो ध्यावे, इनसा हो जावे, 'शिवराम, निश्चय परमपद को पावे
पूजो सदा, मन को लगा मिले स्वर्ग मुक्ति परम ध्यान वाली । ४

भजन नं० ६६

[प्रार्थना]

चाल—ओ बसंती पवन पावन (फि० जिस देश में गंगा बहती है)।

ओ जगत के शांति दाता, शांति जिनेश्वर, जय हो तेरी । ओ०

१—किसको मैं अपना कहूँ, कोई नजर आता नहीं ।
इस जहाँ में, आप बिन, कोई भी मन भाता नहीं ।
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता, शांति जिनेश्वर ।। जय""

२—तेरी ज्योति से जहाँ में, ज्ञान का दीपक जला ।
तेरी अमृत वाणी से ही, राह मुक्ति का मिला ।
शीश चरनों में झुकाता, शांति जिनेश्वर ।। जय""

३—मोह माया में फँसा, तुमको भी पहचान नहीं ।
ज्ञान है न ध्यान दिल में, धर्म को जाना न ीं ।
दो सहारा मुक्ति दाता, शांति जिनेश्वर ।। जय""

४—बनके सेवक हम खड़े हैं, स्वामी तेरे द्वार पे ।
हो कृपा तेरी तो बेड़ा पार हो संसार से ।
तेरे गुण 'सुभाष' गाता, शांति जिनेश्वर ।। जय""

भजन नं० ७०

चाल – (जयपुरी)

हो राय सिद्धरत राजदुलारे कुण्डलपुर फिर आइयो,
ये अखियाँ तेरे दर्श की प्यासी इनको प्यास बुझाइयो ।।टेक
इन्सानो हैवानो को जब, जाता बली चढाया,
धर्म अहिंसा ध्वजा उठा कर, उनको आन बचाया ।
फैसन खातिर अब पशु कटते इनका आन बचाइयो-हो इनको
तुमने था भूली जनता को, समता पाठ पढाया,
खुद जीओ जीने दो सबको, तुमने था समझाया ।
फिर से मीठी-मीठी वाणी हमको आन सुनाइयो-हो हमको
जग के लाखो जीवों का तुमने उद्धार किया था,
भटक रहे थे भव सागर मे, उनका पार किया था ।
बीच भँवर कैलाश की नैय्या इसको भी पार लगाइयो-हो इनको

भजन नं ७१ (जीवन की बाजी)

बाजी हार के जीवन की न जीत सका तृष्णा मन की ।
मैं इच्छा के तारों पर नाचा, मैं मन के इशारे पर नाचा ।
सूख गई नस-नस तन की पर जीत न सका तृष्णा मन को ।।१
मन दौलत को जब ललचाया, मैं दुनिया लूट के ले आया ।
आई झङ्कार छन-छन की पर जीत न सका तृष्णा मन को।।२
तन को रेशम पहनाने को, गहनों से इसे सजाने को ।
जा खाल उतारो निर्धन की, पर जीत सका न तृष्णा मनकी।।२
मन मेरा अब तक भी न हुआ, दूर अन्धेरा यह न हुआ ।
रही बूढ़े मे हट बचपन की, पर जीत सका न तृष्णा मन की ।।

भजन नं. ७२ (दीपमालिका)

चाल—जरा सामने तो आओ छलिये (फिल्म जन्म २ के फेरे)

महावीर का पूजन करिये—वे मुक्त गये प्रभू आज हैं।
हैं पूर्ण बने परमात्मा, वे तीन जगत सरताज हैं ॥टेक
भाग्य जगा है आज तो मानो, पावापुरी उद्यान का।
दिन है मुबारिक आज ये सज्जनो वीर प्रभू निर्वाण का।
धन्य कार्तिक अमावश प्रभाव है, बजे बाजे सब सजे साज हैं ॥१
यही तो दिन है ऐ प्यारे भाई, गौतम गुरु के ज्ञान का।
पर्व दिवाली है जग मे नामी, वीर मुक्ति कल्यान का।
दीप-रत्न आहा जगमगात है, शब्द जय-जय करें सुरराज हैं ॥२
निर्वाण लड्डु चलो चढ़ाएँ, गाये सुयश महावीर के।
आदर्श लेकर शिवराम उनका, हम भी बनेंगे वीर से।
हम मे उनमें न कुछ भी राज है, हम भी ऐसे हैं जैसे महाराज हैं-३

भजन नं० ७३

चाल—भमरो २ द्वारे २ (फिल्म मदर इण्डिया)

पार्श्व प्रभू जी पार लगादो, मेरी ये नावरिया।
बीच भँवर में आन फसी है, काढो जी सावरिया ॥ टेक
धर्मी तारे बहुत ही तुमने, एक अधर्मी तार दो,
बीतराग हे नाम तिहारा, तीन जगत हितकार हो।
अपना विरद निहारो स्वामी काहे को विरतिया ॥ १
चोर भील चंडाल हैं तारे, ढील क्यो मेरी बार है,
नाग-नागिनी जरत उभारे, मन्त्र दिया नवकार है।
दास तिहारा संकट में है, लीजो जी खबरिया ॥ २

जो कंचन करदे, पारस नाम पषान को,
हो तुम प्रभु पारस, क्यों ना फिर कल्याण हो।
नाथ मिटा दो अब तो मेरी भव-भव की धुमरिया ॥ ३

भटक रहा हूँ मैं भवसागर, आपका मुक्ति निवास है,
अपने पास बुलाओ मुझको, एक यही अरदास है।
भूल रहा हूँ नाथ बताओ, शिवपुर की डगरिया ॥ ४

भजन नं० ७४

चाल—बडे प्यार से मिलना (फिल्म अनसुईया

बडे चाव से करना प्यारे वीर प्रभु गुण गान रे।
पशु और पक्षी भी हैं जिनका।मान रहे अहसान रे ॥टेक॥
जो उपकार किये हैं हम पे, कथन करें क्या उनका।
धर्म अहिंसा का दुनियाँ मे, जिसने बजाया डंका।
खुद जीवो जीने दो सबको, ये सन्देश महान रे ॥ १ ॥
स्याद्वाद और साम्यवाद का, जिसका तत्व निराला।
आतम मैं परमातम होता, है सिद्धान्त विशाल।
कर्म फ्लासफी है लासानी, वीतराग विज्ञान रे ॥ २ ॥
ऐसे वीर परमउपकारी, महिमा जिनकी है जग से न्यारी।
तुम 'शिवराम' बनो उन जैसे, करके उनका ध्यान रे ॥ ३ ॥

भजन नं० ७५

चाल—वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया (फिल्म मिस मेरी)

कुण्डलपुर का श्री महावीरा, जग की आंखो का तारा।
त्रिशला नन्दन, दुरित निकन्दन, सिद्धार्थ का राजदुलारा ॥टेक॥

धर्म नाम पर हवन यज्ञ में, पशु बलियें दी जाती थीं।
बेजवान पशुओ के खून से, होलो खेलो जाती थी ॥
दीन दुखी जीवों का भगवन, आकर तुमने कष्ट निवारा ॥१॥
जब-जब तेरे भक्तो पर भी सकट कोई आया था।
बने तुम्ही हो सकट मोचन, तुमने कष्ट मिटाया था ॥
सीता मनोरमा चन्दना दृष्टान्त दे रहा है ग्रन्थ हमारा ॥२॥
तेरे इस उपदेश को भगवन हम फिर भूले जाते हैं।
विचलित हुए धर्म से अपने इस कारण दुख पाते हैं ॥
सत्यमार्ग पर लाए हमे जो तुम बिन भगवन कौन हमारा ॥३॥
अन्धकार के बीते युग मे तूने शमा जलाई थी।
भक्त जनो की नैया भगवन तुमने पार लगाई थी ॥
मेरी नाव भी पार लगादो है कैलाश ने आन पुकारा ॥४

भजन नं० ७६

चाल—बार-बार तुझे क्या समझाऊं (फिल्म आरती

बार-बार तोहे शीश नवाऊं आऊं तेरे द्वार।
पार्श्व प्रभू जी, कर दो भव-जल पार।
तुम बिन स्वामी, कोई न तारन हार ॥

१—पोस बदी दशमी का पहला दिन आया।
काशी मे प्रभू आपने, जन्म पाया।
अश्वसेन वामा नन्दन है, तेईसवे अवतार ॥ तुम बिन....

२—नाग जल्व में आग में जलते हुए।
नवकार सुनाया उनको, मरते हुए।
पद्मावती धरणेन्द्र बने, वह देवों के सरदार ॥ तुम बिन ...

३—योग लिया, घर-बार राज्य-सुख छोड़ दिया।
घोर तपस्या से, कर्म दल चूर किया।
केवल ज्ञान को पाकर स्वामी करते जग उपकार ॥तुम

४—कमठ जीव ने आप पे, उपसर्ग किये।
जल बरसाया आप पे, आप ध्यान लिये।
पानी पहुँचा नाक तक, प्रभु खड़े थे का उसम धार ॥तुम

५—प्रभु चरनन मे मेरा, बस ध्यान रहे।
दिल की हर धड़कन म, तेरा नाम रहे।
शिखर पे मोक्ष गये, 'सुभाग की सुनो पुकार ॥तुम

भजन नं० ७७

चाल–तेरे प्यार का आसरा चाहता हूं (फिल्म धूल का फूल)

प्रभु वीर का आसरा चाहता हूँ, यही नाम हरदम रटा चाहता हूँ

(आकाश-वाणी)

प्रभु नाम को जो रटा चाहते हो।
तो दुनियाँ में फिर क्यो फँसा चाहते हो ॥टेक

मुझे दुष्ट पापी कर्म हैं सताते।
कभी नरक का नारकी है बनाते ॥
करूँ क्या मैं वर्णन जो दुख है दिखाते।
नरक-वेदना से बचा चाहता हूं ॥ १ ॥

पशु की जो काया कभी मैंने धारी।
मरा भूखा प्यासा लदा बोझ भारी ॥
छेदन की भेदन की मारें करारी।
प्रभु इन दुखों से छुटा चाहता हूँ ॥२॥

गति देव . र मैंने पाई।
झूरा देख कर के मैं सम्पत पराई ॥
मैं छः मास रोया निकट मौत आई।
मैं सुर-पद न ऐसा लिया चाहता हूँ ॥३॥
मनुष्य-जन्म पाकर रहा तन का रोगी।
अनिष्ट और इष्ट संयोगी वियोगी ॥
रहा रात-दिन मैं तो विषयों का भोगी।
चहुँ गति से होना रिहा चाहता हूँ ॥४॥
खतम जब तलक ना यह आवागमन हो।
तेरी भक्ति में मन ये निशदिन मगन हो।
'शिवानन्द' पाऊँ यह हरदम लगन हो।
कि तुझ जैसा मैं भी हुआ चाहता हूँ ॥५

भजन नं० ७८

चाल—दिल लूटने वाले जादूगर (फिल्म मदारी)
हम सब ने मिलकर आज यहाँ, प्रभु वीर तेरा गुन गाना है।
चरणों में तुम्हारे बैठ के अपना, जीवन सफल बनाना है ॥टेक
उपकार किये जग पर तुमने, हम कैसे उन्हें भुलायेंगे।
जब तक इस तन में श्वास चले, तेरा गुण गाते जायेंगे।
तेरा नाम सदा सुखदाई है, यह सर्व जगत ने जाना है ॥ १
जिसने है तेरा जब नाम लिया, तब कष्ट मिटे उसके सारे।
हम पर भी प्रभु हो मेहर तेरी, झंझट छूटे मेरे सारे।
प्रभु देख तुम्हारी छवि हमारा मन आज हुआ दीवाना ॥ २
रिश्ता नाता जग का झूठा, यहाँ कौन बहन और भाई है।
तुम बिन इस दुनिया में भगवन, प्रभु कौन हमारा सहाई है।
'कैलाश' ने अब यह जान लिया, अब जग मत नहीं बेगाना है ॥३

भजन नं० ७६

मन हो गया दीवाना देख के छवि,
दिल हो गया मस्ताना, देख के० ॥ टेक ॥
जिसने तुमसे नाता जोडा, विषय कषायो से मुँह मोडा ।
कर दिया उद्धार तुमने उसका तभी ॥ १
तेरा हम कैसे गुण गाये, रवि को कैसे दीप दिखाये ।
तेरा उपकार न भुलायेंगे कभी ॥ २
दर्श तिहारा मैंने पाया, खुशियो का भण्डार भराया ।
हो गई आशाये मेरी पूरी सभी ॥ ३
आज तो हाथ सुअवसर आया, गुण कैलाश ने तेरा गाया ।
तेरी जय-जयकार हैं करते सभी ॥ ४

भजन नं० ८०

दर्शन करके महावीर चले जायेंगे ।
जब बुलाओगे तब ही आजायेंगे ॥ टेक
तेरे दर्शन की जब मैं इन्तजारी करी,
हुआ दीदार तेरा मेरी शुभ घड़ी ।
याद सारी उमरिया किये जायेंगे ॥ १
यह न पूछो कि यहां से किधर जावेंगे ।
वह जिधर भेज देगा उधर जायेंगे ।
हम भी माला तुम्हारी रटे जायेंगे ॥२
जिसके हृदय में वीर तेरा ध्यान है ।
वो ही ज्ञानी गुणी वीर इन्सान है ।
ध्यान महावीर जी का धरे जायेंगे ॥ ३

टूट जावे न माला कहीं प्रेम की ।
वह रतन है कि मोती बिखर जायेंगे ।।४
आप मानो न मानो खुशी आपकी ।
हम मुसाफिर हैं कल अपने घर जायेंगे ।। ५

भजन नं० ८१

चाँदनपुर महावीर को शीश झुकाऊं मैं,
तेरे दर को छोड कर, किस दर जाऊं में।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं ।।
जब से नाम भुलाया तेरा, लखो कष्ट उठाये हैं।
ना जाने इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये हैं ।।
शर्मिन्दा हूँ आपसे क्या बतलाऊं मैं ।।
मेरे दुष्ट कर्म ही मुझको, तुमसे ना मिलने देते हैं।
जब मैं चाहूँ दर्शन पाना, रोक तभी वह लेते हैं ।।
कैसे भगवन् आपके दर्शन पाऊं मैं ।।
मोह मिथ्या में पड़ कर स्वामी, नाम तुम्हारा भूला था।
जिसको समझा था सुख मैंने, वह दुख का गोरख धन्धा था ।।
मोह माया को छोड़ कर शरण खड़ा हूं मैं ।।
बीत चुकी सो बीत चुकी, अब शरण आया तुम्हारी ।
दर्शन भिक्षा पाने को, दो नयन कटोरे लाया ।।
मन में प्रभु अपने ज्ञान का दीप जलाऊं मैं ।।

भजन नं० ८२

सब मिल के आज जय कहो श्री प्रभु की ।
मस्तक झुका के जय कहो श्री वीर प्रभु को ।।टेक

विघनों का नाश होता है लेने से नाम के।
माला सदा जपते रहे श्री वीर प्रभु की ॥१
ज्ञानी बनो दानी बनो बलवान भी बनो।
अकलङ्क सम बन के कहो जय वीर प्रभु की ॥२
होकर स्वतन्त्र धर्म की रक्षा सदा करो।
निर्भय बनो अरु जय कहो श्री वीर प्रभु की ॥३
तुझको भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है 'दास'।
उस वाणी पे श्रद्धा करो श्री वीर प्रभु की ॥४

भजन नं० ८३

मन हर तेरी मूरतिया मस्त हुआ मन मेरा।
तेरा दर्श पाया, तेरा तेरा दर्श पाया ॥ टेक ॥
प्यारा-प्यारा सिंहासन अति भा रहा, भा रहा।
उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा छा रहा ॥
पद्मासन अति सोहैं रे नैना निरख अति चित
ललचाया। ॥ पाया तेरा० ॥
प्रभु भक्ति से भव के दुख मिट जाते हैं, जाते है,
पापी तक भी भवसागर तिर जाते हैं, जाते है ॥
शिवपद वोही पाया रे शरणागत मे तेरी जो जीव
आया पाया तेरा० ॥
साँची कहूँ खोई निधि मुझको मिल गई, मिल गई।
उसको पाकर मन की अँखियाँ खुल गई ॥
आशा पूरी होगी रे आशा लगाये 'वृद्धि तेरे
द्वार आया ॥'पाया तेरा० ॥

भजन नं० ८४

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे हैं।
झुका तेरे चरणो मे सर जा रहे हैं ॥
यहाँ से कभी दिल न जाने को करता
करें कैसे जाए बिना भी न सरता।
अगरचे हृदय नयन भर आ रहे है ॥ प्रभु दर्श कर० ॥१
हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई,
न मन्दिर मे बहुमूल्य वस्तु चढ़ाई।
यह खाली फकत और कर जा रहे है ॥ प्रभु दर्श कर० ॥२
सुना तुमने तारे अधम चोर पापी,
न धर्मी सही फिर तेरे हैं हामी।
हमे भी तो करना अमर जा रहे है ॥ प्रभु दर्श कर ॥३॥
बुलाना यहाँ फिर भी दर्शन को अपने,
सुमन तुम भरोसे लगे कर्म हरने।
जरा लेते रहना खबर जा रहे हैं ॥ प्रभु दर्श कर० ॥४॥

भजन नं० ८५

अब तो बँधाओ मोरी धीर हो वीर स्वामी।
कब से खडा हूँ तोरे तीर, हो वीर स्वामी ॥ टेक ॥
सागर से श्रीपाल निकाला, रैन मजूषा का दुख टाला।
आके हरो सब पीर, हो वीर स्वामी ॥ १ ॥
सीताजी की अग्नि परीक्षा, करी आन देवों ने रक्षा।
पावक से हुआ नीर, हो वीर स्वामी ॥ २ ॥
रानी ने जब सेठ सताया, सूली पर था उसे चढाया।
तुमने हरी दुख पीर हो वीर स्वामी ॥ ३ ॥

मानतुङ्गजी श्री मुनिराया, तालों में था बन्द कराया।
झड़ पड़ी तुरन्त जंजीर, हो वीर स्वामी ॥ ४ ॥
पिण्डी फटने के अवसर पर, तुमको ही ध्याया था मुनिवर।
प्रकट हुए चन्द्र वीर हो वीर स्वामी ॥ ५ ॥
जिस जिसने प्रभु तुमको चितारा, उसही का दुख तुमने टारा।
प्रेमी हुआ है धीर हो वीर स्वामी ॥ ६ ॥

वीर पालना भजन नं० ८६

मणियों के पालने में स्वामी महावीर झूले।
रेशम की डोरी पड़ो मोतियो में गुथवाँ लड़ो ॥
त्रिशला माताजी बड़ी देख कर हृदय में फूले ॥ मणि० ॥
चुटकी बजाय रही हस के खिलाय रही।
राजा सिद्धारथ मगन होके राज-पाट में भूले ॥ मणि० ॥
कुण्डलपुरवासी सारे बोले हैं जय जयकारे।
दर्शन कर प्रेम से महाराज के छरणों में झूले ॥ मणि० ॥
इन्द्रादि देव आये शीश चरणों में झुकाये।
'किशना' के हृदय की मटकने लगी सारी चूले ॥ मणि० ॥

पद्मपुर भजन नं० ८७

मुझ दुखिया की सुनले पुकार भगवन पद्म प्रभो ॥ टेक ॥
दीनों के हो तुम प्रतिपालक, धर्म के हो संचालक।
किये अनेकों सुधार भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ १ ॥
चारों गति में दुख बहु पाया, काल अनादि दुख में गमाया।
आया तोरे दरबार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ २ ॥

नर्क गति की करुण वेदना, जन्म मरण कर्मन संग कीना।
मैं भोगे दुःख अपार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ३ ॥
सदुपदेश दे लाखों तारे, अंजन जैसे अधम उबारे।
अब मेरी ओर निहार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ४ ॥
सेवक शान्ति शरणे आया, दर्शन करके पाप नशाया।
जीवन के आधार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ५ ॥

भजन नं० ८८

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर एक दर्श भिखारी आया है।
प्रभू दर्शन भिक्षा पाने को दो नयन कटोरे लाया है॥
नही दुनियाँ में कोई मेरा है आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभू एक सहारा तेरा है जग ने मुझको ठुकराया है॥
धन दौलत की कछु चाह नही घरबार छुटे परवाह नहीं।
मेरी इच्छा तेरे दशन की दुनियाँ से चित्त घबराया है॥
मेरी बीच भँवर में नैया है बस तू ही एक खिवैया है।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने भवसिंधु से पार उतारा है।
आपस में प्रीत व प्रेम नही तुम बिन अब हमको चैन नही।
अब तो तुम आकर दर्शन दो त्रिलोकी नाथ अकुलाया है॥
जिन धर्म फैलाने को भगवान कर दिया मन धन अर्पण।
नव-युवक मण्डल अपनाओ सेवा का भार उठाया है॥

भजन नं० ८९

(चाल—फिल्म रतन)

अब तुम्हीं चले मुख मोड़ हमें यूँ छोड़ ओ पारस प्यारा।
अब तुम बिन कौन हमारा॥ टेक॥

ये बादल घिर घिर आते हैं।
तूफान साथ में लाते हैं॥
व्याकुल होकर हमने तुम्हें पुकारा॥ जब तुम० ॥१॥
आंखों में आंसू बहते हैं।
सब रो रोकर यूँ कहते है॥
जब तुम्हीं ने हमसे किया किनारा॥ जब तुम० ॥२॥
होटों पर आहें जारी हैं।
दिल में बस याद तुम्हारी है।
ये राज भटकता फिरे है दर दर मारा॥ जब तुम० ॥३॥

भजन नं० ६०

(चाल—कव्वाली)

क्यों न अब तक हमारी सुनाई सुनाई हुई।
जब न चरणों से है लौ लगाई हुई॥टेक॥
तेरे चरणों से जिसने लगाई लगन।
पार भव से किसा उसको आनन्द घन॥
क्यों न हम पर प्रभ रहनुमाई हुई॥ क्यों० ॥ १ ॥
सेठ के पुत्र को सर्प ने था डसा।
उसके मन में तेरा ही विश्वास था॥
तेरे मन्दिर में विष की सफाई हुई॥ क्यों० ॥ २ ॥
हुक्म राजा ने सूली का जब था दिया।
तब सुदर्शन ने वह हुक्म सर धर लिया॥
सबके दिल पर घटा गम की छाई हुई॥ क्यों० ॥ ३ ॥
सूली देने का सामान तैयार था।
उसके मन में तो केवल तेरा ख्याल था॥
फिर तो सूली से उसकी रिहाई हुई॥ क्यों० ॥ ४ ॥

प्रेम चरणो से तेरे लगाया हुआ।
तेरा "पद्म" मेरे दिल मे समाया हुआ ॥
तेरे दर्शन से सबकी भलाई हुई ॥ क्यो० ॥ ५ ॥

भजन न० ६१

हमे वीर स्वामी तुम्हारा सहारा।
कुण्डलपुर के राजा सिद्धारथ प्यारा ॥
जो दर्शन दिए फिर दुबारा देना।
वह त्रिशलावती जी के आंखो का तारा ॥ १ ॥
सुना करता था जो तारीफ स्वामी।
तो वैसा ही पाया नजारा तुम्हारा ॥ २ ॥
अजब मुस्कराहट अजब ज्ञान तेरी।
अजब नुर प्यारा है स्वामी तुम्हारा ॥३॥
जो छीना है दिल को न दिलको हटाना।
हटा लोगे दिल को न होगा गुजारा ॥ ४ ॥
करो सेवको की महावीर रक्षा।
है सब प्राणियो को सहारा तुम्हारा ॥ ५ ॥
दया हम पै करना दया के हो सागर।
करोगे तुम्ही भव सागर से पारा ॥ ६ ॥
सिवा प्रेम के हम पै देने को है क्या।
झुका बस यह चरणो मे शीश हमारा ॥ ७ ॥
"किशनलाल" जैनी जन्म जन्म जाल्पे का।
बड़ प्रम से महावीर पुकारा ॥ ८ ॥

भजन नं० ६२

महावीर दया के सागर तुमको लाखो प्रणाम ।
श्री चांदनपुर वाले तुमको लाखो प्रणाम ।
पार करो दुखियो की नैया ।
तुम बिन जग मे कौन खिवैया ।।
मात पिता न कोई भैया ।
भगतो के रखवाले तुमको लाखो प्रणाम ।। महा० ।। १ ।।
जब ही तुम भारत मे आये ।
सब को आ उपदेश सुनाये ।।
जीवो के आ प्राण बचाये ।
बन्ध छुड़ाने वाले तुमको लाखो प्रणाम ।। महा० ।। २ ।।
सब जीवो से प्रम बढ़ाया ।
राग द्वेष सबका छुडवाया ।।
हृदय से अज्ञान हटाया ।
धर्म वीर मतवाले तुमको लाखो प्रणाम ।। महा० ।। ३ ।।
समोशरण मे जो कोई आया ।
उसका स्वामी परण निभाया ।।
भव सागर से पार लगाया ।
भारत के उजियारे तुमको लाखो प्रणाम ।। महा० ।। ४ ।।
'किशनलाल' को भारी आशा ।
सदा रहे दर्शन का प्यासा ।।
धर्म पुरा देहली में बासा ।
कहते बूढ़ा वाले तुमको लाखो प्रणाम ।। महा० ।। ५ ।।

भजन नं० ६३

(चाल—रसिया)

भाइयो चलो सभी मिल, महावीर जी के दर्शन को।
दर्शन करते को कर्म जजीर कतरने को भाइयों ॥ टेक ॥
अतिशय क्षेत्र जगत विख्याता चमत्कार तत्काल दिखाता।
ऋद्धि सिद्ध सब होय पूण्य भंडारा भरने को ॥
भाइयो चलो० ॥ १ ॥

जयपुर राज्य जिला हिंडौना, चांदन गाँव वीर जिन मौना।
तीर नदी गम्भीर महावीरा, रेल उतरदे को ॥
भाइयो चलो० ॥ २ ॥

बनी धर्मशाला, चहुंओरा बीच बनो मन्दिर चौकोरा।
उन्नत शिखर विशाल बने है स्वर्ग पकडने को ॥
भाइयो चलो० ॥ ३ ॥

चरण पादुका बनी पिछाडी, नशिया कहते सब नर नारी।
इसी जगह निकली थी प्रतिमा, जग अघ हरने को ॥
भाइयो चलो० ॥ ४ ॥

छत्र चढावे चवर ढुलावे, घत के भर भर दीप जलावें।
पूजन पाठ भजन विनती जयकार उचरने को ॥
भाइयो चलो० ॥ ५ ॥

चैत सुदी मे होता मेला लाखों गूजर मीना मेला।
जुडे हजारों जैनी भाई, भवसागर तरने को।
भाइयो चलो० ॥ ६ ॥

एकम बदी बैशाख हमेशा, रथ निकले श्री वीर जिनेशा।
"मक्खन" भी वहाँ आय, प्रभु का नाम सुमरने को ॥
भाइयो चलो० ॥ ७ ॥

भजन नं० ९४

पाये पाये जी वीर के दर्शन पाये जिया हर्षाये ।
सब टले हमारे पातक पुण्य कमाये ॥ टेक ॥
भूले-भूले अब तक भटके अब ना भटका जाये ।
शिव सुखदानी तुमको पाकर कैसे भूला जाये ॥
पायें० ॥ १ ॥

भवोदधि तारन तरन जिनेश्वर तुम ग्रन्थों में गाये।
फिर भक्तो की नाव भँवर में कैसे गोता खाये ॥
पायें० ॥ २ ॥

विघ्न निवारो सङ्कट टारो राखो चरण निभाये।
फिर 'सौभाग्य' बढे भारत का घर घर मङ्गल गाये ॥
पायें० ॥ ३ ॥

भजन नं० ९५

व्याकुल मोरे नयनवा चरण शरण में आया ।
दर्श दिखादो स्वामी दर्श दिखादो ॥ टेक ॥
कर्म शत्रु तो घिर,घिर सिर पर आ रहे ।
भव सागर के दु:ख अनन्ता पा रहे पा रहे ॥
इनसे वेग बचाओ रे अर्ज हमारी मानो ।
दु:ख मिटा दो स्वामी दु:ख मिटा दो ॥ व्याकुल ॥ १ ॥
तीन भुवन में तुमसा स्वामी और न कोई पाते हैं ।
स्वामी तुम बिन गैर और नहीं पाते, है ॥
पथ दिखलाओ रे अर्ज हमारी मानो ।
दु:ख मिटादो, स्वामी दु:ख मिटादो ॥ व्याकुल० ॥ २ ॥

सब जीवों का दुख से बेड़ा पार करो, पार करो ।
'सेवक' का भी स्वामी अब उद्धार करो, उ० करो ॥
सब ही शीश नवावें रे अर्ज हमारी मानो ।
दुःख मिटाओ स्वामी दुख मिटादो ॥ व्याकुल० ॥ ३ ॥

भजन नं० ६६

वीर क्या तेरी निराली शान है ।
देख के दुनियाँ जिसे हैरान है ॥ टेक ॥
जाने क्या जादू भरा है आप में ।
हर बशर को आपका ही ध्यान है ॥ वीर० ॥१॥
सैकड़ो मीलो से आते हैं यहाँ ।
दर्श बिन तेरे दुनियाँ हैरान है ॥ वीर० ॥२॥
जिसने जो हसरत तुम्हे जाहिर करी ।
आपने पूरा किया है अरमान है ॥ वीर० ॥३॥
जो भी आया आपके दरबार में ।
उसको मुँह माँगा दिया वरदान है ॥ वीर० ॥४॥
जीव हिंसा को हटाया आपने ।
सारे जीवों पर तेरा अहसान है ॥ वीर० ॥५॥
रास्ता मुक्ति का बतलाया हमें ।
तेरा ममनु सारा हिन्दुस्तान है ॥ वीर० ॥६॥
कामधेन सी है ज्योती आप में ।
वो ही शक्ति आप में परवान है ॥ वीर० ॥७॥
है दया करना धर्म इन्सान का ।
वीर स्वामी का यही फरमान है ॥ वीर० ॥८॥

'राम' पर भी हो इनायत की नजर ।
आपके सम्मुख खड़ा नादान है ॥ वीर० ॥६॥

भजन नं० ९७

महावीर स्वामी, हो अन्तर यामी ।
हो त्रिशला नन्दन, काटो भव फन्दन ॥
बाले ही पन में, तप कीना बन मे ।
दरश दिखाया, भूल न जाना ॥
पार लगाना, कृपा निधाना ।
महिमा तुम्हारी, है जग में न्यारी ॥
सुधि लो हमारी, हो व्रत के धारी ।
बन खण्ड तप करने वाले, केवल ज्ञान के पाने वाले ।
सद् उपदेश सुनाने वाले, हिंसा पाप मिटाने वाले ॥
हो तुम कष्ट मिटाने वाले, पशुवन बन्धन छुड़ाने वाले ।
स्वामी प्रेम बढाने वाले, ती तुम नियम सिखाने वाले ॥
पूरण तप करने वाले, भगतो के दुख को हरने वाले ।
पावापुर में आने वाले, स्वामी मोक्ष के जाने वाले ॥

भजन नं० ९८

मैंने छोड़ा सभी घरबार, भगवान तेरे लिये ।
तुमको टीला खोद निकाला, मेहनत से यह छप्पर डाला ।
रहे सब परिवार ॥ भगवन० ॥ १ ॥
जोधराज को तुमने बचाया, फिर मन्दिर उसने बनवाया ।
जैनी आ रहे अपार ॥ भगवन० ॥ २ ॥

दबे पडे अब कोई न आवो, तुम्हें न आने दूँ मन भाया।
चाहे हो आये तकरार ॥ भगवन० ॥ ३ ॥

चढे यहाँ जो मेरा नारियल, सोना चाँदी केशर तन्दुल।
थी यहाँ गऊ की धार ॥ भगवन० ॥ ४ ॥

जो तुम मन्दिर से जाओगे, प्रीत मेरी सब बिसराओगे।
हो जाऊंगा मैं ख्वार ॥ भगवन० ॥ ५ ॥

बीवी बच्चे सब चिल्लायें, उधर खड़ी गैया डकराये।
मर जाँवे धरणि सर मार ॥भगवन०॥ ६ ॥

असर किया वो ग्वाल रुदन ने, तभी वहाँ हितकार गगन से।
सुर द्वार कराई पुकारा ।। भगवन० ॥ ७ ॥

प्रतिमा यहाँ से जब यह जावे, गाड़ी को तू हाथ लगावे।
पहले छत्री करे तय्यार ॥ भगवन० ॥ ८ ॥

उसका सदा चढ़ावा खाता, जब चाहे तब दर्शन पाता।
सदा रक्खे खुला दरवार ॥ भगवन० ॥ ९ ॥

तब से नित छबि बढती जावे, छत्र चवर कोई द्रव्य चढ़ावे।
गावे सुमत कीर्तन द्वार ॥ भगवन० ॥१०॥

भजन नं० ९९

वीरी वीरा* मैं पुकारू तेरे दर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया महावीरजी भगवान ने॥
मोहिनी छवि को दिखादो अब मेरे भगवन मुझे।
तेरी चरचा हम करेंगे, दूर बाहर के सामने ॥वीरा०

---

* वीरा वीरा की जगह कभी २ मीं वीरो भी बकता है।

डूबते श्रीपाल को तुमने, बचाया है प्रभो।
द्रोपदी की लाज राखी कौरव-दल के सामने ।।वीरा०
डारकर बनकर सरप जब खा लिया उस सेठ को।
सोमाने सुमरण किया महावीरजी के नाम को।।वीरा०
चिल हम सगका भटकता, वीर के दींदार को।
कर जोड के देखा करू, मैं तेरे दर के सामने ।।वीरा०

भजन नं० १००(श्रद्धा के फूल)

एक प्रेम-पुजारी आया है, चरणो मे ध्यान लगाने को।
भगवान तुम्हारी मूरत पर, श्रद्धा के फूल चढाने को।।
तुम त्रिशला के दृग-तारे हो, पतितो के नाथ सहारे हो।
तुम चमत्कार दिखलाते हो, भक्तो के मान बढाने को ।। १ ।।
तुमरे बियोग मे हे स्वामी ! हृदय-व्यथा बढती जाती।
भारत मे फिर से आ जाओ जिन-धर्म का रग जमाने को ।।२।
उपदेश धर्म का देकर के, फिर धर्म सिखादो भारत को।
आओ एक बार प्रभु आओ, हिंसा का नाम मिटाने को ।।३।।
प्रभु तुमरे भक्त भटकते हैं, तेरे नाम को हरदम रटते है।
'त्रिलोकी' नित्य तरसता है, प्रभु आपके दर्शन पाने को ।। ।।

भजन न० १०१

वीर स्वामी का सुन्दर अधर पालना।
सज रहा सिद्धारथ के घर पालना ।। टेक ।।
जिसमे रेशम की सुन्दर पडी डोरियाँ।
सच्चे मोती लगाये—चहुँ ओरियाँ ।।
है सुशोभित यह सुन्दर अधर पालना ।।वीर०।।

झुन-झुना माता त्रिशलावती ले रही।
वीर के हाथ मे हस के जब दे रही॥
वीर का हिल रहा बेखतर पालना ॥वीर० ॥२॥
देव इन्द्रादि मिल पुष्प बरसा रहे।
सारे नर-नारी हृदय मे हर्षा रहे॥
देखने जा रहा हर बशर पालना ॥ वीर० ॥ ३ ॥
जन्म-उत्सव का दिन मिल मनाओ सभी।
यह 'किशन' ने लिखा है अमर पालना ॥ वीर० ॥ ४ ॥

भजन न० १०२

जिस माया पर तू इतराये, आखिर मे कुछ काम न आये।
क्यो न ध्यान लगाये वीर से बावरिया।
जाना देश पराये झमेला दो दिन का ॥ टेक ॥
जीवन तेरा है एक सपना, इस दुनियाँ मे कोई न अपना।
हस अकेला जाये, वीर से० ॥ १ ॥
माता बहना चाची ताई, पिता पुत्र और भाई जवाँई।
मतलब से प्रीत लगाये, वीर से० ॥ २ ॥
जो है तुमको सबसे प्यारे, मृतक देख तुमसे हो न्यारे।
कोई सङ्ग मे न जाये, वीर से० ॥ ३ ॥
जिस तन को खूब सजाये, आखिर मिट्टी मे मिल जाये।
फिर पीछे पछताये,, वीर से० ॥ ४ ॥
जिस माया पर तू इतराये आखिर मे कुछ काम न आये।
यही पडी रह जाये, वीर से० ॥ ५ ॥
धर्म ही आखिर काम मैं आये, हरदम तेरा साथ निभाये।
'त्रिलोकीनाथ' समझाये, वीर से० ॥ ६ ॥

भजन नं० १०३

जब तेरी डोली निकाली जायगी।
बिन मुहूरत के उठाली जायगी॥
उन हकीमों से यह कहदो बोल कर।
दवा करते जो किताबे खोल कर॥
यह दवा हरगिज न खाली जायगी॥ १॥
क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार।
है खड़ा पीछे शिकारी खबरदार।
मार कर गोली गिराली जायगी॥ २॥
अय मुसाफिर क्यों पसरता है यहाँ।
ये मिला तुमको किराये का मकां॥
कोठरी खाली कराली जायगी॥ ३॥
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया
मरते दम लुकमान भी यह कह गया।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायगी।
चेत "भैया" अब श्री जिनवर भजो।
मोह रूपी नींद को जल्दी तजो॥
वरना यह पूंजी उठाली जायगी॥ ५॥

भजन नं० १०४

(चाल—तेरे कूचे में अस्मानों की)

तेरे दरबार में स्वामी सहारा लेके आया हूं।
तेरे दर्शन को पाने की तमन्ना लेके आया हूं।
घेरा मोहे अष्ट कर्मों ने, बचाओ आन कर मुझको।
यही अरदास ले करके, तेरे चरणों में आया हूं॥ १॥

हृदय में भक्ति दिल में प्रेम और नयनों में तुम मेरे,
और नयनों में तुम मेरे।
जरा तो देखले आकर, तेरे दर्शन का प्यासा हूँ ॥ २ ॥
आया हूँ द्वार पर तेरे, प्रभुजी मुक्ति बतला दो,
प्रभुजी मुक्ति बतला दो।
दया कर तारो सेवक को, शरण तेरी में आया हूँ ॥ ३ ॥

भजन नं० १०५

(चाल—एक दिल के टुकड़े हजार हुए)

वह दिन था मुबारिक शुभ थी घड़ी, जब जन्मे थे महावीर प्रभु ।
तब नरक में भी शांति पड़ी, जब जन्मे थे महावीर प्रभु ॥टेक॥
तिथि चैत सु तेरह प्यारी थी, वह धन्य कुण्डलपुर नगरी ।
सिद्धार्थ पिता त्रिशला उर से, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥१॥
जब धर्म-कर्म था नष्ट हुआ, आचार जगत का बिगड़ चला ।
तब शुद्धाचार सिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥२॥
जब यज्ञ में लाखों पशुओं का होता था बलिदान महा ।
तब हिंसा दूर हटाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥३॥
जब कर्तावाद अज्ञान बढ़ा, सिद्धार्थ कर्म को भूल गये ।
तब स्याद्वाद समझाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥४॥
जब भटक रहे थे भव वन में, शिवराह नजर नहीं आता था ।
तब मुक्ति का मार्ग दिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥५॥

भजन नं० १०६ (वीर निर्वाण)

(चाल—चुप-चुप खड़े हो जरूर कोई बात है)

धन-धन कार्तिक अमावस प्रभात है ।
चौदस की रात है, यह चौदस की रात ॥टेक॥

पावापुरी वन दिल को लुभा रहा ।
आनन्द बादल ये कैसा छा रहा ।
जै-जैकार झड़ी लगी मानो बरसात है ॥ १ ॥

ऊषा है फूली सवेरा भी खो गया ।
रात्रि भी खो गई, अँधरा भी खो गया ।
गगन मे बाजे बजे कोई करामात है ॥ २ ॥

गये आज मोक्ष मे वीर भगवान जी ।
रत्नो की रोशनी देवो ने आन की ।
पर्व ये दिवाली चला देशो मे विख्यात है ॥ ३ ॥

तभी ज्ञान केवल है गौतम ने पा लिया ।
वही 'शिव' रास्ता हमको दिखा दिया ।
खुशियाँ मनाये क्यो न खुशी की ये बात है ॥ ४ ॥

भजन नं० १०७ (श्रीमहावीरजी की महिमा)

वीर तुम्हारा ध्यान लगाकर, जिसने आन पुकारा है ।
पार हुआ भव दुख से वोही, जिसने लिया सहारा है ।
चांदनपुर प्रभु निकस आपने, जग का काज सँवारा है ।
ग्वाले भक्ति पूरा करती मन का भाव विचारा है ।
भवन विशाल दयाल विराजें, पीछे नदी किनारा हैं ।
अन्दर बाहर वेदी ऊपर काम सुनहरी न्यारा है ॥

लगा सामने पङ्खा खेंचे, गन्दी पवन किनारा है ।
धुप की बत्ती घृत का दीपक, सम्मुख जले अपारा है ।।
चमक रत्न से रहा शिखर पर, बिजली बल्ब उजारा है ।
चार मील कटले तक पक्का, सड़क बनी सुखकारा है ।
छहों धर्मशाला में जारी, जल निर्मल नल द्वारा है ।
अञ्जन से बत्ती खम्बों पर, जले कतार कतारा है ।।
वीर चरण पर छतरी अन्दर, चढ़े दूध की धारा है ।
देश देश के यात्री आते, रहता जय-जय जयकार है ।
फाटक ऊपर निशि दिन बजता, शहनाई नक्कारा है ।
घन घन घण्टा घड़ी घूंघरू घड़नावल झङ्कारा है ।
हरमोनियम, बाजा, तबला गुणगायन गुञ्जारा है ।
दर्शन पूजन भवन भावना, रहती बारम्बार है ।
तीनों शिखर वीर का झण्डा, लहर लहर फहराया है ।
स्याह लाल गुल वर्ण वर्ण का, दरशा रहा नजारा है ।।
निकट रेल स्टेशन पर भी स्वामी नाम तुम्हारा है ।
नया कीर्तन "सुमत" आपका, सदा रचे मन हारा है ।।
त्रिशला निकन्दन पाप निकन्दन, इतना बोल हमारा है ।
ऐसे पुण्य क्षेत्र के दर्शन, हमको हो हर वारा है ।।

भजन नं० १०८ (महावीर की अमर कहानी)

सुनो सुनो एक दुनियाँ वालो महावीर की अमर कहानी ।।सुनो।।
तीस वर्ष का त्रिशलानन्दन सन्मति घर से निकला ।
सिद्धार्थ नृप का प्रिय कुमार वह कर्म काटने निकला ।।
राज पाट परिवार त्याग के वह जङ्गल में आया ।
बाहर भीतर हुआ दिगम्बर ज्ञान ध्यान ध्याया ।।सुनो।।

घोर तपस्या करके उसने बारह वर्ष बिताये।
कर्म काट के केवल पाया सब प्राणी हर्षाये॥
यज्ञों में नर पशु मरते थे आकर शीघ्र बचाये।
मोह नींद से जगा जगाकर सम्यक् ज्ञान कराये॥सुनो॥
धर्म उपदेश देकर जग को सुख में उसे बनाया।
स्याद्वाद का पाठ पढ़ा के हठ का भूत भगाया॥
मोक्ष-मार्ग बतलाकर प्रभु ने प्राणी मुक्त कराया।
पावापुर के बीच सरोवर बन्धन तज शिव पाया॥सुनो॥
बापू ने भी शिक्षा ले देश मुक्त करवाया।
चला गया वो वीर मार्ग से लौट न जग में आया॥
सत्य अहिंसा ज्ञान रूप जो वीर ने धर्म बताया।
प्रसिद्ध कहे सुज्ञों ने उसकी भक्ति से अपनाया॥ सुनो ॥सुनो॥

भजन नं० १०६ (महावीर भक्ति)

जो तेरी याद महावीर आती रहेगी,
तो कर्मों की उलझन भी जाती रहेगी।
बुरा यह हुआ जो मैं तुमसे अलहदा,
तुम्हारी जुदाई सताती रहेगी॥
यह मुमकिन नहीं मैं तुम्हे भूल जाऊँ,
मेरी जान भी चाहे जाती रहेगी।
जमाना तो बदला मगर हम न बदले,
नजर तेरे कदमों में जाती रहेगी॥
जुदा आप मुझसे रहेंगे तो कब तक,
मेरी आरजू तो बुलाती रहेगी।
मेरे इसके दिल को सुना तो यूँ बोले,
यह किरणों की झलको तो आती रहेगी॥

नही छोडा तीर्थंकरों को कर्म ने,
तेरी भी मुसीबत यह जाती रहेगी ।
छिपा है जो सिद्धों मे जाकर तू मुझसे,
नजर मेरी तुझ पै वहीं जाती रहेगी ॥
मेरा दिल बना है तेरा डाकखाना,
खबर इसमे तेरी आती रहेगी ।
गया छोड लिख कर पता तू जो अपना,
तेरा भेद वाणी बताती रहेगी ॥
मैं पहुंचूंगा चरणो मे अब वीरवर के,
जो उलफत हुई है जाती रहेगी ।
खिंचा है जो नक्श 'मुरारी' के दिल पर,
मिटेगा न दुनियाँ मिटाती रहेगी ॥

भजन नं० ११०

मनोकामना

मेरे मन मन्दिर मे आन पधारो, महावीर भगवान् ॥ टेक ॥
भगवान तुम आनन्द सरोवर ।
रूप तुम्हारा महा मनोहर ॥
निशिदिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान् ॥१॥
सुर किन्नर गणधर गुण गाते ।
योगी तेरा ध्यान लगाते ॥
गाते सब तेरा यश गान, पधारो महावीर भगवान् ॥२॥
जो तेरी शरणागत आया ।
तूने उसको पार लगाया ॥
तुम हो दयानिधे भगवान्, पधारो महावीर भगवान् ॥३॥

भक्त जनो के कष्ट निवारे।
आप तरे और हमको भी तारे॥
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान् ॥४॥
आये हैं अब शरण तिहारी।
पूजा हो स्वीकार हमारी॥
तुम हो करुणा दया निधान पधारो महावीर भगवान् ॥५॥
रोम रोम मे तेज तुम्हारा।
भूमण्डल तुमसे उजियारा।
रवि "शशि" तुमसे ज्योतिर्मान पधारो महावीर भगवान् ॥६॥

भजन नं० १११

(चाल—तुम्ही चले परदेश ! फिल्म—रतन)

क्यो ! वीर लगाई देर सुनी नहि टेर हमे न उबारा।
दुनियाँ मैं कौन हमारा॥
ये दुख के बादल छाए है,
हम बेवश हैं घबराये हैं।
अब तुम्ही कहो किस जाय कही न सहारा।' दुनियाँ०
हम माया पर इतराए है,
इस करनी पर पछताये हैं।
यह तुम्ही देख लो वही होय दृग धारा॥ दुनियाँ०
विषयो मे हमें लुभाया है।
अज्ञान अँधेरा छाया है।
अब सूझ रहा हैं देव कही न किनारा॥ दुनियाँ०
तुमने सब सकट तारे है,
हम से पापी तारे हैं।
"हम किस गिनती में रहे हमें न सम्हारा॥ दुनियाँ०

हम तेरा दृढ़ विश्वास किए,
'कुमरेश' हृदय में आशा लिए।
अड गए पकड कर यही तुम्हारा द्वारा ।। दुनियाँ०

भजन नं० ११२

कुण्डलपुर के श्री महावीर भज प्यारे तू श्री महावीर।
जय महावीर जय महावीर भज प्यारे तू श्री महावीर ।।टेक
मुक्ति नायक श्री अति वीर जय जय जय वर्धमान गुणधीर ।।१
त्रिशला नन्दन गुण गम्भीर' राय सिद्धारथ के सुत वीर ।।२
मोह महानल का तुम वीर, कर्म जलद को हरण समीर ।।३
तप कर तोर कर्म जजीर, केवल ज्ञान लहा बलवीर ।।४
दे उपदेश हरी जग पीर, शिवपुर पहुँचे भव के तीर ।।५

भजन नं० ११३

पल पल बीते उमरिया मस्त जवानी जाए।
प्रभु गीत गाले गाले प्रभु गीत गाले ।।
प्यारा प्यारा बचपन पीछे खो गया खो गा।
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया हो गया।
बार-बार नही पावे रे गङ्गा कहती है। प्यारे मौका है नहाले
गाले प्रभु० ।।
कैसे-कैसे बाँके जग में हो गये हो गये ।।
खेल-खेल के अन्त जमी पर सो गये सो गये ।।
कोई मगर नहीं आये रे, पंक्षी फूल रङ्गीले, मुर्झाने वाले
गाये प्रभु० ।।

तेरे घर में [illegible] [illegible] होते हैं होते हैं।
भूख के मारे [illegible] बिचारे रोते हैं रोते हैं॥
[illegible] [illegible] [illegible] तेरे जिनके नहीं तन पै कपड़ा रोटियों
के लाले, गाले प्रभु॥
गोरा-गोरा देख बदन क्यों फूला है।
चार दिन की जिन्दगानी पै फूला है भुला है॥
जीवन सुफल बनाले रे केवल मुनि समझाये ओ जाने वाले
गाले प्रभु०॥

भजन नं० ११४

नयनों में जिसके समा गई प्रतिमा श्री महावीर की।

तारो भरी रात थी सुन्दर वह ख्वाब था,
टीले की केवल खुदाई का ख्याल था।
ग्वाले की किस्मत जगा गई प्रतिमा श्री महावीर की॥

जयपुर रियासत का साही फर्मान था,
जब तोप का भी निशाना दिवान था।
गोले को ठण्डा बना गई प्रतिमा श्री महावीर की॥

मन्दिर अनोखा वह तैयार होगा,
जिससे अधिक धर्म प्रचार होगा।
मन्त्री को सब समझा गई प्रतिमा श्री महावीर की॥

जब बन्द किया सब तितलीख का मेला,
हाकिम पुलिस भेज कर तब ही खोला।
सुनकर नृप को अतिशय दिखलागई प्रतिमा श्री महावीर की॥

भजन नं० ११५

(चाल—छुप छुप खड़े ही जरूर कोई बात है)

गहरी-गहरी नदिया नाव बीच धारा है,
तेरा ही सहारा है २ ॥ १ ॥
डगमग करती है कर्मों के भार से,
मारग भूल रहे घोर अन्धकार से।
डूबती इस नाव का तू ही खेवनहार,
तेरा ही सहारा है २ ॥ २ ॥
अग्नि का नीर हुआ तेरे प्रताप से,
कुष्ट रोग दूर हुआ तेरे नाम जाप से।
भव-भव दुख का तू ही मेटनहारा है,
तेरा ही सहारा है, २ ॥ ३ ॥
वीतराग छवि लगे तेरी अति प्यारी है
चरणो पै आऊँ नाथ 'शान्ति' चित्त धारा है,
तेरा ही सहारा है, २ ॥ ४ ॥

भजन नं० ११६

महावीर भोले भाले तुमको लाखो प्रणाम।
हो पावापुर वाले तुमको लाखो प्रणाम॥

पार करी भक्तों की नैया, तुम बिन जग मे कौन खिवैया।
मात पिता ना कोई भैया, भक्तो के रखवाले तुमको० ॥ १ ॥
तुम ही जब भारत मे आये, सबको आ उपदेश सुनाये।
जीवो के आ प्राण बचाये, अन्ध छुड़ाने वाले तुमको० ॥ २ ॥
हर जीवो में प्रेम बढ़ाया, राग द्वेष सबका छुड़ाया।
हृदय में आ ज्ञान सिखाया, वर्द्ध वीर भगवान तुमको० ॥ ३ ॥

समोशरण में जो कोई आया, उसका लक्ष्मी परण निभाया।
भव सागर से पार लगाया, भारत के उजियारे तुमको० ॥ ४ ॥
'किशनलाल' को भारी आशा, सदा रहे दर्शन का प्यासा।
धर्मपुरा देहली में वासा, कहते बूरा वाले तुमको० ॥ ५ ॥

भजन नं० ११७

(चाल—कव्वाली)

मेरे भगवान मेरी यही आस है।
पार कर दोगे बेडा यह विश्वास है॥
मन के मन्दिर में आँखों के रस्ते तुम्हे।
मेरे भगवान लाना पड़ा है मुझे।
मेरे दिल से न जाना यह अरदास है॥ मेरे० ॥१॥
तेरे रहने को मन्दिर बनाया है मन।
तेरे चरणों पै अरपन किया तन व धन।
मेरे दिल से न जाओगे विश्वास है॥ मेरे० ॥२॥
प्रेम की डोर से बाँध करके प्रभो।
मन के मन्दिर मे रक्खूंगा तुमको प्रभो।
तुम्हे जाने का दूंगा न अवकाश है॥ मेरे० ॥३॥
कैसे जाओगे जाओ तो त्रिशला ललन।
तुमको जाने न दूंगा मैं आनन्द घन।
प्रेम बन्धन "पदमदास" के पास है॥ मेरे० ॥४॥

भजन नं० ११८

चाँदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो।
जयपुर राज्य गाँव चाँदनपुर, तहाँ बनो उन्नत जिन मन्दिर।
तीर नदी गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥१॥

पूरब बात चली यों आवे, एक गाय चरने को जावे ।
झरन आवे उसका क्षीर, हमारी पीर हरो ॥२॥
एक दिवस मालिक संग आयो, देखि गाय टीला सुखदायो ।
खोवत भयो अधीर, हमारी पीर हरो ॥३॥
रैन माँहि तब सुपना दीना, धीरे धीरे खोद जमाना ।
है इसमे तस्वीर, हमारी पीर हरो ॥४॥
प्रात होत फिर भूमि खुदाई वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई ।
भई इकठ्ठी भीर, हमारी पीर हरो ॥५॥
तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड हर साल करारी ।
चैत्र मास आखीर, हमारी पीर हरो ॥६॥
लाखो मैना-गूजर आवे नाच कूद गीत सुनावें ।
जय बोल महावीर, हमारी पीर हरो ॥७॥
जुडे हजारो जैनी भाई, पूजन भजन करे सुखदायी ।
मन बस तन धरि धीर हमारी पीर हरो ॥८॥
छत्र चवर सिंहासन लावे भरि-भरि घृत के दीप जलावे ।
बोलें जय गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥९॥
जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन सन्तान बढे व्यापारा ।
होय निरोग शरीर, हमारी पीर हरो ॥१०॥
"मक्खन" शरण तुम्हारी आयो, पुण्य योग ते दर्शन पायो ।
खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो ॥११॥

भजन नं० ११६

गायन (मेला चाँदनपुर)

कि मेला होय रहा चाँदनपुर दरम्यान ॥टेक॥
आ रहे यात्री दर दर से, ला रहे दीपक पूर पूर के ।
गायन हो रहा चाँदनपुर दरम्यान ॥ १ ॥

अक्षत चन्दन पुष्प जल से दीप धूप नैवेद्य व फल से ।
होय रहा चांदनपुर दरम्यान ॥२॥
देख लोक है नाच व गान्ता, प्रेम भाव से सब भारत ।
जय जय बोल रहा चांदनपुर दरम्यान ॥३॥
चम्पापुरी में पद्मप्रभ जी, महावीर मे महावीर जी ।
दुखड़ा खोय रहा चांदनपुर दरम्यान ॥४॥
भवन विशाल वीर का लखकर, वीर प्रभु के चरण सुमर कर ।
'सुमत' चित डोल रहा चांदनपुर दरम्यान ॥५॥

भजन नं० १२०

(रथ मे विराजमान भगवान के सामने गाने का भजन)

प्रभु रथ में हुए सवार, नक्कारा बाज रहा ॥टेक॥
क्या ठुमक ठुमक रथ चलता है ।
वे छत्तर शीश पर हिलता है ॥
क्या छाई आज बहार । नक्करा ॥ १ ॥

किस छवि से नाथ बिराज रहे ।
नासा दृष्टि से छाज रहे ॥
अद्भुत बाजे सब बाज रहे ।
सब बोलो जय जय जयकार । नक्कारा० ॥ २ ॥

ढोलक अरु बाजे नकारा है ।
बाजे का स्वर अति प्यारा है ॥
तबले का ठुमका न्यारा है ।
झांझन की हो झङ्कार ॥ नक्कारा० ॥ ३ ॥

कहे "किशन" जगमें बाला है।
तेरे नाम पै जो मतवाला है।।
सब पियो धरम का प्याला है।
हो भव सागर से पार ।। नक्कारा० ।। ४ ।।

भजन नं० १२१

पद्म प्रभु

म्हारा पदम प्रभु जी की सुन्दर मूरत म्हारे मन भाई जी।
बैशाख शुक्ल पचम तिथि आई प्रगटे त्रिभुवन राई जी।
म्हारे मन भाई जी म्हारा पद्म० ।।टेक।।

रतन जडित सिंहासन सोहे, जहाँ पर आप विराजा जी।
तीन छत्र थाकाँ सिर सोहे, चौंसठ चँवर ढराये जी ।।
म्हारे मन भाई जी० ।।१

अष्टद्रव्य ले थाल सजाकर पूजा भाव रचाया जी।
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनाया जी ।।
म्हारे मन भाई जी० ।।२

समवशरण में जो कोई आया, उसका परण निभायाजी।
जो कोई अन्धा लूला आया, उसका रोग मिटाया जी ।।
म्हारे मन भाई जी० ।।३

जिसके भूत डाकिनी आवें, उसका साथ छुडाया जी।
लाखो जैन अजैनी भाई, जय जय जय शब्द उचारे जी ।।
म्हारे मन भाई जी० ।।४

अजब देव बहुतेरे सेये, प्रभु मिथ्यात छुडाया जी।
मूला जाट के बैल के घट में, जीव खोजने आया जी ।।
म्हारे मन भाई जी० ।।५

फैली प्रभु की महिमा भारी, आते नित नर नारी जी।
ठाढ़ीं 'सेवक' अर्ज करे छै, जीवन मरण मिटाया जी॥
म्हारे मन भाई जी० ॥६

भजन नं० १२२

जय बोलो जय बोलो, श्री वीर प्रभु की जय बोलो। टेक॥
जब दुनियाँ में जुल्म बढा था, हिंसा का यहाँ जोर बढ़ा था।
आप लिया अवतार, प्रभु की जय बोलो ॥१॥
पुण्य उदय भारत का आया, कुण्डलपुर में आनन्द छाया।
हो रही जय जय कार, प्रभु की जय बोलो ॥२॥
राय सिद्धारथ राजदुलारे, त्रिशला की आँखों के तारे।
तीन लोक मनहार, प्रभ की जय बोलो ॥३॥
भर यौवन मे दीक्षा भारी, राज पाट की ठोकर मारी।
करी तपस्या सार, प्रभू की जय बोलो ॥४॥
तप कर केवल ज्ञान उपाया, जग का सब अंधेरा मिटाया।
कीना धर्म प्रचार, प्रभू की जय बोलो ॥५॥
पशु हिंसा को दूर हटाया, सबको 'शिव' मारग दरशाया।
किया जगत उद्धार, प्रभू की जय बोलो ॥६॥

भजन नं० १२३

पद्म प्रभु

कभी याद करके फरियाद सुनके चले आओ हमारे पदमा ॥ टेक
भक्ति भाव से पूजा रचाऊँ, मन मन्दिर में तुमको बिठाऊँगा
दुखी जान करके, अपना मान करके चले आओ हमारे पदमा
चले आवो हमारे पदमा ॥१

अँधियारी रात मे मै हूं किनारे, अब तो यह नया है तेरे सहारे
क्षमा दान करके, अपना मान करके चले आओ हमारे पदमा
चले आओ हमारे पदमा ॥२
तेरेही खातिर तो निकालाहूं घरसे, अब दूर न होना प्रभुमेरी नजरसे
हमने लिया शरण बेडा पार करना चले आओ हमारे पदमा
चले आओ हमारे पदमा ॥३
दर्शन दिखाके अब मुंह न मोडना, आशा लगायेहूं दिलको न तोडना
बालक जान करके खेवन हार बनके चले आओ हमारे पदमा
चले आओ हमारे पदमा ॥४

भजन नं० १२४

सिद्ध क्षेत्र गायन—श्री सम्मेद शिखर

मेरे स्वामी शिखर जी दिखादो मुझे,
भव फन्द से नाथ छुडादो मुझे ॥टेक॥
भक्ति मे लीन भक्त जन आते हैं रात दिन।
ले करके अष्ट द्रव्य को चरणो मे कर नमन।
आठो कर्मों से नाथ बचा दो मुझे।
मेरे स्वामी शिखरजी दिखादो मुझे ॥मेरे०॥
दास चरणन का मुझे अपना ही जानकर।
दोषो की क्षमा कीजिए अज्ञान मानकर॥
नही मन से तू अपने भुलाये मुझे। मेरे० २
सम्यक्त शुद्ध भाव से आतम को रमा कर।
संसार दुःख हार से "मक्खन" को बचाकर॥
अपना विरद दिखाके निभाना मुझे॥ मेरे० ३

भजन नं० १२५

शान्तिनाथ स्तुति

छुडादो छुडादो छुडादो शान्तिनाथ ।
संकट से मुझको बचादो शान्तिनाथ ।।टेक।।

सती सीता का शील बचाया, श्रीपाल को पार लगाया,
मैना सुन्दरी का भाग्य दिखाया,
दुखों से अब तो छुड़ाओ शान्तिनाथ ।।छुडा०

श्वान भेक सब ही हैं तारे, सहते थे जो कष्ट अपारे,
सती सोमा के दुख निवारे
हमको भी पार उतारो शान्तिनाथ ।।छुडा०

सिंहासन सूली से रचाया सेठ सुदर्शन पार लगाया,
अंजन के कर्मों को नसाया,
कर्मों से हमको छुडादो शान्तिनाथ ।।छुडा०

सबका प्रभुजी कष्ट मिटाया, सन्मार्ग सबको दिखलाया,
"मङ्गल" भी है शरण मे आया,
आवागमन से छुड़ादो शान्तिनाथ ।।छुडा०

भजन नं० १२६

सम्मेद शिखरजी

मैं तो जाऊँ शिखर जी के वन्दन को,
वन्दन को स्वामी वन्दन को । मैं तो० ।।टेक।।

बीस जिनेश्वर मोक्ष गये हैं, परम पावन सब थान भये हैं,
झट पट पाप निकन्दन को । मैं तो० १

रस प्रभुजी की टोंक जो सोहैं, भक्ति करत मन को मम मोहैं,
मैं तो आऊं पूजन वन्दन को । मैं तो० २
भक्ति से जो दर्शन करते, नरक पशुगत दुख नहिं भरते,
चलो दुष्ट करम के खण्डन को । मैं तो० ३
'मंगलमय' वह पर्वत सारा, जय जय करत जहँ नर नारा,
है आनन्द छायो जिनवर को । मैं तो० ४

भजन नं० १२७

मैं पूजूं पूजूं शिखर सम्मेद महान ॥टेक॥
तीर्थङ्कर जिनराज बीस ने, लहो भक्त पद आन ।
और मुनीश्वर बिन गिन्ती के भये सिद्ध भगवान ॥
जनम जनम के पातक बिनसे मिले और निर्वान ।
वह वरदान चहे तुम 'जुगमन' की जो आप समान ॥

भजन नं० १२८

शखी चलो शिखर सम्मेद करन दर्शन को ।
मोरे नैन रहे दिन रैन तरस परसन को ॥टेक॥
यहाँ बीस जिनेश्वर और मुनीश्वर महा मोक्ष पद पायो ।
चौबीस जिनेश्वर अनन्ता इसी क्षेत्र शिव जायो ॥
यह धाम अनादि रहे आबादी यहीं नेम है जानो ।
तीर्थंकार के मोक्ष मिलन का यही ठिकाना मानो ॥
करे वन्दना मन वच काय, सफल जन्म हो जायो ।
पशु नरक गति नाहिं होवे, नर सुर सुख बहु पायो ॥
परतिज्ञा जिन शासन में यह, कहीं भव्य हद लायो ।
भव उनचासन तक वह प्राणी शिव रमणी पद पायो ॥

'कुसमन' ने गुण शिखर महातम, हर्ष हर्ष उचारो ।
श्री पार्श्व मुझ पर कृपा करके जनम मरण दुख टारी ।।

भजन नं० १२९

मेरे प्रभू तू मुझको बता तेरे सिवा मैं क्या करूँ ।
तेरी शरण को छोड़कर जग की शरण को क्या करूँ ।।
कलियों में बस रहे हो तुम फूलों में खिल रहे हो तुम ।
मेरे ही मन में आ बसो, मन्दिर में जाके क्या करूँ ।।
चन्द्रमा बन के आप ही, तारों में जगमगा रहे ।
तेरी चमक के सामने दीपक जला के क्या करूँ ।।
सारी उमर खतम हुई तेरी तेरी निगाहें ना फिरी ।
कर्मों के फल को भोगता कैसे बसर किया करूँ ।।
बेकल हूँ नाथ रात दिन, चैन नहीं है आप बिन ।
हरदम चलायमान मन, इसका उपाय क्या करूँ ।
शिक्षा यह मुझको दीजिये, अपनी शरण में लीजिये ।
ऐसा प्रबन्ध कीजिये, सेवा में ही रहा करूँ ।।

भजन नं १३०

नमो देव देवम् महावीर प्यारे, महावीर प्यारे, महावीर प्यारे ।
सदा सङ्कटों में तुम्हीं हो सहायक,
अभय सम्पदा के तुम्हीं हो प्रदायक ।
तुम्हीं हो पिता माता रक्षक हमारे ।। नमो देव०
तुम्हीं दीन दुखियों के दुख के हो [illegible],
तुम्हीं सर्व जीवों के हो [illegible] ।
तुम्हीं दीन दुखियों के [illegible] ।। नमो देव०

तुम्ही ने श्रीपाल सागर से तारा,
तुम्ही ने तो अञ्जन सा पापी उबारा।
मुझ भी करो नाथ जल्दी किनारे ॥ नमो देव०
तुम्ही ने सती सोम का सत बचाया,
तुम्ही ने तो विषधर को माला बनाया।
कहाँ तक बताय प्रभु गुण तुम्हारे ॥ नमो देव० ॥५॥

भजन नं० १३१

पार्श्वनाथ

पार्श्वनाथ दुखहारी तुमको लाखो प्रणाम ॥ टेक ॥
हिंसादिक पापो ने घेरा, मन मे किया विराट अँधेरा।
सहायक कोई नहीं है मेरा,
तुम हो पर-उपकारी तुमको लाखो प्रणाम ॥ पार्श्व०
अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवो के हो प्यारे,
नाग नागनी जरते उभारे,
तुम हो सङ्कट हारी तुमको लाखों प्रणाम ॥ पार्श्व०
भव से तारक नाम तुम्हारा, सुख को देना काम तुम्हारा,
मोक्ष-महल है धाम तुम्हारा,
तुम ही जग-हितकारी तुमको लाखों प्रणाम ॥ पार्श्व०
श्रीपाल को पार किया ज्यो, अञ्जन का उद्धार किया ज्यो,
"पङ्कज" मुझे बिसार दिया क्यो,
तुम हो समता धारी तुमको लाखों प्रणाम ॥ पार्श्व०

भजन नं० १३२

राजगिरी

जहाँ राजगिरी महावीर बन्दों ता भूमी ॥ टेक ॥
समोशरण महावीर विराजे,
द्वादशाङ्ग कथनी कर राजे।
क्षेत्र पञ्चगिरी धीर बन्दों ता भूमी ॥ जहाँ० १ ॥
पर्वत नीचे कुण्ड बने हैं,
कोई उष्ण कोई शीत धरे हैं।
ऐसे हैं गम्भीर बन्दों ता भूमी ॥ जहाँ० २ ॥
दर्शन करते जहाँ नर नारी,
जिनवर की प्रतिमा सुखकारी।
मिट जा भव की पीर बन्दों ता भूमी ॥ जहाँ० ३ ॥
बिहार प्रान्त में तीरथ भारी,
'मञ्जुल' दर्शन कर सुखकारी।
कटे करम-जञ्जीर वन्दों ता भू ी ॥ जहाँ० ४ ॥

भजन नं० १३३

राजगृही

पंच पहाड़ी प्यारो लगे, प्यारो लगे, बड़ो भारी लगे ॥ टेक।
पहिला विपुलाचल जहाँ सोहे,
महावीर देखत मन मोहे।
समोशरण बड़ा भारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० १ ॥
दूजा पर्वत रत्नागिर है,
दरश करे से सुख मिलत है।
जैन सभा बड़ी भारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० २ ॥

उदयगिर परवत सुखकारी,
दर्शन करते जहाँ नर नारी।
जिनवर की जयकारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० ३ ॥
चौथा परवत सोनागिर है,
भक्ति करे से पाप नसत है।
ऐसा वह हितकारी लगे ॥ पच पहाड़ी० ४ ॥
गौतम गणधर ध्यान धरे हैं,
केवल ज्ञान सु ज्योती लहे हैं।
वैभार गिर सुखकारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० ५ ॥
पाँचो परवत पाप हरन को,
'मङ्गल'मयी हैं सौख्य करन को।
ध्यान जहाँ बड़ा भारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० ६ ॥

भजन नं १३४ पावांपुरजी

पावांपुरजी महावीर हमारी पीर हरो ॥ टेक ॥
ध्यान लगाया प्रभु जहाँ आकर,
तपो भाव से करम भयाकर,
शुभ भारत तलधीर हमारी पोर हरो ॥ पावां० १
चारों तरफ कमल उगे है.
बीच में नाथ ने ध्यान धरे हैं,
मोक्ष गये आखिर हमारी पीर हरो ॥ पावां० २
जल मन्दिर की शोभा भारी,
दूर दूर के नर और नारी,
दर्श करें धर धीर हमारी पीर हरो ॥ पावां० ३

'मञ्जुल' भी दर्शन को आया,
दर्शन करके सुख बहु पाया,
निकलूं जग के तीर हमारी पीर हरो ।। पावा० ४

भजन न० १३५ पावांपुर

मैं बन्दू बन्दू पावांपुर के महाराज ।। टेक
करम नष्टकर शिवपुरी पहुँचे भये लाक सरताज ।
चारो दिशा मे कमल खिले हैं, बीच पाद जिनराज ।
श्री महावीर हो दुख 'जुगमन' हो तरण तारण जिहाज ।।

भजन न० १३६ सम्मेद शिखर

यह हुक्म हुआ सावलियाजी का बाँह पकड मंगाया जी,
भले विराजे जी ।
साँवलिया पारस नाथ शिखर पर भले विराजे जी,
देश देश का जातरी आया पूजन लेय चढाया,
आठ दरबसे पूजन कीनी मन वाँछित फल पाया ।। साव० १
यह टोक टोक कर ध्वजा विराजै झालर घटा बाजे ।
झालर के झनकारे प्रभू अनहद बाजा बाजै ।। साव० २
तीन नाले तेरस चौकी मन वाछित फल पाया ।
मन चित भल भल भले आनन्द पाया जी ।। साव० ३
कोई मागै नाती पोता कै कोई मागे दान ।
जातरी माँगै दरशन महा परसादे जी ।। साव० ४
सुख भल भल को बन्दन आवे महा सुख फल पाया ।
चरण कमल का 'खुशालचन्द' को हरख २ गुणगायाजी ।।साव५

भजन नं० १३७ सोनागिर

सोनगिरी क्षेत्र दिखाना मुझे।
अब तो सोनगिरी क्षेत्र दिखाना मुझे ।। टेक
कर्म काट मुनी जहा से मोक्ष को गये,
पाँच कोडी पचास लाख मुनि जहाँ भये,
ऐसी भूमि के दरशन करना मुझे ।। सो० १
मन्दिर जहाँ जिनेन्द्र के सोहति अतीव है,
दर्शन को पाने से बन्ध कटते सदीव हैं,
ऐसे परवत के दर्शन कराना मुझे ।। सो० २
नारायण कुण्ड भी हैगा जहाँ बना,
भौरे मे जिनवर ने शोभा को है लहा,
ऐसे प्रभु के दरशन कराना मूझे ।। सो० ३
धर्मशाला जहाँ पर रमनोक है बनी,
विद्यालय भी विद्या को देता वहाँ घनी,
ऐसे क्षत्र के दरशन कराना मुझ ।। सो० ४
'मङ्गल' जो शरण तू अघ का नाश कर,
कुमति से बचते हैं जहा दश को पाकर,
ऐमे जिनवर के दर्श कराना मुझे ।। सो० ५

भजन नं० १३८

श्री सिद्धचक्र का पाठ करो दिन आठ, ठाठ से प्रानी,
फल पायो मैना रानी,
मैना सुन्दरि इन नारी थी, कोढ़ी पति लखि दुखियारी थी,
नहिं पड़े चैन दिन रैन व्यथित अकुलानी ।। फल० ।। १ ।।

जो पति का कष्ट मिटाऊँगी, तो उभय लोक सुख पाऊँगी,
नहिं अजागल-स्तनवत् निष्फल जिन्दगानी ॥ फल० ॥ २ ॥
इक दिवस गई जिन मन्दिर मे, दर्शन कर आति हर्षी उर मे,
फिर लखी साधु निर्ग्रन्थ दिगम्बर ज्ञानी ॥ फल० ॥ ३ ॥
बैठी मुनि को करि नमस्कार, निज निन्दा करती बार-बार
भरि अश्रु नयन कही मुनि सों दुःखद कहानी ॥ फल० ॥ ४ ॥
बोले मुनि पुत्री धैर्य धरो, श्री सिद्ध चक्र का पाठ करो।
नहीं रहे कष्ट का तन मे नाम निशानी ॥ फल० ॥ ५ ॥
सुनि साधु वचन हर्षी मैना, नहिं होय झूठ मुनि के बैना।
करिके श्रद्धा श्री सिद्ध चक्र की ठानी ॥ फल० ॥ ६ ॥
जब पर्व अठाई आया है, उत्सवयुत पाठ कराया है।
सबके तन छिड़का यन्त्र-न्हवन का पानी ॥ फल० ॥ ७ ॥
गन्धोदक छिड़कत वसुदिन में, नहिं रहा कुष्ट किंचित तनमे।
भई सात शतक की काया स्वर्ण समानी ॥ फल० ॥ ८ ॥
भव भोग योगि योगेश भए श्रीपाल कर्म हानि मोक्ष गये।
दूजे भव मैना पावैं शिव राजधानी ॥ फल० ॥ ९ ॥
जो पाठ करे मन वचन तन से, वे छूटि जाँय भवबन्धन से।
'मक्खन' मत करो विकल्प कहा जिनवानी ॥ फल० ॥ १० ॥

जैन आरती संग्रह

श्री सिद्ध चक्र की आरती न० १३९

जय सिद्धचक्र देवा जय सिद्धचक्र देवा
करत तुम्हारी निशदिन मन में सुर नर मुनि सेवा। जय०
ज्ञानावर्ण दर्शनावरणी मोह अन्तराया।
नाम गोत्र वैदनी आयु को नाशि मोक्ष पाया ॥ जय० ॥ १ ॥

ज्ञान अनंत दर्श सुख बल अनन्त धारी ।
अव्याबाध अमूर्ति अगुरुलघु अवगाहन धारी ॥ जय० ॥ २ ॥
तुम अशरीर शुद्ध चिन्मूरति स्वातम रसभोगी ।
तुम्हें जपें आचार्योपाध्याय सर्वसाधु योगी ॥ जय० ॥ ३ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेश गणेश तुम्हें ध्यावें ।
भविजन तुम चरणाम्बुज सेवत निर्भय पद पावें ॥ जय० ॥ ४ ॥
संकट टारन अधम उधारन भवसागर तरणा ।
अष्ट दुष्ट रिपुकर्म नष्ट करि जन्ममरण हरणा । जय० ॥ ५ ॥
दीन दुखी असमथ दरिद्री-निर्धन-तन रोगी ।
सिद्धचक्र को ध्याय भये ते सुर नर सुख-भोगी ॥ जय० ॥ ६ ॥
डाकिन शाकिन भूत पिशाचिन व्यंतर उपसर्गा ।
नाम लेत भगि जाय छिनक मे सब देवी दुर्गा ॥ जय० ॥ ७ ॥
वन रन शत्रु अग्नि जल पर्वत विषधर पचालट ।
मिटे सकल भय कष्ट, करे जै सिद्धचक्र सुमरिन ॥ जय ॥ ८ ॥
मैना सुन्दरि कियो पाठ यह पर्व अठाईन मे ।
पति युत सात शतक कोढिन का गया कुष्ट छिन में ॥जय ॥ ९ ॥
कार्तिक फागुण सात आठ दिन सिद्धचक्र पूजा ।
करैं शुद्ध भावों से 'मक्खन' लहे वे पद पूजा ॥ जय० ॥ १०॥

[illegible] आरती न० १५०

ओम जय अन्तरयामी, स्वामी जय अन्तरयामी ।
दुखहारी सुखकारी, त्रिभुवन के स्वामी ॥ जय० टेक
नाथ निरञ्जन सब भजत सन्तन आधारा ।
पाप निकन्दन भविजन, सम्पति दातारा ॥ जय० १

करुणा सिन्धु दयानिधि, जय जय गुणकारी।
वांछित पूरण श्री जिन, सब जन सुखकारी॥ जय० २
ज्ञान प्रकाशी शिवपुर वासी, अविनाशी अधिकार।
अलख अगोचर शिव मय शिव रमणी भरतार॥ जय० ३
विमल कुतारक कर्म मल हारक, तुम हो दीन दयाल।
जय जय कारक तारक, षट् जीवन क्षितपाल॥ जय० ४
'न्यामत' गुण गावे पाप नशावे, चरण शिर नावे।
पुनि पुनि अरज सुनावे, शिव कमला पावे॥ जय० ५

आरती महावीर स्वामी नं० १४१

ओम जय सन्मति देवा, स्वामी जय सन्मति देवा।
वीर महा अति वीर प्रभु वर्द्धमान देवा॥टेक
त्रिशला उर अवतार लिया प्रभु, सुर नर हर्षाये।
पन्द्रह मास रतन कुण्डलपुर, धनपति वर्षाये॥ १
शुकल त्रयोदशी चैत्र मास की, आनन्द करतारी।
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव, ठाट रचे भारी॥ २
तीन वर्ष लों रहे गृह में, बन कर ब्रह्मचारी।
राज त्याग कर भर जीवन में, मुनि दीक्षा धारी॥ ३
द्वादश वर्ष किया तप दुद्धर, विधि चक चूर किया।
झलके लोकालोक ज्ञान में, सुख भरपूर लिया॥ ४
कार्तिक श्याम अमावस के दिन, जाकर मोक्ष बसे।
पर्व दिवाली चला तभी से, घर घर दीप जले॥ ५
वीत राग सर्वज्ञ हितैषी, शिव मग परकाशी।
हरिहर ब्रह्मनाथ तुम्हीं हो, जय जय अविनाशी॥ ६

दीनदयाला धर्म के प्रतिपाला, सुर नर नाथ अंजै।
सुमरत विघ्न टरै इक छिन में पातक दूर भजैं ॥ ७
चोर, भील चाण्डाल उबारे, भव दुख हरण तुही।
पतित जान 'शिवराम' उबारो, है जिन शरण गही ॥ ८

महावीर स्वामी की आरती न० १४२

करो आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण थान की ॥ टेक
राग बिना सब जग जन तारे, द्वेष बिना सब कर्म विदारे।
शील धुरन्धर शिव तिय भोगी, मन वच काय न कहिये योगी।
रत्न त्रय निधि परिग्रह हारी, ज्ञान सुधा भोजन व्रत धारी।
लाक अलोक व्यापे निज माही, सुखमय इन्द्रय सुख दुख नाही।
पच कल्याणक पूज्य विरागी, विमल दिगम्बर अम्बर त्यागी।
गुन मणि भूषण स्वामी, जगत उदास जमन्तरजामी।
कहैं कहां लो तुम सब जानो, द्यान.' की अभिलाष प्रमानो।
करो आरती वर्द्धमान की पावापुर निर्वाण थान की ॥

आरती महावीर स्वामी न० १४३

मैं तो आरती उतारूँ महावीर की रे।
महावीर की रे, मुक्ति धीर की रे ॥ टेक
हृदय पट खोल मुक्ति तले हिंडोल।
मधुर नाम मुख खोल मैं तो आरती उतारूँ।
मैं चरण पखारूँ महावीर की रे ॥ १
करके पूजन भजन सवेरी, शिखर विशाल की ले ले फेरी।
विनती खूब उतारूँ महावीर की रे।
मैं तो आरती उतारूँ महावीर की रे ॥ २

घर के काम सभी ठुकरा कर, बारम्बार यहाँ पर आकर ।
चरण छवि निहारूँ महावीर की रे ।
मैं तो आरती उतारूँ महावीर की रे ॥ ३

आरती पंच कल्याणक नं० १४४

आरती श्री जिनराज चरण की,
गुण छयालीस ठारह दोष हरण की ॥टेक
पहली आरती गर्भ पूर्ण की,
पन्द्रह मास रतन वर्षन की ॥ आ० ॥ १ ॥
दूसरी आरती जन्म करन की,
मति श्रुति अवधि सुज्ञान पुराण की ॥ आ० २
तीसरी आरती तपो चरण की,
पच मुष्टिका लौंच करन की ॥ आ० ३
चौथी आरती केवल ज्ञान परण की,
समोशरण धनपति चरनन की ॥ आ० ४
पाँचवी आरती मोक्ष गमन की,
सुरनर मिल उछाह करन की ॥ आ० ५
जो वह आरती करे करावे,
'द्यानत' मन वाँछित सुख पावे ॥आ० ६

(चौबीसी भगवान) आरती नं० १४५

श्री चौबीसो महाराज थारे चरणो मे नमो नमो ।
ऋषभ अजित सभव जिन स्वामी ।
अभिनन्दन हो सुमत जग नामी ॥
पद्म प्रभु महाराज थारे चरणो मे नमो २ ॥१॥ चौ०

श्री सुपार्श्व चन्द्र प्रभु स्वामी ।
पुष्प दन्त शीतल जग नामी ॥
श्री श्रेयांसनाथ महाराज, थारे चरणों में नमो २ ॥२॥ चौ०
वासु पूज्य श्री विमल नाथ जी ।
अनन्त धर्म श्री शांति नाथ जो ॥
कुन्थनाथ महाराज, थारे चरणों में नमो २ ॥३॥ चौ०
अरह मल्लि मुनि सुव्रत नाथ जी ।
नेमि नेमि बन्दों पार्श्वनाथ जी ॥
वर्द्धमान महाराज, थारे चरणों मे नमो २ ॥४॥ चौ०
दास "कन्हैया" तेरा चेरा ।
भक्तों को दो ज्ञान घनेरा ॥
सुमरे दास उमेदी आज, थारे चरणों में नमो २ ॥५॥ चौ०

आरती श्री चाँदनपुर महावीर स्वामी की नं० १४६

जय महावीर प्रभो स्वामी जय महावीर प्रभों ।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ॥
ओम जय महावीर प्रभो ॥
सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी ।
बाल ब्रह्मचारी व्रत पाल्यौ तपधारी ॥ (१)
ओम जय महावीर प्रभो ॥
आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी ।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी ॥ (२)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
जग में पाठ अहिंसा, आपहिं विस्तार्यो ।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परचार्यो ॥ (३)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥

यदि विधि चाँदनपुर में, अतिशय दरशायो ।
ग्वाल मनोरथ पूर्यो दूध गाय पायो ॥ (४)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
अमरचन्द को स्वप्ना तुमने प्रभु दीना ।
मन्दिर ३ शिखर का, निर्मित है कीना ॥ (५)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी ।
एक ग्राम तिन दीनो सेवा हित यह भी ॥ (६)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै ।
धन सुत सब कुछ पावै, सकट मिट जावै ॥ (६)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
निश दिन प्रभु मन्दिर मे, जग ग ज्योत भरै ।
हरि प्रसाद चरणो मे, आनन्द मोद भरै ॥ (८)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥

पार्श्वनाथ की आरती नं० १४७

जय पारस देवा प्रभु जय पारस देवा ।
सुर नर मुनि जन तव चरनन की करते नित सेवा ॥ टेक

पौष बदी ग्यारसि काशी मे आनन्द अति भारी ।
अश्वसेन घर वामा के उर लीनो अवतारी । जय० ॥ १ ॥
श्याम वरण नव हाथ काय पग उरग लखन सोहे ।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण सबका मन मोहे । जय० ॥ २ ॥
जलते देख नाग नागनी पढ़ नवकार दिया ।
हरा कमठ का मान ज्ञान का भान प्रकाश किया । जय० ॥ ३ ॥

मात पिता तुम स्वामी मेरे आश करूँ किसकी ।
तुम बिन दूजा और न कोई शरण गहूँ जिसकी । जय० ॥ ४ ॥
तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अन्तर्यामी ।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता त्रिभुवन के स्वामी । जय० ॥ ५ ॥
दीनबन्धु दुखहरण जिनेश्वर तुम ही हो मेरे ।
दो शिवपुर का वास दास यह द्वार खड़ा तेरे । जय० ॥ ६ ॥
विषय विकार मिटाओ मन का अर्ज सुनो दाता ।
'जियालाल' कर जोड़ प्रभु के चरणो चित लाता । जय० ॥ ७ ॥

आरती नं० १४८

साझ समय जिन बन्दो, भविजन साझ समय जिन बन्दो ।
बन्दत होत आनन्दो, भविजन साझ समय जिन बन्दो ॥ टेक
लेकर दीपक आग बोलें, खऊँ धूप सुगन्धौ ॥ भवि ॥
रतन दीप सो करूँ आरती, बाजत ताल मृदङ्गो ।
कहे 'जिनदास' समझ जिय अपने, सेवो नित्य जिनन्दो ॥भवि०॥

आरती शीतलनाथ न० १४९

जय शीतल देवा प्रभु जय शीतल देवा ।
तारण तरण जगत के स्वामी पार करो खेवा ॥टेक
गर्भ समल इन्द्रो ने मिलकर जय जयकार करे ।
पन्द्रह मास रतन भद्दलपुर आनन्द से बरसे ॥१॥
चैत बदि शुभ आठम के दिन इन्द्र सभी आये ।
छप्पन कुमारी गर्भ शोधना करती हर्षाये ॥२॥
जनमे माह बुदि बारस इन्द्रदेव आये ।
द्वादश सब साजा सवा देखि के दर्शन पाये ॥३॥
इन्द्र तथा इन्द्राणी पाण्डुक वन लाये ।
क्षीरोदधि से न्हवन किया फिर सीधे घर आये ॥४॥

राज छोड़ माह बदि बारस जिन दीक्षा लीनी ।
पञ्चमुष्टि से लौच किया नुति सिद्धनकी कीनी ।।५।।
कर्म खपाये पोह बदि चौदस का दिन जब आया ।
भवि जीवन के तारण कारण केवल प्रभु पाया ।।६।।
दे उपदेश भव्यजन तुमने जगसे पार किये ।
शुक्लपक्ष आसोज की आठम को प्रभु मुक्त गये ।।७।
शीतलनाथ चरण शरण से ए. एस. तू आजा ।
जगसे पार करे नहिं तुमको देव कोई दूजा ।।८।।

आरती पार्श्वनाथ भगवान की नं० १५०

जय पारस जय पारस, जय पारस देवा ।।टेक
माता तुम्हारी बामा देवी, पिता अश्व देवा ।
काशी जी में जन्म लिया था, हो देवो के देवा ।।१
आप तेईसवें हो तीर्थङ्कर, भक्तों को सुख देवा ।
पाँच पाप मिटाकर हमरे, शरण देवो जिन देवा ।।२
दूजा और कोई न दीखे, जो पार लगावे खेवा ।
'नवयुवक मंडल' बना रहे, जो करे आपकी सेवा ।।३

आरती नं० १५१

यह विधि मंगल आरति कीजै,
पञ्च परम पद भज सुख लीजै ।।टेक
प्रथम आरती श्री जिन राजा,
भवदधि पार उतार जिहाजा ।।यह०
दूजी आरति सिद्धन केरी,
सुमरत करत मिटे भव फेरी ।।यह०
तीजी आरति सूर मुनिन्दा,
जनम मरण दुःख दूर करिन्दा ।।यह०

चौथी आरति श्री उवज्झाया,
दर्शन करत पाप पलाया ।।यह०
पाँचवी आरति साधु तुम्हारी,
कुमति विनाशन शिव अधिकारी ।।यह०
छटी ग्यारह प्रतिमा धारी,
श्रावक बन्दूं आनन्दकारी ।।यह०
सातवी आरति श्री जिन वाणी,
"द्यानत" स्वर्ण मुक्ति सुखदानी ।।यह०

अरहन्त आरती नं० १५१

आरति श्री जिन राज तुम्हारी,
करम दलन सन्तन हितकारी ।।
सुर नर असुर करत सब सेवा,
तुम ही सब देवन के देवा ।।आ०
पञ्च महाव्रत दुद्धर धारे,
रागद्वेष परिणाम विडारे ।।आ०
भव भय भीत शरण जे आये,
ते परमारथ पन्थ लगाये ।।आ०
तुम गुण हम कैसे करि गावे,
गणधर कहत पार नहिं पावे ।।आ०
करुणा सागर करुणा कीजै,
"द्यानत" सेवक को सुख दीजै ।।आ०

मुनिराज आरती नं० १५३

आरति कोजै श्री मुनिराज की,
म उधारन आतम काज की ।।टेक।।आ०

जा लक्ष्मी के सब अभिलाषी,
सो साधन करदमवत नाखी ॥आ०
सब जग जीत लियो जिन नारी,
सो साधन नागिन वत छारी ॥आ०
विषयन सब जग जीत वश कीने,
ते साधन विषवत तज दीने ॥आ०
भुवि को राज चहत सब प्राणी,
जीरण तृण वत त्यागत ध्यानी ॥ आ०
शत्रु मित्र सुख दुख सम मानें,
लाभ अलाभ बराबर जानें ॥आ०
छहो काय पीहर व्रत धारें,
सब को आप समान निहारे ॥आ०
इह आरति पढे जो गावै,
'द्यानत' सुरग मुकति सुख पावै ॥आ०

जिनवाणी माता की आरती नं० १५४

जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी,
तुमको निशिदिन ध्यावत, सुर नर मुनि ज्ञानी ॥टेक
श्री जिन गिरते निकसी, गुरु गौतम वाणी,
जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशाणी ॥जय०
कुमत कुलाचल चूरण, वज्र सु सरधानी,
नव नियोग निक्षेपण, देखन दरयाणी ॥जय०
पातक पङ्क पखानल, पुण्य परम वाणी,
मोह महार्णव डूबत, तारण नौकाणी ॥जय०
लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी,
निज पर भेद दिखावन सूरज किरणानी ॥जय०

श्रावक मुनि मन जानी, गुण की गुण खानी,
'सेवक'' सब सुख दायक पावन परमात्मा ।।जय०

चन्द्र प्रभु की आरती नं० १५५

म्हारा चन्द्र प्रभू जी की सुन्दर मूरत म्हारे मन भाई जी ।।
सावन सुदि दशमी तिथि आई, प्रगटे त्रिभुवन राई जी ।।
अलवर प्रान्त मे नगर तिजारा, दरशे देहरे माँही जी ।।
सीता सती ने तुमको ध्याया, अग्नि मे कमल रचाया जी ।।
मैना सती ने तुमको ध्याया पति का कुष्ट हटाया जी ।।
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनाया जी ।।
मानतुङ्ग मुनि तुमको ध्याया तालो को तोड भगाया जी ।।
जो भी दुखिया दर पर आया, उसका कष्ट मिटाया जी ।।
अञ्जन चोर ने तुमको ध्याया, सूली से अधर उठाया जी ।।
समोशरण मे जो कोई आया, उसको पार लगाया जी ।।
ठाडो सेवक अर्ज करै छै, जामन-मरण मिटाओ जी ।।
नवयुग मण्डल तुमको ध्यावै, बेडा पार लगाओ जी ।।

आरती श्री चन्द्र प्रभु भगवान नं० १५६

जय चन्द्र प्रभु देवा, स्वामी चन्द्र प्रभु देवा ।
तुम हो विघ्न-विनाशक, पार करो खेवा ।।
मात सुलक्षणा, पिता तिहारे महासैन देवा ।
चन्द्रपुरी मे जन्म लियो, स्वामी देवो के देवा ।।जय०
जन्मोत्सव पर प्रभु तिहारे, सुर नर हर्षाये ।
रूप तिहारा महा मनोहर, सबही को भावे ।।जय०
बाल्य काल मे ही प्रभु तुमने, दीक्षा ली प्यारी ।
भेष दिगम्बर धारा, महिमा है न्यारी ।। जय०

फाल्गुन वदी सप्तमी को प्रभु, केवल ज्ञान हुआ ।
खुद जीवो, जीने दो सबको, यह सन्देश दिया ।।जय०
अलवर प्रान्त मे नगर तिजारा, देहरे मे प्रगटे ।
मूर्ति तिहारी अपने नैनन निरख निरख हर्षे ।।जय०
'शिखरचंन्द' प्रभु दास तिहारा, निश दिन गुण गावे ।
पाप-तिमिर को दूर करो प्रभु, सुख-शान्त आवे ।।
मेटो भव भव वासा, पार करो देवा ।। जय०

निश्चय आरती नं० १५७

यहि विधि आरति करौ प्रभु तेरी,
अमल अबाधित निज गुण केरी ।। टेक
अचल अखण्ड अतुल अविनाशी,
लोकालोक सकल परकाशी ।। इह०
ज्ञान दर्श सुख बल गुण धारी,
परमातम अविकल अविकारी ।। इह०
क्रोध आदि रागादि न तेरे,
जन्म जरा मृत कर्म न मेरे ।। इह०
अवपु अबन्ध करण सुख नासी,
अभय अनाकुल शिव पद वासी ।। इह०
रूप न-नख न भेषन कोई,
चिन्मूरति प्रभु तुमही होई ।। इह०
अलख अनादि अनन्त अरोगी,
सिद्ध विशुद्ध सुआतम भोगी ।। इह०
गुण अनन्त किमि वचन बतावें,
"दीपचन्द" भवि भावना भावे ।। इह०

आरती पद्म प्रभु बाड़ा ग्राम नं० १५८

आरती करूँ प्रभु पद्म तुम्हारी।
दर्शन ने सुख मिले अपारी ॥ टेक
जयपुर बाडा ग्राम कहाया।
सब जन को दर्शन दिखलाया।
सुदी बैसाख पचमी प्यारी ॥ आरती० १ ॥
दिगम्बर भेष सभी मन भाया।
पाप ताप सब दूर भगाया।
आरती घृत दीपक से उतारी ॥ आरती० २ ॥
छत्र तीन सिर ऊपर छाजे।
भामण्डल पिछवाडा विराजे।
दशन जन के प्रभु मन हारी ॥ आरती० ३ ॥
मूला जाट का कष्ट मिटाया।
पीडित जन शरणे जी आया।
दर्शन से दुख मिटे अपारी ॥ आरती० ४ ॥
भूत प्रेत बाधा न सतावे।
'मङ्गल' जो तुमको नित ध्यावे।
ऐसा स्वामी हो हितकारी ॥ आरती० ५ ॥

आरती श्री चन्द्र प्रभु की न० १५६

आरति करो प्रभुवर की, करो जिनवर की, बोल शशिधर की,
आरति करो शशिधर की ।
चिन्ह चन्द्र का धरने वाले, चन्द्र प्रभु जग के रखवाले ।
चन्द हो आनन्द कन्द, सच्चिदानन्द रूप अघहर की,
आरति करो शशिधर की ॥

आप आठवें है तीर्थंकर, सुखकार जक सकल कलाधर ।
मूर्ती तुम्हारी दिव्य, भव्य, सर्वज्ञ रूप मनहर की,
आरति करो शशिधर की ॥
नमत देव मुनि नाग मनुज गन वज्रानन जय जय चन्द्रानन,
चक्रेश्वर, देवेश्वर, हरिहर, सर्वेश्वर मुनिवर की,
आरति करो शशिधर की ॥
आरति करो प्रभुवर की, करो जिनवर की, बोल शशिधर की,
आरति करो शशिधर की ॥

आरती चाँदनपुर महावीर चरण की नं० १६०

आरती करूं महावीर चरण की ॥
चाँदनपुर भव के पीर हरन को ॥ टेक ॥
भक्ति मे गय्या निकट मे आकर ।
मस्तक ऊपर दूध बहाकर ।
अति विचित्र शोभा दर्शन की ॥ आरती० १
दीपक घृत का जो भर लाया ।
उमग उमग कर हर्ष मनाया ।
शान्ति मिली चरणन परसन का ॥ आरती० २
जोधराज ने जब प्रभु ध्याया ।
स्वामिन उसका कष्ट नशाया ।
ऐसी महिमा वीर चरण की ॥ आरती० ३
भाव सहित चरणो को पूजे ।
आप जपै अरु मस्तक छूजे ।
"मक्खन" बाधा भव वन की ॥ आरती० ४

विविध

अथ अठाई रासा नं० १६१

बरत अठाई जे करे ते पावै भव पार ॥ प्राणी० टेक
जम्बू द्वीप सुहावणों, लख योजन विस्तार ॥ प्राणी० १
भरत क्षेत्र दक्षिण दिशा पोदण पुर हित सारे प्राणी।
विद्या पति विद्या, सोमा राणी राणी राम ॥ प्राणी० २
चादण मुनि तहाँ पारणों, आये राजा गेह प्राणी।
सोमा राणी आहार दे पुन्य, बढ़ो अति नेह ।। प्राणी० ३
तिस समय नभ देवता, चाले जात विमान प्राणी।
जै जै शब्द भया वनो मुनिवर, पूछिया ज्ञान ॥ प्राणी० ४
मुनिवर बोले तुम राणी, नन्दीश्वर को जात प्राणी।
जे नर करही स्वभाव सो, ते पावे शिव कान्त ॥ प्राणी० ५
यह बचन राणी सुनी, मन मे भयो आनन्द प्राणी।
नन्दीश्वर पूजा करे, ध्यावे आदि जिनेन्द्र ॥ प्राणी० ६
कातिक फागुन साढ़ मे, पाले मन बच देह प्राणी।
विद्यापति सुन चेलियाँ रच्यो अनूप विमान ॥ प्राणी० ७
राणी बरजे राय का, तू ता मानुष भूप प्राणी।
मानुषोत्तर न लघ हो, मानुष जैती जात ॥ ८
सो विद्यापति ना रहा, चला नन्दीश्वर दीप प्राणी।
जिन वाणी निश्चय सही तो भवन विख्यात ॥ प्राणी ९
मानुषोत्तर गिरिसो मिले जापन जाय महीप प्राणी।
मानुषोत्तर को भेद तै परिया धारणा सिर मार ॥ प्राणी १०
विद्यापति भव चूरियो देव भयो सूर सार प्राणी।
दीप नन्दीश्वर छिनक मैं पूजा बसु विधि ठान ॥ प्राणी ११
करी सुमन बच काय सें, माला दई कर भाव प्राणी।
आनन्द सौं फिर घर आयौ नन्दीश्वर कर जात। प्राणी १२

विद्यापति का रूप कर, पूछे राणी बात प्राणी।
राणी बोली सुन राजा, यह तो कबहु न होय ॥ प्राणी १३
जिन वाणी मिथ्या नहीं, निश्चय मन में सोय ॥ प्राणी ॥
नन्दीश्वर की जयमाला, राय दिखाई आन ॥ प्राणी १४
अब तू साँच्यो मोह जाणो, पूजन करी बहु मान।
राणी फिर तासों कहैं, यह भव परसै नाहिं ॥ प्राणी १५
पश्चिम सूर्य उदय हुए जिन वाणी शुचि ताहि।
राणी सो नृप फिर बोल्यो, बावन भवन जिनालय ॥ प्राणो १६
तेरह तेरह मे बन्दे, पूजन करी तत्काल प्राणी।
जयमाला तहाँ सौमिल आयो हूँ तुझ पास ॥ प्राणो ७
अब तू मिथ्या मत मान पूजा भइ निराश प्राणी।
पूरब दक्षिण मे बन्दे पश्चिम उत्तर जात ॥ प्राणी १८
मैं मिथ्या नहीं भाषहूँ मोहि जिनवर की आण प्राणी।
सुनि राजा से सब कही जित शुभ वाणी शुभ सार ॥ प्राणा १९
ढाई दीपन लघई, मानुष जन विस्तार प्राणी।
विद्यापति से सुर भया, रूप धरौ शुभ सोइ। प्राणो० २० ॥
राणी की स्तुति करी, निश्चय समकित तोय प्राणो।
देव कहे अब सुनो राणी मानुषोत्तर मिलो जाय ॥ प्राणी २१ ॥
तिहते चय मे सुर भयो पूज नन्दीश्वर आय प्राणी।
एक भवान्तर मो रही जिन शासन परमाण ॥ प्राणा० २२
मिथ्याती मानो नाही श्रावक निश्चय आण प्राणी।
सुरचय तहाँ हथिनापुरी राज कियो भरपूर ॥ प्राणी० २३ ॥
परिग्रह तज सयम लियो, करम महा गिर चूर प्राणी।
केवल ज्ञान उपार्जन कर, मात्र गयो मुनिराय प्राणी० २ ॥
शाश्वत सुख बिलसै कदा, जन्मन-मरण मिटाय प्राणी।
अब राणी की सुनो कथा सयम लीनो सार ॥ प्राणी० २५ ॥

तप कर चय के सुर भयो, विलसे सुक्ख अपार प्राणी
गजपुर नगरी अब तरो, राज करो बहु भाय ॥ प्राणी० २६ ॥
सोलह कारण भाइयो, धर्म सुनो अधिकाय प्राणी।
मुनि सङ्घाटक आइयो, माली सार जणाय ॥ प्राणी० २७ ॥
राजा बढ़ो भाव सो, पुण्य बढो अधिकाय प्राणी।
राजा मन वैरागियो, सयम लीनो सार ॥ प्राणी० २८ ॥
आठ सहस्र नृप साथ ले, यह ससार असार प्राणी।
केवल ज्ञान उपार्ज के दोय सहस्र निर्वाण ॥ प्राणी २६ ॥
दोय सहस्र सुख स्वर्ग मे भोगे भोग सधान।
चार सहस्र भू-लोक मे हुडे बहु ससार ॥ प्राणी० ३०॥
काल पाय शिवपुर गये, उत्तम धर्म विचार प्राणी।
बरस अठाई जे करे तीन जन्म परमाण ॥ प्राणी ३१ ॥
लोकालोक सुजाण सो सिद्धारथ कुल ठान प्राणी।
भव समुद्र के तरण को, बावन नौका जाण ॥ प्राणी० ३२ ॥
जे जिय करे स्वभाव सो, जिनवर साँच बखान प्राणी।
मन बच काया जे पढे, ते पावे भव पार ॥ प्राणी० ३३ ॥
विनती कीति सुखसौ भणे जनम सफल ससार प्राणी।
बरत अठाई जे करें ते पावे भव पार ॥ प्राणी० ३४ ॥
सर्व शान्ति। सर्व शान्ति॥ सर्व शान्ति।

इति श्री अठाई रासा समाप्तम्

१६२—अञ्जना सती का जीवन (लावनी)

पतिव्रता एक नार अजना, राजा महेन्द्र की लड़की ॥टेक॥
अशुभ करम पूरब ले आयो, दासी सग बन-बन फिरती।
मान सरोवर तट के ऊपर, सिंह अडी के सुए पती ॥ १ ॥
चकवा-चकवी वियोगिन देखे, तब प्रिया की सूरत धरी।

खेलत बालक माना देखा, खुशी हुआ अपने मन में।
मामा ने जब प्यार करके, उठा लिया है गोदिन में॥ १६॥
मन्नूलाल यह देख तमाशा, खुशी हुआ अपने मन में।
चिरजीव हो यह बालक तेरा, आनन्द बरस रहा मन मे॥ १७॥

बारहमासा सीता सती नं० १६३

रागनि हिंडोल चाल श्रावण को मल्हार॥
वचन-बिन कारण स्वामी क्यो तजी विनवैजनक दुलारि॥
बिना कारण स्वामी क्यो तजी॥टेक॥

(१) आषाढ मास

आषाढ घुमडि आए बादरा, घन गरजै चहुँ ओर।
निर्जन बन मे स्वामी तुम तजी बैठन कूं नही ठौर॥
बिन कारण (१)

क्या हम सतगुरु निंदियौ, क्यो दियौ सतियन दोस।
क्या हम सत सजम तज्यौ, किस कारन भए रोस।
बिन कारण (२)

क्या पर पुरुष निहारकै, पर भव कियो है निदान।
क्या इस भव इच्छा करी, क्या मे कियो अभिमान॥
बिन कारण (३)

कटु वचन स्वामी नहिं कहे, हिंसाकरमन कीन।
परधन पर चित्त नहि दियौ, क्यो मन भयो है मलीन॥
बिन कारण (४)

(२) श्रावण मास

श्रावण तुम सम वनविषे विपति सही भगवान।
प्याय पयादो वन-वन मैं फिरी, तनक न राखी मोरी कान॥
बिन कारण (१)

बेधन बालक माका देखा, खुशी हुआ अपने मन में।
मामा ने जब प्यार करके, उठा लिया है गोदिन में ॥ १६ ॥
नन्नूलाल यह देख तमाशा, खुशी हुआ अपने मन में।
चिरजीव हो यह बालक तेरा, आनन्द बरस रहा मन में ॥ १७ ॥

बारहमासा सीता सती न० १६३

रागनि हिंडोल चाल श्रावण की मल्हार ॥
बचन बिन कारण स्वामी क्यों तजी विनवैजनक कुमारि ॥
विना कारण स्वामी क्यों तजी ॥टेक॥

(१) आषाढ मास

आषाढ घुमडि आए बादरा घन गरज चहुँ ओर।
निजन बन मे स्वामी तुम तजी बैठन कूँ नही ठौर ॥
बिन कारण (१)

क्या हम सतगुरु निंदियौ, क्यो दियौ सतिजन दोष।
क्या हम सत सजम तज्यौ, किस कारन भए रोस।
बिन कारण (२)

क्या पर पुरुष निहारकै पर भव कियो है निदान।
क्या इस भव इच्छा करी क्या मे कियो अभिमान ॥
बिन कारण (३)

कटु बचन स्वामी नहिं कहे, हिंसाकरमन कीन।
परधन पर चित्त नहिं दियौ, क्यो मन भयो है मलीन ॥
बिन कारण (४)

(२) श्रावण मास

श्रावण तुम सग वनविषै विपति सही भयकार।
धाय पधारो बन-बन में फिरी, जनक व रानी ओरी काज ॥
बिन कारण (५)

स्वसुर विलौटा जिस दिन तुम दियौ, कियौ भरत सरदार।
ता दिन विकल्प नहिं कियौ, तजि संपति भई लार॥
बिन कारण (२)

जनक पिता की मैं 'लाड़ली' मात विदेहा की बाल।
भ्रांत प्रभा मंडल सा बला, विपता भरू बेहाल॥
बिन कारण (३)

माता मन्दोदरी गर्भ से जन्मी रावण गेह।
तत्भव करम संयोग मैं, रावण कियौ है सन्देह॥
बिन कारण (४)

(३) भादौ मास

भादौं पण्डित पूछियौं, पण्डित कही है विचार।
कन्या के कारण राजा तुम मरो, दीनी तुरत विसार॥
बिन कारण (१)

गाड़ी धारि मंजूष में, जनक नगर वन बीच।
हल जोतन किरयान के, लई करम ने खींच॥
बिन कारण (२)

मरण भयौ नही ता दिना, करम लिखे दुख एह।
करी नजर राजा जनक के, पाली पुत्र सन्देह॥
बिन कारण (३)

जनक स्वयम्वर जब कियो,लियो सब भूप बुलाय।
दरशन करि थारे वश भई, पड़ी चरण बिच आय॥
बिन कारण (४)

(४) कुंवार मास

क्वार मास फिर गये भूप सब, मो कारण कियो युद्ध।
बहुत बली मारे रण बिषै, ठायौ धनुष प्रबुद्ध।
बिन कारण (१)

खर दूषण के युद्ध में, आयौ रावण दौड़।
छलकर धोखा प्रभू तुमकूँ दियौ नाद बजायौ घनघोर।
बिन कारण (२)

जल्दी पधारौ प्रभू मै गिर गयौ, तुम जानो भगवान्।
कष्ट पड़यौ जी मेरे भ्रात पै, उपज्यौ मोह महान्।
बिन कारण (३)

मोहि मेल्यौ पात बटोरिकै, करम लिखी कछु और।
आप पधारै अपने वीर पै, आनयौ रावण चोर।
बिन कारण (४)

चीर दुपट्टा करिकैं ले गयौ, मोकूँ अचक उठाय।
देखी नाथ जटायु नै, क्या तुम जानत नाँहि।
बिन कारण (५)

झपट झपट बाके सिर हुयौ, मुकट खसोट्यौ पूँछ उपारि।
मारि तमाचा डायधौ भूमि मे, पञ्ची खाई जो पछार।।
बिन कारण (६)

लक्षमण तुमहिं निहारिकै, बात कही करि गौर।
बिनहिं बुलाए आप भ्रात क्यो है कछु कारन और।।
बिन कारण (७)

काहू छलिया नै ये कछु छल कियौ, कै कछु कर्म चरित्र।
नाँहि पिछान्यौ जाँवै युद्ध है, कौन है बैरा कौन है मित्र।।
बिन कारण (८)

(५) कार्तिक मास

कार्तिक तुरत पठाइयो, उलटि तुम्हे थारे भ्राव।
बिनाही बुलाए आप आए क्यूँ शत्रु करैगे उतपात।।
बिन कारण (१)

आएजी तुरत रक्षा करनकूं हममे धरि प्रभु प्यार।
बिखरे ही पाए पत्ते बेल सब, खाई आप पछार॥
बिन कारण (२)

प्रात हठाई आके मूर्छा, सकल शत्रु रण जीत।
परयौ जटायु देख्यौ सिसकतौ श्रावक धर्म पुनीत॥
बिन कारण (३)

जन्म सुधारयौ वाकौ आपनै, मो बिन पायौ न चैन।
डारी ढूँढो दोऊ मिल बन विषै, रोय सुजाए तुम नैन।
बिन कारण (४)

धीर बँधाई लछमन भुजवली, बहुत करी थारी सेव।
विपति कटैगी प्रभु समता धरे, यदपि न माने थे तुम देव॥
बिन कारण (६)

ल्याऊँ काढ़ि पताल से, ल्याऊँ पर्वत फोर।
खबर मिले तो सब कुछ करूं चोर बगाऊँ थारा चोर॥
बिन कारण (६)

फेरि मिलजी प्रभु सुग्रीव से साहस गति दियौ मारि।
पाय सुतारा ल्यायो हनुमान कूँ, ढूढन भेज्यौ मोहि सरकार॥

(६) अगहन मास

अगहन खबर मंगवाय कै, मोहिग भेज्यौ तुम हनुमान।
कूदि समन्दर गयो गढिलक मे भेजो अँगूठी तुम भगवान॥
बिन कारण ( )

तुम बिन बैठा री रही बाग मे, राम ही राम पुकार।
अन्न लियो ना पानी मैं पीयौ, परवश हुई थी लाचार॥
बिन कारण (२)

मुख धुलवायो श्री हनुमान ने तुमरी आज्ञा के परमाण।
प्राण बचाए मेरे विपत मे, करवायौ जल पान॥
बिन कारण (३)

तुरत ही भेज्यौ तुमरे चरण में, चूड़ामनि दियौ वारि।
गाय फँसो है गाड़ी गार में, खैंचि निकारौजी भरतार ॥
बिन कारण (४)

(६) पौस मास

पौस चढे जी गढ़लंक पै, भारत कियौ भगवान।
गारत किये लाखो सूरमा, मार कियौ; घमसान ॥
बिन कारण (१)

काट्यौ शिर लकेश को, लक्ष्मी धर वर वीर।
कूद पड़े जी जोधा लंक मे, लवण समुन्दर चीर ॥
बिन कारण० (२)

ल्याये तुरत छुड़ाय कै, अशरण शरण अधार।
इतनी करि ऐसी क्यो करी, घर से दई क्यूं निकार।
बिन कारण० (३)

पगभारी जो गिर गिर मै पड़ूँ, शरण सहाय न कोय।
अपनी कही न मेरी तुम सुनी, बहुत अंदेशा है मोहि ॥
बिन कारण० (४)

(८) माघ मास

माघ प्रभुजी पाला पड़ रहा, पौढ़न कूँ नहिं सेज।
आढन कू नहिं काँबली, दई क्यूं विपति में भेज ॥
बिन कारण० (१)

सिंह घड़ू कै कूकै भेड़िए, मारे गज चिंघाड़।
थर थर कांपै थारी काममी, स्यालन रहो हैं दहाड़ ॥
बिन कारण० (२)

नाचे भूत पिशाच गण, रुंडमुंड विकराल।
सनन सनन सारा दरे, कटि चुभैं जी कराल ॥
बिन कारण० (३)

किस बैठूँ लेटूँ पिउ प्रभु, पास खवास न कोय।
अन्न करूँ ना पानी मैं पिउँ, बालक कूँ दुख होय॥
बिन कारण० (४)

तुम सब जानो प्रभू मेरे हालकूँ, अष्टमवलि अवतार।
तुम सूरज मैं पटबीजनी, क्या समझाऊँ भरतार॥
बिन कारण० (५)

समरथ हो प्रभु क्यों कसी, प्रगट कियो क्यो न दोष।
धोखा दे क्यों धक्का दियौ, आवे नही सन्तोष॥
बिन कारण० (६)

(९) फागुन मास

फागुन आई जी अठाइयाँ, अपने करम कूँ दे दोष.
ध्यान धरयो भगबान को, बैठी रही मन मोस॥
बिन कारण० (१)

अरज करे प्रभु की हजूर में ममता भाव निवार।
तुमही पिता हो प्रभु तुमही, मात हो तुमही भाई हमार॥
बिन कारण० (२)

निर्धन के प्रभु तुम धनी, निर्जन के परिवार।
इकबर राम मिलाइयो दीजियो दोषनुसार॥
बिन कारण० (३)

तुम हो राजा प्रभुजी धरम के हमकूँ लगायो परजा दोष।
मील में मेरे सब मन्से करें, राम रुसाये हो गये रोष॥
बिन कारण० (४)

त्याग दियो है, प्रभु हम रामजी, त्याग दियो है सब संसार।
गर्भवती हूँ कर्म संयोग से, इसमें हुई हू लाचार॥
बिन कारण० (५)

जिस दिन प्रभु पल्ला पाक हो मिले मोही भरतार ।
भरम मिटा के वारू धरम को, त्यागू सब संसार ॥
बिन कारण० (६)

राम मनायें तो भी ना मनू कर जाऊ बन को बिहार ।
कर पै श्री रघुवीर के, चोटी धरूंगी उताड़ ॥
बिन कारण० (७)

भावे यों सत्तो जी बैठी भावना, ध्यावे पद नवकार ।
पापा घट्यो प्रगट्यो पुन फल, सुन लई तुरत पुकार ॥
बिन कारण० (८)

पुण्डरीक पुर नगर को, वज्र जघ भूपाल ।
आ गये पुण्य सयोग ते, गज पकड़त बाहो काल ॥
बिन कारण० (६)

ढूंढत गजपति उन विषे, भनक पड़ा वाके कान ।
कोई सतवन्ती रोवै वन विषे, कि ये सताई जी अज्ञान ॥
बिन कारण० (१०)

दोष लगायो कैसे पूछिये, गज तजि उतरयो धीर ।
विनय सहित दुख पूछन चलयो, आवे जैसे भैना घरके वीर ।
बिन कारण० (११)

तुम हो बहन मेरी धर्म की, विपत कही समझाय ।
मात पिता पति परिवार से दूंगी बहन मिलाय ॥
बिन कारण० (११)

जनक पिता की मैं हूँ लाडली, भ्रात भामण्डल वीर ।
स्वसुर हमारे दशरथ नृपवली, भर्तार श्री रघुवीर ॥
बिन कारण० (१३)

रावण हरि करि ले गयो दोष धरै संसार ।
शील में मेरे सब शंका करें, कीनी राम निकार ॥
बिन कारण० (१४)

सुनत कथा जी छाती धर हुरी, टपके असुवन धार ।
हा हा रे कम ते ए कियो कभी, क्यो तुरत उपगार ॥
बिन कारण० (१५)

देव धरम दिये बीच मे, बसन बनाई तत्कार ।
पुण्डरीक पुर लेगयो, करिके गज असवार ॥
बिन कारण० (१६)

पुत्र भये दो लवकुश बली, शिवगामी अवतार ।
उज्जजंघ रक्षा करी पाल कियो हुशियार ॥
बिन कारण० (१७)

(१०) चैत मास

चैत मास नारद मुनि मिले, चरण पडे दोऊ वीर ।
राम लखन किसी सम्पदा, हूज्यो थार घर बर वीर ॥
बिन कारण० (१)

पूछियो अपनी मात से रामलखन माता कौन ।
टपटप लागे आँसू टपकने, मारयो मन धारयो मौन ॥
बिन कारण० (२)

नारद मुनि समझाइयो, पिछले सकल वृतान्त ।
सुनत उठे जोधा खड्ग ले, बैठि विमान तुरन्त ॥
बिन कारण० (३)

घेरि अजुध्या रण भेरी दई, कापे सुरग पताल ।
सोच भयो श्री रघुबीर के, आये कौन अकाल ॥
बिन कारण० (४)

निकसे दोऊ भ्राता जुझकूँ, खूब मचाये घमसान ।
रामलखन बखरा दिये, पटक्यो रथ काटे बाण ॥
बिन कारण० (५)

हलमूसल ठाये रामनै, लक्षमन चक्र सम्भार ।
सातवार कियो तान के, वृथा गये सातों बार ॥
बिन कारण० (६)

हम हरिबल अकाये कियो, उपजो सोच अपार ।
आग बबूला होके फिर लियो, चक्र प्रलय करतार ॥
बिन कारण० (७)

तब नारद आये भूमि मे, रामलखन ढिग जाय ।
बात कही समझाय के, किसपे कोपे रघुराय ॥
बिन कारण० (८)

पुत्र तुम्हारे दोऊ भुजवली, लव व कुश बलबन्त ।
माता विपत सुनि कोपियो, भाख्यो सकल वृतान्त ॥
बिन कारण० (६)

भरि आई छाती श्री रघवीर की रनकूं दियो है निवार ।
आय परे सुत चरनन में, लीने दोऊ पुचकारि ॥
बिन कारण० (१०)

(११) बैसाख मास

मास बैसाख बसन्त ऋतु, सुनि सीता जी की सार ।
भाग पड़े हनुमन्त से बली, ल्याए करि मनुहार ॥
बिन कारण० (१)

बज्रजंघ आये धूम से, ल्याये सब परिवार ।
राम कहें मैं आने दूं नहीं, सीता दई मैं निकार ॥
बिन कारण० (२)

जो आवै तो आवो इस तरह, कूदे अगिन मझार ।
देय परीक्षा अपने शील की, होवे कुण्ड तयार ॥
बिन कारण० (३)

सीता सती प्रण धारियो, होवे कुण्ड तैयार ।
अगन जलाबो देरी मत करो, सौ योजन विसतार ॥
बिन कारण० (४)

साड़ी कसि त्यारी करी, अङ्गद क्यों बड़ भाग ।
साड़ी कसि त्यारी करी, अङ्गद क्यों बढ भाग ॥
बिन कारण० (५)

जाय चढ़ो ऊँचे दमदमे, देखे देव अपार ।
सत सूरत सुरत मोहिनी, मन में हरष अपार ॥
बिन कारण० (६)

देखें सुरगों के देवता, देखे भवन बतीस ।
चन्द्र सूरज देखें ज्योतिषी, देखें, भूत पतीस ॥
बिन कारण० (७)

देखें सब विद्याधरा देखें गण गन्धर्व ।
कमर कसी फौजें आपड़ी, देखें राजा सर्व ॥
डोग अगन उठी गगन लों, तड तडाट भयो घोर ।
कहत प्रजा श्रीराम से, क्यों प्रभू भये हो कठोर ॥
बिन कारण० (६)

बजा बचैना ऐसी अगन में, फाटे धरणि पताल ।
पर्वत फटि मठ गिर पड़े, हे प्रभु कीजिए टाल ॥
बिन कारण० (१०)

राम लखण सुंत्यौ हाथ में, देवे भरम मिटाय ।
आज्ञा माने केरी जानकी देवे भरम मिटाय ॥
बिन कारण० (११)

हुकम दिये रघुवीर ने, शील परीक्षा देय ।
नातर क्यों आई छू यहाँ, परजा करे है सन्देह ॥
बिन कारण० (१२)

पञ्च परम गुरु बन्दिके, करि पति कूँ परिणाम ।
छिमाजी कराई सब जीवसैं, बेठे लछमन राम ॥
बिन कारण० (१३)

पुत्र जुगल छोडे रोवते सोहे शची समान ।
हरष भरी सतवन्ती महा, बोली बचन महान ॥
बिन कारण० (१४)

जो पर पुरुष निहोरि के, मै कछु किए है कुभाव ।
भस्म अग्नि मोहि कीजिये, नातर जल होय जाव ॥
बिन कारण० (१५)

(१२) जेठ मास

जेठ तपै सूरज आकरै, नीचै अगनि प्रचण्ड ।
आसपास जल थल क्यार सब, सूकि गए बनखण्ड ॥
बिन कारण० (१)

कूद पडी जलती डीग मे, शान्ति भई ततकार ।
उभरे कमल अमल अकाशलो, लीनी अधर सहार ॥
बिन कारण० (२)

जल लहरावे बोले हूँसनी, कर रह्यो मीन कल्लाल ॥
छत्र फिरै जो उसके शीश पै, इन्द्र चबर रहे डोल ॥
बिन कारण० (३)

शीतल मन्द सुगध जुत, मीठी मीठी चलेजो बयार ।
मणि वरषै मणि अमृत भडो, देव करे जै जैकार ॥
बिन कारण० (४)

धन्य सती धन सत बडो, धन धन धीरज एह ।
एह धृग २ हत उसके करे, जिनके मन सन्देह ॥
बिन कारण० (५)

अब द्वादशानुप्रेक्षा भावना सीताजी भावे है जोग धारण ।
कमल में बैठो विचार करे है।

सीता भावे मन में भावना, यह ससार अनित्य।
धर्म बिना तीनों लोक में, शरण सहाई ना मित्र ॥
बिन कारण० (१)

उलट पलट चाले रहटसा, ये ससारी चक्र ।
एक अकेला भटके आत्मा, क्या पशु पंछी अरु क्या मानुष ॥
बिन कारण० (२)

अनकोई जग मे अपना, अन हम काहू के मीत।
अशुचि अपावन तम विषै, करम करे विपरीत ॥
बिन कारण० (३)

सवर जल बिन ना बुझे, तृष्ना अगन प्रचण्ड।
कर्म खपाये बिन ना खपे, भ्रट के सब ब्रह्माण्ड ॥
बिन कारण० (४)

दुर्लभ बोधनु जगत मे, दुर्लभ श्री जिन धर्म।
दुर्लभ स्वपर विचार है, कर्म न डारयो भर्म ॥
बिन कारण० (५)

परवश भोगो भारी वेदना, स्ववश सही नहिं रच।
सास्वत सुख जासै पावती, लई करम ने बच ॥
बिन कारण० (६)

अब मैं सब वेदन सहूँ, कीनी धरम सहाय ।
परतिज्ञा मैं पूरी करूँ, मोह महा दुख दाय ॥
बिन कारण० (७)

राम कहें प्यारी चल घरूँ, त्या भुज में भुज डार।
पांडि शिक्षा कर पै धरिदई त्यागो हम संसार ॥
बिन कारण० (८)

तुम त्यागी निरदायकूँ, हम त्यागे लखि दोस ।
करके छिमा मैं, संजम लियो, करियो मत अफसोस ॥
बिन कारण० (९)

गई सतीजी बनखण्डकूँ, भाई अरजिका शीर ।
उग्ररूप तप बा करे, सब दुख सहे शरीर ॥
बिन कारण० (१०)

पूरी करि परजायकूँ, अच्युत सुरग मँझार ।
इन्द्र भएजी पुण्य संजोग से भोगे सुख अपार ॥
बिन कारण० (११)

॥ इति श्री सीताजी का बारहमासा समाप्त ॥

॥ आगे कवि का ग्राम संवत् लिख्यते ॥

पढ़िये भाई नैना भाव से, गावो बाल गुपाल ।
भावो जो धरम की वही भावना, सिर पर गरजत काल ।
बिन कारण० (१)

शील महातम मे कहे, या सम धरम न कोय ।
शील रतन मोटा रतन, जाते जगयश होय ॥
बिन कारण० (२)

पर भव मे सुख सम्पदा इन्द्रादिक पद पाय ।
काटि करम शिव सुन्दरि विरे, जन्म मरण छुटि जाय ॥
बिन कारण० (३)

वश वढ सब संकट कटे, सोग वियोग न कोय ।
रोग मिटे जी सेवा सतजन, पाप सकल मेरे धोय ॥
बिन कारण० (४)

नैनानन्द प्रबन्ध यह, दयासिन्धु सुखहेत ।
गायो ध्यान जिनेन्द्र कूँ, पद्म धुराक उपेत ॥
बिन कारण० (५)

संवत् विक्रम भूप को, नवशत एक हजार।
तापर षट चालीस धर, १६४ लीज्यो सुघड संभाल ।।
बिन कारण० (६)

मत पडियो बेटा कुपथ मे तँ यो मत जिन धर्म।
करलो ज्यो बेडा नरभव को सफल, रख लीज्यो मेरी शर्म ।।
बिनकारण स्वामी क्यो तजी, बिनवै जनक दुलारि।
बिन कारण स्वामी क्यो तजी ।।

१६४ बारहमासा राजुलजी का

राग मरहटी (झडी)

मैं लूँगी श्री अरहन्त सिद्ध भगवन्त साधु सिद्धान्त चार का सरना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना ।। टेक ।।

अषाढ मास (झडी)

सखि आया आषाढ घनघोर मोर चहुँ ओर मचा रहे श र इन्हे समझाओ। मेरे प्रीतम की तुम पवन परीक्षा लाओ। है कहाँ बसे भरतार कहाँ गिरनार महाव्रत धार बसे किस वन मे, क्यो बाँध मौड दिया तोड क्या सोची मन मे ।।

(झर्बटे ,

जा जा रे पपैया जा रे प्रीतम का दे समझारे।
रही नौभव सग तुम्हारे, क्यो छोड दई मझदारे ।।

(झडी)

क्यो बिना दोष भये रोष नही सन्तोष यही अफसास बात नहि बूझी। दिये जादो छप्पन कोड छोड क्या सूझी, मोहि रख। सरण मझार मेरे भर्तार करा उद्धार क्यो दे गयो झूरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ।।

श्रावण मास (झड़ी)

सखि श्रावण सँवर करे, समन्दर भरे, दिगम्बर धरे सखी क्या करिये। मेरे जी में ऐसी आवे महाव्रत धरिये। सब तजूँ साज शृंगार तजूँ ससार क्यों भव मंझार में जा भरमाऊँ, फिर पराधीन तिरिया का जन्म न पाऊँ ॥

(झर्वटे)

सब सुनलो राजदुलारी, दुख पड़ गया इस पर भारी।
तुम तज दो प्रीति हमारी, करदो सयम की तय्यारी ॥

(झड़ी)

अब आगया पावस काल करो मत टाल भरे सब ताल महाजल बरसे। बिन परसे श्री भगवन्त मेरा जी तरसै, मैंने मजदई तीज सलीन पलट गई पौन मेरा है कौन मुझे जग तरना। निर्नेम नेम बिन मुझे जगत क्या करना।

भादो मास (झड़ी)

सखि भादो भरे तालाब मेरे चित चाव करूँगी उछाह से सोलह कारण, करूँ दस लक्षण के व्रत से पाप निवारण। करूँ रोट तजि उपवास पचमी अकास अष्टमी खास निशल्य मनाऊँ, तपकर सुगन्ध दशमो को कर्म जलाऊँ।

(झर्वटें)

सखि दुद्धर रस की धारा, तजि चार प्रकार आहारा।
करूँ उग्र उग्र तप सारा, ज्यो होय मेरा निस्तारा ॥

(झड़ी)

मैं रत्नत्रय व्रत धरूँ चतुर्दशी करूँ जगत से तिरूँ करूँ पख-वाडा, मैं सबसे क्षिमाऊँ दोष तजूँ सब गाडा। मैं सातों तत्त्व विचार कि गाऊँ मल्हार तज ससार तै फिर क्या करना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना।

आसोज मास (झड़ी)

सखि आगया मास कुवार ला भूषण तार मुझे गिरनार को ले दो आज्ञा, मेरू पाणि पात्र आहार को है प्रतिज्ञा। लो तार ये चूड़ामणि रतन की कणी सुनो सब जनो खाल दो बेनी, मुझको अवश्य हो परभात दीक्षा लेनी ॥

(झर्वटे)

मेरे हेतु कमण्डल लावो, इक पीछी नई मँगावो।
मेरा मतना जी भरमावो, मत सूते कर्म जगावो ॥

(झड़ी)

है जग मे असाता कर्म बडा बेशम मोह के मम से धर्म न सूझे, इसके वश अपना हित कल्याण न बूझे। जहाँ मृग तृष्णा की चूर वहां पाना दूर भटकना भूर कहाँ जल भरना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना ॥

कार्तिक मास (झड़ी)

सखि कार्तिक काल अनन्त श्री अरहन्त की सन्त महन्त ने आज्ञा पाली, घर योग तजे भव भोग की तृष्णा टाली। सजे चौदह गुण अस्थान स्वर पहचान तजे मक्कान महल दिवाली, लगा उन्हे मिष्ट जिन धर्म अमावस काली ॥

(झर्वट)

उन केवल ज्ञान उपाया, जग अन्धेर मिटाया।
जिनमे सब विम्ब समाया, तन धन सब अथि है बताया ॥

(झड़ी)

है अथिर जगत सम्बन्ध अरी मति मन्द जगत का अन्ध है धुन्ध पसार मेरे प्रीतम ने सत जान के जगत बिसारा। मैं उनके चरण की चेरी, तू आज्ञा दे माँ मेरी, है मुझे एक दिन मरना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना ॥

अघहन मास (झड़ी)

सखि अगहन ऐसी घड़ी उदय में पड़ी मैं रह गई खड़ी दरस नहिं पाये। मैंने सुकृत के दिन बिरथा यों हो गंवाये। नहिं मिले हमारे पिया न जप तप किया न सयम लिया अटक रही जग में, पड़ी काल अनादि से पाप की बेड़ी पग में ॥

(झर्वटे)

मत भरियो माँग हमारी, मेरे शील को लागे गारी।
मत डारो अजन प्यारी, मैं योगन तुम संसारी ॥

(झड़ो)

हुए कन्त हमारे जती मै उनकी सती पलट गई रती तो धर्म नहिं खण्डू, मै अपने पिता के वँश को कैसे भन्डू। मैं मड शील सिंगार अरी नाथ तार गये भर्तार के सब आभरना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना ॥

पौष मास (झड़ी)

सखि लगा महीना पौष ये माया मोह जगत स द्रोह के प्रीत कराव, हरे ज्ञानावरणी अदर्शन छावै। द्रव्य से समता हरे तो पूरी पर जु सम्बर करे तो अन्तर टूटै, अस ऊँच नीच कुल नाम की सँज्ञा छूटै ॥

(झर्वटे)

क्यों ओछी उमर धरावै, क्यो सम्पति को बिलगावै।
क्यो पराधीन दुख पावै, जो सयम मे चित लावै ॥

(झड़ी)

सखि यों कहलावै दीन क्यों हा छवि छीन क्यो विद्या हीन मलीन कहावै, क्यों नारि नपुंसक जन्मैं कर्म नचावै। वे तजैं शील शृंगार रुलै संसार जिनैं दरकार नरक में पड़ना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ॥

माघ मास (झड़ी)

सखि आगया माघ बसन्त हमारे कन्त भये अरहन्त वो केवल ज्ञानी, उन महिमा शील कुशील की ऐसी बखानी। दिये सेठ सुदर्शन शूल भई मखतूल बरसे फूल जयवाणी वे मुक्ति गये अरु भई कलंकित राणी ॥

(झर्वटें)

कीचक ने मन ललचाया, द्रोपदी पर भाव धराया ।
उसे भीम ने मार गिराया, उसने करनी का फल पाया ॥

(झड़ी)

फिर गहा दुर्योधन चीर हुई दिलगीर जुड़ गई भीर लाज अति आवै, गये पाण्डु जुए में हार न पार बसावै। भएपरगट शासन वीर हरी सब पीर बँधाई धीर पकर लिए चरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ॥

फागुन मास (झड़ी)

सखि आया फाग बड़ भाग तो होरी त्याग अठाई लाग के मैंना सुन्दर, हरी श्रीपाल का कुष्ट कठोर उदम्बर। दिया धवल सेठ ने डार उदधि की फार तो हो गए पार वे उस ही पल में, अरु जा परणी गुण माल न डूबे जल में ॥

(झर्वटें)

मिली रैन मंजूषा प्यारी, जिन ध्वजा शील की धारी ।
परी सेठ पै मार करारी, नया नर्क में पापाचारी ॥

(झड़ी)

तुम लखो द्रोपदी सती दोष नहिं रती कहे दुर्मती पद्म के बन्धन हुआ घात की खण्ड जरूर शील इस खण्डन। उन फूटे घड़े मझार दिया जल डाल तो वे आधार थमा जल झरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ॥

चैत मास (झड़ी)

सखि चैत में चिन्ता करे न कारज सरे शील से टरे कर्म की रेखा, मैंने शील से मोल को होता जगत गुरु देखा। सखि शील से सुलसां तिरी सुतारा, फिरी स्वलाखी करो श्री रघुनन्दन अरु मिली शील परताप पवन से अन ।।

(झर्बटे)

रावण ने कुमत उपाई, फिर गया विभीषण भाई ।
छिन में जा लंक गमाई, कुछ भी नही पार बसाई ।।

(झड़ी)

सीता सती अग्नि मे पड़ी तो उस ही घड़ी वह शीतल पड़ी चढ़ी जल धारा, खिल गये कमल भये गगन में जय जय कारा। पद पूजे इन्द्र धरेन्द्र भई शीतेन्द्र श्री जैनेन्द्र ने ऐसा वरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ।।

वैशाख मास (झड़ी)

सखि आई वैशाखो मेष लई मैं देख ये उरध रेख पड़ी मेरे कर मे मेरा हुआ जन्म यूंही उग्रसेन के घर में। नहिं लिखा करम मे भोग पड़ा है जोग करो मत सोग जाऊं गिरनारी, है मात पिता अरु भ्रात से क्षमा हमारी।

(झर्बटें)

मैं पुण्य प्रताप तुम्हारे, घर भोगे भोग अपारे ।
जो विधि के अङ्क हमारे, नहिं टरें किसी के टारे ।।

(झड़ी)

मेरी सखी सहेली वीर न हो दिलगीर धरो चितधीर मैं क्षमा कराऊं, मैं कुल को तुम्हारे कबहूं न लाज लगाऊं। वह ले आज्ञा उठ खड़ी थी मङ्गल घड़ी जा बन में पड़ी सुगुरु के चरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ।।

जेठ मास (झड़ी)

अजी पड़े जेठ को धूप खड़ सब भूप वह कन्या रूप सती बड़ भागन, कर सिद्धन को प्रणाम किया जग त्यागन। अजि त्यागे सब संसार चूड़ियाँ तार कमण्डलु धारकै लई पिछौटी, अरु पहर कै साड़ी श्वेत उपाटी चोंटी ॥

(झर्वटें)

उन महा उग्र तप कीना, अच्युत्येन्द्र पद लीना।
है धन्य उन्हीं का जीना, नहीं विषयन मे चित दीना ॥

(झड़ी)

अजी त्रियाभेद मिट गया पाप कट गया बढ़ा पुरुषारथ, करे धर्म अरथ फल भोग रुचे परमारथ। वो स्वर्ग सम्पदा मुक्ति जायगो मुक्ति जैन को उक्ति में निश्चय धरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ॥

जो पढ़े इसे नर नारि बढ़े परवार सब संसार में महिमा पावे, सुनि सुतियनशील कथान विघ्न मिट जावें। नहि रहैं सुहागिन दुखी होंय सब सखी मिटें बेरुखी वे होंय जगत मे महा सतियों की चादर।

(झर्वटें)

मैं मानुष कुल में आया, अरु जती यती कहलाया ।
है कर्म उदर की माया बिन संयम जन्म गँवाया ॥

(झड़ी)

ग्राम, सम्वत्, कवि वंश, नाम

है दिल्ली नगर सुवास चेतन है खास फाल्गुन मास अठाई आठें, हों उनके नित कल्याण छपा कर बाँटें। अजी विक्रम अब्द

उनीस पै चार श्री जगदीश की ले लौं शरण, कहैं दास नैनसुख दोष पै दृष्टि न धरना। मैं लूंगी श्री अरहन्त सिद्ध भगवन्त साधु सिद्धान्त चार का सरना, निर्मम मेष बिन हमैं जगत क्या करना ॥

---

१६५ महावीर चालीसा

(शमसाबाद निवासी स्व० पूरनमल कृत)

सिद्ध समूह नमों सदा, अरु सुमिरु अरहन्त ।
निर आकुल निरवांच्छ हो, भये लोक के अन्त ॥
विघन हरन मङ्गल करन, वर्द्धमान महावीर ।
तुम चितन-चिन्ता मिटे, हो प्रभु चरम शरीर ॥

जय महावीर—दया के सागर।
जय श्री सन्मति ज्ञान उजागर ॥ १
शांत छवि मूर्ति अति प्यारी।
भेष दिगम्बर तुम धारी ॥ २
कोटि भानु से अति छवि छाजै।
देखत तिमिर पाप सब भाजै ॥ ३
महाबली अरि कर्म विदोरे।
जोधा महा सुभट से मारे ॥ ४
काम क्रोध तजि छोड़ी माया।
क्षण में मान कषाय भगाया ॥ ५
रागी नही, नहीं तू द्वेषी।
वीत-राग तुम हित उपदेशी ॥ ६
प्रभु तुम नाम जगत में सांचा।
सुमिरत भाग भूत पिशाचा ॥ ७

राक्षस यक्ष डाकनी भागे।
तुम चितत भय कोई न लावे ॥ ८
महामूल को जो तन धारै।
होवे रोग असाध्य निवारै ॥ ६
वियाल कराल होय फण धारी।
विष को डगल क्रोध कर भारी ॥१०
महाकाल सम करैं डसन्ता।
निर्विकार करो आप भगवन्ता ॥११
महामत्त गज मद की झारै।
भगे तुरन्त जब तोईं पुकारै ॥१२
फार डाढ सिंहादिक आवै।
ताको प्रभु हे तुही भगावै ॥१३
होवर प्रबल आगिन जो जारे।
तुम प्रताप शीतलता धारे ॥१४
शस्त्र धार-अरि युद्ध लडन्ता।
तुम दृष्टि होय विजय तुरन्ता ॥१५
पवन प्रचण्ड चले झकझोरा।
प्रभु तुम हरो होय भय चोरा ॥१६
झार खण्ड गिरि अटवी माही।
तुम बिन शरण तहाँ कोउ नाही ॥१७
वज्रपात करि घन गरजावै।
मूसल-धार होय तडकावै ॥१८
बहि अथाह परवाह सुनीरा।
पडते भँवर मिटावै पीरा ॥१६
होय अपुत्र दरिद्र सन्ताना।
सुमिरत होत कुवेर समाना ॥२०

बन्दीगृह में बँधो अंजीरा।
कण्ठ सुई आन सकल शरीरा ॥२१
राज दण्ड कर शूल धरावै।
ताहि सिंहासन तुही बिठावै ॥२२
न्यायाधीश राज दरबारी।
विजय करे जत्र कृपा तुम्हारी ॥२३
जहर हलाहल दुष्ट पिलन्ता।
अमृत सम प्रभु करो तुरन्ता ॥२४
चढे जहर जीवादि डसन्ता।
निर्विष क्षण मे आप करन्ता ॥२५
एक सहस बस तुम्हरे नामा।
जन्म लियो कुण्डलपुर धामा ॥ २६
सिद्धारथ नृप सुत कहलाये।
त्रिशला माता उदर प्रगटाये ॥ २७
तुम जनमत भयो लोक अशोका।
अनहद घोर भई तिहुँ लोका ॥ २८
इन्द्रनि नेत्र सहस करि देखा।
गिरि सुम्मेर कियो अभिषेका ॥ २९
कामादिक त्रसना ससारी।
तज तुम भये बाल ब्रह्मचारी ॥ ३०
अथिर जान जग अनित विसारी।
बालपने प्रभु दीक्षा धारी ॥ ३१
शान्त भाव धर कर्म विनाशे।
तुरतहि केवल ज्ञान प्रकाशे ॥ ३२
जड चेतन त्रिय जग के सारे।
हस्त रेख वतु समतु निहारे ॥ ३३

लोक अलोक द्रव्य घट जाना।
द्वादशाङ्ग का रहस्य बखाना ॥ ३४
पशु - यज्ञ का मिटा कलेशा ।
दया धर्म देकर उपदेशा ॥ ३५
बहुमत और कुवादी डण्डी ।
रहने न दिया एक पाखण्डी ॥ ३६
पञ्चम काल बिखे जिनराई ।
चाँदनपुर प्रभुता प्रगटाई ॥ ३७
क्षण मैं तोपनी बडि हटाई।
भक्तनि के तुम सदा सहाई ॥ ३८
मूरख नर नहिं अक्षर ज्ञाता ।
सुमरत पडित होत विख्याता ॥ ३९
पूरनमल रच कर चालीसा।
हे प्रभु ताहि नवावत शीशा ॥ ४०

दोहा—करे पाठ चालीस दिन, नित चालीसहि बार।
खेवै धूप सुगन्ध पढि, श्री महावीर अगार ॥
जनम दरिद्र होय अरु, जिसके नहि सन्तान।
नाम वश जग मे चले, होय कुवेर समान ॥

१६६ पद्मप्रभु चालीसा

दोहा—शीश नवा अरिहन्त को, सिद्धन करू प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का ले सुखकारी नाम ॥
सब साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
पद्मपुरी के 'पद्म' को मन मन्दिर मे धार ॥

चौ०—जय श्री पद्मप्रभ गुणधारी, भविजन को तुम हो हितकारी ॥
देवों के तुम देव कहाओ, पाप भक्त के दूर हटाओ ॥

तुम जग के सर्वज्ञ कहाओ, छटे तीर्थंकर कहलाओ ॥
तीन काल तिहुं जग की जानो, सब बातें क्षण में पहचानो ॥
वेष दिगम्बर धारन हारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे ।
मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर दृष्टि सुखद जमती नासा पर ॥
क्रोधमान मदलोभ भगाया, रागद्वेष का लेश न पाया ।
वीत राग तुम कहलाते हो, सब जग के मन को भाते हो ॥
कौशांबी नगरी कहलाए, राधा धारण जो बतलाए ।
सुन्दर नार सुसीमा उनके, जिसके उर से स्वामी जन्मे ॥
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरब बतलाइ ।
एकदिन हाथी बँधा निरखकर, झट आया वैराग्य उमड़कर ॥
कार्तिक सुदी त्रयोदश भारी, तुमने मुनि-पद दीक्षा धारी ।
सारे राजपाट को तज के जभी मनोहर बन में पहुँचे ॥
तप कर केवल ज्ञान उपाया, चैत सुदी पन्दरस कहलाया ।
एकसौदस गणधर बतलाए, मुख्य वज्र चामर कहलाए ॥
लाखों मुनि अर्जिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखों ।
असख्यात तिर्यञ्च बताए, देवी देव गिनत नही पाए ॥
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, शिवरमणी को ली परनाके ।
पञ्चमकाल महादुखदाई, जब तुमने महिमा दिखलाई ॥
जयपुर राज्य ग्राम बड़ा है, स्टेशन शिवदास पुरा है ।
मूला नाम जाट का लड़का, घर की नींव खोदने लागा ॥
खोदत खोदत मूर्ति दिखाई, उसने जनता को बताई ।
चिन्ह कमल लख लोग लुगाई, पद्मप्रभु की मूर्ति बताई ॥
मन में अति हर्षित होते हैं, अपने दिल का मल धोते हैं ।
तुमने ही अतिशय दिखलाया, भूत-प्रेत को दूर भगाया ॥
भूत-प्रेत दुख देते हैं जिसको, चरणों में लाते हैं उसको ॥
जब गन्धोदक छींटा मारे, भूत-प्रेत तब आप बकारे ॥

जपने से जब नाम तुम्हारा, भूत-प्रेत करें किनारा ।
ऐसी महिमा बतलाते हैं, अन्धे भी आँखें पाते हैं ॥
प्रतिमा श्वेतवर्ण कहलाये, देखत ही हृदय को भाये ।
ध्यान तुम्हारे जो धरता है इस भव से वह नर तरता है ॥
अन्धा देखे गूंगा गाये, लँगड़ा पर्वत पर चढ़ जाये ।
बहरा सुन सुन कर खुश होवे, जिस पर कृपा तुम्हारी होवे ॥
मैं हूँ स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैया कर दो पारा ।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे पद्म प्रभु को शीश नवावे ॥

सोरठा—नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस नित ।
खेय सुगन्ध अपार, पद्मपुरी मे आय के ॥
होय कुवेर समान, जन्म दरिद्री होय जो ।
जिनके नहि सन्तान, नाम वंश जग में चले ॥

॥ इति पद्मप्रभु चालीसा ॥

---

१६७ चन्द्रप्रभु चालीसा (तिजारा)

वीत राग सर्वज्ञ जिन वाणी को ध्याय,
लिखने का साहस करूँ चालीसा सिर नाय ॥१॥
देहरे के श्री चन्द्र को, पूजो मन वच काय,
रिद्ध सिद्ध मङ्गल करे, विघ्न दूर हो जाय ॥ २ ॥

जय श्री चन्द्र दया के सागर, देहरे वाले ज्ञान उजागर । ३
शाँति छवि मूरति अति प्यारी, भेष दिगम्बर धारा भारी ।४
नासा पर है दृष्टि तुम्हारी, मोहनी मूरति कितनी प्यारी ।५
देवों के तुम देव कहावो, कष्ट भक्त के दूर हटावो ।६
समन्त भद्र मुनिवर ने ध्याया, पिंडी फटी दर्शन तुम पाया ।७

तुम जग में सर्वज्ञ कहावी, अष्टम, तीर्थङ्कर कहलावी ।८
महासेन के राजदुलारे मात सुलक्षणा के हो प्यारे ।९
चन्द्रपुरी नगरी अति नामी, जन्म लिया चन्द्र प्रभु स्वामी ।१०
पौष बदी ग्यारस की जन्में, नर नारी हरषें तब मन में ।११
काम क्रोध तृष्णा दुख कारी, त्याग सुखद मुनि दीक्षा धारी ।१२
फाल्गुन बदी सप्तमी भाई केवल ज्ञान हुआ सुख दाई ।१३
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष गये प्रभू आप वहाँ से ।१४
लोभ मोह और छाडी माया, तुमने मान कषाय नसाया ।१५
रागी नही नही तू द्वषी, बात राग तू हित उपदेशी ।१६
पचम काल महा दुख दाई, धम कम भूल सब भाई ।१७
अल्वर प्रान्त मे नगर तिजारा होय जहा पर दर्शन प्यारा ।१८
उत्तर ।दशि मे देहरा माही वहा आकर प्रभुता प्रगटाई ।१९
सावन सुदी दशमी शुभ नामी आन पधारे त्रिभुवन स्वामी ।२०
चिह्न चन्द्र का लख नर नारी, चन्द्र प्रभू की मूरत प्यारी ।२१
मूरत आपकी अति उजियाली, लगता हीरा भी है जाली ।२२
अतिशय चन्द्र प्रभु का भारी, सुनकर आते यात्री भारी ।२३
फाल्गुन सुदी सप्तमी प्यारी जुडता है मेला यहा भारी ।२४
कहलाने को तो शशि धर हो, तेज पुज रवि से बढकर हो ।२५
नाम तुम्हारा जग मे साँचा, ध्यावत भागत भूत पिशाचा ।२६
राक्षस भूत प्रत सब भागे, तुम समरत भय कोय न लागे ।२७
कीर्ति तुम्हारी है अति भारी, गुण गाते जिन नर और नारी ।२८
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, सकट झट कटता है भारी ।२९
जो भी जैसी आश लगाता, पूरी उसे तुरत कर पाता ।३०
दुखिया दर पर जो आते है, सकट सब खोकर जाते हैं ।३१
खुला सभी को प्रभू द्वार है, चमत्कार को नमस्कार है ।३२
अन्धा भी यदि ध्यान लगावे, उसके नेत्र शीघ्र खुल जावे ।३३

बहरे को सुनने लग जावे, पगले का पागलपन [जावे ।३४
[illegible] ज्योति का घृत जो लगावे, संकट उसका सब कट जावे ।३५
चरणों की रज अति सुखकारी, दुख-दरिद्र सब नाशनहारी ।।३६
चालीसा जो मन से ध्यावे, पुत्र पौत्र सब सम्पत्ति पावे ।।३७
पार करो दुखियों की नैया, स्वामी तुम बिन नही खिवैया ।३८
प्रभू मैं तुमसे कुछ नही चाहूं, दर्श तिहारा निश दिन पाऊं ।३९

दोहा—करूं वन्दना आपकी, श्री चन्द्र प्रभू जिनराज ।
जङ्गल में मङ्गल कियो, रखो सुरेश की लाज ।।

१६८—श्री बाहुबली स्तुति (कन्नड़)

बाहुबली स्वामी जग के नी स्वामि ।
शान्तिय-मूरुति ये नमिपेवु अनुदिनवु ।। टेक

आदिनाथ—कुँवरा भरतन सोदरा ।
सोदरनगे ददेयल्ला राजवन्नु कोट्टयल्ला ।।१

नोडे नी किरियव आदेनी हिरियव ।
विवेक निन्ददागे तालमेय बालागे ।।२

शान्तिय वदना, कान्तिय निलवु ।
विश्व के आदर्श निन्नय दर्शनवु ।।३

बुलगुल राजा, अगणित—तेजा ।
अरलिद कमलगला, निन्नय पद-युगला ।।४


CHARACTER IS GOD
चरित्र ईश्वरीय रूप है

श्री वीतरागायनमः ।

मक्खन जैन भजन माला

स्तुति भजन नं० १

आपकी भक्ती में स्वामी जो कोई लवलीन हो ।
तोड़ के कर्मों के बन्धन वो सदा स्वाधीन हो ॥
हे जिनेश्वर वीतरागी तुम हितैषी हो सही ।
चर अचर ज्ञाता तुम्हीं हो दूसरा तुमसा नहीं ॥

❋ गाना ❋

हे जिन स्वामी त्रिभुवन नामी मेटो दुःख हमारे ।
आन गही जिन शरण तुम्हारी ते उतरे भव पारे ॥

स्तुति ठुमरी आसावरी भजन नं० २

आयो शरण अरहन्त चरन में, तुम सम और कोई नहीं तीनों भुवन में । अन्तरा ।
चहुं गति फिरत बहुत युग बीते, भोगी विपति अति जनम मरन में ॥

वीर आह्वानन भजन नं० ३

आजा आजा हे वीर आजा दर्शन दिखाजा ।
मुक्ति का मार्ग बताजा, आजा । आ......तान ॥ टेक
छाया है दुनियां में मिथ्या अंधेरा ।

सम्यक्त्व सूर्य उगाजा, आजा ॥ १
सब मोह निद्रा में सोये पड़े है ।
दिव्यध्वनी मे जगाजा, आजा ॥ २
भेषी कुलिंगी लुटेरे घनेरे ।
फन्दे से उनके छुड़ाजा, आजा ॥ ३
झूँठे मतों को मिटा करके 'मक्खन' ।
जिन धर्म डङ्का बजाजा, आजा ॥ ४

वीर स्तुति भजन नं० ४

हे वीर जिनेश्वर अर्ज सुनो हम शरण तुम्हारी आये है ।
संसार भ्रमत युग बीत गये बहु जन्म मरण दुख पाये है ॥
तिर्यच गती मे छेदन भेदन भूख प्यास भारा रोपण ।
अति शीत धूप वर्षा की बाधा सहि निज प्राण खपाये हैं ।
नरकों में नारक लड़ें परस्पर चीर फाड़ शूली धरते ।
पूरब भव की सुधि दिला २ कर असुर कुमार लड़ाये हैं ॥
सुर गति में पर सम्पति लखि झुरि२ मानसिक दुखपाये हैं ।
रही आयु शेष छह मास कण्ठमाला लखि रुदन मचाये है ॥
हुआ मनुष दरिद्री दीन हीन तन विकल न कल छिन पाई है,
इसभाति चतुरगति माहि फिरत 'मक्खन' अतिकष्ट उठाये हैं ॥

महावीर स्वामी का जन्मोत्सव भजन नं० ५

श्री वीर जन्म उत्सव मिलकर मनाओ सारे ।
देने चलो बधाई सिद्धार्थ राय द्वारे ॥ टेक

शुभ चैत शुक्ल तेरस है दिन पुनीत पावन ।
त्रिशला की कोखि आकर जन्मे त्रिलोक तारे ॥ १
इन्द्रादि देव आकर शचि मात को सुलाकर ।
भगवान को उठा कर ले मेरु गिरि सिधारे ॥ २
सुर जाय चीर सागर एक सहस आठ गागर ।
जल हाथों हाथ लाकर भगवत के शीश ढारे ॥ ३
शृङ्गार कर शची ने मघवा को गोद दीने ।
हरि सहस चक्षु कीने छवि देख जग दुलारे ॥ ४
सुर न्हौन करि प्रभु का लाकर पिता को सौंपे ।
किया इन्द्र नृत्य ताँडव जिनराज के अगारे ॥ ५
कुण्डलपुरी में घर घर खुशिया मना रहे हैं ।
कही नाच रंग गाने कही बज रहे नगारे ॥ ६
कूंचा बाजार गलियों में शोर मच रहा है ।
नर नारि दर्शनों को जिनराज के पधारे ॥ ७
मेवा मिठाइयों के भर भर के थार लावें ।
कोई फूल फल चढावें कोई आरता उतारे ॥ ८
जिस वीर की सुरासुर नर भक्ति कर रहे है ।
सो ही जिनेश आजा 'मक्खन' हृदय हमारे ॥ ९

वीर-निर्वाणोत्सव भजन नं० ६

चलो चलो भ० महावीर को लाडू चढ़ायेंगे ।
पावापुर में निर्वाण भूमि पूजि आयेंगे ॥ टेक

पावापुर के उद्यान में तालाव के अन्दर ।
श्री सन्मति के चरणारविंद वंदि आयेंगे ॥ १
कर्मों को काट वर्द्धमान मोक्ष को गये ।
उस दिन की यादगार में उत्सव करायेंगे ॥ २
कार्तिक बदी अमावस्या की प्रातःकाल में ।
भगवान वीरनाथ की वर्षी मनायेंगे ॥ ३
'भक्खन' इस दिन को सारा भारतवर्ष पूजता ।
दीपावली के नाम से दीपक जलायेंगे ॥ ४

भजन नं० ७

भगवान वीर हमको क्योंकर लगे न प्यारा,
दुनियां में जिसने आकर सतधर्म को प्रचारा ॥ टेक
फैला था बाममारग था ज़ोर नास्तिकों का ।
बौद्धों ने आत्मा की सत्ता का नाश मारा ॥ १
वेदों का नाम लेकर होती थी घोर हिंसा ।
चलता था मूक पशुओं के कण्ठ पै दुधारा ॥ २
बलवान आत्मा वो भारत में आके जन्मा ।
रह करके ब्रह्मचारी लघुवय में जोग धारा ॥ ३
प्राचीन धर्म सब से बस एक जैन ही था ।
भूली हुई थी दुनिया उसको पुनः उभारा । ४
पाखण्डियों का खण्डन युक्ति प्रमाण से कर ।
बजवा दिया अहिंसा का देश में नकारा ॥ ५

दुनियां का कर्ता हर्ता कोई नहीं है ईश्वर ।
बनता है आत्मा ही परमात्मा हमारा ॥ ६
इस भांति सत्य मारग हमको बता के 'मक्खन' ।
वसु कर्म नाश करके मुक्ती में वो पधारा ॥ ७

चांदन गांव के महावीर स्वामी की स्तुति
राग रसिया भजन नं० ८

भाइयो चलो सभी मिलि महावीरजी दर्शन करने को ।
दर्शन करने को कर्म जञ्जीर कतरने को, भाइयो ॥टेक॥

अतिशय क्षेत्र जगत विख्याता चमत्कार तत्काल दिखाता ।
ऋद्धि सिद्ध सब होय पुण्य भण्डारा भरने को ॥ १
जयपुर राज्य जिला हिंडौना चांदन गांव वीर जिन भौना ।
तीर नदी गंभीर पटौदा रेल उतरने को, भाइयो ॥ २
बनी धर्मशाला चहुं ओरा बीच बनो मन्दिर चौकोरा ।
उन्नत शिखर विशाल चले मानों स्वर्ग पकरने को ॥ ३
चरणपादुका बनी पिछारी नसियां कहें सकल नर नारी ।
इसी जगह निकली थी प्रतिमा जग अघ हरने को ॥ ४
छत्र चढ़ावें चमर ढुरावें घृत के भरि भरि दीप जलावें ।
पूजन पाठ भजन विनती जै कार उचरने को ॥ ५
चैत शुदी में होता मेला लाखों गूजर मैना भेला ।
जुरें हज़ारों जैनी जन भव सागर तरने को, भाइयो ॥ ६

एकम बदि बैशाख हमेशा रथ निकले श्री वीर जिनेशा ।
'मक्खन' भी वहां जाय प्रभू का नाम सुमरने को ॥ ७

रसिया भजन नं० ६

चांदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो ॥ टेक
जैपुर राज्य गांव चांदनपुर, तहां बनो उन्नत जिन मन्दिर
तीर नदी गंभीर, हमारी० ॥ १
पूरब बात चली यों आवे, एक गाय चरने को जावे
झर जाय उसका छीर, हमारी० ॥ २
एक दिवस मालिक संग आयौ, देखि गाय टीला खुदवायौ
खोदत भयो अधीर, हमारी० ॥ ३
रैन मांहि तब सुपनौ दीना, धीरे २ खोदि ज़मीना
है इसमें तसबीर, हमारी० ॥ ४
प्रात होत फिर भूमि खुदाई, वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई
भई इकट्ठी भीर, हमारी० ॥ ५
तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड़ हर साल करारी
चैत मास आखीर, हमारी० ॥ ६
लाखों मैना गूजर आवें, नाचें कूदें गीत सुनावें
जै बोलें महावीर, हमारी० ॥ ७
जुड़ें हज़ारों जैनी भाई, पूजन भजन करें सुखदाई
मन बच तन धरि धीर, हमारी० ॥ ८
छत्र चंवर सिंहासन लावें, भरि २ घृत के दीप जलावें

बोलें जै गंभीर, हमारी ॥ ६
जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन संतान बढ़े व्योपारा
होय निरोग शरीर, हमारी० ॥ १०
'मक्खन' शरण तुम्हारी आयो, पुण्य योग तें दर्शन पायो
खुली आज तक़दीर, हमारी ० ॥ ११

भजन नं० १०

(चाल— तांगे वाले रे तांगे का घोड़ा मोड़ दे)
स्वामी मेरे रे कर्मों के बन्धन तोड़ दे ॥ टेक॰
ध्यान की कमानी तीर ज्ञान का बनाय कर
मोह बैरी को निशाना करके फोड़ दे ॥ १
हिंसा झूट चोरी व्यभिचार परिग्रह पांच,
दुःखदाई रे पापों का मुंह मोड़ दे ॥ २
सुमति विवेक लज्जा दया क्षमा शील व्रत,
जप तप रे संयम से नाता जोड़ दे ॥ ३.
'मक्खन' अपार भवसिंधु से उतार पार,
सुखमई रे मुक्ती में जाके छोड़ दे ॥ ४

भजन नं० ११

हे प्रभू जिन देव स्वामी क्या मेरी तकसीर है,
कर्म बैरी ने मेरे डाली गले जञ्जीर है ॥ टेक
क़ैद करके चार गतियों में फिराया है मुझे,
दुःख सागर में डुबोया क्या करूं तदबीर है ॥१

जो जगत में देव थे मैं पास सबके जा चुका,
वे बिचारे खुद दुखी मेरी हरें क्या पीर है ॥ २
आपने कर्मों को जीता और जिताया और को,
क्यों न हो जब आपके कर ज्ञान की शमसीर है ॥ ३
बहुत दिन से आपकी महिमा सुनी थी कान से,
आज देखे आंख से जागी मेरी तक़दीर है ॥ ४
अब ये निश्चय हो गया ये कर्म मेरा क्या करें,
जब कि मेरे सामने जिन देव की तस्वीर है ॥ ५
भील तस्कर सिंह शूकर से बचाये आपने,
फिर भला 'मक्खन' के दुख का क्यों न हो आख़ीर है ॥६

भजन नं० १२

कर्मन की गति न्यारी किसी से कभी टरी न टारी ॥ टेक
रामचन्द्र से नामी राजा बन २ फिरे दुखारी कि० ॥ १
जन्मत कृष्ण न मंगल गाये मरत न रोवन हारी, कि० ॥ २
पाँचों पाण्डव द्रौपदि नारी विपत्ति भरी अति भारी, कि०॥३
ऋषभदेव प्रभु षष्ट मास लौं फिर बिना आहारी, कि०॥ ४
इन्द्र धनेन्द्र खगेन्द्र चक्रधर हलधर कृष्ण मुरारी, कि ॥ ५
'मक्खन' जिन इन कर्मन जीता तिन चरनन बलिहारी, कि०॥७

भजन नं० १३

मोहि सुन सुन आवे हांसी पानी में मीन पियासी ॥ टेक

ज्यों मृग दौड़ा फिरे विपिनमें ढूंढे गन्ध बसे निज तनमें।
त्यों परमातम आतम में शठ पर में करे तलाशी ॥ १
कोई अंग भबूति लगावे कोई सिर पर जटा बढ़ावे।
कोई पञ्चाग्नि तपै कोई रहता दिन रात उदासी ॥ २
कोई तीरथ बन्दन जावे कोई गङ्गा जमुना न्हावे।
कोई गढ़ गिरनार द्वारिका कोई मथुरा कोई काशी ॥ ३
वेद पुरान कुरान टटोले, मन्दिर मस्जिद गिरजा डोले।
ढूडा सकल जहान न पाया, जो घट घट का बासी ॥ ४
'मक्खन' क्यों तू इतउत भटकै, निजआतम रस क्यों नहीं गटकै।
जन्म मरण दुख मिटै कटै लख चौरासी की फांसी ॥ ५

भजन नं० १४

श्री जिन स्वामी तुम्हीं हो जग नामी,
हमारी भव विपति हरो,
तुमने मुक्ति का मारग बताया हां हां हां
सारे जीवों का संकट मिटाया हां हां हां
मिटाया अघ अन्धियारा फैलाया ज्ञान उजारा।
दुख हर्ता सुख कर्ता शिव भर्ता भव हर्ता श्री०
दुख दाता घाती चारों नाश किये हैं हां—
केवल ज्ञान उपाय हां हां हां
सब लोकालोक भासे सातों तत्व प्रकाशे।
'मक्खन' पाय सरधा लाय कर्म नशाय शिव जाय ॥

भजन नं० १५

निज आतम को नहि ध्यावे फिर मुक्ति कहां से पावे ।। टेक
क्यों तू तीरथ बन्दन जावे क्यों गङ्गा जमुना में न्हावे ।
क्यों मन्दिर मस्जिद गिरजा गुरुद्वारे शीश झुकावे ।। १
क्यों तू तन पर भस्म चढ़ावे क्यों सिर ऊपर जटा बढ़ावे ।
क्यों पञ्चाग्नि तपै तिलक छापे क्यों वृथा लगावे ।। २
पढ़े निरन्तर वेद पुराना तर्क छन्द व्याकरण कुराना ।
वैधक जोतिष मंत्र तंत्र पढ़ २ क्यों मूढ़ पचावे ।। ३
आतम ज्ञान बिना सब सूना व्रत तप नेम करो दिन दूना ।
"मक्खन" जैसे अङ्क बिना गिनती में शून्य न आवे ।।४

भजन नं० १६

सुमरि ले जिन नाम रे नर सुमरि ले जिन नाम ।
खड़ा लेकर काल सिर पर मौत का पैग़ाम ।। टेक
बालपन सब खेल खोया तरुण है बस काम ।
वृद्धपन में जाय सुधि बुधि थके अंग तमाम ।। १
बाप माई बहन भाई धी जमाई बाम ।
ये न तेरे तू न इनका झूठ सब धन धाम ।। २
कौन मैं आया कहां से जाऊं कौन मुकाम ।
सो विचार किया न 'मक्खन' गई उम्र तमाम ।।३

भजन नं० १७

मिल चलो सभी नर नारि बधाई देने को ।। टेक

भजन नं० २०

जिय आतमहित नहिं कीना नरभवको फल कहा लीना ।।टेक
धन को पाकर दान न दीना तन से पर उपकार न कीना ।
लीना व्रत तप नेम न संयम मन से जाप जपीना ।। १
रात दिना विषयों में राचा तन धन यौवन के मद माचा ।
सुना न सांचा सतगुरु बाचा हित अनहित नहिं चीना ।।२
मात पिता सुत भगनी रामा हय गय रथ पायक धन धामा ।
सब दुनियां की झूठी सामा जान बनै ना बीना ।। ३
बालपनो बालन संग खोयो तरुण समय तरुणी रत जोयो ।
बृद्ध समय खटिया ले सोयो खोय दिये पन तीना ।। ४
दांत गिरे रसना तुतरानी नार हिले कटि भई कमानी ।
आंख नाक से टपकै पानी कांपे कर पग सीना ।। ५
लख चौरासी में फिर आयो कठिन २ मानुष भव पायो ।
सुकुल सुथल जिन वृषलहि'मक्खन'क्यों खोवे मतिहीना ।।६

भजन नं० २१

ऐसा दिन कब पाऊं नाथ मैं ऐसा दिन कब पाऊं ।।टेक
बाह्याभ्यन्तर त्यागि परिग्रह नग्न सरूप बनाऊं ।
भैक्षाशन इकवार खड़ा हो पाणि पात्र में खाऊं ।। १
राग द्वेष छल लोभ मोह कामादि विकार हटाऊं ।
पर परणति को त्यागि निरन्तर स्वाभाविक चित लाऊं।। २
शून्यागार पहार गुफा तटिनी तट ध्यान लगाऊं ।

शीत उष्ण वर्षा की बाधा से नहि चित अकुलाऊं ॥३
तृण मणि कञ्चन कांच माल अहि विष अमृत समभाऊं ।
शत्रु मित्र निन्दक बन्दक को एक हि दृष्टि लखाऊं ॥४
गुप्ति समिति व्रत दशलक्षण रत्नत्रय भावन भाऊं ।
कर्म नाश केवल प्रकाश 'मक्खन' जब शिवपुर जाऊं ॥५

भजन नं० २२

गिरनारि गये नेम जी मनाय लाओ रे ॥ टेक
नेम पिया सों यों जा कहियो क्यों रजमति छिटकाय जाओरे।
पहले क्यों तुम व्याहनआये क्यों लियोजोग बताय जाओरे ॥१
क्या तकसीर करी प्रभु मैंने सो मुझ को समझाय जाओ रे ।
समुद विजै नृपके ललना को बातोंमें कोई फुसलाय लाओरे ॥२
तोरन से रथ मोरि गयां है जल्दी से पीछा फिराय लाओ रे ।
जो नहिं नाथ लौटि घर आवै तो कहो संग लिवाय जाओरे ॥३
जो स्वामी तुम जाग लेत हो मोह को जोगन बनाय जाओरे ।
ऐसो नेम बालब्रह्मचारी 'मक्खन'के हृदय में आय जाओरे ॥५

भजन नं० २३

ये आत्मा क्या रंग दिखाता नये नये ।
बहुरूपिया ज्यों भेष बनाता नये नये ॥ टेक
भरता है सांग देवोंका स्वर्गों में जाय के ।
करता किलोल देवियों के संग नये नये ॥ १
गर नर्क में गया तो रूप नारकी धरा ।

लखि मार पीट भूख प्यास दुख नये नये ॥ २
तिर्यञ्च में गज बाज वृषभ महिष मृग अजा ।
धारे अनेक भान्ति के कालिब नये नये ॥ ३
नर नारि नपुंसक बना मानुष की योनि में ;
फल पुण्य पाप के उदय पाता नये नये ॥ ४
'मक्खन' इसी प्रकार भेष लाख चौरासी ।
धारे बिगार बार २ फिर नये नये ॥ ५

भजन नं० २४

हस्तनापुर दर्शन करने चलौ करने चलौ भव हरने चलौ ॥टेक
कुरु जांगल है देश अनूपम गजपुर नगरी मेरठ ज़िलौ ।
चौतरफा है जंगल भाड़ी बीच बनो जिन भवन भलौ ॥१
शान्ति कुन्थ अरनाथजिनेश्वर चरण परसि अघविष उगलौ ।
कार्तिक माम पर्व नन्दीश्वर वसुदिन में वसुकर्म दलौ ॥२
दूर दूर से यात्री आवें साधर्मिन सौं हिलौ मिलौ ।
ऐसे परम क्षेत्र पर 'मक्खन' दान पुण्य करि फूलौ फलौ ॥३

भजन नं० २५

लीनी है शरण तुम्हारी मिटा दो प्रभु बिथा हमारी ॥टेक
तारण तरण जिनेश्वर स्वामी सब संकट परिहारी ॥ १
ग्राह ग्रसित उद्धार लियो गज विपति सुलोचना टारी ॥२
द्रौपदि चीर उतारत कौरव आपहि लाज संभारी ॥ ३
सीता की पति तुमही राखी अग्नी कुण्ड कियो बारी ॥ ४

सूली से सिंहासन कीनो संकट सेठ निवारी ।। ५
शूकर कूकर सिंह निकुल अज बानर विपदा टारी ।। ६
चोर भील मातंग उबारे अब 'मक्खन' की बारी ।। ७

भजन नं० २६

झूठा सब संसार अरे नर देखहु दृष्टि पसार ।। टेक
मात पिता सुत भगनी भाई नार यार परिवार ।
चिड़िया का सा रैन बसेरा काके नातेदार ।। १
हाथी घोड़े रथ पायक अरु कोट किले रखवार ।
काल अचानक आनि गहै तब कोई न रखन हार ।। २
धन दौलत अरु माल खज़ाना राजपाट घर बार ।
हुआ न होगा कभी किसी का क्यों होता लाचार ।। ३
मूठी बांधे आया जग में जावे हाथ पसार ।
'मक्खन' भली बुरी जो करनी सोही चालै लार ।। ४

भजन नं० २७

पारस प्रभु महाराज अरज़ सुन लीजिये ।। टेक
जगदानन्दन पाप निकन्दन तीन लोक सिरताज ।
परम सुख दीजिये ।। १
दुर्गति टारन शुभ गति कारन तारन तरन जिहाज़ ।
हमें भी पार कीजिये ।। २
मैं दुख भरत फिरत भव बन में तुम लखि लीने आज ।
शरण रख लीजिये ।। ३

श्री राम लखन से कहां रावण के जितैया।
नल नील जामवन्त वो हनुमन्त कहां हैं ॥ ४
सोमा सुलोचना न अंजना न चंदना।
सीता सी सती शीलवती नारि कहां हैं ॥ ५
सुकुमाल शालभद्र न धनदेव सुदर्शन।
जम्बूकुमार से उदार सेठ कहां हैं ॥ ६
मुनि कुंद २ उमास्वामि पूज्यपाद से।
अकलंकदेव बौद्ध विजेता भी कहाँ हैं ॥ ७
जिनसैन न रविसैन न गुणभद्र से कविवर।
सिद्धांत चक्रवर्ति नेमिचंद कहां हैं ॥ ८
भूधर बनारसी न भागचंद न द्यानत।
दौलत सरीके आज वो कविराज कहां हैं ॥९
'मक्खन' इसी प्रकार से जाना है तुझे भी।
सब कहते ही रह जायेंगे यहां थे वो कहाँ हैं ॥१०

भजन नं० ३१

सुख के सब लोग संगाती हैं दुख में कोई काम न आता है।
जो सम्पतिमेंआ प्यारकरैवही विपति मेंआंख दिखाता है। टेक
सुत मात तात चाचा ताऊ परवार नार भगनी भाई।
खुदग़र्ज मतलबी यार सभी दुनिया का झूठा नाता है ॥ १
धन माल ख़जाने महल हाट हाथी घोड़े रथ राज पाट।
सब बनी बनी के ठाठ बाट बिगड़ी में पता न पाता है ॥ २

क्या राजा रंक फ़क़ीर मुनी नरनारि नपुंसक मूर्ख गुनी ।
'मक्खन' इम वेद पुराण सुनी सब ही को कर्म सताता है॥ ३

भजन नं० ३२

मिले ऐसेगुरुमोहि तारनतरन,तारनतरनभव बाधा हरन ।।टेक
भूषन वसन बिना अति सुंदर परम दिगम्बर निरावरन ।
लिए कमण्डल पीछी कर में निरखि २ पग धरैं धरन ॥ १
आतम लीन ज्ञान तन वन में तेरह विधि चारित आचरन ।
विषय कषाय लेश नहीं जिनमें राग द्वेष परिहार करन॥ २
ज्ञान ध्यान तप लीन निरन्तर धर्मामृत की करैं भरन ।
'मक्खन' दास पड़ा चरनन में हरो हमारा जनम मरन ॥ ३

भजन नं० ३३

प्रभु देखा तुम्हारा आज मुखड़ा ॥ टेक
चलैं न नैन हलैं नहिं भृकुटी पड़े न मस्तक में सिकुड़ा ॥१
परम दिगम्बर वीतराग छवि दर्शन लखि भागै दुखड़ा ।।२
तीन छत्र सिर ऊपर सोहैं चमर सुरेश ढुरावैं खड़ा ॥३
तुम दिव्यध्वनि परम पयोदधि भरैं भव्य निज बुद्धि घड़ा ॥४
कोटि भानु द्युति तुम तन मांही देखि होय आश्चर्य बड़ा ॥५
तीन लोक सब मैंने देखे कोई न तुम सा नज़र पड़ा ॥६
आन देव तुम आगे फीके ज्यों हीरे में कांच टुकड़ा ॥७
तुम प्रभु मोक्ष महल की सीढ़ी 'मक्खन' को भी दीजै चढ़ा ॥८

रसिया भजन नं० ३४

श्री सम्मेद शिखर तें बीस जिनेश्वर शिवपद पाया है।
शिव पद पाया है प्रभू ने मोक्ष लहाया है ॥ टेक
आस पास में जंगल भारी हरी हरी वृक्षों की क्यारी।
शोभा अपरम्पार निरखि करि चित हुलसाया है ॥ १
सीता गंद्रफ नाला बहता मानो भव्य जीवों मे कहता।
पग धो धो कर चढ़ो जहां प्रभु टोंक बनाया है ॥ २
बीस टोंक गिरि ऊपर सोहें, सुर नर खग सबका मन मोहें।
एक बार वन्दन तैं गति पशु नर्क नशाया है ॥ ३
श्री सम्मेद शिखर मन भाया, देश देश से यात्री आया।
दर्शन पूजन नृत्य गान कर, पुन्य उपाया है ॥ ४
श्री पूनमचन्द घासी लाला, दक्षिन से मुनि संघ निकाला।
देशदेश उपदेश देय मधुवन में आया है ॥ ५
चला संघ रोहतक से दूजा गिरि यात्रा करने मुनि पूजा।
हरप्रसाद अरु तुलसीराम यह श्रेय कमाया है ॥ ६
संवत उन्नीस सौ चौरासी फाल्गुन सुदी चौथ शुभ राशी।
संघ सहित श्री शांति सिंधु मुनि दर्श दिखाया है ॥ ७
कोड़ा कोड़ि मुनीश्वर ध्यानी, कर्म नशाय वरी शिवरानी।
सो गिरि परम पुनीत पुन्य तें आज लखाया है ॥ ८
धन्य २ है भाग्य हमारा, शांति सिन्धु मुनि रूप निहारा।
गिरि यात्रा मुनि दर्शन लखि 'मक्खन' उमगाया है ॥ ९

भजन नं० ३५

पिया गिरनार गयोगी, अकेली मोहि छोड़ि कै ॥ टेक

काहे को प्रभु ब्याहन आये, काहे को पिछार गयोरी।
मनाओ कोई दौड़ि कै ॥ १
नौ भव की मेरी प्रीति लगी थी, ताहि बिसारि गयोरी।
मुक्ती से नेहा जोड़ि कै ॥ २
द्वारे आये पशु बिललाये, दया उर धारि गयोगी।
घोरों की बाग मोड़ि कै ॥ ३
कंगना झटका जामा पटका, मौहर उतारि गयोगी।
सैरे की लड़ी तोड़ि कै ॥ ४
'मक्खन' राजुल सोच करै मन, योगी भरतार भयोरी।
दुनियां से नाना तोड़ि कै ॥ ५

भजन नं० ३६

आनि गही है प्रभु की शरन में ॥ टेक

नासिका पै दृष्टि पदमासन बिराजे,
शान्ति छबि है समाई दृगन में ॥ १
राग नहीं द्वेष नहीं काम नहीं क्रोध नहीं,
मान नहा रे प्रभु जी के मन में ॥ २
भूख नहीं प्यास नहीं आस नहीं त्रास नहीं,
वास करें र निजानन्द भवन में ॥ ३

भाला त्रशूल नहीं भूषन दुकूल नहीं,
भूल नही रे पदारथ कथन मे ॥ ४
रोग न वियोग नहीं मन का भोग नहीं,
शोग नहीं रे चिदानन्द पन मे ॥ ५
दर्शन अनन्त सुख वीरज अनन्त ज्ञान,
भानु सम रे दिपै जोति तन मे ॥ ६
सर्वज्ञ वीतराग देव अरहन्त सम,
'मक्खन' रे न तीनो भुवन मे ॥ ७

भजन नं० ३७

नेमि गये गिरनारी ए प्यारी मै तो कैसे करूं अब ॥ टेक
सब यादव मिल ब्याहन आये आये कृष्ण मुरारी ॥ १
तोरन से रथ मोरि लियो है सुन पशुवन किलकारी ॥ २
मोर मुकट केसरिया जामा पटका कर कंगना री ॥ ३
जाय दिगम्बर दीक्षा धारी पोट परिग्रह डारी ॥ ४
प्रभु चरणन ढिग जाय रहूगी दे आज्ञा महतारी ॥ ५
मात पिता बुआ बहन भतीजी सब से क्षमा हमारी ॥ ६
यो कहि राजुल जा गिरनारी "मक्खन" दीक्षा धारी ॥ ७

भजन नं० ३८

अरे जिया काहे को मान करत है ॥ टेक
तन धन योवन कुटम कबीला सब एक दिन विनशत है ।
जिनकी तनक नजर लखि टेडी कोटिन सूर डरत है ।

ते भी परवश पड़े बंदि में तेरी क्या ताकत है ।। १
जिन के संग में आगे पोछे चतुरंग फोज चलत है ।
वो भी कर्म उदै बश वन मे एकाकी विलखत है ।। २
भक्षाभक्ष उदर भर निश दिन जा तन को पोषत है ।
वो भी जल भुन मिल माटी में पैरों तले खुदत है ।। ३
हाथी घोड़े रथ मोटर बिन कभी न पैर धरत है ।
वो नांगे पग फिरे सड़क पर टुकड़े को तरसत है ।। ३
मुकट बंध बत्तीस सहस नृप जिनके पगो परत है ।
उनका नाम निशान मिटा 'मक्खन' क्यों तू अकड़त है।।४

भजन नं० ३६

स्वामी मुक्ती का मार्ग बता दो मुझे ।
चारों गतियों के दुख से छुड़ा दो मुझे ।। टेक
म अनादी काल से भ्रमता फिरूं संसार में
कौन विधि से हे प्रभू उतरूं भवोदधि पार मैं ।
बनि के नाविक आप लगा दो मुझे ।। १
कर्म वैरी ने मेरे ऊपर करी जादूगरी ।
कर दिया पागल मुझे सारी मेरी सुधि बुधि हरी ।
कोई मन्त्र अनोखा सिखा दो मुझे ।। २
अब तलक हे नाथ तुम मम दृष्टि में आये नहीं ।
भेष धरिके लाख चौरासी भी तुम पाये नहीं ।
अब तो दर्शन अपना दिखादो मुझे ।। ३

तुम हितैषी वीतरागी ज्ञान के भंडार हो ।
तत्त्व उपदेशी हिताहित के वतावन हार हो ।
स्वातम तत्त्व सरूप वताटा मुझे ॥ ४
विष्णु ब्रह्मा शिव महेश्वर जिन तुम्हारा नाम है ।
दुःख सब जीवों के हरने का तुम्हारा काम है ।
कहता 'मक्खन' अब कै बचाटो मुझे ॥ ५

भजन नं० ४०

बन जाये आतमा भला परमातमा ये क्यू ।
अरहन्त काट कर्म को बतला दिया कि यू ॥ १
कुर्बान जैन धर्म पे होते है किस तरह ।
सर देकै निष्कलंक ने बतला दिया कि य ॥ २
पर वादियों का मान कोई किस तरह हरे ।
बौद्धों को जीत कह दिया अकलंकदेव यू ॥ ३
जिनधर्म की प्रभावना क्यों कर दिखाइये ।
स्वामी समन्तभद्र ने जतला दिया कि यू ॥ ४
सम्यक्त्व को निशल्य पालते है किस तरह ।
अञ्जन ने खड्ग धार पै दिखला दिया कि यू ॥ ५
भाई का दर्द भाई बटाये तो किस तरह ।
लक्ष्मण ने शक्ति खाय के बतला दिया कि यू ॥ ६
इम्तहान दे तो शील का दुनियां में किस तरह ।
सीता ने पड़ के आग में दिखला दिया कि यू ॥ ७

विपदा में बन्धुओं को दे इमदाद किस तरह ।
श्री कृष्ण बन के सारथी समझा दिया कि यूँ ॥ ८
भाई से भाई दुष्टता करते है किस तरह ।
दुर्योधनादि कौरवों ने कह दिया कि यूँ ॥ ९
'मक्खन' अवार काल में मुनि हो तो किस तरह ।
आचार्य शांति सिन्धु ने दिखला दिया कि यूँ ॥ १०

भजन नं० ४१

ठुमरी ५ ताल ।

नेमी पिया के पास कैसे जाऊ सखीरी नेमी पिया के पास कसे जाऊ । एरी आलि पिया बिना मोहि निश दिन घरी छिनपल कल नाहि मोरा जिया घबराय, नेमी पिया० अन्तरा ॥ १

सुनकर पशुओं की टेर, दीनो रथ फेर, शीश मुकट कंगना तोरि इत गयो उत गयो पशु बंधि छोड़ि जाय चढ़ो गिरनारी नेमी पिया० ॥ २

भजन नं० ४२

हे मुनीश्वर शान्तिसागर तू हितु संसार का ।
खोल दीना द्वार तूने मोक्ष के आगार का ॥ टेक
छोड़ि सब परिवार तजि घरबार जा जंगल बसा ।
धारि जिन मुद्रा चलाया मार्ग मुनि आचार का ॥ १

शील संयम त्याग ज्ञान विवेक तप व्रत भावना ।
मूल अट्ठाईस गुण धर मान मारा मार का ॥ २
बैठि के गिरि कन्दरा में ध्यान आतम का किया ।
सर्प लिपटा अंग में धरणेन्द्र के आकार का ॥ ३
देखि महिमा आपकी संसार सब मोहित हुआ ।
अन्य मतियों ने भी गाया गान तेरे प्यार का ॥ ४
क्रोध छल मगरूर लालच तास्सुब तुझ में नहीं ।
है तुही सच्चा नमूना आतमा उद्धार का ॥ ५
मित्र अरि अहि माल कञ्चन कांच निन्दा संस्तुति ।
दुःख सुख जीवन मरण सम गम नहीं गुल खारका ॥ ६
अर्जिका मुनिराज श्रावक श्राविकायें साथ ले ।
संघ पूनमचंद घासीलाल साहूकार का ॥ ७
करि के दक्षिण से पयाना थो शिखर सम्मेद को ।
मार्ग में मारग बताया भव उदधि के पार का ॥ ८
ये सुना करते थे दक्षिण मे मुनी आचार्य है ।
होगया उत्तर में आना शान्ति पारावार का ॥ ९
शिष्यगण को साथ में ले घूमते हो देश में ।
है यही अच्छा तरीका धर्म के परचार का ॥ १०
देश उत्तर भूमि कै है मोह निद्रा से जगा ।
चाहते मक्खन सभी दर्शन तेरे दीदार का ॥ ११

भजन नं० ४३

शान्तिसागर का जो भारत में न आना होता ।
नाम मुनि धर्म का दुनियां से रवाना होता ॥ टेक
छोड़ि घर वार जो दीक्षा न दिगम्बर धरते ।
साधु निर्ग्रन्थ तो फिर किस को बताना होता ॥ १
ध्यान में लीन थे जब सर्प अंग से लिपटा ।
ऐसी दृढ़ धीरता का कौन ठिकाना होता ॥ २
पंचमे काल के आखीर लों होंगे मुनिवर ।
जैन शासन का वचन कैसे निभाना होता ॥ ३
नाथ दक्षिण से न सम्मेद शिखर जी आते ।
तो न मुनिसंघ का उत्तर में पयाना होता ॥ ४
उच्च जैनों को जनेऊ न दिलाते स्वामी ।
ऊंच अरु नीच का सब भेद मिटाना होता ॥ ५
शूद्र का नीर न बाज़ार का खाना पीना ।
शुद्ध आहार की शिक्षा का न पाना होता ॥ ६
को बनाता इन्हे मुनि अर्जिका ऐलक क्षुल्लक ।
ऐसे योगी को जो आचार्य न माना होता ॥ ७
मूढ़ जनता को जो उपदेश न देते भगवन ।
सार जिनधर्म का 'मक्खन' तो न जाना होता ॥ ८

भजन नं० ४४

ऐसो निर्मल रूप लखायो आंखिनको फल आजहि पायो ॥ टेक

अजर अमर अविचल अविनश्वर निराबाधनिर्लेप कहायो।
अगम अकथ अज निगम निरञ्जन निर्विकार निर्द्वन्द सुहायो १
निष्कलंक निर्बङ्क निशंक चिदंक सच्चिदानन्द कहायो।
आदि न अन्त महन्त सन्त जग जन्त अनन्त सुपार लगायो॥२
ज्ञान अनन्त अनन्त दर्श सुख वीर्य अनन्तानन्त लहायो।
ब्रह्मा विष्णु महेश जिनेश गनेश बुद्ध तुम नाम धरायो॥३
तुम बिन कारन जगत उधारन तारन भवदधि पोत बतायो।
हे कृपाल दुख टाल हाल विकराल काल अति मोहि सतायो॥४
स्याल श्वान गज नाग बाघ अज शूकर मर्कट स्वर्ग पठायो।
शीश नमाय पुकारत मक्खन अबके बार प्रभु मेरो हु आयो॥५

भजन नं० ४५

मानुष भव दुर्लभ पाना बिन धर्म न वृथा गमाना।
लख चौरासी में भटका रहा जन्म मरण का खटका।
जो जामण मरण मिटाना॥ टेक

पिता माता सुता सुत नारि भाई बन्धु जे साथी।
किले गढ़ गाम दौलत धाम पायक अश्व रथ हाथी।
ये सब ही धर्म रूपी बाग में फल फूल आते हैं।
जो पूरब भव लगाते हैं वही इस भव में पाते हैं।
अब भी तरु धर्म लगाना॥ १

जो हैं धर्मात्मा दुनिया में वोही फूल फलते हैं।
जो पापी हैं वह सम्पत दूसरों की देख जलते हैं।

सदा धर्मात्माओं के खुशी से दिन गुजरते हैं।
अधर्मी लोग रंजो गम से रो रो भूख मरते हैं।
इस लिए धर्म अपनाना ॥ २
धर्म ही अग्नि को जल विष को अमृत सम बनाता है।
अरी को मित्र अहि को माल बन रन से बचाता है।
महा उपसर्ग संकट में सहाई धर्म होता है।
वो मूरख है जो उत्तम धर्म पाकर व्यर्थ खोता है।
फिर बार २ नहि पाना ॥ ३
क्षमा व्रत शील संयम दान पर उपकार करते हैं।
सभी घरबार तज एकान्त जंगल में बिचरते है।
तपस्या घोर कर धर ध्यान केवल ज्ञान पाते है।
वोही धर्मात्मा संसार को तजि मोक्ष पाते है।
'मक्खन' फिर दुख छुट जाना ॥ ४

कलियुग लीला भजन नं० ४६

दुनिया में देखो कलियुग ने कैसी लीला फैलाई है।
करि धर्म कर्म का लोप सभी मनमानी रीति चलाई है ॥ टेक
दुनिया के धर्मों में सब से उत्तम जिन धर्म निराला था।
कुछ लोग मनचलों ने उसमे भी गड़बड़ खूब मचाई है ॥ १
कोई वर्णाश्रम का लोप करे कोई जाती पांति मिटाता है।
भंगी चमार संग खाय कहे सब एक ही भाई भाई है ॥ २
कोई भगवें कपड़े पहन बने ब्रह्मचारी घर घर में फिरते।

विधवाविवाहकी शिक्षा दे व्यभिचार की रीति चलाई है।।३
श्री कुन्दकुन्द स्वामी का मत विधवा विवाह बतला करके।
वनि नर्क निगोद पात्र जग में अपयश कालोंच लगाई है ।।४
कोई कहे परस्पर ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र शादी करलो ।
है मनुष्य जाति सब एक नहीं कुछ इनमें छोट बड़ाई है ।।५
कोई रजस्वला को मन्दिर मे जाने की आज्ञा बतलाते ।
सूतक पातक को व्यर्थ कह करते भी ग्लानि न आई है ।।६
कोई कहे प्रतिष्ठा पूजा मे क्यों धन का व्यर्थ लुटाते हो ।
अफसोस इन्ह मंदिर पूजन तक देते मौति दिखाई है ।। ७
कोई कहै देश के कामो म ये धर्म कम ही बाधक हैं ।
मिट जाय आज ये पचड़ा तो होवे स्वराज्य सुखदाई है ।।८
कोई महापुराणादिक ग्रन्थों की असत समीक्षा करते है ।
वैसे महान पुरुषों की कथनी को भी झूठ बतलाई है ।। ९
कोई परम दिगम्बर वीतराग मुनियों की भी निन्दा करते।
शशि सम निर्मल आचार्य संघ पर भी क्या धूलि उड़ाई है।।१०
कोई ढेढ़ चमार भंगियों से जिन प्रतिमा न्हवन करा करके।
स्त्री और शूद्र मुक्ति कह जिन शाशन पर कलम चलाई है।।११
'मक्खन' इन जैनाभासों की बातों में मत आना भाई ।
करि आर्ष जैनग्रन्थों की नित प्रति स्वाध्याय सुखदाई है ।।१२

भजन नं० ४७

भजि देव श्री अरहन्त करे जग अन्त सन्त जन ।

जा मुक्ती सुख पाओ ॥ टेक

अरहन्त समान न दूजा, करि प्रातकाल उठि पूजा ।
ले अष्ट द्रव्य भरि थार, सभी नर नार प्रभू के द्वार
जाय मन बच तन ध्यान लगाओ ॥ १
हनि घाति कर्म दुखकारी, सब लोकालोक निहारी ।
हैं वीतराग निर्दोष सकल गुण कोष बतावे मोष
उसी की चरण शरण में आओ ॥ २
वह जन्म मरण दुख हरता, अजरामर सुख का कर्ता ।
हैं सब देवन का देव करें सब सेव छोड़ि अहमेव
सदा 'मक्खन' उसके गुन गाओ ॥ ३

भजन नं० ४६

जिन वानी है उत्तम गंगा विमल तरंगा
करि मन चंगा न्हालो भाई हां ॥ टेक
यह मिथ्या मैल हरवारे, शुद्धातम रूप निखारे ।
निकसि वीर हिमवन तैं आई, गौतम के मुख कुंड ढराई ।
कर्म पहार भेदि करि धाई, ज्ञान पयोदधि मांहि समाई ।
भव तप हार शिव सुखकार विषय विकार 'मक्खन' टार ॥

भजन नं० ५०

जैनधर्म अनमोला मेरा जैनधर्म अनमोला ॥ टेक
इसी धर्म में वीर जिनेश्वर मुक्ति का पंथ टटोला, मेरा० ॥१
इसी धर्म में कुन्दकुंद मुनि शुद्धातम रस घोला, मेरा० ॥२

इसी धर्म में उमास्वामि ने तत्त्वारथ को तोला, मेरा० ॥ ३
इसी में श्री अकलंकदेव ने बौद्धों को झकझोला, मेरा० ॥४
इसी धर्म में मानतुंग मुनि जेल का फाटक खोला, मेरा० ॥५
इसी धर्म पर टोडरमल ने प्राण तजे बनि भोला, मेरा० ॥६
ऐसे उत्तम धर्म में पाया 'मक्खन' ने ये चोला, मेरा० ॥७

भजन नं० ५१

सुपने में राजपट पाया, उठि मूरख रुदन मचाया।
सुपने में राज पट पाया ॥ टेक

एक दिन जंगल में घमियारा। खोदत२ घास विचारा।
घबरा गया धूप का मारा, छाया में उठि आया, सुपने० ॥१
एक ईंट सिरहाने धरिकै। सोय गयो पृथ्वी में परिकै।
मुंदे चैन से नैन सैन में, देखी अद्भुत माया, सुपने० ॥२
देखा एक शहर अति भारी। कोट किला गढ़ महल अटारी।
प्रजा तहां की मिलकर सारी, इसको नृपति बनाया, सुपने०॥३
हाथी घोड़े रथ असवारी। पल्टन फौज करें रखवारी।
सैनापति मंत्री दरबारी, सब ने शीश झुकाया, सुपने० ॥४
बैठि तख्त पर करै हुकूमत। आज्ञा मानें सारे भूपति।
छत्र चमर शिर ढुरें, सेव सब करें देखि हरषाया, सुपने०॥५
वरी नारि सुन्दर सुखदाई। चक्रवर्ति सम सम्पति पाई।
भोगत भोग अनेक चैन से, लाखों वर्ष गमाया, सुपने० ॥ ६
एक दिन राज सभा में बैठे। दे सुख ताउ मूँछि को ऐंठे।

इतने में कोई राहगीर आकरिके इसे जगाया, सुपने० ॥७
आंखि खुली तब देखा जंगल। कहां गये वे सारे मंगल।
राज पाट सब ठाट बाट, पल भर में कहां समाया, सुपने०॥८
हाय २ करि रोवन लागा। ले खुरपा मारन को भागा।
अरे मूढ़ पंथी तैं मेरी खोय दई सब माया, सुपने० ॥ ६
इसी भांति देखै जग सुपना। पर वस्तुन को मानें अपना।
लखि दुनियां की झूंठी थपना, 'मक्खन' क्यों गरवाया, सु० १०

भजन नं० ५२

हम इस भव में या परभव में तुम्हें ढूढ ही लेंगे कहीं न कहीं।
आखिर जिनभक्तहि तो हम हैं फिर देखहि लेंगे कहीं न कहीं॥टेक
गिरनारि पै या सम्मेद शिखर, सोनागिरि या मांगीतुंगी।
चंपापुर या पावापुर में तुम्हें ढूढ हो लेंगे कहीं न कहीं॥१
चाहे मूरति में या मंदिर में, गिरि कंदर में या समन्दर में।
तेरा ध्यान धरें निज अन्दर में, तब देखही लेंगे कहीं न कहीं॥२
चाहे भारत में या विदेहन में, गजदंत कुलाचल मेरन में।
जिन धाम अकृत्रम कृत्रम में तुम्हें ढूंढ ही लेंगे कहीं न कहीं॥३
मथुरा में रहो काशी में रहो, अवधपुर या हस्तिनापुर में।
छबिआपकी चित्तबसी जिनके वोतो देखही लेंगे कहींन कहीं॥४
साकार रहौ निराकार रहौ, दुनियां में रहौ मुक्ती में रहौ।
निज ज्ञान के नैन उघाड़के 'मक्खन' देखहि लेंगे कहीं न कहीं॥५

भजन नं० ५३

करम बैरी तेरी हस्ती मिटा करके ही छोड़ेंगे,
तेरे कब्जे से आतम को हटा करके ही छोड़ेंगे ॥ टेक
हम अब इस मोह राजा की हुकूमत को न मानेंगे,
लड़ेंगे निज हकूकों पर न हरगिज़ मुंह को मोड़ेंगे ॥ १
तुझे अभिमान है क्रोधादि पलटन पर दुराचारी,
क्षमा अरु शान्ति से सारी तेरी शक्ती मरोड़ेंगे ॥ २
चतुर्गति जेलखानों में हमें तू क़ैद करता है,
अरे जालिम इन्हें इक दिन तपो ऋद्धी से तोड़ेंगे ॥ ३
अधर्माचार गोली लाठियाँ जितनी चलाले तू,
करेंगे व्यर्थ सारी जब अहिंसा कवच ओढ़ेंगे ॥ ४
महामिथ्यात्व बेड़ी पैरों में हाथों में डाली है,
ज्ञान वैराग्य छैनी से इन्हें अब शीघ्र तोड़ेंगे ॥ ५
पुलिस खुफिया कुदेवों ने फँसाया जाल में अब तक,
उन्हें भी तर्क कर जिन देव से अब प्रेम जोड़ेंगे ॥ ६
ग़ुलामी की जंज़ीरें काट के आजाद हो 'मक्खन',
मिले स्वराज्य मुक्ती का वही लेकर के छोड़ेंगे ॥ ७

भजन नं० ५४

वीर जिनेश्वर संकट मेटो लीनी है शरण तुम्हारी,
दुख हारी प्रभू जय जय जय जय ॥ टेक
चहुं गति मांही सुख कहु नाहीं, भोगी है विपत्ति

अपारी दुख हारी प्रभू जय जय जय जय ।

शेर

घातिया नाश ज्ञान केवल उपाया है,
भव्य जीवों को सत्य मोक्ष मग बताया है ॥ १
फिरते अनादि काल से सारे जहान में,
तुम सा न और दूसरा देखा महान में ॥ २
हे जग नायक भक्त सहायक, अशरण शरण अधारी,
वलिहारी 'मक्खन' जय जय जय जय

भजन नं० ५५

मत खेलो रे सजन ऐसी होली ॥ टेक
लड़ें दिग्म्बर और श्वेताम्बर, रुपयों की भरि भरि झोली ॥१
एक मुकदमा निवटत नाहीं, दूजे की पोथी खोली ॥२
बाबू पंडित लड़त परस्पर, खेंचातानी झकझोलो ॥३
बैर विरोध लेय पिचकारी फैंकत रंग कुवचन बोली ॥४
वैमनस्य कीचड़ सिर डारत, कुबुद्धि भाव मलि मलि रोली॥५
कलम तोप से भरि भरि मारत, मान कषाय शब्द गोली॥ ६
जैन कौम की हालत बिगड़ी, भीतर से पड़ि गई पोली ॥७
और कौम सब आगे बढ़ गई, रहि गई जैन जाति भोली ॥८
मक्खन खेलत खेलत होली, फटि गये सब दामन चोली ॥९

भजन नं० ५६

तोहे लखि मोहि होत अनंदा है ॥ टेक

विश्वसैन ऐरा के नन्दन शान्तिस्वरूप जिनन्दा है ॥ १
जन्म हस्तिनापुर में पायो हरषे सुर नर वृन्दा है ॥ २
छोड़ि राज पट खंड भूमि का कीनो तप सुखकन्दा है ॥ ३
क्रोध मान छल लालच जीते काम करूर निकन्दा है ॥ ४
कर्म घातिया नाशि उपायो केवल ज्ञान अमन्दा है ॥ ५
समवशरण में आप विराजे पूजत सूर सुरिन्दा है ॥ ६
अन्य देव तुम आगे फीके दिवस माहिं जिमिचन्दा है ॥ ७
मक्खन तुम चरणाम्बुज सेवत कटत करम यम फंदा है ॥ ८

भजन नं० ५७

सुनो चेतन चतुर प्यारे नीकी बतियां ॥ टेक

कालअनादि व्यतीतभये तोहिभ्रमतभरत दुखचहुं गतियाँ ॥१
लखचौरासी जन्म मरण करि दुर्लभ नर भव भापतियां ॥२
खान पान निद्रा विकथा में खोवत हो सब दिन रतियाँ ॥३
धरम हेत नहि कौड़ी खरचत द्रव्य लुटावत दुष्कृतियाँ ॥४
पाप करम नहिं करत डरत तू फल भोगत पीटै छतियाँ ॥५
पाप कर्म से नर्क भरो दुख भूख प्यास जाड़ा ततियां ॥६
पूजा दान शील तप संयम करत टरत दुख दुरगतियाँ ॥७
मक्खन धारहु सुमति हृदय में टारहु चित से दुरमतियां ॥८

भजन नं० ५८

१ न मूरख प्रानी कै दिन की जिंदगानी ॥ टेक

बड़ी हवेली ऊंची ऊंचो क्या सत खनी चिनावै ।
अंत समय सब छोड़ि जायगा कोई साथ न जावै ॥ १
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी हो गया लक्ष करोड़ी ।
दान न दिया न खाई खरची अंत समय सब छोड़ी ॥ २
मेरी मेरी करत बावरे करै रात दिन फेरी ।
लक्ष्मी कुतिया घर घर डोलै ना तेरी ना मेरी ॥ ३
दिन दिन आयु घटति है तेरी ज्यों अंजुली को पानी ।
काल अचानक आनि गहै तब चलैन आना कानी ॥ ४
सेढु शीतला भैरों मैयद पूजै भूत भवानी ।
मरने से कोई बचा सकै नहि मात पिता सुत नानी ॥ ५
सागर गिरि पाताल गगन में मौत नहीं छोड़ै ।
तैखाने तालों के अंदर गर्दन आनि मरोड़ै ॥ ६
बहुत गई रही थोड़ी अब भी करना हो सो करले ।
'मक्खन' उत्तम नर भव पाकर श्रीजिन नाम सुमिरले ॥७

भजन नं० ५९

जो कुमता को तूने बसाई न होती,
तो सुमता की तुझ से रुसाई न होती ॥
अगर मानता तू सुगुरुओ का कहना,
तो दुनियां में तेरी हंसाई न होती ॥ १
तू क्यों दुःख पाता नरक गति में जाकर,
जो पापों से तेरी रसाई न होती ॥ २

जो तू शुद्ध सम्यक्त धरता हृदय में,
तो कर्मों से तेरी फंसाई न होती ।। ३
जो अभ्यास तू जैन शासन का करता,
तो ये तेरी बुद्धी नशाई न होती ।। ४
अगर पाठ पढ़ता अहिंसा का "मक्खन",
तो दिल में ये तेरे कषाई न होती ।। ५

भजन नं० ६०

जो दुनिया को झंझट में फंसि जांयगे ।
वो ममता की संकल से कसि जांयगे ।। टेक
फिरै रात दिन देश पर देश मारा । चढ़ै पर्वतों पै धँसै सिंधु धारा । लड़ैं जाय रण में चलै जंह दुधारा ।
वृथा प्राण योंही निकसि जांयगे ।। १
किसी भांति से बहुत सा द्रव्य पाऊं । तो सत मंजिले महल ऊंचे चिनाऊं । घने स्वर्ण रत्नों के गहने बनाऊं ।
इसी आस में सांस नसि जांयगे ।। २
है करनी मुझे बेटे पोतों की शादी । लुटा धन करूं पूरी मन की मुरादी । बढ़ैगा कुटम होगी घर में अबादी ।
ये अरमान योंही मसुसि जांयगे ।। ३
जो नर जन्म पाकर के खोवै वृथा ही । पड़ै घोर संसार सागर अथाई । चतुरगति के दुखड़े भरै आतताई ।
वो पापों की पंकिल में धँसि जायेंगे ।। ४

विषय भोग के रोग को जो न पालै । कपट क्रोध मद मोह ममता को टालै । तपश्चर्या व्रत नेम सँयम सँभालै ।
वो मक्खन शिवालय में बसि जायेंगे ॥ ५

भजन नं० ६१

सब दुनिया को ठगि लीना रे इस ठगिनी माया नैं ।
चमकि दमकि चंचल चपला सी चित्त लुभा यानैं ॥ टेक

कुलटासी घर घर में फिरि करि रूप दिखावा नैं ।
नये नये पति किये निरंतर लक्ष्मी जाया नैं ॥ १

हीरा मोती नीलम पन्ना बनि बनि कैं यानैं ।
सोना चाँदी मोहर अशर्फी पैसा रुपया नै ॥ २

धरैं मूँद कै अलमारी तालों मैं तैखानैं ।
तौ भी थिर नहीं रहती चलती फिरती छाया नै ॥ ३

साधु सँत योगी सन्यासी मोहि लिये यानैं ।
पीर फकीर वजीर ठगे इस दौलत दाया नै ॥४
आस फाँस में फांसि लिये जग जन भर माया नै ॥ ५

पूजा पाठ दान तप सँयम छुड़ा दिये यानैं ।
किये प्रमादी रोगी सब को दुर्बल काया नै ॥ ६

मक्खन कोई बचा न ऐसा जो न ठगा था नैं ।
ऐसी ठगनी को ठगली इस जिनवर ठगिया नै ॥ ७



हमारी अन्य पुस्तकें ।

१. वेद पुराणादि ग्रन्थों में जैनधर्म का अस्तित्व ।

इस पुस्तक मे यथा नाम तथा गुण है अर्थात् इस पुस्तक में ४१ वेद पुराणादि अजैन ग्रन्थो की साक्षी से जैनधर्म की प्राचीनता और श्रेष्ठता दिखाई गई है । मूल्य ५ आने है । हर एक जैन अजैन को एक बार आद्योपान्त अवश्य पढ़नी चाहिये ।

२. मक्खन जैन भजनमाला (द्वितीय भाग)

इस पुस्तक मे उत्तम उत्तम ४२ भजन है जो कि अति उत्तम नवीन चालो मे रचे गये हैं । कीमत सिर्फ =)॥ आने हैं ।

३. ज्ञानानन्द भजनाकर ।

इस पुस्तक मे बहुत उत्तम उत्तम शिक्षाप्रद गाने और भजन है पृष्ठ २४ हैं । मूल्य ढाई आने है ।

४. सिकोटर वज्रकरण नाटक ।

यह बड़ा जोशीला धार्मिक गाना नवीन तैयार किया है इसमे कोई जमाना पार्ट न होने हुए भी अति रोचक और भड़कीला है । मूल्य ।-)

५. अकलंकचरित्र नाटक ।

इसमें अकलंकदेव और निकलंक की जिनधर्म भक्ति, धीरता और निर्भीकता का बड़ी खूबी के साथ वर्णन किया है मूल्य ।)॥

नोट—१) रु० से कम का वी०पी० नहीं भेजा जायगा । कम मंगाने वालों को टिकिट भेजने पर भेजी जावेंगी ।

मक्खनलाल जैन, प्रचारक जैन अनाथाश्रम

दरियागंज देहली ।

ॐ

* श्री महावीरायनमः *

पङ्कज-पुष्पाञ्जलि

द्वितीय-अङ्क



जैन जगत के प्रसिद्ध कलाकार

श्री पं० सुभाषचन्द्रजी जैन, 'पङ्कज' के लोक प्रिय गीत

प्रकाशक :

सतीशचन्द्र जैन 'जिन्दल'

(जम्बूनगर) चौरासी, मथुरा।

प्रथमावृत्ति	जून १६६६	मूल्य
१०००	(सर्वाधिकार सुरक्षित)	५० न० पै०

श्रद्धेय, पूज्य, तपोनिधि–

श्री १०८ मुनि विद्यानन्दजी महाराज

की

पुनीत सेवा में

सादर - समर्पित !

—" पङ्कज "

दो शब्द

(पङ्कज-पुष्पाञ्जलि में)



जैन जगत् के प्रसिद्ध कलाकार श्री पं० सुभाषचन्द्रजी जैन 'पङ्कज' द्वारा लिखित सिद्धचक्र-विधान की प्रसिद्ध चुनरिया, ब्रज की प्रसिद्ध लोक धुन पर लिखा बिलकुल नया पलना, ब्रज, हरयाणा व गुजरात की लोक प्रिय धुनों पर गीत, श्री १०८ मुनि विद्यानन्द जी महाराज का सर्वाधिक प्रिय गीत, श्री १००८ चन्द्रप्रभु जी देहरा, तिजारा की शान मे लिखी ग़ज़ल, मुक्ति-मार्ग नामक दृष्टान्त, स्वर्गीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री के प्रति श्रद्धांजलि गीत, बोल नन्दा बोल मन्दा होगा की नहीं, प्रसिद्ध हास्य गीत, साथ ही बहारों फूल बरसाओ की धुन पर व अन्य फिल्मी धुनों पर गीत।

—सतीशचन्द्र 'जिन्दल'

भजन नं० १

फिल्म सूरज

वीर जन्मोत्सव पर

(तर्ज—बहारो फूल बरसाओ)

ख़ुशी के गीत मिल गाओ, मेरे घर लाल आया है ।
तरन्नुम इक नया लाओ, मेरे घर लाल आया है ॥
बरसती नूर की बारिश है, कुण्डलपुर के आँगन में ।
घटाएँ रक्स करती आज देखो सहने गुलशन में ॥
नजारों तुम ठहर जाओ,
मेरे घर लाल आया है ॥ १ ॥

मिले है रत्न दुखियों को, वो देखो झोली भर—भर के ।
मिटे हैं कष्ट ओ संकट, वो कुण्डलपुर में घर—घर के ॥
खबर घर—घर ये कर आओ,
मेरे घर लाल आया है ।

वो ऐरावत से हाथी को सजाकर इन्द्र लाया है ।
प्रभू का दर्श पा 'पङ्कज', नहीं फूला समाया है ॥
मिला कर सुर में सुर गाओ,
मेरे घर लाल आया है ॥ २ ॥

गीत नं० २

ब्रज की लोक धुन पर

(श्रीसिद्धचक्र विधान की प्रसिद्ध चुनरिया)

चुन्दरिया मेरी ऐसी रंगादे मेरे बीर।
हो शुद्ध हाथ की कती बुनी वो अजब निराले ढंग की हो॥
चहुँ ओर लगी हो रत्नत्रय की गोट तिरंगे रंग की हो।
हो पति भक्ती की लहर पड़ी सत धर्म के बूंटे संग में हों॥
बन्दिश का पूरा ध्यान रहे कोई लहर कहीं पर भंग न हो॥
कोनों पर चारों ऐसी बनी हों तस्वीर ॥ चुन्दरिया······

वो मैना सुन्दर सी रानी दुखियों की सेवा करती हो।
जख्मों को धो धोकर उनके फिर मरहम उन पर धरती हो॥
धीरज उनके मन बंधा बंधा फिर धर्म भावना भरती हो।
श्रद्धान अटल हो जिनमत का प्रभुनाम की माला जपती हो॥
श्रीपाल हों पास विराजे और सात सौ बीर। चुन्दरिया···

श्री सिद्धचक्र का मण्डल हो मणियों के द्वारा पुरा हुआ॥
भक्ती में अपने जिनवर की हो मैना का मन भरा हुआ।
हो यन्त्र-न्हवन के पानी का कलशा भी सन्मुख धरा हुआ॥
एक चित्र में भैया दिखलाना सबका ही संकट टरा हुआ।
दिखाना ये भी तन की मिटी थी कैसे पीर॥ चुन्दरिया······



ले स्वर्णपात्र में गन्धोदक सबके तन सती छिड़कती हो।
गन्धोदक के छींटे पड़ते सबकी ही बाधा टलती हो॥
वो कुष्ट गलित काया सबकी फिर स्वर्ण सरीखी बनती हो॥
हां सिद्धचक्र के जयकारे चहुँ ओर दुन्दुभी बजती हो।
धन्य-धन्य मैना रानी औ धन्य कोटि भट वीर॥ चुन्दरिया…

मैं ओढ़ चुनरिया को अपनी सब बहिनों को दिखलाऊँगी।
ये पति भक्ति की लीला है मैं सबको ही समझाऊँगी॥
आदर्श सुन्दरी मैना का अपने जीवन में लाऊँगी।
इक गीत चुनरिया का सुन्दर "पङ्कज" जी से लिखवाऊँगी॥
पूरन करेंगे आशा मन की श्री महावीर। चुन्दरिया……



गीत नं० ३

फ़िल्म संगम

(तर्ज—बोल राधा बोल)

भूख और बेकारी, उस पर मँहगाई लाचारी ।
नन्दा बोल, नन्दा बोल, मन्दा होगा की नहीं ॥
एक रुपए का सेर बिके है, आज बज़ारों में आटा ।
इकले नेहरू के जाने से, आगया कहाँ से ये घाटा ॥
कभी खतम ये गोरख धन्धा होगा की नहीं ।
बोल नन्दा बोल, मन्दा होगा की नहीं ॥
आज हमारे देश वासियों में पहले सी आन नहीं ।
सब स्वारथ में लगे हुए हैं और देश का ध्यान नहीं ॥
कभी खतम ये गोरख धन्धा होगा की नहीं ।
बोल नन्दा बोल, मन्दा होगा की नहीं ॥

रुबाई

हम तो दुश्मन को भी महमान बना लेते हैं ।
हम तो शैतां को भी इन्सान बना लेते हैं ॥
मेरे भारत की सिफत है ये ऐ दुनियाँ वालो ।
हम तो पत्थर को भी भगवान् बना लेते हैं ॥
—'पङ्कज'

गीत नं ४

ब्रज की लोक धुन पर

वीर प्रभु का पालना

जुग जुग जियो मैया त्रशला तेरो ललना,
बाजे है बधाई मैया आज तोरे अँगना।

नगर नगर के देश देश के नरनारी मिल आ रहे।
तरह तरह के वस्त्राभूषण भेंट प्रभू को ला रहे॥
कोई तो खुशी में, री झुलाय रही पलना॥ बाजे ......

प्रेम से प्रभू को जो पलना झुलाते हैं।
भोग के सुरग सुख मुक्ती में जाते हैं॥
भूलें न वो भव-भव झुलाएं जो कि पलना॥ बाजे......

भक्ती में तन-मन तेरी ऐसा खो गया,
छुटेगा न "पङ्कज" ये रंग ऐसा हो गया।
जैसे काली कमली पै चढ़े दूजा रंग ना॥ बाजे...... ...

भजन नं० ५

श्री भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति

श्री १०८ मुनि विद्यानन्दजी महाराज का सर्वाधिक प्रिय गीत जिसका पाठ प्रति दिन महाराज के प्रवचन के पश्चात हजारो नर-नारी करते हैं। जिसे नगर-नगर मे बच्चे बूढ़े सभी भक्ति भाव से गाते हैं।

तुमसे लागी लगन ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा, मेटो २ जी संकट हमारा ॥
निश दिन तुमको जपूँ, पर से नेहा तजूँ।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा ॥

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा देवी के सुत प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा ॥
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक थारा ॥

जग के दुख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है
मेटो जामन-मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा ॥
लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
'पङ्कज' व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया, लागे खारा ॥

गीत नं० ६

फ़िल्म खानदान

(तर्ज—तुम्हीं मेरे मन्दिर)

[भू० पू० प्रधानमंत्री स्व० श्री लालबहादुर शास्त्री जी के प्रति]

तुम्हीं रहनुमां थे, तुम्हीं पासबां थे ।
मेरे इस वतन के, मेरे इस चमन के ॥

हुआ झोंपड़ी में जनम था तुम्हारा ।
बड़ा ही प्रतापी करम था तुम्हारा ॥
किसे था पता कि यही लाल होंगे ।
सम्राट भारत की जनता के मन के ॥ तुम्हीं०

तुम्हें पूछती हैं वो गंगा की लहरें ।
किताबें लिए जिनके ऊपर से तैरे ॥
उदाहरण अनेकों हमें याद हैं अब ।
परिश्रम तुम्हारे तुम्हारी लगन के ॥ तुम्हीं०

आँगन है सूना, शिवालय है सूना ।
'ललिता' के मनका देवालय है सूना ॥
तुम्हें खोजती हैं पुजारिन की आँखें ।
तुम्हीं देवता थे, मेरे इस भवन के ॥ तुम्हीं०

रहेगी अमर "पङ्कज" कीरत तुम्हारी ।
बनेगी समाधि इक तीरथ तुम्हारी ॥
तुम्हें याद करती है रो-रो के दुनियाँ ।
तुम्हीं दूत थे जगमें अमनो अमन के ॥ तुम्हीं०

गीत नं० ७

हरियाणे की लोक धुन पर

हे भगवान मेरे भारत में फिर से तू खुशहाली करदे ।
बने महल हर एक झोंपड़ी घर-घर में दिवाली करदे ॥
सुना करें थे हम पुरखों से भारत ये आज़ाद होगा ।
सुखमय होंगे भारतवासी सबका ही दिल शाद होगा ॥
लेकिन फुट्टा भाग हमारा सुखमय फिर हम कैसे होंगे ।
आज देख ले भारतवासी आधे भूक्खों पेट सोते ॥
हाथ जोड़कर यही विनय है दूर ये कंगाली करदे ॥ १ ॥बने०॥
भारत माता के मन्दिर का बना पुजारी था जो सच्चा ।
जिसको याद करे है रो-रो, भारत का हर बच्चा-बच्चा ॥
सभी नजर में जिसकी प्यारे कोई न था ऊँचा नीचा ।
देकर खून हृदय का जिसने बगिया का हर पौधा सींचा ॥
नेहरू जैसा इस गुलशन में पैदा फिर से माली करदे ॥ २ ॥बने०॥
सपने तो हैं बड़े दिनों के पूरी कब ये होगी आशा ।
कुटिया २ के द्वारे पर हो जाए लक्ष्मी का वासा ॥
बन्दनवार बँधें खुशियों के हो जा चिन्ता दूर निराशा ।
हे भगवान तेरे "पङ्कज" के हिरदे में यही अभिलाषा ॥
चमक उठे धरती का कण कण ऐसी तू उजियाली करदे ॥३॥बने०

ग़ज़ल नं० ८

श्री १००८ चन्द्रप्रभु जी

देहरा, तिजारा वालों की शान में

सुनलो दुआ हमारी ओ देहरे वाले बाबा।
दर पै मवालियों का मजमा लगा हुआ है,
हर सिम्त भक्तजन का मेला लगा हुआ है।
बैठा है कोई दर पै कोई खड़ा हुआ है॥
हर शै है प्यारी-प्यारी॥ ओ देहरे वाले......

चरणों की रज में तेरी अक्सीर ये है स्वामी।
कटती है कर्म लड़ियाँ तासीर ये है स्वामी।
पाता है खुश नसीबी दिलगीर जो है स्वामी॥
बिगड़ी बने हमारी॥ ओ देहरे वाले........

आती है हर तरफ से भक्तों की तेरे टोली,
आते हैं हर तरह के दर पै तेरे सवाली।
ले जा रहे हैं "पङ्कज" भर-भर के सब ही झोली॥
जाए कहाँ भिखारी॥ ओ देहरे वाले.........



गीत नं० ६

गुजराती लोक धुन पर

मेंहदी तो वावी मालवे……

(गुजरात प्रान्त का प्रसिद्ध लोक गीत)

आया हूँ थाके द्वार रे, मेरो कर दीज्यो बेड़ा पार रे।
वीरा दर्शन दीज्यो,
लीला है थाकी अजब ओ प्रभु जी।
पायो न गण धर पार रे
वीरा दर्शन दीज्यो ॥ आया…… …

अजन से तारे तूने ओ प्रभूजी।
म्हारो भी कर उद्धार रे,
वीरा दर्शन दीज्यो ॥ आया हूँ ·…

"पङ्कज" है दास तेरो ओ प्रभू जी,
नैय्या पड़ी मझधार रे ।
वीरा दर्शन दीज्यो ॥ आया हूँ……………

गीत नं० १०

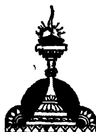
ब्रज की लोक धुन पर

रसिया

तारो-तारो जी हो तारो महावीर,
दुवारे तेरे आय गए ॥

भव-भव की हैं अँखियाँ प्यासी दर्शन दो एक बार।
डूब रही है नैय्या मेरी ले ओ नाथ निकार ॥
मोहे करोना जी अब तो अधीर।
दुवारे तेरे आय गए.......................

जनम-जनम की वीरा तेरे "पङ्कज" की ये आशा।
यही भावना मन में मेरे हो मुक्ती में बासा ॥
सेवक आज खड़ा है तोरे तीर,
दुवारे तेरे आयगए.......................



भजन नं० ११

फ़िल्म (गोवा)

तर्ज—धीरे रे चलो मेरी······

पार करो जी मोहे आज सांवरिया।
नाव पड़ी है मोरी बीच भंवरिया॥
मैं तो घूम-घूम कर भव-भव में अब द्वार तिहारे आया।
हैं साथी सब स्वारथ के जग में मीत न कोई पाया॥
प्रभु तू है वीतरागी,
लौ चरणों से लागी।
ये सोच शरण में आ ही गया॥ पार············
है जनम-जनम की आस यही कब परमातम पद पाऊँ।
कर्मों के बन्धन काट-काट मैं तुझ सा ही होजाऊँ॥
सुनो जग हितकारी।
'पङ्कज' शरण तिहारी॥
तेरी दुनियाँ से मन घबरा ही गया॥ पार···



भजन नं० १२

फ़िल्म सन्तज्ञानेश्वर

(तर्ज-जोत से जोत जगाते.........)

विषयों से दामन बचाते चलो ।
कर्मों के बन्धन छुड़ाते चलो ॥

ये घर तेरा नाहीं चेतन काहे को भरमाया ।
इस झूँठी दुनियाँ से पगले काहे को नेह लगाया ॥
भक्ती में मनको लगाते चलो ।
विषयों से..... ....॥

आया है जो जायेगा वो युग-युग की ये रीती ।
सोच समझले ओ बावरिया आयु जाए बीती ॥
रिश्ते औ नाते भुलाते चलो ।
कर्मों के .... ॥

रावण राजा से बलधारी, काल बलि से हारे ।
गया सिकन्दर भी दुनियाँ से खाली हाथ पसारे ॥
'पङ्कज' ये न भुलाते चलो ।
कर्मों के ....॥



भजन नं० १३

फ़िल्म आरती

तर्ज—बार-बार तोहे···

बार-बार तोहे क्या समझाए गुरुवर यही हमार।
क्याः आ तोहे चेतन ले चलूँ दुनिया के पार॥
तार-तार से मन वीणा के आती ये झनकार।
क्याः आ तोहे चेतन ले चलूँ दुनिया के पार॥
दुनिया दुख की खान है हो जरा संभल-संभल।
ये नगरी अंजान है हो न मचल-मचल॥
मतना नेह लगाए इससे मतलब का संसार।
क्याः आ तोहे चेतन ले चलूँ दुनिया के पार॥
बीत गए हैं जाने कितने जनम तेरे।
कटना पाए इस ही कारण करम तेरे॥
बिता दिया पाकर नरतन को भोगों में हरबार।
क्याः आ तोहे चेतन ·· ··········
दो दिन का ये रूप रंग ये चहल-पहल।
साथ न जायेंगे तेरे ये मकां महल॥
जायेगा एक दिवस यहाँ से 'पङ्कज' हाथ पसार।
क्याः आ तोहे चेतन ···························॥



भजन नं० १४

फ़िल्म संगम

(तर्ज़-बोल राधा बोल)

झुला रहे सब पलना—ओ देखूँ तेरो ललना ।
मैया बोल, मैया बोल, दर्शन होगा कि नहीं ॥
नगर-नगर के देश-देश के नरनारी मिल आय रहे ।
तरह-तरह के वस्त्राभूषण भेंट प्रभू को लाय रहे ॥
मुझको है फिर चलना—और जरा झुला लूँ पलना ।
मैया बोल............ ॥
सुफल भई तोरी आज नगरिया जायो ऋषभ जिनन्दा को ।
जाके दर्शन से अघ नाशत काटत कर्मन फन्दा को ॥
मुझको है फिर चलना—और जरा झुला लूँ पलना ।
मैया बोल............ ॥
प्रेम सहित तेरे ललना को पलना जो भी झुलाते हैं ।
भव-भव के बन्धन उन सबके क्षण भर में कट जाते हैं ॥
"पङ्कज" गाओ पलना, और जुग २ जिओ ललना ।
मैया बोल............॥



भजन नं० १५

फिल्म (संगम)

(तर्ज–मैं क्या करूँ राममुझे बुड्ढा मिल गया···)

ये दुनिया मरने जीने को एक अड्डा मिल गया।
कहाँ से तू आया चेतन कहा तेरो नाम है।
जाना है कहाँ तुझे ओ कहाँ तेरो गाम है॥
चल्लो-चल्लो जी शिवधाम॥ तुझे अड्डा·········

कंचन सी ये काया तूने विषयों में गंवा दई।
प्रभु की मूरतिया काहे मन से भुला दई॥
जपले-जपले प्रभु का नाम॥ तुझे·········

आया है जो यहाँ उसे एक दिन जाना है।
कर्मों का फल "पङ्कज", सबको ही पाना है॥
क्या है पछताने का काम॥ तुझे अड्डा मिल······



भजन नं० १६

फ़िल्म संगम

(तर्ज—बोल राधा बोल)

लीला अजब तुम्हारी, कहते हैं सब ही नरनारी ।
बाबा बोल, बाबा बोल, दर्शन होगा कि नहीं ॥
बड़ी दूर से आशा लेकर तव चरणों में आए हैं ।
एक बार तो दर्शन दे दो पूजन थाल सजाए हैं ॥
तोरे चरणन पै बलिहारी, चरणन कहता खड़ा पुजारी ।
बाबा बोल ... . ॥
जो कोई भी दर पै तेरे आता नाथ सवाली है ।
मन की मुरादें पूरी होती झोली रहती न खाली है ॥
दुःखियों के दुखहारी, प्रभुवर विनती सुनो हमारी ।
बाबा बोल...............॥
नजरें महर तुम्हारी हो तो जर्रा परबत बन जाए ।
एक झलक दिखला दे गर तू मेरी किस्मत खुल जाए ॥
अब तो है 'पङ्कज' की बारी—नैय्या करदो पार हमारी ।
बाबा बोल...............॥



मुक्ति का मार्ग नं० १७

शंकर पार्वती जी का सम्वाद

दोहा—एक समय की बात है सुनो सभी मन लाय ।
गंगा के स्नान को रहे थे कुछ नर जाय ॥
आते प्राणी देख कर बोली भोली बात ।
क्या सब ये बैकुण्ठ को जायेंगे हे नाथ ॥

(तर्ज—राधेश्याम)

इतने सारे प्राणी स्वामी बैकुण्ठ में तुम पहुँचाओगे ।
बैकुण्ठ में इतनी जगह नहीं प्रभु कहाँ पर इन्हें बसाओगे ॥

दोहा—पार्वती की बात सुन कहन लगे भगवान ।
बात सुनो मेरी जरा धर कर भोली ध्यान ॥

भोली तू तो बस भोली है मैं बार बार समझाता हूँ ।
इनमें कितने पाएँ मुक्ति ले अभी तुझे दिखलाता हूँ ॥
शंकर ने माया के बल से कोढ़ी का रूप बनाया है ।
भोली को साथ लिए डेरा गंगा पर आन जमाया है ॥
देख-देख उस दृश्य को सब मन में शंकित होते थे ।
कोढ़ी के संग ऐसी सुन्दरि ये देख के जी में कुढ़ते थे ॥



जोभी आता भोली कहती अहसान ये मुझ पर कर दीजे।
हैं कुष्ट से पीड़ित पति मेरे स्नान इन्हें करवा दीजे॥

दोहा—पार्वती की बात सुन कहते थे नर बात।
छोड़ अरि इस कोढ़ी को चल तू हमरे साथ॥

ये कोढ़ी महादरिद्री है इसके संग तू दुख पायेगी।
गर साथ में हमरे जायेगी तो भारी मौज उड़ायेगी॥
मैं कैसे छोड़ देऊँ इनको ये तो पतिदेव हमारे हैं।
मेरी नौका भव सिन्धु से ये ही तो तारण हारे हैं॥

दोहा—पार्वती की जब सुनी उत्तर में ये बात।
नर-नारी सब चल दिये कानों रख कर हाथ।

इतने में एक बूढ़े बाबा भोली के पास मे आते हैं।
और प्रेम में गद्-गद् होकर के यूँ मीठे वचन सुनाते हैं॥
क्यों बहन दुखी दिल में होती इनको संग मैं ले जाऊँगा।
स्नान करूँ खुद गंगा में और साथ में इन्हें कराऊँगा॥

दोहा—शंकर को रख पीठ पर भोली को ले साथ।
बूढ़े बाबा आगए गंगाजी के घाट॥



॥ श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः ॥

श्री चन्द्रप्रभू जैन देहरा चरित्र भजन संग्रह

जिसमें श्री चन्द्रप्रभु चरित्र व आधुनिक तर्जों पर उत्तमोत्तम रसाले शिक्षाद भजन हैं।

संग्रहकर्ता—
रमेशचन्द जैन तिजारा

प्रकाशकः—
श्री माहरसिंह दौलतराम जैन, तिजारा

पुस्तक मिलने का स्थान—
श्री चन्द्रप्रभु जैन जनरल स्टोर
देहरा रोड, तिजारा (अलवर)

प्रथमबार १००० | २५ अक्टूबर ६१ | मूल्य ५० नये पैसे

सूचना



पर्यूषण पर्व, अष्टान्हिका पर्व, वीर जयन्ति आदि पर्वों पर वितरण करने वालों को व पुस्तक विक्रेताओं को भ[redacted] कमीशन दिया जायगा।

निम्न लिखित पते पर ६० न० पै० के टिकट भेजकर पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान :

प्रकाशक—सतीशचन्द्र जैन, 'जिन्दल'

C/o संघ भवन :

जम्बू नगर, चौरासी—मथुरा (यू० पी०)

मुद्रक :—मथुरा प्रिंटिंग प्रेस, तिलक द्वार, मथुरा।

दो शब्द

सज्जनो !

आज से ५ वर्ष पूर्व एक अत्यन्त रोचक तथा चमत्कार पूर्ण घटना हुई थी जब कि श्रावण सुदी दशमी सं० २०१३ के दिन श्री चन्द्रप्रभु भगवान की एक हजार वर्ष प्राचीन मूर्ति आकस्मिक रूप से 'देहरे' नामक एक खण्डहर को खोदने से कस्बे तिजारे में प्रगट हुई थी। जब से आज तक भगवान् के इस अतिशय क्षेत्र पर दूर दूर के यात्रीगण अपने दुख मिटाकर भगवान् का जय जयकार मनाते हैं और प्रति वर्ष हजारों यात्री यहाँ आकर बोल कबूल करने से अपनी मनोवांछा प्राप्त करते हैं। उसके एक वर्ष पश्चात् से ही यह दुकान भगवान् के आशीर्वाद से यात्रियों की हर प्रकार से सेवा करती है।

हमारे यहाँ पर श्री चन्द्रप्रभु भगवान् के फोटो तथा पुस्तकें एवं अन्य किसी भी प्रकार के फोटो, किताबें आदि किफायत से मिलती हैं तथा सामग्री, ज्योति शुद्ध देशी घी की, परसाद एवं अन्य मिठाइयाँ, दूध दही आदि विश्वास पूर्ण मिलती हैं तथा मिठाइयाँ सब देशी घी की ही मिलेंगी। एक बार सेवा का का अवसर प्रदान करें। तस्वीरों की जड़ाई आदि का उत्तम प्रबन्ध है।

—प्रकाशक

श्री चन्द्रप्रभु चरित्र

(रचियता—श्री तुलाराम जैन एम. ए.)

वन्दना

प्रथम नमूं अरहंत को, सिद्ध होय सब काज।
मनो कामना कर सफल, रखे दास की लाज॥
बाडे के पद्मा नमूं, चाँदनपुर महावीर।
'चन्द्र' तिजारे के नमों, नमूं ध्यान धरि धीर॥

मैं कवी नहीं ना पंडित हूँ, कोई योग्य पुरुष ना ज्ञानी हूँ।
गुणवान नहीं, धनवान नहीं, विद्वान् नहीं कोई ध्यानी हूं॥
ना कलाकार, ना हुनरदार, नीतिज्ञ नहीं नीति जानूं।
अध्यापक बन सेवा करता, ये बात भला क्या पहचानूं॥
जिस महावीर के सुमरन से, तोपों के वार गये खाली।
बाड़े के पदमा को ध्याया, उसकी सब पीर मिटा डाली॥
इन दोनों का सुमरन करके, श्री चन्द्र प्रभो को ध्याता हूं।
कैसे चन्द्रोदय हुआ हाल, देहरे का सत्य बताता हूं॥

इतिहास

नगर तिजारा नाम है, अलवर के दरम्यान।
तहसील डाकखाना यहीं, सूबा राजस्थान॥

कोई वर्ष पांचसौ पूर्व यहाँ, थे जैन महेश्री बड़े बड़े।
नौमहला रंगमहल जिनका, वैभव बतलाते खड़े खड़े॥
बस उसी समय भारत भू पर, बाबरने हमला बोल दिया।
कर लिया देशको पूर्ण विजय, दिल्ली पर निज अधिकार किया॥
उस मुगल बादशाह बाबर के, परवेज एक भानजा था।
जागीर तिजारा मिली उसे, ऐसा इतिहास मानता था॥
तब देहरा यह जिन मन्दिर था, भगवत् का ध्यान लगाने को।
नित पूजन पाठ भजन विनती कर, पुण्य कर्मफल पाने को॥

नाजुक था अति वक्त वह, बढ़ गये अत्याचार।
हिन्दू सब भयभीत थे, मच रहा हा हा कार॥

हिन्दु धर्मो के नाश हेतु, नित मन्दिर तोडे जाते थे।
जिह्वा से गर कुछ निकल पड़ा, तो गले मरोड़े जाते थे॥
उसी समय में देहरे को, दुष्टों ने ध्वस्त किया होगा।
प्रतिमा मन्दिर की खंडित कर, जनता को त्रस्त किया होगा॥
दूल्हेखाँ नामक खांजादा, जो निकट इसी के रहता था।
मालूम नहीं वह किस प्रकार, खंडहर में द्रव्य मानता था॥
सुनकर उस खंडहर में धन है, मनमे ललचाया करता था।
उसके पाने की नित्य नई, वह युक्ति लड़ाया करता था॥

इसी समस्या ने उसे, बना दिया बेहाल।
सगुनी मींया साब का, आया उसको ख्याल॥

ले सब शीरनी खांजादा, तीतरका बोलनी पहुँच गया।

रख मींया साब के चरणों में, बेचैन खाट में बैठ गया ॥
बारी आने पर सगुनी ने, फिरहूँसाफ साफ यूं बतलाया ।
हैं छिपी हुई जिन प्रतिमायें, कुछ धन भी है यह जतलाया ॥
कुछ हाथ तेरे नहीं आने का, बेकार तेरा श्रम होगा ।
खोदेगा गर उस टीले को, -तो खतरा भी ना कम होगा ॥
लेकिन वह लालची ही ठहरा, कैसे पाता काबू मन पर !
कैसे इसको और कब खोदूं, था ताक लगाये टीले पर ॥

अत्याचारी दुष्ट वह, जान सका नहीं सोय ।
बोये पेड़ बबूल के, आम कहाँ से होय ।

था निजि कार्य में लगा हुवा, एक रोज तुर्क जब जंगल में ।
फुंकार मार काला विषधर, यममूर्ति मदृश निकला पल में ॥
डस लिया क्रुद्ध हो पापी को, झट ग्रास काल का बना दिया ।
दुष्कर्मों का उसको बदला, प्रत्यक्ष में सारा चुका दिया ॥
इसलिए विनय यह मेरी है, शुभ कर्म जरा करना सीखो ।
जैसी करनी वैसी भरनी, भगवान से कुछ डरना सीखो ॥
मोह माया का यहाँ चक्कर है, जिसमें मनुष्य चकराया है ।
कहे 'तुलाराम' करो सत्यकाम, यही मार्ग मुक्ति का गाया है ॥

ध्यान जरा देकर सुनो, आगे कहूँ हवाल ।
नगर तिजारे में तभी, आये थे धनपाल ॥
चवालीस उन्नीस सौ, सन भी करूँ बयान ।
यद्यपि नेत्र विहीन थे, हिरदय में था ज्ञान ॥

लोगों के आग्रह पर उनने, अपना शुभ सखुन सुनाया था।
पत्थर की रेखा खींच, खंडहर का भविष्य बतलाया था॥
बोले प्रतिमायें निश्चय हैं, पर समय नहीं अनुकूल अभी।
सोचो वे वक्त हुवा क्या है, होगे प्रयत्न बेकार सभी॥
यह वर्तमान अंग्रेजों का, शासन जब परिवर्तन होगा।
कारण उत्पन्न स्वयं होंगे, श्री जिनवर का दर्शन होगा॥
उनकी भविष्य वाणी की अब, भी याद कभी आजाती है।
अक्षर अक्षर सोलह आने, वह सही सही दिखलाती है॥

सन सैंतालिस देश में, क्रान्ति हुई महान।
मुसलमान सब भाग कर, पहुँचे पाकिस्तान॥

अंग्रेजी शासन बदल गया, जनता का राज्य चला आया।
नेहरू ने लाल किले ऊपर, झण्डा भारत का लहराया॥
नर नारी मन में हर्षाये, देहरे पर अब कुछ भार न था।
उस दुष्ट तुर्क दूल्लेखां का, खडर समीप अधिकार न था॥
फिर जिन समाज ने ठान लिया, अब भाग्य पुनः अजमावेंगे।
गर प्रतिमा इसमें निकलेगी, तो जन्म सफल कर पावेंगे॥
कुछ ग्राम 'मंढे' में पहुंच गये, जो पांच कोस पर बसा हुवा।
वहां का भी सुगनी है प्रसिद्ध, लोगों के मन पर चढ़ा हुवा॥

बतलाया उसने वही, जो था सब का ध्यान।
सुनकर उसके शुभ सखुन, पुष्ट हुवा अनुमान॥

खुदाई

दिन गये महीने बीत गये, वर्षों का काल व्यतीत हुवा।
आया अगस्त सन् छप्पन का, लेकर के शुभ सन्देश नया॥
अब नगर समिति ने ठहराया, जनता का कष्ट मिटाना है।
टेढ़े मेढ़े ऊँचे नीचे रस्तों, पर सड़क बनाना है॥
बस इसी बीच में वही मदद, जब देहरे के आगे आई।
रस्ते को समतल करने को, खंडहर से मिट्टी खुदवाई॥
जब खोद रहे थे श्रमिक कुदाली, पत्थर से जा टकराई।
पत्थर हटकर जा दूर पड़ा, एक नई बात वहाँ पर पाई॥

छुटी कुदाली हाथ की, हृदय गये तब डोल।
श्रमिकों ने देखी वहाँ, टीले में है पोल॥

देहरे में तैखाना निकला, कस्बे में शोर हुवा भारी।
कर काम काज को बन्द तुरत, जा पहुँचे सारे नर नारी॥
आगये कमेटी के सदस्य, थाने तक इतला पहुँच गई।
तैखाने की रक्षार्थ तुरत, फिर पुलिस वहाँ तैनात हुई॥
दे दिया कमेटी ने आर्डर, अब बन्द खुदाई की जावे।
सरकारी आज्ञा ऊपर से, हमको ना जब तक मिल जावे॥
जो ज्योति जली थी वर्षों से, जिसने नव जीवन पाया है।
पंचायत बुलवा मन्दिर में, जैनों ने यह ठहराया है॥

एक राय होकर कहा, बन्द होय नहीं कार्य।

शीघ्र राज्य आदेश को, लाना है अनिवार्य ॥
सब थे बेचैन प्रतीक्षा में, पल ने युग रूप बनाया था।
लेकिन सरकारी हुक्म अभी, खुदवाने का नहीं आया था ॥
यूं ही कुछ दिवस व्यतीत हुवे, आदेश समिति ने पाया था।
टीला खुदवाने पर उसने, अपना अधिकार जमाया था ॥
दो दिन के कठिन परिश्रम से, तैखाने को विस्मार किया।
होकर निराश कुछ नहीं मिला, सब काम खुदाई बंद किया ॥
जब जिन समाज ने देख लिया, अब नगर पिता घबराये हैं।
था लक्ष्य द्रव्य तक ही सीमित, वे नहीं पूर्ण कर पाये हैं ॥

जैनी जन कहने लगे, खुदवाये हम आप।
तन मन धन जो कुछ लगे, नहीं कोई संताप ॥

ले हुक्म खुदाई का फौरन, देहरे में काम किया जारी।
मजदूर और नवयुवक सभी, कर रहे परिश्रम थे भारी ॥
बह रहा पसीना चोटी से, ऐड़ी तक कुछ भी ज्ञान नहीं।
थे मगन लगी थी लगन, रहा दुनियाँ का बिल्कुल ध्यान नहीं ॥
एक दिन खोदा दो दिन खोदा, और चार दिवस जब बीत गये।
दिल की आशाओं के सागर, सब छलक छलक कर रीत गये ॥
जी तोड़ परिश्रम करने से, हाथों के छाले फूट गये।
दर्शन नहीं मिले प्रभूजी के, सारे मंसूबे टूट गये ॥

चिन्ता और श्रम से इधर, हुवे सभी बेहाल।
शुभ कर्मों से आ गये, झब्बू मिश्रीलाल ॥

स्थान नगीना है इनका, दोनों ही सगे सहोदर हैं ।
हृद वारिधि आशा वारी से, भरने को प्रबल पयोधर हैं ॥
श्री मंदिरजी में पहुंच प्रभू का, जाप शुरू करवाया है ।
नैराश्य घोर तम दूर भगा, आशा सूरज चमकाया है ॥
रात्रि को फिर यह स्वप्न हुआ, फौरन मुझको खोदा जावे ।
उत्साह रखो कुछ धीर बनो, कहीं काम बन्द ना हो जावे ॥
जा उधर श्रमिक मुखिया को भी, निद्रा से तुरत जगाया है ।
मैं हूं स्थित इस टीले में, उसका उत्साह बढ़ाया है ॥

दिन निकला दिनकर उगा, लेकर चेहरा लाल ।
खबर रात्रि की नगर में, फैल गई तत्काल ॥

थी तिथि अब श्रावण सुद पंचम, कुछ शुभ संदेशा लाई थी ।
कई महल प्राचीन तीन, खंडित प्रतिमायें पाई थी ॥
आशा की नई किरण चमकी, प्रतिमाओं के मिल जाने से ।
खोदो खोदो यह शोर हुवा, नहीं मतलब देर लगाने से ॥
चण चण में चोट फावड़े की, एक नई उमंग ले जाती थी ।
होकर निराश मन में उदास, वह लौट जमी से आती थी ॥
इसी तरह दिन चार गये, सब खून पसीना कर डाला ।
दर्शन नहीं मिले प्रभूजी के, मन का सब भरम मिटा डाला ॥

श्रावण शुक्ला नवमि को, सुना दिया आदेश ।
काम कल से बन्द है, रहा नहीं कुछ शेष ।

स्वप्न

यहां की बातें यहीं पर छोड़ो, एक किस्सा नया सुनाता हूं ।
जो कुछ भी जैसा हुआ हाल, सच्चा २ बतलाता हूं ॥
भगवान ने जब यह देख लिया, अब धीरज सब का छूट गया।
मैं दबा रहूँगा यहाँ कब तक, आशा का बंधन टूट गया ॥
यह सोच उसी दिन रात्रि को, फिर चमत्कार दिखलाया है ।
भक्तों को दर्शन देने का, सारा रस्ता बतलाया है ॥
वह पुरुष नहीं एक नारी है, तुम को मैं सत्य बताता हूं ।
कैसे उसको यह ज्ञान हुवा, सभी अब कथा सुनाता हूं ॥

नगर तिजारे में बसें, वैद्य बिहारीलाल ।
वैद्यक उनका काम है, सभी तरह खुशहाल ॥

जैनी हैं धर्म कर्म से वो, एक सुन्दर सुघड़ गृहस्थी हैं ।
लोगों की पीड़ा हरने में, लोगों को यम की हस्ती हैं ॥
है पत्नी उनकी सरस्वती, साक्षात् स्वरूप लक्ष्मी का ।
संसार कर्म पालन करती, और धर्म ध्यान में रहे सदा ॥
तीन दिवस पहिले उसने, सब खाना पीना छोड़ दिया ।
विश्वास प्रभु दर्शन का ले, संसार से मुखड़ा मोड़ लिया ॥
धारा है मन में नियम यही, जब तक वह प्रकट नहीं होंगे ।
जल अन्न नहीं मैं ग्रहण करूं, सब लौकिक कर्म बंद होंगे ॥

निज प्रेमी की पीर लख, प्रभु हुवे बेचैन ।
स्वप्न दिया है नारि को, आधी थी जब रैन ॥

मैं स्थित हूं इस टीले में, यदि दर्शन करना चाहो तुम।
लो काढ मुझे इस कौने से, अपनी सब पीर मिटाओ तुम॥
महावीर प्रभो ने भी ग्वाले को, चमत्कार दिखलाया था।
कोई नई बात यह नहीं चन्द्र ने, निज स्थान बताया था॥
निन्द्रा टूटी हुवा स्वप्न भंग, नारी मन में अति हर्षाई।
घृत का दीपक ले उसी समय, खण्डर-में पहुँची है जाई॥
जगमगी ज्योति जिम जगह जहां, श्रीजगत्पिता जगदीश्वर थे।
शशिधर, जिनवर, अघहर, दिनकर, देवेश्वर मवल कलाधर थे॥

जला दीप आशा जगी, दूर हुवा अन्धकार।
घर को लौटी बोलकर, प्रभु का जय जयकार॥

पो फटी बाल रवि चमक उठा, अब दिन दशमीका आया है।
उठते ही निज पति को नारी ने, सारा हाल सुनाया है॥
सोचा पति ने क्या पागल है, या हुई आज यह मतवाली।
या रोग हुवा कोई इसको, झट उसकी नब्ज देख डाली॥
कहां रोग शोक क्या भूत प्रेत, भगवान हो जिसके रखवाली।
कुछ नहीं समझ में आया था, मदहोश हुई क्यों घरवाली॥
देहरे पर जाकर नारी ने, मजदूरों को बुलवाया है।
हो आज खुदाई निश्चय ही, ऐसा शुभ स्वुन सुनाया है॥

प्रकट होना

सरस्वती कहने लगी, शुरू खुदाई होय।

खर्चा सारा आज का, ओर से मेरी होय ॥
दे दिया भूमि पर है निशान, मजदूरों को जतलाने को ।
इतना ही खोदना काफी है, प्रभुवर के दर्शन पाने को ॥
था नाम रामदित्ता इक का, मजदूरों का जो था मुखिया ।
ले लिया फावड़ा हाथों में, अविलम्ब खोदना शुरु किया ॥
कर घोर परिश्रम खोद रहा, दर्शकगण भी थे अड़े खड़े ।
मूर्ती के दर्शन पाने को, वे स्वयं मूर्ती थे बने खड़े ॥
कोना एक हाथ खोदने पर, एक श्वेत वस्तु भी चमकउठी ।
वर गूंजा सबका एक साथ, भगवान की प्रतिमा दमक उठी ॥

आशायें पूरी हुईं, आई घड़ी महान ।
शुभ कर्मों के उदय से, प्रकट हुए भगवान ॥

निकली प्रतिमा जब पृथ्वी से,फौरन ही उसको उठा लिया ।
मन से विह्वल तन से पुलकित, होकर हृदय से लगा लिया ॥
आतुर जनता को देख मूर्ति को, आले में पधराया है ।
भगवान के दर्शन मिलते ही, फल जन्म २ का पाया है ॥
लख चिन्ह चन्द्रमा का उस पर, मूर्ती श्री चन्द्रप्रभो पाई ।
कर नाश निराशा अन्धकार, जिन ज्ञान चन्द्रिका फैलाई ॥
बिजलीकी गति से कस्बे में, सन्देश मिला या सौन मिला ।
भागे सब लोग खंडहर को, मानों था टेलीफौन मिला ॥

देहरे पर बढ़ने लगी, यहाँ जनता की भीर ।
अद्भुत हालत थी वहाँ, गली बाजारों तीर ॥

था समय ठीक मध्यान्ह लोक कृत्यों में जनता लगी हुई।
सुन उदय चन्द्र का दर्शन को, जा रही चकोरी बनी हुई॥
दुकानदार भी गये चले, दूकानें खुली पड़ी हुई।
खोंचे वाले नहीं हलवाई, भट्टी पे कढ़ाई चढ़ी हुई॥
थी व्यस्त घरों में महिलाऐं, खा रही कोई २ पका रही।
सुन तवा छोड़ दिया चूल्हे पर, रोते बच्चों को छोड़ गई॥
जल्दी में अस्त व्यस्त साड़ी, जूते चप्पल भी भूल गई।
दर्शन करके फिर ज्ञान हुआ, घरबार मूंदना भूल गई॥

दर्शन कर गद्गद् हुए, कस्बे के सब लोग।
चढ़ा रहे श्रद्धा कुसुम, था अद्भुत संयोग॥

वहां बना सिंहासन तख्तों पर, भगवान को अब पधराया है।
पूजा प्रक्षालन कर उनकी, फिर सब ने खूब रिझाया है॥
फौरन हो छप्पर टीनों का, मिलकर सबने बंधवाया है।
कीर्तन अखण्ड हैं रात्रि को, ऐसा संदेश सुनाया है॥
तांता लोगों का लगा हुआ, परशाद बांटने आते थे।
लड्डू, बरफी, दाने खाकर, बच्चे आनन्द मनाते थे॥
मध्यान्ह यूंही जब बीत गया, फिर संध्या की बेला आई।
श्री चंद्र प्रभू की लोगों ने, आरती करने की ठहराई॥

जन समूह आरति समय, जुड़ गया वहां अपार।
ले ले दीपक हाथ में, कर रहे जय जय कार॥

आरती श्री चन्द्र प्रभु

आरति करो प्रभुवरकी, करो जिनवर की, बोल शशिधर की,
आरति करो शशिधर की ।

चिन्ह चन्द्र का धरने वाले, चन्द्रप्रभू जग के रखवाले ।
चन्द हो आनन्द कन्द, सच्चिदानन्द रूप अघहर की,
आरति करो शशिधर की ॥

आप आठवें हैं तीर्थंकर, सुधाधार जय सकल कलाधर ।
मूर्ती तुम्हारी दिव्य, भव्य, सर्वज्ञ रूप मनहर की,
आरति करो शशिधर की ॥

नमत देव मुनि नाग मनुज गन, वज्रानन जय जय चंद्रानन ।
चक्रेश्वर, देवेश्वर, हरिहर, सर्वेश्वर मुनिवर की,
आरति करो शशिधर की ॥

आरति करो प्रभुवर की, करो जिनवर की, बोल शशिधरकी,
आरति करो शशिधर की ।

मूर्ति वर्णन

वर्णन करके थक गये, सुर मुनि शास्त्र पुराण ।
रूप विलक्षण चन्द्र का, को करि सके बखान ॥
फिर भी साहस कर रहा, धार हृदय में ध्यान ।
बुद्धि मेरी अल्प है, दो शक्ति भगवान ॥

श्री चंद्रप्रभो की प्रतिमा का, पाषाण शुभ्र संगमरमर है।
आकार सवा फुट के लगभग, सुन्दर सुखकर श्रेयस्कर है॥
है शान्त दिगम्बर नग्न वेश, जो सबके मन को भाया है।
कल्याणकारिणी मुद्रा में, पद्मासन सुखद लगाया है।
है धन्य धन्य वह कलाकार, जिसने यह रूप बनाया है।
जिसके कर कमलों के तप से, यह दिवस आजका आया है॥
प्रतिमा पाषाण की मत समझो, यह प्रकट स्वरूप गुणों का है।
इच्छानुकूल वरदान मिले, ऐसा प्रताप चरणों का है॥

आकर्षण सायं समय, का अति अद्भुत जान।
भजन कीर्तन के समय, का कुछ करूं बयान॥

आबाल वृद्ध सब नरनारी, कीर्तन जब संध्या को करते।
वरवदन प्रफुल्लित हो जाता, धारण अद्भुत मुद्रा करते॥
एक तीव्र तेज की धारा सी, प्रतिमा से प्रवाहित होती है।
बरबस आकर्षित कर सबको, निज रूप लहर में डुबोती है॥
मन ही मन में बैठे बैठे, कुछ मन्द मन्द मुस्काते हैं।
चुपचाप इशारों में मानो, कुछ शुभ उपदेश सुनाते हैं॥
स्थित सारे श्रोता गायक, कुछ मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।
मन गद् गद्, तन पुलकायमान, प्रेमाश्रु नेत्र भर लाते हैं॥

रूप दिव्य अरु गुण अनंत, रूप गुणोंकी खानि।
अत्युक्ति कुछ है नहीं, लो प्रतच्छ पहिचानि॥

गुण: शांति, दया, स्नेह, शील, तप त्याग सरलता और विनय।

एकत्रित हो प्रभु प्रतिमा में, अप्रकट रूप से समा रां
ये नेत्र भ्रमर रस के लोभी, जब प्रतिमा पर मंडराते
आनन्द धार बहने लगती, और चकाचौंध हो जाते हैं
दैवी प्रकाश प्रतिमा के से, कुछ अधिक देख नहीं पाते
अतृप्त तृषित और व्यथित रूप में, लौट पुनः पछताते हैं
है रूप अनंत, अक्षय, अपार, यदि एक झलक पाजाओ तु
कहे 'तुला' बात निज अनुभवकी, अपनी सुधबुध बिसराओ

चमत्कार वर्णन

श्रद्धा पूर्वक प्रेम से, ध्याता है जो कोय।
परचा उसको दे तुरत, देर जरा नहीं होय॥
चमत्कार भगवान के, कहां तक करूं बयान।
जो कुछ मुझको ज्ञात है, बतलाऊं कर ध्यान॥

है कथा स्वयं यह चमत्कार. अब आगे क्या बतलाना है
महिमा गायन करना प्रभु की, सूरज को दीप दिखाना है
चुम्बक का सा आकर्षण है, चलते को खींच बुलाते हैं
कैसा भी व्याकुल हो कोई, दर्शन दे तुरत हंसाते हैं।
विश्वास, प्रेम, श्रद्धा लेकर, जो कोई शरण में जाता है
दावे के साथ यह कहता हूं, वह मनवांछित फल पाता है।
जिनका ऐसा कुछ अनुभव है, मैं नाम पता भी देता हूं
भय नहीं सचाई को कुछ भी, यह साफ २ कह देता हूँ।

गांव ततारपुर में बसै, नाम गोरधन हीर।
केस फौजदारी लगा, मजिस्ट्रेट के तीर ॥
जब कई पेशियां बीत चुकी, अभियुक्त जमानत नहीं हुई।
कोशिशें सैंकड़ों की होंगी, लेकिन सारी बेकार गई ॥
चमत्कार श्री चन्द्र प्रभू का, उसने भी सुन पाया था।
अगली पेशी से पहिले ही, वह प्रभु चरणों में आया था ॥
बोला, हूं दुखिया हे स्वामी, गर मेरा कार्य सफल होगा।
शक्ति अनुसार भेंट दूंगा, मेरा विश्वास अटल होगा ॥
जाते ही तुरत अदालत ने, बिन बहस जमानत मांगी है।
महिमा स्वामी की निरख, हृदय में श्रद्धा उसके जागी है ॥

आया हो मन में सुखी, बांट दिया परशाद।
द्रव्य दिया कुछ भेंट में, लौट गया ले याद ॥
एक उदाहरण है नहीं, हैं अनेक परमाण।
पृथक २ प्रत्येक को, कहां तक करूं बयान ॥

है रोग भयानक ग्रसित कोई, डाक्टर असाध्य बतलाते हैं।
भक्ति से प्रभु चरणों में जा, अपना दुख उन्हें सुनाते हैं ॥
उनके चरणों की रज और जल, अंगोंसे यदि वो मलते हैं।
निश्चय पूर्वक बतलाता हूं, दुख दारिद सारे टलते हैं ॥
नित प्रति सैकड़ों रोग ग्रसित, वहां दूर २ से आते हैं।
स्पर्श मात्र ही रज जल का, जादू सा असर दिखाते हैं ॥
आने में यदि असमर्थ कोई, तो डिब्बी, शीशी लाते हैं।

इस चन्द्र बाग महा औषधि को, लेजाकर दुख मिटाते हैं॥
चंद्र शरण में जो गया, करके मन में ख्याल।
सारे संकट दूर कर, बना दिया खुशहाल॥
यदि लगी किसीको भूत प्रेत, डाकनि शाकनि की बाधाऐं।
देता हूं परामर्श उसको, वह सीधा वहां चला जाए॥
इन प्रेतात्माओं के शिकार, नित मनुज वहां पर जाते हैं।
पैशाची लीला के अनेक, वे दृश्य वहां दिखलाते हैं॥
कोई घूम रहा है मस्त बना, कोई पटक पछारें खाता है।
कर रहा बात कोई अपने से, कोई मुश्क बांध पड़जाता है॥
निज हुक्म अदूली होने पर, बाबा जब मार लगाते हैं।
कर त्राहि २ ले चरण पकड़, बस भूत प्रेत डकराते हैं॥
बाधाऐं सब दूर कर, सुख का करें विकास।
दुश्चिंताएं दूर हो, मन में बढ़े हुलास॥
जलवा अद्भुत है स्वामी का, महिमा भी उनकी न्यारी है।
प्रतिदिन अतिशय बढ़ता जाता, सुन शोर मचा अतिभारी है॥
जो प्रभू विरोधी थे पहिले, अब स्वयं प्रशंसा करते हैं।
लख चमत्कार की तीव्र चमक, विश्राम चंद्र में धरते हैं।
हम हैं संतान सभी उनकी, वे जगत्पिता कहलाते हैं।
कुछ ऊंच नीच और दीन धनी में, भेद नहीं वे पाते हैं॥
दरबार खुला है बाबा का, नहीं देर जरा भी करते हैं।
संतान समझ सबको अपनी, दुख दारिद सबका हरते हैं॥

मन्दिर निर्माण कार्य

प्रभू प्रगट जब से भये, उठने लगे विचार।
क्यों ना इस ही जगह पर, मन्दिर हो तैयार।

लेकिन कुछ थे कह रहे, हो बस मन्दिर एक।
ले जावें प्रतिमा वहीं, ये ही बड़ा विवेक॥

निर्माण नया मन्दिर होवे, भगवान् के मन में भाया है।
प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर, अपना अधिकार जमाया है॥
बन गई भावना वैसी ही, जैसा स्वामी ने चाहा है।
प्रत्येक व्यक्ति ने निज मन में, वैसा ही भाव सराहा है॥
लेकिन विचार ये गुप्त ही थे, नहीं प्रकट किसीने किये अभी।
डर था धन कहाँ से आयेगा, इसलिए मौन बैठे थे सभी॥
लक्ष्मी दासी है स्वामी की, रहत उनका जहाँ आश्रय है।
लग जांय ढेर चण में धन के, नहीं इसमें कोई संशय है॥

उसी समय एक ओर से, आया शब्द सुजान।
दूँगा पाँच हजार मैं, प्रभू मन्दिर में जान॥

कहने वाले नेमीचन्द थे, कस्बे के रहने वाले हैं।
है एक प्रतिष्ठित सज्जन वो, जिन धर्म मानने वाले हैं॥
है दान धर्म में ध्यान बहुत, फिर खुले हाथ से देते हैं।
कोई पुण्य कार्य आ पड़ने पर, वे आगे सबसे रहते हैं॥
भगवान् की महिमा के वश हो, इच्छा ऐसी उत्पन्न हुई।

दूँगा मैं पाँच हजार रुपये, आवाज शीघ्र ही लगा दई।
सुनकर उनके इन वचनों को, सब ही हैरत में आते हैं
मन्दिर अवश्य बन जायगा, यह कर विचार हर्षाते हैं।

श्री मंदिर निर्माण का, अंकुर यहां से जान।
कार्य प्रगति बतलाऊंगा,सुनो लगा कर कान॥

चर्चा आपस में बढ़ती है, मन्दिर अवश्य बनना चाहिए
इच्छा है यही प्रभूजी की, उसको पूरण करना चाहिए।
यह सोच एक दिन देहरे पर, बैठक समाज की बुलवाई
बस एक राय होकर सबने, मन्दिर बनने की ठहराई
चन्दे की तिथि नियत करके, जय चन्द्र प्रभू की बोल दई
शक्ति भर देने की अपील, करके मीटिंग बरखास्त हुई
अंकुर जो पहिले फूटा था, उसको कुछ जीवन और मिला
जब प्रभू सींचने वाले हैं, क्यों ना फैलेगा वृक्ष भला

चन्दे की वह शुभ घड़ी, पहुँच गई थी आन।
हुए इकट्ठे लोग सब, निश्चय दिल में ठान॥

जैनी कस्बे के थे सारे, कुछ अन्य लोग भी आये थे
श्री चन्द्रप्रभू थे चरणों में, निज भेंट प्रेम की लाये थे
मन्दिर निर्माण के चन्दे का, फिर हुकम शीघ्र ही सुना दिया
देवें मन में हर्षित होकर, यह भली भांति सब बता दिया
चिन्ता नहीं पांच पचासौं की, देवें अवश्य सारे भाई
यह दान धर्म का सौदा है, इसमें दबाव का काम नहीं

जो देगा अधिक पांचसौ से, उसका अधिक महत्व होगा।
मन्दिर द्वारे पर शिलालेख में, उसका नाम लिखा होगा॥

सुन पंचायत के सखुन, लोग हुए सब मौन।
शक्ल लखें सब ओर की, पहिले बोले कौन॥

कर मौन भंग श्री नेमीचन्द, ने निश्चय अपना सुना दिया।
पांच हजार लिखा रुपये, रस्ता सबको फिर बता दिया॥
तब बोल उठे श्री इन्दरमल, जिनके सुपुत्र लखमीचन्द हैं।
इकीस शतक मेरे लिखलो, सुन बड़ा हृदय में आनन्द है॥
फिर सहस्त्र एक श्री छीतरमलजी, ने देने की ठानी है।
सौ, दो सौ और पांचसौ के, बोले अनेक ही दानी हैं॥
कुछ औरों ने भी दान दिया, जो अजैन कहलाते हैं।
भगवान् भवन निर्माण हेतु, अपनी श्रद्धा दिखलाते हैं॥

सुन सब हर्षित हो गये, अचरज हुआ अपार।
नगर तिजारा से मिला, था पन्द्रह हजार॥

है धन्य २ उन लोगों को, जिनने कुछ हाथ बटाया है।
शक्ति अनुसार दान देकर, शुभ काम में द्रव्य लगाया है॥
यह दान स्वर्ग की सीढ़ी है, यही सार धर्म का होता है।
जो देता हैं हँसते हँसते, देने से दूना लेता है॥
दानी पुण्यवान सज्जनों के, भरपूर खजाने रहते हैं।
रखते भगवान ध्यान उनका, खाली होने नहीं देते हैं॥
इसलिए विनय यह मेरी है, संकोच छोड़ देते जाना।

मन्दिर निर्माण हेतु देकर, कुछ पुण्य लाभ लेते जाना ॥

विमलकीर्ति श्रीचन्द्र की, फैल रही चहुं ओर ।
यात्रीगण आने लगे, होकर प्रेम विभोर ॥

चिट्ठी पत्री अखबारों में, जब समाचार यह जाने लगे ।
दर्शन करने को नर नारी भी, दूर दूर से आने लगे ॥
कर पूजन भजन ध्यान कीर्तन, सब ही मन में हर्षाते हैं ।
श्रद्धा समान कर दान धर्म, पुण्यों का द्रव्य कमाते हैं ॥
सुनकर स्मरमात्र है दुख हरण, रोगी शोकी भी आते हैं ।
आ चरण शरण में बाबा के, अपना सब दुख नशाते हैं ॥
दिन दिनों कृपण के धन समान, नित संख्या बढ़ती जाती है ।
इससे कस्बे की दशा जरा, नई नई दिखलाती है ॥

जहाँ पर प्रगटे देवता, मानों वहाँ के भाग ।
समझो उस स्थान की, विपति गई है भाग ॥

चाँदनपुर और पदमपुर की, प्रत्यक्ष मिसाल बताता हूँ ।
भगवान् वहाँ प्रगटे जब से, दिनरात उन्नति पाता हूं ॥
अब चन्द्र यहाँ पर प्रगट हुए, शुभ कर्म तिजारे के जानो ।
खुशहाल क्षेत्र फिर से होगा, कट गये फंद सारे मानो ॥
है योग चक्रवर्ती इनके, यश वैभव के देने वाले ।
परिपूर्ण सुखी निश्चय होंगे, प्रभु आश्रय में रहने वाले ॥
धन, वैभव, यश और रोजगार, जो सैंतालिस में नाश हुवा ।
वह पुनः लौटकर आयेगा, यह कई गुना विश्वास हुवा ॥

चन्द्रप्रभू भगवान का, अतिशय कम नहीं जान ।
पद्म प्रभू महावीर सम, पावेंगे सम्मान ॥
यह तीर्थ स्थान परम पावन, और पुण्यधाम कहलायेगा ।
राई भर झूठ नहीं कहता, सच है भविष्य बतलायेगा ॥
लाखों बाहर के नर नारी, यहाँ जब आवें जावेंगे ।
होंगे उन्नति के सब साधन, आनन्द चैन हो जावेंगे ॥
अब कथा विसर्जन करता हूँ, यदि इसमें गलती पाओ तुम ।
पहला प्रयास लख कविता का, सब क्षमा दान दे जाओ तुम ॥
उठने से पहिले भव्यजनों, टुक एक बात सुनते जाना ।
कहे 'तुलाराम' श्रीचन्द्रप्रभो, की बोलो जय तब घर जाना ॥



भजन संग्रह

भजन नं० १ (तर्ज—रसिया)

टेक—मैं तो आया रे तोरे दरबार चंदा, तेरे दर्शन को ।
श्रावण शुक्ला दशमी को, प्रभु जी नगर तिजारे में प्रगटे ।
केवल दर्शन करने से ही हमरे सारे पाप कटे ॥
ओ ! भागा भागा रे आया हूं. तोरे द्वार चन्दा तेरे दर्शन को ॥
मैं तो आया रे० ॥
जो भी तेरा ध्यान लगाता, सच्चा सुख वो पाता है ।
अपनी जनम २ की पीड़ा, सारी दूर भगाता है ॥
ओ ! सुनले सुनले रे तू मेरी पुकार, चन्दा तेरे दर्शन को ॥
मैं तो आया रे० ॥
जिसमें भूत-प्रेत हैं आते, उसका कष्ट मिटाते हो ।

असुरों की लीला को हर कर, स्वयं हृदय में आते हो ।।
ओ ! तेरी लीला को लिया है हमने जान, चन्दा तेरे दर्शन को ।
मैं तो आया रे० ।।
तेरी अद्भुत महिमा सुनकर, यात्री दूर से आते हैं ।
'शिखर' भजन करके वो तेरा, जन्म सफल कर पाते हैं ।।
ओ ! बोलो बोलो रे प्रभू का जय जयकार चन्दा तेरे दर्शन को
मैं तो आया रे० ।

भजन नं० २ (तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश)

टेक– मेरे चन्द्र प्रभू भगवान प्रकट भये आन
ग्राम तिजारा—भक्तों का करो निस्तारा ।।
तेरी ज्योति जले दिन रात्री है,
आवें दूर दूर के यात्री हैं ।
दुष्टों को भी है प्रभुजी तुमने तारा,
भक्तों का करो निस्तारा ।।
सब प्रेम मग्न हो गाते हैं,
सब भूत प्रेत भग जाते हैं ।
तूने दुःखी जनों को प्रभुजी क्षण में तारा,
भक्तों का करो निस्तारा ।।
"शिव" तेरी शरण में आया है,
चरणों में शीश नवाया है ।
मैंने तेरा प्रभू तन मन से लिया सहारा,
भक्तों का करो निस्तारा ।।

भजन नं० ३ (तर्ज–चली कौनसे देश गुजरिया तू सजधज के

चन्द्र प्रभु तेरे द्वार, आये हम दर्शन को ।
तुम तो दीनानाथ कहावो, कष्टों से भक्तों को बचावो

करदो प्रभू उद्धार ...... आये हम दर्शन को
बीच भँवर में म्हारी नैया, इस नैया के तुम हो खिवैया।
करदो नैया पार .... आये हम दर्शन को
भक्त शरण में पड़े हुये हैं, दर्श करन को अड़े हुए हैं
देवो दर्शन आन .... आये हम दर्शन को
बिना ज्ञान के हैं हम भटके, प्रभू दर्शन को दर दर भटके।
विनय करें हर बार ...... आये हम दर्शन को।
अंजन चोर की जान बचाई, हमरी बेर कहाँ देर लगाई।
"शिव" की सुनो पुकार .... आये हम दर्शन को०

भजन नं० ४ (तर्ज—जादूगर सैंया—फिल्म नागिन)

टेक-चन्द्र पियारे आवो रखवारे, हम सब रहे पुकार आके दुःख हरो
तुम न हरोगे तो कौन हरेगा प्रभू यह दुःख हमारो।
झिजरी नया बिन केवट के प्रभू इसे पार उतारो।
तुम हो खेवनहार ...... आके दुःख हरो
तुम तो दीनानाथ कहावो, मैं अति दीन दुःखारी।
जैसे जल बिन मीन तड़फती, वो गति भई हमारी।
म्हारी नैया पड़ी मझधार .... आके दुःख हरो
अर्जी हमारी मर्जी तिहारी, कहती यह जनता सारी।
सबके मन को भाय रही प्रभू, मोहनी मूरत तुम्हारी
तुम हो जगदाधार . आके दुःख हरो
सेठ सुदर्शन याद किया, शूली सिंहासन बन जाए।
तेरे दर को छोड़ प्रभू हम किसके दर पर जावें।
"शिव" की सुनो पुकार .... आके दुःख हरो

भजन नं० ५ (तर्ज—जब लिया हाथ में हाथ निभाना साथ)

टेक—जब धरा शीश पर हाथ निभाना साथ मेरे चन्दा

देखोजी हमें भूल न जाना
मेरे चन्दा प्रभू ना रूठे चाहे रूठे सारा जमाना
देखो जी हमे भूल न जाना
मैं पापी अज्ञानी प्रभू जी, आप मेरे पितु भ्राता।
वरदायक तुम बने प्रभूजी, कुछ तो वर दो दाता।
इस शरण गहे की लाज निभाना नाथ मेरे चन्दा
देखोजी हमें भूल न जाना
ोषयों में मैं भटक रहा हूँ, कोई नहीं राह सुझावे।
' दुनियाँ मतलब की प्रभूजी, अन्त काम तू ही आवे।
: मेरे करदो पूरण काज वचन दो आज ' चन्दा
तः देखो जी हमें भूल न जाना
ाभू तुम दिल में समाये, नींद न मुझको आये।
े प्रभू तुमही समाये, मोहनी मूरत मन भाये।
.शव'' की है अरदास, अर्ज है खास मेरे चन्दा
भजन ः देखो जी हमें भूल न जाना

६ (तर्ज–दम भर जो ईधर मुँह फेरे वो चंदा-आवारा
ा भर जो मेरी सुधि लेवे प्रभू चन्दा, मैं तेरे दर्श कर लूँगा
मैं दिल अपना भर लूंगा
इन चरनों में जगह देओ प्रभू, मुझे न जाना भूल।
शीश रखूँ प्रभू तेरे चरनों में, इसे समझा फूल।
इस दास को तुम अपनालो प्रभू चन्दा मैं तेरे दर्श कर लूंगा
मैं दिल अपना भरलूँगा
मैं हूँ दीन अनाथ प्रभुजी तुम हो दीनानाथ।
अब तक भी तो साथ दिया था, अब भी देना साथ।
मोहे भव-बन्धन से तारो, प्रभू चन्दा, मैं तेरे दर्श कर लूँगा
मैं दिल अपना भरलूँगा

इन चरनों से प्रीति है "शिव" की अपना लो मेरे नाथ।
रूठे चाहे सारा जमाना, तुम तो रहना साथ।
मन और कछू ना चाहे प्रभू, चन्दा मैं तेरे दर्श कर लूँगा।
मैं दिल अपना भरलूँगा

भजन नं० ७ (तर्ज—मन डोले मेरा तन डोले) नागिन

टेक—चन्दा प्यारे आये तेरे द्वारे प्रभू सुनलो सब की पुकार रे,
अब तो बचालो दुष्टों से।

कदम २ पर आशा ठगनी, लगा रही है फेरी।
कर जोरे विनती करूँ प्रभु, मत ना करो अब देरी।
दुःखी जन सारे आये तेरे द्वारे, प्रभू सुनलो सब की पुकार रे
अब तो बचालो दुष्टों से

जय चन्दा जय देहरे वाले, नैया को पार लगावो।
आज करो बेड़ा पार प्रभूजी, आके दर्श दिखावो।
पापी तारी देहरे वारे प्रभू ऐसे हो दीन दयाल रे
अब तो बचालो दुष्टों से।

"शिव नारायण" शरण में तेरे भगवान अर्ज गुजारे
नैया पड़ी मझधार में तुम बिन कौन है पार उतारे
देहरे वारे आये तेरे द्वारे प्रभू सुनलो सबकी पुकार रे
अब तो बचालो दुष्टों से।

भजन रसिया नं० ८ (तर्ज—ढोला ढोल मजीरा बाजे रे)

मेरे चन्द्र प्रभू मन भायो रे, देहरा में श्रीचन्द्रप्रभू ने दर्श दिखायो रे

निश दिन पूजा करें तुम्हारी, मिलकर सब नर नार।
जैसे अंजन तस्कर तारो, दीजो सबको तार।
प्रभू यहाँ पाप कर्म अति छायो रे
देहरा में श्री चन्द्र ...

कर जोर विनती करूँ जी, और झुकाऊँ माथ।
पड़ा हूँ तेरे दर पर स्वामी, रख दो सिर पर हाथ।
प्रभू मेरो कर दे मन को चाह्यो रे देहरे मे श्री चन्द्र०
सर जो उठाये प्रभू के आगे नत मस्तक कर देव।
जो कोई भजे प्रेम से तुमको, मनवाञ्छित फल देव।
तेरे द्वार पे जो भी आया रे देहरे में श्री चन्द्र...
अन्न धन के प्रभु तुम हो दाता तुम हो निर्विकार।
नर नारी सब खड़े पुकारें, सुधि लेवो करतार।
'शिव' भी विनती करन को आयो रे, देहरे में श्री चन्द्र....

भजन नं० ६ (तर्ज—अंगड़ाई तेरा है बहाना)

प्रभु चन्दा हैं सब के प्यारे, प्रभु विनती करें तेरे द्वारे ।। टेक
नित यात्री तेरे आयें, चरनों में शीश नवायें
प्रभू दुख के हैं सब मारे " प्रभू विनती करें तेरे द्वारे
सब धूप दीप ले आयें, चरनों में शीस नवायें।
प्रभ तुम बिन कौन है तारे ' प्रभ विनती करे तेरे द्वारे
माया मोह के धन्धे में हो रहे हम सब अन्धे।
हमें रस्ते सही लगारे " प्रभू विनती करें तेरे द्वारे
प्रभु ! मोह लोभ की माया का जाल है हम पर छाया।
इन दुष्टों को दूर भगारे"' प्रभू विनती करें तेरे द्वारे
जो तेरी शरण मे आयें, सब रोग नष्ट हो जायें।
तुम सबके हो रखवारे"' प्रभू विनती करें तेरे द्वारे
"शिव" सेवक अर्ज गुजारे, मेरी हृदय ज्योति जगा रे।
मेरे तुम्ही हो तारन हारे"' प्रभू विनती करें तेरे द्वारे

भजन नं० १० (तर्ज—बड़े अँखियों से धार)

प्रभ आया तेरे द्वार, तेरा सच्चा है दरबार, सुनो २ करतार

विनती करूँ कर जोर के, कर जोर के
मेरी नैया पड़ी मझधार हो. प्रभु तुम ही खेवनहार हो
लेवो दया का पतवार, करदो भव से बेड़ा पार·· सुनो २··
तेरे भक्तों की यही पुकार है, यहाँ पापी करें अत्याचार है
आवो करके उपकार, करो कर्मों का संहार .. सुनो २..
सब देव कहें हर्षाय के, नभ से पुष्प वर्षा बरसाय के।
करो फिर से उद्धार, बढ़ा भूमि पर है भार.. सुनो २ ...
'शिव' सेवक की यही फरियाद जी।
चन्द्र भक्तों की पूरी हो मुराद जी ।
प्रभु सुनलो न पुकार, म्हाने तेरो ही आधार
सुनो २ करतार, विनती करूँ क र जोर के···कर जोर के

भजन नं० ११ (तर्ज—तेरे कूँचे में अरमानों की दुनियां)

तेरे दरबार में चन्दा, यह ख्वाहिश लेके आया हूँ।
हो जाये दीद जिनवर का, जहां में दुःख पाया हूं।
मेरे हाफिज, मेरे मौला, जहां में नूर है तेरा ।
भुला दिया क्यों मुझे चन्दा, जताने आज आया हूं।
तेरे दरबार में .
पड़ा दोजख में सड़ता हूँ, फिक्र कर कुछ तो तू मेरी
रिहा करदो मेरे आका, अर्ज करने को आया हूँ।
तेरे दरबार में....
तेरे दीदार को मालिक, मैं गम मे गर्क रहता हूँ
हटा इस गम के पर्दे को, बना मैं युत का साया हूँ
तेरे दरबार में...
मैं माया मोह में जकड़ा, पड़ा हूँ पाप दरिया में ।
निकालो 'शिव' को अय मालिक, जहाँ में दुःख पाया हूँ।
तेरे दरबार में...

भजन नं० १२ (तर्ज—ऊंचा २ दुनियां की दीवारें)

माया मोह के बन्धन सारे, तोड़के जी तोड़के,
मैं आया रे चन्दा प्रभू ने नेहा जोड़ के ।। टेक

तुम ज्ञानी मैं अज्ञानी, प्रभू हृदय में मेरे ज्ञान भरो,
करता पुकार, यही अर्जी सरकार।
यही करता हूँ विनती कर जोड़ के जी जोड़ के, मैं आया रे०

मात-पिता और बन्धु नार, सब मतलब से हैं करते प्यार ।।
नैया लगादो पार, डूबत है बिन पतवार,
आया हूँ प्रभू मैं तो दौड़के जी दौड़ के ।। मैं आया रे०

काम क्रोध मद लोभ हटादो, अहिंसा का पाठ पढ़ादो।
करदो संचार यही 'शिव' का है सार यही ।।
अर्जी करता हूँ कर जोड़ के जी जोड़ के,
मैं आया रे चन्दा प्रभू से नेहा जोड़ के।

प्रार्थना न० १३

चन्द्र प्रभू मतवारे प्यारे भक्तों के रखवारे,
तुमको लाखों प्रणाम, तुमको लाखों प्रणाम।

जो भी जन तेरे द्वार पे आया, उसका सारा कष्ट मिटाया।
प्रभू दुःख के टारन हारे, तुमको लाखों प्रणाम
जगमग ज्योति जले दिन राती, हमको छवि प्रभू तेरी भाती
भक्तों के कारज सारे तुमको लाखों प्रणाम ......
हम चरणों में शीष नवायें, सिर पर तेरे छत्र चढ़ायें।
पद-रज सर पे अपने चढ़ायें,
तन मन धन सब वारें, तुमको लाखों प्रणाम ।।

भजन नं० १४ (तर्ज़:—तू कौन सी बदली में मेरे चाँद है आजा)

तू कौन से मन्दिर में प्रभु चन्द्र है आजा।
प्यासे हैं तेरे दीद के, प्रभु दर्श दिखाजा ॥
दिल ढूंढ रहा है कि मेरा चन्द्र कहाँ है।
दिल में समाके प्रभु मेरी प्यास बुझाजा ॥ तू कौन से०...
श्रद्धा का लिए हार तेरे द्वार पे आया।
पापों से बचें ऐसा हमें ज्ञान सिखाजा ॥
विषयों में प्रभु भटक रहा, भूल से यह मन।
मझधार पड़ी नाव, इसे पार लगाजा ॥ तू कौन से०.......
ना धन की है तमन्ना, ख्वाहिश ना महल की।
'शिव' की यही ख्वाहिश है, प्रभु दर्श दिखाजा ॥ तू कौन से०.. ...

भजन नं० १५ (तर्ज़—ओ जाने वाले बाबू इक पैसा दे जा)

कोई दुनियाँ में तुझ जैसा अमीर न हो।
अमीर भी हो तो तुझ जैसा खुश नसीब न हो ॥
ओ प्राणी ! ओ सोने वाले प्राणी ! प्रभु चन्द्र सुमरले—टेक
तेरी दो दिन की जिन्दगानी, ये जैसे बुलबुला पानी।
तू हरदम मौज उड़ाये, कभी न दुःख पाये ॥ अरे प्रभु चन्द्र ..
सोने सी यह काया तेरी, है मिट्टी की ढेरी।
यह मिट्टी में मिल जाए, स्वांस उड़ जाये ॥ अरे प्रभु चन्द्र ...
'शिव' है तुमको समझाता, प्रभु शरण में क्यों नहीं जाता।
तेरा करदे बेड़ा पार, चन्द्र सरकार ॥ अरे प्रभु चन्द्र...

भजन नं० १६ (तर्ज़—चन्दा देश पिया के जा)

प्राणी चन्द्र शरण में जा, प्राणी चन्द्र शरण में जा।
मेरा मेरा करता क्या है, मतलब की यह सब दुनियाँ है।

इनमें न मन तरसा रे, प्राणी चन्द्र शरण में जा ॥
पाप-कर्म में है क्यों अटका, क्यों विषयों में दर दर भटका ॥
कुछ तो समझ में ला रे प्राणी, चन्द्र शरण में जा...
धन माया के मोह में जकड़ा, फिरता है क्यों अकड़ा अकड़ा ।
भक्ति में मन को लगा रे, प्राणी, चन्द्र शरण में जा...
'शिव' की सुन यह जो कुछ कहता, चन्द्र शरण में क्यों नहीं रहता
मन वाञ्छित फल पारे प्राणी, चन्द्र शरण में जा....

चौबोला नं० १७ (तर्ज—पं० नथाराम हाथरस)

सूर्यप्रभा सम चमकती जैन धर्म की शान ।
स्याद्वाद सिद्धान्त पर है हमको अभिमान ॥

है हम को अभिमान विश्व विजयी सिद्धान्त हमारा ।
किसी समय में अटक कटक यू०पी० बंगाल निहारा ॥
श्रीसमन्तभद्र स्वामी ने बजवाया विजय नक्कारा ।
नभ मण्डल तक व्याप्त हुआ था जैनधर्म जयकारा ॥
शेर—हमारे जैन शासन का जमाने में उजाला है ।
अटल सिद्धान्त हैं इसका इसी से बोलबाला है ॥
कोई भी दार्शनिक इसका न कर सकता कभी खण्डन ।
अजित सब सूत्र हैं इसके, इसी से बोल बाला है ॥
दौड़—धर्म है अरि-मद-भजन, जगत रक्षक मन-रंजन ।
अहिंसा तत्व बतावे
'पदम' शत्रु दल टिके नहीं, वो नजर भागता आवे ॥

नं० १८ (चाल-प्रभु जय जगदीश हरे)

जय जय जिन चन्दा, प्रभु जय जय जिन चन्दा ।
चन्द्र जिनन्दा आनन्द कन्दा, हर हर भव फन्दा ॥ टेक
चन्द्रपुरी में जन्म लिया जिन, चन्द्रप्रभु नामी ।

चन्द्र चिन्ह चरणों में सोहे, चन्द्र वरण स्वामी ॥ १
धन्य सुलक्षणा देवी माता, जिस उर आन बसे ।
महासेन कुल नभ में जगमग, जगमग जोत लसे ॥ २
बाल्य काल की लीला अद्भुत, सुर नर मन भाई ।
न्याय नीति से राज्य कियो चिर. सब को सुखदाई ॥ ३
कारण पाय भये वैरागी, सब जग त्याग दिया ।
भव तन भोग समझ क्षणभंगुर, संयम धार लिया ॥ ४
दुद्धर तप कर कर्म निवारे, केवलज्ञान जगा ।
लोकालोक चराचर युगपत, दर्पणवत झलका ॥ ५
अद्भुत सुन्दर समवशरण, तब धनपति देव रचा ।
द्वादश सभा तहाँ अति सोहे, हित उपदेश दिया ॥ ६
जीव अनन्त भवोदधि तारे, तरि करि मोक्ष गये ।
सिद्ध, शुद्ध परमातम पूरण, परमानन्द भये ॥ ७
ये आदर्श तिहारा प्यारा, जो नर नित ध्यावें ।
अजर अमर ये दास परम पद सो निश्चय पावें ॥ ८

भजन नं० १६ (चाल-पंजाबी सत्संग)

चन्द्र प्रभू महाराज मेरी अरज सुनो ।
अरज सुनो, अरज सुनो ॥ टेक
तारण तरण दयानिधि स्वामी, घट २ के प्रभू अन्तर्यामी ।
तीन लोक सरताज, मेरी० ॥ १
सीता प्रति कमल रचाया, द्रौपदी का तुम चीर बढ़ाया ।
रक्खी सभा में लाज, मेरी० ॥ २
शूकर सिंह नवल गज तारे, जो कोई आये शरण उबारे ।
सब के सुधारे काज, मेरी० ॥ ३
धर्मी तारे बहुत प्रभु जी, पार उतारो एक अधर्मी ।
वीतराग जिनराज, मेरी० ॥ ४

शरण गही अब 'दास' तिहारी, बार बार है नाथ पुकारी।
काटो संकट आज, मेरी० ॥ ५

भजन नं० २० (तर्ज-हमको भी बिठलाना बाबू अपनी मोटर)

गाना है तो गा ले मनुवा, चन्दा गुण संसार में,
चन्द्र छोड़ सुख नहीं मिलेगा, जग के झूठे प्यार में ॥ टेक

इस मनहर नश्वर काया से, कुछ तो लाभ उठाले रे।
इस जीवन का कौन ठिकाना, भूला क्यों संसार में ॥ गाना है०
झूंठा जीवन, झूंठा यौवन, झूंठा जग का सपना है।
झूठे यहाँ के नाते हैं रे, माया के बाजार में ॥ गाना है तो गाले
तन पानी का एक बुलबुला, 'दौलत' क्यों भरमाया है।
गड जायेगा नहीं रहेगा, माया के तूफान में ॥ गाना है तो गाले

भजन नं० २१ (तर्ज-वह वह था मुबारिक शुभ थी घड़ी)

वह दिन था प्यारा रिम झिम का, जब प्रगटे थे श्री चन्द्र प्रभु।
तब देहरे में थी छाई छवि, जब प्रगटे थे श्री चन्द्रप्रभु ॥
शुभ वार वृहस्पतिवार था वो, सावन सुदी दशमी प्यारी थी।
इस नगर तिजारा देहरे मे, जब प्रगटे थे श्री चन्द्रप्रभु ॥१॥
यह पचमकाल है दुखदाई, जग मे अब पापाचार बढ़ा।
इस पापाचार हटाने को, ये प्रगटे थे श्री चन्द्रप्रभु ॥२॥
दुखिया आते हैं देहरे पर, अपना सब कष्ट मिटाने को।
दुखियों का कष्ट मिटाने को, ये प्रगटे थे श्री चन्द्र प्रभु ॥ ३
इस नगर तिजारा की शोभा, दिन पर दिन घटती जाती थी।
इस नगर के फिर चमकाने को, ये प्रगटे थे श्री चन्द्र प्रभु ॥ ४
अतिशय आपका हे स्वामी, दिन पर दिन बढ़ता जाता है।
अतिशय के यहाँ बढ़ाने को, ये प्रगटे थे श्री चन्द्रप्रभु ॥ ५

भजन नं० २२ (तर्ज-बड़े प्यार से मिलना सब से)

बड़े प्रेम से करना प्यारे, श्री चन्द्र प्रभू गुण गान रे।
क्या मालुम इस देह से भैया, निकल जाव कब प्राण रे ॥
कौन है तेरा, कौन है मेरा। सब जग है स्वारथ का ॥
विपत्ति समय कोई काम न आवे, धन जब तक मतलब का ॥
मत करना तू कभी भूल के, दुनियाँ मे अभिमान रे०
क्या मालुम इस देह से।
कब तक प्राणी तू कमायेगा, इस धन को दुनियाँ में।
अब तो बन्दे भजले वार को, शेष रहे जीवन में ॥
अन्त समय अब काम आयगा, चन्द्र प्रभू का नाम रे ॥
क्या मालूम इस देह से ॥

भजन नं० २३ (तर्जः—तेरे दर को छोड़ कर)

चन्द्र प्रभु तेरे सिवा किसको व्यथा सुनाऊँ मैं ।
तेरी भक्ति छोड़ कर किसका ध्यान लगाऊँ मैं ॥
जब जब भला प्रभूजी तुमको, सुख नही मैंने पाया है।
सुख मैं पाता प्रभुवर कैसे, तेरा नाम भुलाया है॥
अब तो ज्ञान जगा दो मेरा, तेरा ही गुन गाऊँ मैं ॥ चन्द्र प्रभू०
इच्छा होवे दर्श करूं मैं कर्म मुझे ठग लेता है।
तेरा नाम भुला कर मुझको, अपने वश कर लेता है॥
ऐसी शक्ति मुझको दे दो, दर्शन आपका पाऊँ मैं ॥ चन्द्र प्रभू०

झण्डाभिवादन नं० २४

स्वस्तिक मय केसरिया प्यारा। झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
इस झण्डे के नीचे आओ, आतम-शक्ति जग को दिखलाओ।
सुख-स्वतन्त्रता का पा जाओ, चमकाओ निज ज्ञान सितारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥१॥

पूर्ण-अहिंसा इसका प्रण है, शान्ति शान्ति का आन्दोलन है।
प्रेम क्षमा का मधुर मिलन है, मिटता द्वेष, द्रोह अँधियारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥२॥

स्वस्तिक चिन्ह विजय का दाता, अखिल राष्ट्र जिसका गुण गाता।
जिसे विदेशी शीश झुकाता, बतलाता आदर्श हमारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥३॥

विश्व विभूति वीर जिनवर ने, एक उमंग विश्व मे भरने।
फहराया जग जन हित करने, मिट जावे भव संकट सारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥४॥

शक्ति मार्ग दर्शाने वाला, ज्ञान सुधा बरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला, मगलमय सुरसरि को धारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥५॥

सूर समन्तभद्र से ज्ञायक, श्री अकलंक देव से नायक।
इसके रहे सदा अभिभावक, ज्योति जगाई इसके द्वारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥६॥

इसकी सेवा में तन-मन-धन, करदो हर्ष भाव से अर्पण।
होगा पूर्ण तभी यह दृढ प्रण, यह उद्देश्य सभी से न्यारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥७॥

लेकर इसे अभय दृढ करमें, आओ बढकर अमर समर मे।
दया भाव भरदो घर घर में, गूंज उठे इसका जयकारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥८॥

उठो वीर सन्तानों ! आओ, 'भगवत' का सन्देश सुनाओ।
हो निर्भय झण्डा फहराओ, इसको हो प्रणाम शत वारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥९॥

झण्डा गायन नं० २५

स्वास्तिक चिन्ह विभूषित प्यारा, झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
स्वास्तिक चिन्ह इसमे दरशाया, यह तीर्थंकर ने अपनाया॥
ऋषभ देव ने यह फरमाया
अनेकान्त की निर्मल धारा, झण्डा ऊचा रहे हमारा॥१॥
स्याद्वाद सन्देश सुनाकर, परम अहिंसा धर्म बताकर।
वोर प्रभु ने इसे उडाकर, दुनिया भर में यश विस्तारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
प्रथम जन सम्राट वीरवर, चन्द्रगुप्त से समर धुर-धर।
इस झण्डे के नीचे लडकर, सैल्युकश का गर्व निवारा॥
झण्डा ऊचा रहे हमारा॥३॥
जग विजयी अकलंक अखडित, पूजा समन्तभद्र से पंडित।
करते रहे इसे अभिमण्डित, अपने विद्यालय के द्वारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥४॥
सब मे प्यार बढाने वाला, सब को गले लगाने वाला।
विश्व प्रेम दर्शाने वाला, सम्यग्दर्शन का उजियारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥५॥
यह झण्डा हाथों में ले कर, कर्म क्षेत्र मे बढो निरन्तर।
ऊचा रखो प्राण भी देकर, जैन धर्म का विजय सितारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥६॥
बतलाता यह फहर फहर कर, जीना सीखो तुम मर मर कर।
जिन्दा रहा न कोई डर कर, भरो वीरता से जग सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥७॥
वीरो इसके नीचे आओ, इसको दुनियां में फहराओ।
शशि किरणें जग में फैलाओ, वीरो यह उत्थान तुम्हारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥८॥

भजन नं० २६

चल दिया छोड घरबार, कुटुम्ब परिवार धारि मुनिवाना
समझाया वीर नही माना ।।टेक।।

माता अति रुदन मचाती है यूँ बार बार समझा ी है
बेटा कुछ दिन पीछे ही वन को जाना । समझाया० ॥१॥
बोले माता क्यो रोता है जा होनहार मा होती है
उठ गया मेरा इस घरसे पानी दाना । समझाया० ।।२।।
सिद्धार्थ नृप समझाते यो, बे ा तुम वन को जाते क्यों
क्या घर मे है कुछ कमी, हमे बतलाना समझाया० ।।३।।
मेरी है वृद्ध अवस्था ये घर को को करे व्यवस्था ये
ले राजपाट तू सब पर हुक्म चलाना । समझाया० ।।४।।
मेरा घर से कुछ काम नहीं, पल भर ल गा आराम नही
इस सोते हुए जगत का मुझे जगाना ।। समझाया० ।।५।।
य ा खून से होली खिलती है, हिसा की ज्वाला जलती है
यह दृश्य देखि करि हृदय अकुलाना । समझाना० ।।६।।
पशुओ पर खजर चलते है, लाखो यज्ञो मे जलते हैं ।
कहते इनको मिलजायगा स्वर्ग विमाना । समझाया०।।७॥
हिसा मे धर्म बतलाते हैं, वेदो को खोलि दिखाते है ।
उन वे अक्लो की अक्ल ठिकाने लाना । समझाया०।।८।।
'मक्खन' अघके घन छाए है, भू नभ सुमेरु थर्राए हैं ।
मैं भोग कैसे भोग बडा मस्ताना । समझाया० ।।६।।

भजन नं० २७

जब तेरी डोली निकाली जायगी, बिन मुहूर्त के उठ ली जायगी ।
उन हकीमों से यूं कह दो बोल कर
करते थे दावा किताबे खोल कर

यह दवा हरगिज न खाली जायगी ॥१॥
क्यों गुलों पर होरही बुलबुल निसार
है खड़ा पीछे शिकारी खबरदार।
मार कर गोली गिरा ली जायगी ॥२॥
जर सिकन्दर का यही पर रह गया
मरते दम लुकमान भी यों कह गया
ये घडी हरगिज न खाली जायगी ॥३॥
ऐ मुसाफिर क्यों पसरता है यहां
ये किराए पर मिला तुझको मकां।
कोठड़ी खाली करा ली जायगी ॥४॥
चेतो भय्यालाल अब प्रभु को भजो
मोह रूपी नींद से जल्दी जगो।
बरना जां आफत मे डाली जायगी ॥५॥

भजन नं० २८

कैसे प्राणी के प्राणो का घात करे,
तेरे दिल में दया का असर ही नही।
जो तू हिरनो का बन में शिकार करे,
तुझे घोर नरक का खतर ही नही॥
जैन वानी सुनो जरा गौर करो,
जान औरों की अपनी सी ध्यान धरो।
जरा रहम करो अपने दिल में डरो,
प्यारे जुल्म का अच्छा समर ही नहीं॥
भोले बन के पखेरू हैं ्रते फिरे,
मारे डर के तुम्हारे से दूर रहें।
वो तुम्हारा न कई बिगाड़ करे,
उनका बन के सिवा कोई घर ही नही।

तृण घास चरें अपना पट भरें,
धन देश तुम्हारा न कोई हरे।
प्यारे बच्चो से अपने वो प्रीत करे,
उनके दिल में तो कोई शर ही नही।
कामी ही लोगो ने इसको रवा है किया,
झूटा अपनी तरफ से है मसला घडा।
वरना पुरान कुरान मे जीवो के मारन का,
आता कही भी जिकर ही नही।
दयामयी धरम सत जानो सही,
जिनराज ने है यह बात कही।
सुनो न्यामत बिना जिन धर्म कभी,
प्यारे होगा मुकत में घर ही नही।

भजन नं० २६

आप में जब तक का कोई आपको पाता नही,
मोक्ष के मन्दिर तलक हरगिज कदम जाता नही टेक
वेद या पुरान या कुरान सब पढ लीजिए।
आपको जाने बिना मुक्ति कभी पाता नही
हिरण खुशबू के लिए दौडा फिरे जगल के बीच,
अपनी नाभी मे बसे उसको देख पाता नही ॥२॥
भाव करुणा कीजिए ये ही धरम का मूल है।
जो सतावे गैर को सुख वह कभी पाता नही ॥३॥
ज्ञान पे न्यामत तेरे है मोह का परदा पड़ा।
इसलिऐ निज आत्मा तुमको नजर आता नही ॥४॥

भजन नं० ३०

जब हंस तेरे तन का कही उड़के जायगा।
अय दिल बता तो किससे तू नाता अपना रखायेगा।
यह भाई वन्धू जा तुझे करते हैं आज प्यार,
जब आन बने कोई नही काम तेरे आएगा।
यह याद रख कि सब हैं तेरे जीते जी के यार
आखिर तू अकेला ही मरण दुख उठायेगा।
सब मिलके जला देंगे तुझे जाके आग में
इक छिन के छिन मे तेरा पता भी न पाएगा।
कर घात आठ कर्मो का निज शत्रु जान कर,
बे नाश किए उनके तू मुक्ति न पाएगा ॥४॥
अवसर यही है जा तुझे करना है आज कर,
फिर क्या करेगा काल जब मुंह वाके आएगा ॥५॥
अब 'न्यामत' उठ चेत कर क्यो मिथ्यात में पड़ा,
जिनधर्म तेरे हाथ ये मुश्किल से आएगा ॥६॥

कीर्तन ध्वनि भजन नं० ३१

महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥टेक॥
हो त्रिसला नन्दन,काटो भव फन्दन, बालहि पनमें तप कियो बनमें
दरश दिखाना भूल न जाना, पार लगाना, कृपा निधाना ॥२॥
महिमा तुम्हारी, है जग से न्यारी, सुधलो हमारी हो व्रत के धारी
बन खण्ड में तपके करने वाले, केवलज्ञान के पाने वाले।
हित उपदेश सुनाने वाले, हिंसा पाप मिटाने वाले ॥४॥
पशुवन बन्ध छुडाने वाले, स्वामी प्रेम बढ़ाने वाले।
हो तुम नियम सिखाने वाले, स्वामी कष्ट मिटाने वाले ॥५॥
पूरन तप के करने वाले, भगतों के दुख हरने वाले।
पावापर में आने वाले, स्वामी मोक्ष के जाने वाले ॥६॥

भजन न० ३२

क्यो न अब तक हमारी सुनाई हुई,
जब कि चरणों से है लौ लगाई हुई ॥

तेरे चरणों से जिसने लगाई लगन,
पार भव से किया उसको आनंद घन ।।
क्यों न हम पर प्रभू रहनुमाई हुई ।। क्यों न०

सेठ के पुत्र को सर्प ने था डसा,
उसके मनमे तो केवल तेरा ध्यान था
तेरे मन्दिर मे विष की सफाई हुई ।।क्यों०

विष उतरते ही जय जय मनाने लगे,
दिल से सब तेरा गुणगान गाने लगे ॥
सबके दिल में तेरो छवि समाई हुई ।।क्यो०

हुक्म राजा ने शूली का जब था दिया,
तब सुदर्शन ने वह हुक्म सर धर लिया ।।
सब के दिल में घटा गम की छाई हुई ।।क्यो०

शूली देने का सामान तय्यार था,
सके मन मे तो केवल तेरा ध्यान था।
फिर तो शूली से उसकी रिहाई हुई ।।क्यों०

प्रेम चरणों से तेरे लगाया हुआ।
तू पदम के है दिल में समाया हुआ ।।
फिर न क्यो कर हमारी रसाई हुई ।।क्यों०।।

भजन नं० ३३

सो रहे है भाग्य हाय आज हिन्दुस्तान के।
हो रहे जैनी ही दुश्मन जैनियों को जान के ।।

खो दिया झगड़ों में ही अपनी खानदानी शान का।
यह खता अपनी थी लाले पड़ गये औसान के॥
अपनी कमजोरी से पहुंचे इस दशा को आन कर।
घर के तो लाला बने कायर बने मैदान के ॥हो रहे०
बिक रही है आज इज्जत कोड़ियों के माल में।
रत्न थे जैनी कभी तो वीरता की खान के ॥हो रहे०
राम कोई भी नजर आता नहीं भारत में अब।
सबके सब रावण बने जैनी ये हिन्दुस्तान के ॥हो रहे०
भाई है भाई का दुश्मन पुत्र दुश्मन बाप का।
अब जमाना रहा नहा धर्म की पहचान का ॥हो रहे०

भजन नं० ३४

मैं वीर पुजारी बन जाऊं तुम पूज्य श्री भगवान बनो।
दूं चरणों में सर्वस्व चढ़ा लयकर मुझ को एक प्राण बनो॥
तुम पवन बनो मैं धूल बनूं तुम गन्ध बनो मैं फूल बनूं।
मैं बनूं बूंद निर्मल जल की, तुम सरिता सिन्धु समान बनो॥
तुम नीर बनो मैं मीन बनूं तुम दीन बन्धु मैं दीन बनूं।
मै देह बनू तुम प्राण बनो, मै तान एक तुम गान बनो॥
तुम दीप रहो मैं पतंग रहूँ, वीर तुम्हारे संग रहूँ।
है ये अभिलाषा ममहिय की, लो मे लेकर एक प्राण बनो॥
तुम सूर्य बनो मैं भोर बनूं, तुम चन्द्र बनो मैं चकोर बनू।
मैं बनूं पपीहा पी पीकर तुम नाथ "स्वाति" महान बनो॥

भजन नं० ३५

मुझे छेड़ो न छेड़ो दिवाना वीर का
देखूं देखूंगा चल कर ठिकाना वीर का॥

वीर की भक्ति मे रह कर ही मेरा होगा भला,
जाके उनसे ही करूंगा अपने मन का मैं गिला ॥
दुख सुनने को हमारे कोई हम दम न मिला,
प्रेम की अल्फी पहन कर आज मै देहरे चला ॥
दिल में मेरे लग रही है वीर का जोगी बनूं।
जाके अपना सर गरेबा कदमों मे उनके धरूं ॥
राह में जितनी मुसीबत हो सभा दिल पर सहूँ।
दरशनों मे कोई रोके अब मै रो रो कर कहूँ ॥
चन्द रोजा जिन्दगी है बन रहा हूँ यूं गदा।
छोड दुनिया की मोहब्बत अब तो उस पर हू फिदा ॥
बन गया हूं मस्त अब तो होके दुनिया से जुदा।
रोकना कोई न मुझ को बस मेरी सुनलो सदा।
भाइयो सुनलो फकत तुम को बताना है यहा।
माया ठगनी से बचो मुझको जताना है यही ॥
बच्चे बच्चे की जबा पर लफज लाना है यही।
अब किशन और श्याम को भी कथ के गाना है यही ॥

भजन नं० ३६ (तर्ज-रेशमी सलवार)

भजले अब तू नाम चन्दा प्यारे का,
अतिशय कहा न जाये देहरे वाले का।
जब समन्तभद्र ने ध्याया, और पिंडी फटी तुम्हें पाया,
सीता ने ध्यान लगाया, अग्नि मे कमल रचाया,
नाथ दुखियारो का ॥ अतिशय० ॥
कर दर्श आप का प्यारा, सब दूर हुआ अंधियारा।
जग का धन्धा है झूठा, मुझ को तेरा है सहारा ।।
सुलक्षणा प्यारे का ॥ अतिशय० ॥

प्रभु प्रगट भये सावन में, "दौलत" को हर्ष हुआ मनमें।
अब संकट सब का काटो, यही इच्छा है मेरे मन में ॥
काम क्या देरी का ॥ अतिशय ० ॥

भजन नं० ३७ (तर्ज-होठ गुलाबी लाल)

चन्द्रप्रभु भगवान, प्रगट भये तुम देहरे में आन हमे तेरा शरणा
ये वैरी कर्म सताते हैं, इन से छुड़ाना नाथ मुझे,
ऐसा दो वरदान प्रभू निशदिन शीश झुकाऊं तुझे
हमें तेरा शरणा ॥
जो भी आता दरपे तेरे उसका कष्ट मिटाते हो।
सकट उनका काट प्रभो, स्वय हृदय में आते हो ॥
पाप नशावे मुक्ति पावे करे जो तेरा ध्यान ॥ हमें तेरा शरण ॥
'दौलत' आया दर पर तेरे, चरणों मे शीश काया है'
दर्शन करके तेरा प्रभू, जन्म सफल कर पाया है।
भक्ति न जानू, भजन न जानू फिर धरूं तेरा हो ध्यान।
॥हमें तेरा शरण ॥

भजन नं० ३८(तर्ज-मदके तेरी चाल के कजरा वजरा डाल के)

गले लगा ले प्यार से, घबराया संसार से।
चन्दा प्रभू लेना अब मेरी भी खबर ॥
द्रौपदी का तूने चीर बढ़ाया चन्दा।
चोर बढाके मान बढाया चन्दा ॥
दोनों के प्रतिपाल हो स्वामी दीन दयाल हो
चन्दा प्रभू लेना अब मेरी
सूली से जा सेठ बचाया चन्दा, नाग का जाके हार बनाया चन्दा।
सकट काटन हार हो, भक्तों के आधार हो।
चन्दा प्रभु लेना अब मेरी।

श्रीपाल को समन्द तिराया चन्दा मैना सती का कष्ट मिटाया
'दौलत: अब अकुलाया है तेरी शरण में आया है।
चन्दा प्रभू लेना अब मेरी० ॥

भजन नं० ३६-तर्ज दिल्ली शहर अलबेलो

देखो दरश अलबेलो, जुडा है हून बाबा को मेलो ।।टेक।।
यह मेला जुडता है साते को,
चन्द्रप्रभू जी गए मोक्ष को ।
जय जयकारो बोलो, जुड़ा है हून बाबा को मेलो ॥१॥
या मेला मे सुनो रे भाई,
दूर दूर से पबलक आई ।
हो रहो रेलम ठेला, जुड़ो है हून बाबा को मेलो ।।२।।
या मेला में भीड़ घनी है,
दूर दूर तक दुकान बना है ।
देखो अजब हमेलो, जुड़ो है हून बाबा को मेलो ॥३॥
कुश्ती को दगल रुपवायो,
जीते वाहो लु इनाम दिवायो ।
दंगल जुडो है अलबेलो, जुड़ो है हून बाबा को मेलो ॥४॥
दूर दूर की मण्डली आई.
अपनी अपनो कला दिखाई।
नफेरी का अजब हमेलो, जुड़ो है हून बाबाको मेलो ॥५॥
एक अचम्भो या मेला मे
हाथी खड़ो करो ठना में ।
बलन सू खिचवायो, जुड़ो है हून बाबा को मेलो ।।६।।

भजन नं० राजुल पुकार तर्ज-ओ रात के मुसाफिर

मा साथ चल कर दीक्षा मुझे दिला दे ।

नेमी प्रभू के दर्शन चल कर मुझे करा दे ।।टेक।।
तोरण पे आके स्वामी, वापिस चले गए क्यों ।
हां मौड़ तोड करके, दीक्षा वो लेगए क्यों ।
क्या है कसूर मेरा, कोई जरा बता दे ।।१।।
आई अगर है करुणा, पशुओं की सुन पुकारी
मुझ दीन दुर्बला की, क्यो न दया बिचारी
मर्यादा मेरी उनसे जाके कोई सुना दे । २।।
सम्बन्ध नौ जनम का, उनके है साथ मेरा
दशवें जनम में किसने, ये कर दिया बखेड़ा
मिट जाये कर्म रेखा युक्ति कोई सुझा दे ।।३।।
नेमि बिना मै घर मे रह करके क्या करूंगी ।
अब अर्जिका की दीक्षा जा करके मैं धरूंगी
गिरनार की डगरिया कोई मुझे दिखा दे ।।४।।
राजुलमती सी सतिया, भारत में फिरसे आयें
सतशील और संयम का पाठ जो पढायें
शिवराम नारियों का कर्तव्य तू सिखा दे ।।५।।

भजन नं० ४१ (राजुल रुदन) तर्ज-ये मर्द बड़े दिल सर्द

भरतार, गये गिरनार, तजा ससार मुझे भी जाना ।
कैसे काटूं रतियाँ मैं सखियों बताना ।। टेक ।।
मुझको बता दो रस्ता, गिरनार का तो कोई ।
नेमि गये जहाँ पर तकदीर मेरी सोई ।।
क्योंकर धीरज धारूं दिल मे, मेरा नहीं ठिकाना ।। १ ।।
तोरण से फेर रथ को, कंकन व मौड़ तोड़ा ।
मुक्ति से नेह जोड़ा हमको बिलखते छोड़ा ।
कौन खता है मेरी स्वामी, जरा बता के जाना ।। २ ।।

पशुओं को सुनी पुकारी, उन पर दया विचारी,
नौ भव की प्रीत मेरी, क्षण एक मे विसारी।
काहे दया न आई मेरी, इसका मर्म न जाना ॥३॥
पिया ने बिसारा मुझको, मैं भी उन्हें विसारू,
तज करके मोह ममता, दीक्षा मैं आज धारू।
धन्य सती है राजुल, जो 'शिव' करि परम तप ठाना ॥

भजन नं० ४२ (तर्ज–जरा सामने तो आओ)

दया धम को धारो प्यारे, सब धर्मों का ये सरताज है।
पाप हिंसा जगत में बुरा है, सब ग्रन्थों की ये आवाज है ॥टेक॥
हा पाप तो करें, और फल नहीं भरे, ऐसा कभी न हो सकता।
पापी अपने आतम के मैल को, यों तो कभी न धो सकता ॥
करता काहे को जीवों का घात है, इससे तेरा बिगड़ता काज है।
कर्म की है ये रीति सजन, जो जैसा करे वह वैसा भरे॥
चाहे अगर सुख मीत अरे, तो पाप कर्म से क्यों न डरे॥
पाना सुख 'दुख का अपने हाथ है,
इसमे 'शिवराम' कुछ भी न राज है॥

भजन नं० ४३ (तर्ज–रेशमी सलवार कुर्ता जाली का)

वीरनाथ भगवान् जग हितकारी तू,
महिमा कही न जाय दुख परिहारी तू॥ टेक॥
देश पडा था सोता अज्ञान नींद मे सारा,
बढी थी हिंसा भारी मचा था हाहाकारा॥ हुवा अवतारी तू॥
तूने है आन बताया सद्धर्म अहिंसा प्यारा,
खुद जीवो और जीने दो ये था सन्देश तुम्हारा ॥दयालू भारी तू॥
स्याद्वाद समझाया मतभेद मिटावन हारा,
साम्यवाद सिखलाया सिद्धान्त कर्म का न्यारा। परहितकारी तू।

भूले हुए थे प्राणी मुक्ति मार्ग को सारे,
राह उन्हें दिखला कर शिवधाम को आप सिधारे। शिव सुखकारोत

भजन नं० ४४ (तर्ज–चली जा चली जा...)

किये जा किये जा प्रभू की अर्चा धर्म को चर्चा ॥टेक॥
पौष एकादश कृष्णा, मुबारिक है तिथि प्यारी।
श्री चन्दाप्रभू पारश, जन्म दिन है मनाने का ॥१॥
सहस और आठ शुभ कलशे, देव लाये थे सुरगिरि पे।
क्षीर सागर से जल भर कर, न्हवन जिनवर कराने को ॥
इसी एकादशी को फिर, धरी दोनो ने जिन दीक्षा।
किया संकल्प था आठों, ही कर्मों के खपाने का ॥
अरे शिवराम उठ जाओ मगन भक्ति में हो जाओ।
मिला अवसर तुम्हें अब तो प्रभु गुण गान गाने का ॥

झन्डा गायन भजन नं० ४५ (तर्ज-मेरा जैन धर्म अनमोला)

ये झन्डा जैन हमारा, है जोव मात्र हितकारा ॥टेक॥
स्वस्तिक इसका चिन्ह असल है, बाकी सारी और नकल है।
सोचा और विचारा ॥१॥
शान्ति सुधा बरसाने वाला, जगजन को हरषाने वाला।
तत्व अहिसा प्यारा ॥ ॥
ऋषभदेव आदि तीर्थंकर, अंतिम श्री महावीर जिनेश्वर।
सब ही ने विस्तारा ॥ ३ ॥
सब को समता पाठ पढ़ाना, स्याद्वाद सिद्धान्त सुझाना।
मतभेद मिटावन हारा ॥४॥
इस झंडे के नीचे आओ, सारा बेर विरोध मिटाओ।
हो कल्याण तुम्हारा ॥५॥

गांधीजी ने इसे अपनाया, भारत को आजाद कराया ।
इसका लिया सहारा ॥६॥
आओ वार सभी मिल आओ, अब 'शिवराम' इसे लहराओ ।
फिर बोलो जय जयकारा ॥७॥

भजन नं० ४६

तर्ज—(तेरी राहों मे खडे हैं हम आन के छलिया)
तेरे चरणों मे पडे है हम आन के,
स्वामी हम है भिखारी मुक्ति दान के ॥
प्रभु ज्ञान से भरपूर, पाया आनन्द सरूर,
वीतराग मशहूर, फिर भी हितु हो जरूर ।
धन और बेटा हम नही चाहे, सुरपति का भी पद नही चाहे ।
चाह यही तुझसे ही हो जाएँ ॥१॥
और नही कुछ भी है तमन्ना, सच्ची यह अरदास समझना ।
हाय नही भव बीच भटकना ॥२॥
जब तक मुक्ति न आवे नेडी, और मिले न भव की फेरो ।
तब लग हृदय भक्ति हो तेरी ॥३॥
नाथ निवेदन हम ये लाये, कोई हविस न हमको सताये ।
शिव पद हमको अब मिल जाये ॥४॥

भजन नं० ३५ (तर्ज-जब प्यार किया तो डरना क्या)

आई कजा तो डरना क्या, जब आई कजा तो डरना क्या ।
मौत किसी से टाली टले न, इसकी सोच तो करनी क्या ॥
चाहे हो राजा, चाहे हो राणा, मौत ने सबको है खा जाना ।
बचे न रावण से बलधारी, औरो का तो मरना क्या ॥१॥
चाहे हो देवो या हो देवता, मौत से कोई बचा न सका ।
काल का ग्रास हुए जो खुद ही, ऐसों का लेना शरणा क्या ॥२॥

धन और धाम पड़े रह जावे, नारी सुत कई काम न आवे।
दौलत जब ये साथ न जाये, इसको दबा कर धरना क्या ॥३॥
आए अकेला जाए अकेला, चार दिनों का है यह मेला।
अथिर अपावन तन ये तेरा, मोह मे इसके पडना क्या ॥ ४ ॥
तुझको जगाए सतगुरु वाणी, जाग अरे 'शिवराम' अज्ञानी ॥
जब जिनराज की शरणा गहे, भवसिंधु पार उतरना क्या ॥५॥

भजन नं० ४८ (तर्ज-चौदहवां का चांद हो चौदहवीं का चांद)

वीर भक्ति में भरा जादू महान है,
भक्ति से भक्त हो गया भगवत समान है।
वीतराग है मगर तारण तरण सही,
भव सिंधु पार हो गया जिसने शरण गही।
जिसने लाखो हजारों का किया कल्याण है ॥१॥
अंजन से चोर तर गये पापी महा अधम,
नर की तो कौन है कथा पक्षी पशु न कम।
जिनका प्रभू की भक्ति से हुआ उत्थान है ॥ ॥
जो सिंह दुष्ट था कभी पापी दुरात्मा,
वो ही तो वीर बन गया है परम आत्मा।
पूजक ही पूज्य होता है आगम प्रमाण है ॥३॥
ऐसा निहारके प्रभो चरणों मे आ पड़े,
तारक न कोई और है स्वामी सिवा तेरे।
शिवराम आज धर लिया तेरा ही ध्यान है ॥४॥

भजन नं० ४९ तर्ज-(तेरी प्यारी २ सूरत को किसी की०)

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तेरी शरण में ॥मेरे०
यह बिनती है पल पल क्षण क्षण, रहे ध्यान तेरे चरण में। मेरे

चाहे बैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर वार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तेरे चरण में ॥ मेरे०
संकट ने मुझको घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर मन ना मेरा डगमग हो, रहे ध्यान तेरे चरण में ॥मेरे०
चाहे अग्नि में मुझको जलना हो, चाहे कांटो पर भी चलना हो।
चाहे छोड के देश निकलना हो, रहे ध्यान तेरे चरण मे ॥ मेरे०
जीह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम ये आठो याम रहे रहे ध्यान तेरे चरण मे ॥ मेरे०

भजन नं० ५० (नेमि का राजुल को उपदेश)

रोक दो रथ सारथी और बन्द कर दो साज को,
जीव क्यो ये बन्द हैं मुझको बना इस बात को।
है मचलते चीखते यह किसलिए यहां बन्द है,
दर्द दिल मे हो गया सुन दर्द की आवाज़ को।

नजारा देख ये मेरा कलेजा मुंह को आता है,
किसी की जान जाती है किसी को स्वाद आता है।
गला घुटता अहिंसा का यह हिंसा को मनादी है,
यह हत्याकाड है कोरा, नही नेमी की शादी है।
कगन बधन है तोडा, मुखडा जग से है मोडा,
और तज दिया तेरा भी प्यार रे।
हमने देखा यह दुनिया में आकर,
खुश है जीव को जीव सता कर ॥
आतम जग से यूं रूठा, इसका रग है अनूठा,
झूठा पाया है तेरा भी प्यार रे।
प्राणी प्राणी को भोजन बनाये, ऐसी दुनियाँ से जिया उकताए।
ताडूं बंधन मैं कर्म गतो का, पासा पलटूं मैं अपनी रतो का,

चेतन जड़ में जो ग्रन्थी पड़ी है, उसके छोड़न की राजुल खड़ी है।
अब ना भटकेगा बिन्दु, पाये अपना ये सिन्धु,
तोड़े आवागमन का यह तार रे।

भजन नं० ५१ (बाबुल का घर छोड़ मोहे पी नगर आज०)

यूं ही आता रहा आ के जाता रहा,
लाख चक्कर चौरासी के खाता रहा।
यूं ही आवागमन के उलट फेर में,
वक्त होगा ये हाथों से जाता रहा ॥१॥
खेल में तेरी बचपन कहाना गई,
जोश में होश खोकर जवानी गई।
बाद मे गर जिया तो बूढा हो कर जिया,
बिन तेल दिया जो टिमटिमाता रहा ॥२॥
सफर उमर का जब खाम होने लगा,
पहुँच मंजिल के नजदीक रोने लगा।
तब कहा मन ने अगले ये सासो का धन,
क्यों अय्यास बन के लुटाता रहा ॥३
घर के साथी वो हाथी वो घोडे यहाँ,
और नाटों का जोडा जो बंडल यहाँ।
'नत्थासिंह' जब ये मामान छोडा यहाँ,
मल के हाथों को तू तिलमिलाता रहा ॥४॥

भजन नं० ५२ (तर्ज-मोहे पनघट पे नन्दलाल छोड़ गयोरी)

मोहे नेमी बिलखती छोड़ गयोरी,
रथ तोरण प आय के मोड़ गया री ॥टेक
दया के भाव धारे, दुखिया पशु निहारे,
हाय कामन से उसके जो शोर गयोरी ॥१॥

[illegible] की प्रीत मोरी, एक छिन बीच तोरी,
वो तो हाय गिरनारो को दौर गया री ॥२॥
हा वस्त्र हैं उतारे, भूषण हैं भू पर डारे,
हाये हाथों का कंगना वो तोड गयो री ॥३॥
बिन पिया घर न रहना, मेरा उतारो गहना,
एरी नेमी बताओ किस ठौर गयोरी ॥४॥
सखीरी लाओ साड़ा, कमंडल पीछी प्यारी,
मोरी चूरी सुहाग की फोर गयोरी ॥५॥
करूंगी मैं भी तपस्या, तजूंगी भाग की लिप्सा,
शिवनारी से नेहा वो जोर गयोरी ॥६॥

भजन नं० ५३

रथ मोडने वाले सांवरिया क्या छोड के यूं ही जाना है।
किसलिए किया त्यागन जग का, बस ये ही तुझे समझाना है॥
सोचा था दुलहिन बन कर मैं, अपने प्रियतम को पाऊंगी।
तोरण पर आवेंगे लेने वर माला गल में डालूंगी॥
इस भाग्य की उल्टी रेखा को स्वामी अब किसने जाना है॥रथ०
नव भव की प्रीति को स्वामी अब दशवें मे क्यों छोड़ी है।
चरणों की दासी राजुल को स्वामी तुमने क्यों छाड़ी है,
कुछ मैं भी तो जानू स्वामी क्या मन में तुमने ठाना है॥ रथ०
दो छोड़ जगत की प्रीति को राजुल क्यो इसमे फँसती हो,
सुख के बदले दुःख पावोगी क्यों अपना इसे समझती हो।
तुम समझ रही जिसको अपना वा अपना नहो बगाना है॥रथ०
जग की नश्वरता विदित हुई पशुओं की करुण पुकारों से,
तब आए भाव मेरे मन में, लग जाऊं आत्म साधन में।
करमों के बंधन काट काट अब शिव नगरी को जाना है॥

भजन नं० ५४

म्हारा चन्द्र जिनेश्वर मूरत थां की जादूगरणी जी।
जादूगरणी जी नाहीं जाये वरणी जो ॥ म्हारा चन्द्र० ॥१॥
आकर्षण शक्ति है भारी, खिच्या आ रह्या है नर नारी।
लगी उमंग सवां चित्त में पूजा करनो जो ॥ म्हारा चन्द्र० ॥१॥
जेन अजैन सभी जो आवे, महिमा देख दंग रह जावें।
मुख से उचरें धन्य धन्य, देहरा को धरतो जी ॥ म्हारा चन्द्र० ॥
श्रद्धा सूं जो थानें ध्यावे संकट वाका सब टल जावें।
भूत, प्रेत, डाकिन, शाकिन, को माया हरणो जी ॥ म्हारा० ॥३
ठाठ बाट का रंग जमा है, भक्ति भाव में सभी रम्या है।
हो धर्म "वृद्धि" यह मूरत प्रभू जा थांकी तारण तरणोजी ॥ म०

भजन नं० ५५ (मेरे भगवान तू मुझको यूं ही बरबाद०)

पधारे चन्द्र जिन स्वामी मुझे ए कर्म जाने दे।
करूं जिनराज के दर्शन प्यास मन बुझाने दे।
सुना जब नाम करमों ने डरे कटने से बेचारे।
'कहा' बच जायेंगे क्या हम अगर देहरे में जाने दें ॥ १ ॥
बताया उनको तब मैंने बदल लो चाल तुम अपनी।
करो सेवा बनो निर्भय बुरी सगत को जाने दे ॥ २ ॥
भगे झज साथ अघ पांचों बढाया पैर जब आगे।
बंधो इन्द्रिय यहां आकर प्रभु में लौ लगाने से ॥ ३ ॥
बचपन मन कर्म को शुद्धो मिले अलोक बुद्धि को,
'तुला' प्रभू चरण सेवन से सफल जीवन बनाने दे ॥४॥

भजन नं० ५६ (छोड़ दे बलमवा छोड़ दे पतंग मोरी०)

बोल दे रे मनुवा चंद्र प्रभू की जय बोल दे,
जीव पतंग संग मोह की डोरी कर्मन दई उड़ाई।

दुख वायु के साथ थपेड़े द्वार तेरे उड़ आई,
टुक, तोड़ दे दयालु मोह को डोरी तोड़ दे ॥१॥
तन प्याले में काम की मदिरा रूप की साकी लाई।
पिला देख नाम तेरे को पुलिस पकड़ ले आई।
जरा खोल दे हे स्वामी ज्ञान का परदा खोल दे ॥२॥
क्रोध अग्नि में चित्त पतंगा जलता रहा सदा ही।
लूटे दान दया के पंथी लोभ लुटेरे जाई।
अब तोल दे 'तुला' को भक्ति तुला पर तोल दे ॥३॥

भजन नं० ५७

नाथ ! कैसे मुनि को काज सरायो ॥टेक
भस्म व्याधि हुयो जब तन मे, जप तप ज्ञान नसायो।
शिव सेवक बन भोग करें नित भोगी नाम धरायो ॥
घट्यो नही विश्वास आपमे कितना ही संकट आयो।
करत प्रणाम फटी जब पिंडी, अनुपम रूप दिखायो।
नाम सुनत हों अधम उधारण अजन पार लगाया।
'तुलाराम' व्याकुल भव दुख सों चन्द्र चरण चित्त लायो ॥

भजन नं० ५८ (लिख दी मेरी तकदीर में बरबादी लिखने०)

शेर—तेरे आने से प्रथम देहरा चमन वीरान था।
हो रहा गुलजार अब तेरे प्रकट होने के बाद ॥
हो देहरे वाले ने वर्षा दिये आनन्द घन जिनचन्द्र देहरे वालेने
शेर—था विकट स्थान जो भय तम निराशा से भरा।
था पतित पावन को पावन धूलि को पावन बना ॥
लग रहा दरबार सुखकारी जगत के नाथ का,
दीन दुखिया आ रहे लेकर सहारा आपका।
हो देहरे वाले ने वर्षा दिये आनन्द घन ॥ जिनचन्द्र० ॥

शेर—नाम सुन कर पतित पावन द्वार पर आकर पड़ा,
मैं पतित तुम पतित पावन भाग्य से मौका मिला।
देर क्यों फिर हे प्रभो मुझसे क्या अंजन था बड़ा,
देखलो क्या कहेगा जगपति जगत देखे खड़ा।
हो देहरे वाले ने ···· ··

शर—लाज कुछ मन में गहो निज दीन बन्धु नाम की।
चाहत अधम ले डूबता संग साख तेरे नाम की॥
देख यश पर आ बनो देख कर इशारा आँख का।
लाखों अधम तारे 'तुला' सम दे सहारा हाथ का॥
ओ देहरे वाले ने ····· ·· ···

भजन न० ५६ रसिया

पधारे चन्द्र प्रभू भगवान फूल गई मन की फुलवाग,
भक्ति के बिरवा हुए डह डहे लगी दया डारी।
दान धर्म फल फूल लग हैं सुन्दर सुखकारी ॥१॥
गुल गेंदा चम्पा बेला और केसर की क्यारी,
रग रग गुण फूल खिले है शोभा है न्यारी ॥२॥
ज्ञान पपीहा पीउ पीउ बोल अरु कोयल कारी,
शान्त पवन उपदेश गध ले बह रही मतवाली ॥३॥
बदल गये सारे दुख सुख मे पाप पुण्य कारी,
गूंजी 'तुला' चैन की बसी पाये बनवारी ॥४।

भजन नं० ६० (छोटी सी आबरू को नीलाम करके छोड़ा)

प्रभू आपकी दया को, इन्सान जग का फूला।
धन धाम का ये लोभी, शुभ धाम को है भूला ॥टेक।
सब पाप कर्म करके, शुद्ध आपको ये जाने,
रिश्वत द्रव्य खाके, शुभ कर्म इसको माने।

कुछ भ.व न दया का करुणा क नाम भूला ॥ १ ॥
जाने सभी हूं मैं बस, इस जग मे करने वाला,
होता न कुछ बुरा ये, गोरा लिखूं या काला।
पापी बना है इतना, करना सलाम है भूला ॥ २ ॥
तेरे बिना जहाँ में मिलती न ठौर आनी।
आया हूँ शरण तेरी, गिरधर हूँ मैं अज्ञानी।
विनती भी कर न जानूं अपना हूँ धाम भूला ॥३॥

भजन नं० ६१ (नगरी २ द्वारे २) फिल्म मदर इंडिया

पार्श्व प्रभू जी पार लगादो, मेरी ये नावरिया।
बीच भँवर में आन फसी है काटो जो सावरिया ॥टेक॥
धर्मी तारे बहुत ही तुमने, एक अधर्मी तार दो।
वीतराग है नाम तिहारा, तीन जगत हितकार हो।
अपना विरद निहारो स्वामी, काहे को बिसरिया ॥१॥
चोर भील चांडाल हैं तारे, ढील क्यों मेरी बार है,
नाग नागिनी जरत उभारे, मंत्र दिया नवकार है।
दास तिहारा सकट में है लीजो जी खबरिया ॥२॥
लोहे को जो कचन करदे, पारस नाम पखान हो,
मैं हूँ लोहा तुम प्रभू पारस क्यों न फिर कल्याण हो।
नाथ मिटा दो अब तो मेरी भव भव की घुमरिया ॥३॥
भटक रहा हूँ मैं भव सागर, आपका मुक्ति निवास है,
अपने पास बुला लो मुझको, एक ये ही अरदास है।
भूल रहा हूं नाथ बता दो शिवपुर की डगरिया ॥४

भजन नं० ६२

हे चन्द्र तुम्हारे द्वारे पर एक दर्श भिखारी आया है।
प्रभू दर्शन भिक्षा पाने को दो नयन कटोरे लाया है ।।
नहीं दुनियां में कोई मेरा है आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभू एक सहारा तेरा है जग ने मुझको ठुकराया है।
धन दौलत की कुछ चाह नहीं घरबार लुटे परवाह नहीं।
मेरी इच्छा है तेरे दर्शन की दर्शन को चित्त अकुलाया है ।।
मेरी बीच भंवर में नय्या है बस तू ही एक खिवैया है ।।
लाखों को ज्ञान सिखा तूने भवसिंधू से पार उतारा है।
आपस में प्रीत व प्रेम नहीं अब तुम बिन हमको चैन नहीं ।।
अब तो तुम आकर दर्शन दो त्रिलोकी नाथ घबराया है।
जिनधर्म फैलानेको भगवन कर दिया है तन मन धन सब अर्पण
नव युवक मण्डल को अपनाओ सेवा का भार उठाया है ।।

भजन नं० ६३ (तर्ज—कव्वाली)

क्यों न अब तक हमारी सुनाई हुई।
जबकि चरणों से है लौ लगाई हुई ।। टेक
तेरे चरणों से जिसने लगाई लगन।
पार भव से किया आनन्द घन ।।
क्यों न हम पर प्रभू रहनुमाई हुई ।। क्यों०
सेठ के पुत्र को सर्प ने था डसा,
उसके मनमें तो भगवान तेरा ध्यान था।
तेरे मन्दिर में विष की सफाई हुई ।। क्यों०
हुक्म राजा ने सूली का जब था दिया,
तब सुदर्शन ने वह हुक्म सर धर लिया।
सब के दिल पर घटा गम की छाई हुई ।। क्यों०
सूली देने का सामान तैयार था,

उसके मन में तो केवल तेरा ध्यान था।
फिर तो सूली से उसकी रिहाई हुई ॥ क्यों०
प्रेम चरणों से तेरे लगाया हुआ,
तेरा 'चन्द्र' मेरे दिल में समाया हुआ।
तेरे दर्शन से सब की भलाई हुई ॥ क्यों०

भजन नं० ६४ (तर्ज-मेरे वतन से अच्छा कोई वतन नहीं है)

मेरे प्रभू से सुन्दर कोई रतन नहीं है
देहरे का नाथ जैसा आनन्द घन नहीं है।
ये चांद है कलंकित जिस रूप को निरख कर
होता है क्षीण निशदिन भ्रमता हुआ जगन पर
श्री चन्द्र के बदन सम कोई वदन नहीं है ॥ १
जलता है सूर्य दिन में ईर्षा अनल से आकर
लज्जित हो चला जाता सध्या को मुंह छिपाकर
सूरज हुआ मलिन है चन्दा मलिन नहीं है।
नहीं राग द्वेष मन में, निर्मल है नाम जग में।
सर्वज्ञ वीतरागी तुम हो स्वरूप सब में।
हो ध्यान में मगन बस कोई लगन नहीं है ॥३॥
इस रूप पर निछावर रवि चन्द्र और तारे
वारू मैं अपना तन मन तुम पर हे चन्द्र प्यारे
रख हाथ दो 'तुला' पर फिर कोई गम नहीं है ॥४॥

भजन नं० ६५ (तर्ज-भगवान दो घड़ी जरा इन्सान बनके देख

मन मूर्ख जरा चन्द्र का तू ध्यान धर के देख।
संसार के पिता को पहिचान करके देख
होकर निराश आश में गोते लगा रहा
क्यों एक बूंद मधु के धोखे में आ रहा

फंदा पड़ा है काल का तेरे गले में देख ॥
जीवन का क्या भरोसा पानी का बुलबुला
कच्चा घड़ा है तन ये पानी पड़ा गला
रोयेगा हाथ मल मल अवसर के गये देख ॥
मंजिल है अभी दूर तू सामान जुटा ले ।
देगा जवाब क्या 'तुला' कुछ पुण्य कमाले ।
लेवेंगे छुड़ा 'चन्द्र' को अपना बना के देख । ।संसार के पिता०

भजन नं० ६६ (राग असावरी)

बिन तेरे दर्श लगे न जियरा ।
तड़पत रहत मीन ज्यों जल बिनु,
चन्द्र बिना ज्यों दुखित चकोरी ।
दूर रहत भर आवत हियरा ॥बिन तोरे दर्श…
एक दिन मिलन विरह पुनि छः दिन
जात चली आयू नित मोरी
आवागमन मिटाओ न पियरा ॥ बिन तोरे दर्श
रह्यो चहत नित चरणन ही में,
विनती करत 'तुला' कर जोरी ।
चरण कमल का बनकर भँवरा ॥ बिन तोरे दर्श…

भजन नं० ६७ कोई रोके उसे और यह कह दे कुछ अपनी०

वर चन्द्र बदन, गुण रूप सदन कैसे तेरे गुण गाऊँ मैं ।
पूछे जब जग तेरा परिचय बतला कैसे समझाऊँ मैं ॥
बतलाता हूँ कल्प वृक्ष डरता हूं उसकी जड़ता से ।
केवलज्ञानी हो तुम निर्मल फिर कैसे जड़ बतलाऊँ मैं ॥१॥
कहता हूँ कामधेनु यदि मैं लेकिन वह योनि पशु की है ।
देवाधि देव हे जगत्पिता पशु तुमको क्यों कह पाऊँ मैं ॥२॥

उपमा दूँ चन्द्रकान्त मणि से पत्थर उसको बतलाते हैं।
तुम हो कृपालु करुणा सागर कमला कैसे कर पाऊँ मैं ॥३॥
उपमायें सारी झूठी हैं तेरे समान बस तू ही है।
यह 'तुला' खड़ा कर रहा विनय कैसे चरणन चित लाऊँ मैं ॥४

भजन नं० ६८ (मेरा सुन्दर सपना बीत) चन्दना सती की पुकार

मेरा दुख में जीवन बीत गया।
तकदीर से सब कुछ हार गई खुशियों का जमाना बीत गया। मेरा०
जब आश पिता की टूट गई, माता की गोद भी छूट गई।
बचपन का जमाना खतम हुआ, दुर्भाग्य हमारा जीत गया ॥मेरा ..
ओऽऽऽदेवगति से यहाँ आई, और सेठ की पुत्री कहलाई।
फिर कारागृह में पड़ी रही, रो रो के समय सब बीत गया ॥ मेरा ..
अब वीर दर्श की आश लगी आतम हित की है चाह जगी।
अब आओ वीर, अब आओ वीर 'दासी' को दर्श दीजे वीर,
आने का समय क्यों बीत रहा ॥मेरा दुख में जीवन बीत गया ..

आरती (महिलाओं की) नं० ६९

चन्द्र के मन्दिरवा में दीपक जोड़ आई
बाबा के मन्दिरवा में दीपक जोड़ आई
काहे का दीपक काहे की बाती काहे की जोत जलाय आई
चन्द्र के मन्दिरवा में
ज्ञान का दीपक प्रेम की बाती भाव की जोत जलाय आई
चन्द्र के मन्दिरवा मे ..
सेवक की अरदास यही है स्वामी चरण शरण बलि जाऊं
चरणों में शीश झुकाऊं नित उठ चन्द्र दर्श पाऊं।
चन्द्र के मन्दिरवा में बाबा के.........

भजन नं० ७०

चन्द्र प्रभू जी के दर्शन बिन अब मुझसे नेक रह्यो न जाय।
चन्द्रप्रभूजी के दर्शन बिन अब मुझसे नेक रह्यो न जाय।
जिनवर दर्शन बिन अब तेरे मुझसे नेक रह्यो न जाय।
आन देव जितने भी देखे राग द्वेष उन सबको पेखे
कार्य बने नहीं कोई मेरे व्यर्थ रह्यो दुख पाय ॥जी०
जिनवर तुम हो अन्तरयामी, सब देवों में हो सरनामी।
इन्द्र नरेन्द्र सुरा सुर तेरी, रहे बड़ाई गाय ॥जी०
दर्शन दे मम पाप घटाओ, जन्म-मरण की दाह मिटाओ।
हो अज्ञानी कर मन मानी भूल रह्यो शिवराय।जी०
हार थक्यो तेरे ढिंग आयो, आसा पूरी मन में लायो।
करके सत उपदेश जिनेश्वर, दे सौभाग्य मिलाय ॥ जीन०

भजन ७१ लकड़ी का

जीते लकड़ी मरते लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का।
दुनियाँ वालो तुम्हें दिखायें, ये जगपाशा लकड़ी का।
जिस दिन तेरा जन्म हुआ था, पलंग बिछा था लकड़ी का।
तुझे पालने को मगवाया, एक पालना लकड़ी का ॥
तुझे खेलने को बनवाया, एक गढिलना लकड़ी का।
गलियों में जब गया खेलने, लेकर गुल्ली डंडा लकड़ी का।
गया पाठशाला पढ़ने जब, तख्ती कलम था लकड़ी का।
तुझे पढ़ाने को शिक्षक ने, भय दिखलाया लकड़ी का ॥
पढ़ लिखकर जब ब्याहन चाला, रेल का डिब्बा लकड़ी का।
सासूजी के दरवाजे पर, तोरण और पटड़ा था लकड़ी का ॥
फेरों का जो मंढा गड़ा था बना हुआ था लकड़ी का।

गृहस्थ बनकर घर पर आया, फिकर हुआ फिर नून तेल व लकड़ी का
बूढ़ा हुआ जब अरे तू निर्मल, लिया हाथ लठ्ठ लकड़ी का।
अरथी भी तेरी लकड़ी की और चिता बनी थी लकड़ी का॥

भजन नं० ७२

नर तेरा चोला रतन अमोला वृथा खोवे मती ना
भक्ति कोई न करी ईश्वर की, सुध बुध भूल गया उस घर की
नींद में सोवे मती ना॥ नर०

जो पहले की करनी सारी होय यहाँ पर भरनी।
ऐसे कथ गये वेद और धरनी गाफिल होवे मती ना॥नर०
हो गये साधु सन्त फक्कड़ में पड़ गये माया के चक्कर में।
किश्ती आन लगी टक्कर में इसे डुबोवे मती ना॥नर०
बद्दी कमर बाँध हो तगड़ा छोड़ो झूंठ जगत का झगड़ा।
सीधा मुक्ति का दगड़ा, कायर होवे मती ना॥नर०

भजन नं०७३ (मेरा सुन्दर सपना बीत गया) चंदना पुकार

मेरा दुख में जीवन बीत गया, तकदीर से सब कुछ हार गई।
खुशियों का जमाना बीत गया · मेरा ··
जब आश पिता की टूट गई, और माता की गोद भी छूट गई।
बचपन का जमाना खत्म हुआ, दुर्भाग्य हमारा जीत गया॥ मेरा०
ओऽऽऽदेवगति से यहाँ आई, और सेठ की पुत्री कहलाई।
फिर कारागृह में पड़ी रही, पड़ी रही, फिर कारागृह मे पड़ी रही।
रो रो के समय सब बीत गया। मेरा दुख ·····
अब वीर दर्श की आग लगी, आत्म हित की है चाह जगी।
अब आओ वीर, अब आओ वीर, दासी को दर्शन दीजे वीर
आने का समय क्यों बीत गया॥ मेरा दुख·· ····

भजन नं ७४ (आओ बच्चों तुम्हें) जागृति
आओ मिल सब जय बोलो श्री चन्द्रप्रभू भगवान की।
आज फूल उठती है छाती सुनते ही यशगान की॥ बन्दे चन्द्रवर…
ये देखो अलवर की लाली चमकी जो कि जहान में
उत्तर दिश में ग्राम यिजारा चमका हिन्दुस्तान में
चमत्कार दिखलाया है यहाँ चंद्रप्रभू भगवान ने
श्रावण सुदी दशमी को प्रगटे देहरे के उद्यान में
प्रकट भूमि है यही हमारे चंद्रप्रभू भगवान् की।
आज फूल उठती है छाती सुनते ही यश गान की।
फाल्गुण की उजियाली षष्टम बीती रात जब
देवों ने प्रातः ही आकर रत्न प्रदीप जलाए तब
आज चन्द्र के अतिशय को है माना सब संसार ने
जिनके चमत्कार की महिमा गाई हर इन्सान न
वार्षिक उत्सव देहरे पर होता खुशी हुई निर्वाण की॥आज०
तुमरे ही सब गुण को सुनकर यात्री दूर से आते हैं
तेरे दर पर आकर अपना कष्ट भगा कर जाते हैं।
बहुत से दुखद रागियों की भी करुण कहानी है।
ठीक हो गये सभी जिन्होंने भक्ति चंद्र की ठानी है
एक बार सब भक्ति कीजे चंद्र प्रभू भगवान् की॥आज०
तुमरे ही मारग पर चलकर समन्तभद्र ने ध्यान किया।
सत्य धर्म पर कायम रह कर जैनधर्म प्रचार किया
नमस्कार से शिव पिण्डी फाड़कर तुमने सबको दर्श दिया।
पार उतर गये सभी जिन्होंने तुमको आन पुकारा है।
तू भी 'रमेश' चरण शरण ले बातें तज संसार की।

शिवजी मुद्रणालय, देहली।

आरती श्री चन्द्रप्रभु

म्हारा चन्द्रप्रभूजी की सुन्दर मूरत म्हारें मन भाई जी ॥ टेक
सावन सुदी दशमी तिथि आई, प्रकटे त्रिभुवन राई जी। म्हारे०
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, दरशे देहरे माहि जी ॥ म्हारे०
सीता सती ने तुमको ध्याया, अग्नि में कमल रचाया जी ॥ म्हारे
मैनां सती ने तुमको ध्याया, पति का कुष्ट हटाया जी ॥ म्हारे०
जिनमें भूत प्रेत नित आते, उनका साथ छुड़ाया जी ॥ म्हारे०
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनाया जी ॥ म्हारे०
मानतुङ्ग मुनिने तुमको ध्याया, तालों को तोड़ भगाया जी ॥ म्हारे
जो भी दुखिया दर पर आया, उसका कष्ट मिटाया जी ॥ म्हारे०
अंजन चोर ने तुमको ध्याया, सूली से अधर उठाया जी ॥ म्हारे
तनोशरण में जो कोई आया, उसको पार लगाया जी ॥ म्हारे०
सेठ सुदर्शन तुमको ध्याया, सूली से उसे बचाया जी । म्हारे०
ठाडो सेवक अर्ज करै छै, जामन मरण मिटाओ जी ॥ म्हारे०
"नवयुग" मंडल तुमको ध्यावे, बेड़ा पार लगाओजी । म्हारे०

आरती श्री चन्द्रप्रभु

जय चन्द्र प्रभु देवा, स्वामी जय चन्द्र प्रभु देवा ।
तुम हो विघ्न विनाशक, पार करो सेवा ॥
मात सुलक्षणा पिता तुम्हारे महासेन देवा ।
चन्द्रपुरी में जनम लियो, स्वामी हो देवों के देवा ॥ जय०
जन्मोत्सव पर प्रभु तिहारे, सुर नर हरषाये ।
रूप तिहारा महा मनोहर, सब ही को भाये ॥ जय०
बाल्यकाल में ही प्रभु तुमने, दीक्षा ली प्यारी ।
भेष दिगम्बर धारा तुमने, महिमा है न्यारी ॥ जय०

फाल्गुण बदी सप्तमी को प्रभु, केवलज्ञान हुआ।
खुद जीओ, जीने दो सबको, यह सन्देश दिया॥ जय०
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, देहरे में प्रगटे।
मूर्ति तिहारी अपने नैनन निरख निरख हर्षे॥ जय०
"शिवचन्द" प्रभु दास तिहारा, निश दिन गुण गावे।
पाप-तिमिर को दूर करो प्रभु, सुख शान्ति आवे॥
मेटो भव भव वासा, पार करो देवा॥ जय०

श्री महावीर स्वामी की आरती

ॐ जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा।
वर्द्धमान महावीर वीर अति, जय संकट छेवा॥ टेक॥
सिद्धारथ नृप नन्द दुलारे, त्रिशला के जाये।
कुण्डलपुर अवतार लिया, प्रभु सुर नर हर्षाये॥ ॐ जय०
देव इन्द्र जन्माभिषेक कर, उर प्रमोद भरिया।
रूप आपका लख नहीं पाये, सहस आँख धरिया॥ ॐ जय०
जल में भिन्न कमल ज्यों रहिये, घर में बाल यती।
राजपाट ऐश्वर्य छांड सब, ममता मोह हती॥ ॐ जय०
बारह वर्ष छद्मस्थ रूप में, आतम ध्यान किया।
घातिकर्म चकचूर चूर, प्रभु केवलज्ञान लिया॥ ॐ जय०
पावापुर के बीच सरोवर, आकर योग कसे।
हने अघातिया कर्म शत्रु सब, शिवपुर जाय बसे॥ ॐ जय०
भूमंडल के चाँदनपुर में, मन्दिर मध्य लसें।
शान्त जिनेश्वर मूर्ति आपकी, दर्शन पाप नसें॥ ॐ जय०
जन्मादुखी और कपूरी, आकर शरण गही।
दीनदयाला जग प्रतिपाला, आनन्द भरण तुही॥ ॐ जय०

अंगूर



प्रकाशक
दिगम्बर जैन समाज
धूलियागंज, आगरा।

अन्तरङ्ग

'A good mother is better than hundred teachers'

एक सुशिक्षित, सभ्य, सदाचारिणी एवं धर्मपरायण माता अपनी सन्तान को जैसा सुसंस्कारसम्पन्न, धीर, वीर तथा चारित्र-मणि बना सकती है वैसे सौ अध्यापक भी नही कर सकते। अतः माता ही बालक के लिए प्रथम आदर्श शिक्षिका है क्योंकि बालक का अधिक समय जननी के पास ही व्यतीत होता है। अतः देश, धर्म और जाति के अभ्युत्थान के लिए उन्हे सर्वांगीण-उदात्त-सम्पदाओ मे विभूषित करना और धर्म के प्रति अटूट आस्थावान् बनाना माताओं पर ही निर्भर करता है। केवल बालक को जन्म देने मात्र से माँ **'माँ'** नही कहला सकती। आचार्य श्री कुन्दकुन्द आचार्य श्री समन्तभद्र, श्री अकलंकदेव, समाधिसम्राट् श्री शान्तिसागर एवं श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी जैसे लोकवन्दित पूज्यजन अद्वितीय महात्मा बन सके यह सब माँ के संस्कारो का ही सुफल है। इस संक्रमण काल मे माताएँ अपने इस आद्य कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहे यह अत्यन्त आवश्यक पवित्र कर्त्तव्य है।

—**विद्यानन्द मुनि**

णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताण ।
णमो सिद्धाणं ।
णमो आयरियाण ।
णमो उवज्झायाण ।
णमो लोए सव्वसाहूण ।

मगलोत्तमशरण पाठ

चत्तारि मगलं ।
अरिहंता मगलं । सिद्धा मगल । साहू मगल ।
केवलिपण्णत्तो धम्मो मगल ।

चत्तारि लोगुत्तमा ।
अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा ।
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।

चत्तारि सरण पव्वजामि ।
अरिहंते सरणं पव्वजामि ।
सिद्धे सरण पव्वजामि ।
साहू सरण पव्वजामि ।
केवलिपण्णत्तं धम्म सरणं पव्वजामि ।

पं० दौलतरामजी कृत

दर्शन स्तुति

दोहा

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन ।
सो जिनेंद्र जयवंत नित, अरिरजरहस विहीन ॥ १ ॥

पद्धरि छन्द

जय वीतराग विज्ञानपूर ।
जय मोहतिमिर को हरन सूर ॥
जय ज्ञान अनंतानंत धार ।
दृगसुख वीरजमंडित अपार ॥ २ ॥

जय परमशांत मुद्रा समेत ।
भवि जनको निज अनुभूति हेत ॥
भवि भागन वशजोगेवशाय ।
तुम धुन ह्वै सुनि विभ्रम नशाय ॥ ३ ॥

तुम गुण चिंतत निजपर विवेक ।
प्रगटै विघटैं आपद अनेक ॥
तुम जगभूषण दूषणवियुक्त ।
सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त ॥ ४ ॥

अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप ।
परमात्म परम पावन अनूप ॥
शुभअशुभ विभाव अभाव कीन ।
स्वाभाविक परिणति मय अछीन ॥ ५ ॥

अष्टादश दोष विमुक्त धीर।
सुचतुष्टयमय राजत गभीर ।।
मुनिगणधरादि सेवत महत।
नव केवल लब्धिरमा धरत ।। ६ ।।
तुम शासन सेय अमेय जीव।
शिव गये जाहि जैहै सदीव ।।
भवसागर मे दुख छार वारि।
तारन को और न आप टारि ।। ७ ।।
यह लखि निज दुखगद हरणकाज।
तुमही निमित्त कारण इलाज ।।
जाने तातै मै शरण आय।
उचरो निज दुख जो चर लहाय ।। ८ ।।
मै भ्रम्यो अपनपो विसरि आप।
अपनाये विधि फल पुण्य पाप ।।
निजको परको करता पिछान।
पर में अनिष्टता इष्ट ठान ।। ९ ।।
आकुलित भयो अज्ञान धारि।
ज्यो मृग मृगतृष्णा जानि बारि ।।
तन परणति मे आपो चितार।
कबहूँ न अनुभवो स्वपदसार ।।१०।।
तुमको विन जाने जो कलेश।
पाये सो तुम जानत जिनेश ।।
पशु नारक नर सुरगति मँझार।
भव धर धर मर्यो अनंत वार ।।११।।
अब काल लब्धि बलतै दयाल।
तुम दर्शन पाय भयो खुशाल ।।

मन शान्त भयो मिटि सकल द्वंद।
चाख्यो स्वातमरस दुख निकंद ॥१२॥
तातै अब ऐसी करहु नाथ।
बिछुरै न कभी तुव चरण साथ॥
तुम गुणगणको नहिं छेव देव।
जग तारन को तुव विरद एव ॥१३॥
आतम के अहित विषय कषाय।
इनमें मेरी परिणति न जाय॥
मैं रहूँ आपमे आप लीन।
सो करो होंऊँ ज्यों निजाधीन ॥१४॥
मेरे न चाह कछु और ईश।
रत्नत्रयनिधि दीजे मुनीश॥
मुझ कारज के कारन सु आप।
शिव करहु हरहु मम मोहताप ॥१५॥
शशि शांतिकरन तपहरन हेत।
स्वयंमेव तथा तुम कुशल देत॥
पीवत पीयूष ज्यो रोग जाय।
त्यो तुम अनुभवतै भव नशाय ॥१६॥
त्रिभुवन तिहुँकाल मँझार कोय।
नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय॥
मो उर यह निश्चय भयो आज।
दुख जलधि उतारन तुम जहाज ॥१७॥

दोहा

तुम गुणगणमणि गणपति, गणत न पावहिं पार।
'दौल' स्वल्पमति किम कहै, नमूं त्रियोगसंभार ॥१८॥

श्री भगवान् पार्श्वनाथ की स्तुति

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण ।
पारस प्यारा, मेटो मेटो जी संकट हमारा ॥टेक॥
निशदिन तुझको जपूं, पर से नेहा तजूं ।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा ॥१॥
अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे ।
सबसे नेहा तोड़ा जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा ॥२॥
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये ।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावें कदा, सेवक थारा ॥३॥
जग के दुख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है ।
मेटो जामन-मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा ॥४॥
लाखोंवार तुम्हें शीश नवाऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ ।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया, लागे खारा ॥५॥

श्री बाहुबली स्तुति (कन्नड)

बाहुबली स्वामी जगके नीं स्वामी ।
शान्तिय-मूरुति ये नमिपेवु अनुदिनवु ॥टेक॥
आदिनाथ—कुंवरा भरतन सोदरा ।
मोदरनगे द्देयल्ला राजवन्नु कोट्टे यल्ला ॥१॥
नाडे नो किरियव आदेनी हिरियव ।
विवेक निन्ददागे ताल्मेय बालागे ॥२॥
शान्तिय वदना, कान्तिय निलवु ।
विश्व के आदर्शा निन्नय दर्शनवु ॥३॥
बुलगुल राजा, अगणित—तेजा ।
अरलिद कमलगला, निन्तय पद-युगला ॥४॥

पूरव भोग न चितवै, आगम वांछै नाहिं।
चहुँगति के दुःख सों डरै,सुरति लगी शिवमांहिं ।।ते गुरु०।।

रंगमहल में पौढते, कोमल सेज बिछाय।
ते अब पिछली रयनि में, सोवैं संवरि काय ।।ते गुरु०।।

गज चढि चलते गरवसो, सेना सजि चतुरंग।
निरखि निरखि पग वे धरै, पालै करुणा अंग ।।ते गुरु०।।

वे गुरु चरण जहाँ धरैं, जग में तीरथ जेह।
सो रज मम मस्तक चढ़ो, भूधर मांगे एह ।।ते गुरु०।।

भजन

भेष दिगम्बर धार—तू खुशहाली का ।
मजा कहा नही जाये इस कंगाली का ।।टेक।।

बच्चा हो या बच्ची उसे निंदिया आये अच्छी,
पास न होवे लगोटी उसे चिन्ता हो फिर किसकी ।
न भय रखवाली का ।।१।।

छोडे जो परिवारा नही हो ममता उसे धन की,
तजे परिग्रह सारा फिर चाह मिटे सब मनकी ।
न फिकर घरवाली का ।।२।।

धन्य दिगम्बर साधु, नग्न हैं वन में रहते,
खडे-खडे इकवारा हाथ में भोजन करते ।
काम क्या थाली का ।।३।।

तज के सारी दुविधा, जो निज आतम ध्यावे,
धन्य जन्म है उनका वो 'शिव' आनन्द को पावे ।
मुकतपुर वाली का ।।४।।

जिन भजन

दयालु प्रभु से दया माँगते है ।
अपने दु:खो की हम दवा माँगते है ।।टेक।।

नही हम-सा कोई अधम और पापी ।
मत कर्म हमने ना किये है कदापी ।।

किये नाथ हमने है अपराध भारी ।
उनकी हृदय से हम क्षमा माँगते हैं ।।

प्रभु तेरी भक्ति मे मन यह मगन हो।
निजानम चिनन की हर दम लगन हो।।

मिले सन सगम करे आत्मचिन्तन ।
वरदान भगवान ये सदा माँगते है ।।

दुनियाँ के भोगो की ना कुछ कामना है।
स्वर्ग के सुखो को ना कुछ चाहना है ।।

यही एक आशा है,बन जायें तुम-से ।
'शिवराम' पैसा ना टका माँगते हैं ।।

श्मशान

पल-पल जलता है शमशान ।।टेक।।
हँस-हँस जलती रोज चितायें,
हरा भरा ससार जलाये,
मिटती कितनों की आशाये,
घर होते सुनसान ।।पल०।।१।।

राजा और भिखारी मिलकर,
राख हुए दोनों जल जलकर,
मौन हड्डियाँ कहती हँसकर,
है सब एक समान ।।पल०।।२।।

इन अगारो की शैय्या पर,
सोया कोई पाँव फैलाकर,
इसे जगाकर क्या पूछेगा,
दो दिन का मेहमान ।।पल०।।३।।

टूट गई पापो की माला,
बुझ गई लाखो जीवन ज्वाला,
फिर भी खाली प्याला लेकर,
मौत माँगती दान ।।पल०।।४।।

हाय बाप बेटे को लाया,
माँ ने अपना लाल गँवाया,
दुल्हन ने वर जलता पाया,
है यह नींद महान ।।पल०।।५।।

जिनभक्ति (भजन)

श्री जिनदेव के चरणो में तेरा ध्यान हो जाता,
तो इस संसार सागर से तेरा कल्याण हो जाता ।।टेक।।

न वढ़ती कर्म वीमारी,
न होती जगत में ख्वारी ।
जमाना पूजता सारा,
गले का हार हो जाता ।।
श्री जिनदेव के चरणो मे तेरा ध्यान हो जाता ।।१।।

परेशानी व हैरानी,
दफा हो जाती मस्तानी ।
धर्म का प्याला पी लेता,
तो बेडा पार हो जाता ।
श्री जिनदेव के चरणो मे तेरा ध्यान हो जाता ।।२।।

रोशनी ज्ञान की खिलती,
दिवाली दिल मे हो जाती ।
हृदय मदिर मे भगवान का,
तुझे दीदार हो जाता ।।
श्री जिनदेव के चरणो मे तेरा ध्यान हो जाता ।।३।।

जमी पर बिस्तरा होता,
तो चादर आसमाँ बनती ।
मोक्ष गद्दी पर फिर प्यारे,
तेरा घरबार होजाता ।।
श्री जिनदेव के चरणो मे तेरा ध्यान हो जाता ।।४।।

लगाते देवता तेरे,
चरणकी धूलिमस्तक पर।
अगर भगवान की भक्ती में,
तेरा दिल लीन हो जाता ।।
श्री जिनदेव के चरणो मे तेरा ध्यान हो जाता ।।५।।

भक्त जपता अगर माला,
प्रभु की एक भक्ती से।
तो तेरा घर भी भक्तों के–
लिए दरबार हो जाता ।।
श्री जिनदेव के चरणो मे तेरा ध्यान हो जाता ।।६।।

भजन

अब हम अमर भये न मरेंगे।
या कारन मिथ्यात दियो तज क्यो कर देह धरेंगे।

(१)

राग द्वेष जगबन्ध करत है, इनका नाश करेंगे।
मर्‍यो अनन्त काल ते प्राणी सो हम काल हरेंगे।।

(२)

देह विनाशी हम अविनाशी अपनी गति पकरेंगे।
नाशी जासी, हम थिरवासी चोखे हो निखरेंगे।

(३)

मर्‍यो अनन्त बार बिन समुझे अब दुःख सुख बिसरेंगे।
'आनन्दघन' 'जिन' ये दो अक्षर नहि सुमरे सो मरेंगे।।

दुःख और सुख

दुख भी मानव की सम्पत्ति है, तू क्यो दुख से घबराता है।
दुख आया है तो जावेगा,
सुख आया है तो जावेगा।
दुख जावेगा तो सुख देकर,
सुख जावेगा तो दुख देकर।
सुख देकर जाने वाले से रे मानव, क्यों भय खाता है।
सुख में है व्यसन प्रमाद भरे,
दुख मे पुरुषार्थ चमकता है।
दुखकी ज्वाला मे पड़ कर ही,
कुन्दन सा तेज दमकता है।
सुख मे सब भूले रहते हैं, दुख सबको याद दिलाता है।
सुखसन्ध्याका वहलाल क्षितिज,
जिस के पश्चात् अन्धेरा है।
दु:ख प्रातः का झुटपुटा समय,
जिस के पश्चात् सवेरा है।
दुखका अभ्यासी मानव ही, सुख पर अधिकार जमाता है।
दुखके सम्मुख जो सिहर उठे,
उनको इतिहास न जान सका।
जो दुख में कर्मठ धीर रहे,
उनको ही जग पहचान सका।
दुख एक कसौटी है जिस पर, यह मानव परखा जाता है।

चारित्र ईश्वरीय रूप है

ईश्वरीय रूप की परिकल्पना करनेवालों ने उसे सत्य के रूप मे देखा, अहिंसा के रूप में उसकी निरुक्ति की। कितनों ने उसे विश्वप्रेम में पाया और बहुतों ने आत्मा के त्रिविध सम्यक्त्व में उसके विभनिपाद का दर्शन किया है। सत्य-अहिंसा, विश्वप्रेम और आत्मा का त्रिविध सम्यक्त्व व्यक्ति के विशुद्ध चारित्र मे समाहित हैं। एतावता चरित्रवान् व्यक्ति ईश्वरत्व के समीप है। अत निर्मल चारित्र ईश्वरीय रूप है।

—विद्यानन्द मुनि

CHARACTER IS GOD

Those who believe in God, see Him in truth feel Him in Ahimsa Some others find Him in patriotic spirit while others experience Him in 3 principal qualities of soul i e Right Faith, Right Knowledge and Right Conduct

All the above experiences are in fact the real face of God. All such persons are near to God

In fact good conduct is God

मुद्रक   जनता प्रेस, आगरा। फोन . ३६६०

लूट न जाये कर्म लुटेरे मुझको यह है डर,
मैं अकेला यह जग लुटेरा तुम से ही लगा है दिल,
आये हैं शरण तुम्हारे मिटा दे दुख सारे—
कि एक दिन जाना है ॥२॥
डोले नयना प्रभुजी के द्वारे दर्शन की है धुन,
सेवक तेरा तुझको पुकारे विनती मेरी सुन,
भजन करें हम सारे लगादे भव तारे—
कि एक दिन जाना है ॥३॥

भजन ८

(वीर जयन्ती)

(तर्ज—मुहब्बत में ऐसे कदम डगमगाए—फिल्म [illegible])

प्रभु वीर की हम जयन्ती मनाएँ, ॥
समन्देश उनका जगत को सुनाएँ ॥ टेक ॥
प्रभु वीर का हम [illegible] उपकार भारी, है उपकार भारी ॥
कृतघ्न बनें जो उन को भुलाएँ ॥ १ ॥
से हिंसा हटाई प्रभु ने, हटाई प्रभु ने ॥
सजन्तुम सारे [illegible] [illegible] ॥ २ ॥
सभी आत्माओं को समझो बराबर, समझो [illegible] ॥
यही पाठ समता सभी को पढ़ाएँ ॥ ३ ॥
नहीं पाप हिंसा से बढ़ कर के कोई, न [illegible] के कोई
अहिंसा का दुनिया में [illegible] बजाएँ ॥ ४ ॥
अनेकान्त तत्व है जग से निराला, है जग से निराला

इसी से ये झगडे मतों के मिटाए ॥ ५ ॥

तेरी आत्मा ये परमात्मा है ये परमात्मा है

करम काट करके शिव आनन्द पाएँ ॥ ६ ॥

भजन ६

(चाल—राजा की आएगा बरात रंगीली होगी रात—फिल्म आह)

सखी री मेरे भरतार गये जो गिरनार जगत म त्याग गी ।टेक।।

शौरीपुर से ब्याहन आए प्रभु जी नेम कुमार

तोरन पे रथ पर सिधारा जाव न्या चित धार

मौन मन्न उगार कर दीना लिया डार ॥ १ ॥ जगत में

कस धीरज धरूं मैं सखियां नौ भव का मारा प्रीत

झूठा जग रा न प्रीत भया अपनी जग की रीत

म मारा ससार ॥ २ । जगत म

मत ना माग भरा मन्ना , राखा न माथ सिन्दूर

भर पिया न दीक्षा धरा है म भी लूंगा जरूर

मेरे माथ का सिंगार त्यागे गले का यह हार ॥ ३ । जगत में

दूसरे जगत की मेरी री सखियो छोड़ा न चंचा भी

करो जी त्यार कमंडल पीछी सार ॥ ४ । जगत म

धन्य २ तू राजल देवी त्याग दिया संसार

जग हितकारी संयम धारा ममता मोह निवार

किया है तप सार सुर गति शिव कार ॥ ५ ॥ जगत

भजन १०

(चाल—तदबीर से बिगड़ी हुई तकदीर बनाले—फिल्म

बाजी) अपने वीर की तसवीर बसा ले ।

...ति से तू बिगड़ी हुई, तकदीर बना ले ॥ टेक
...री निराली मूर्त्ति है, देखो तो ध्यान की
इस ध्यान से तू कर्म जंजीर कटाले ॥ १ ॥
संसार के आताप से सन्तप्त है अगर
तो वीर नाम की दवा, अकसीर लगाले ॥ २ ॥
'शिवराम' एक वीर ही आदर्श वैद्य है
उसकी शरण में आन कर, भवपीर मिटाले ॥ ३ ॥

भजन ११

(चाल-घर आया मेरा परदेशी आ आ आ-फिल्म आवारा)
चाह मुझे है दर्शन की, वीर के चरण स्पर्शन की ॥ टेक
वीतराग छवि प्यारी है जग जन की मनहारी है
मूरति मेरे भगवान की ॥ १ ॥
हाथ पै हाथ धरा ऐसे, करना कुछ न रहा जैसे
देख दशा पद्मासन की ॥ २ ॥
कुछ भी नहीं सिंगार किए, हाथ नहीं हथियार लिए,
फौज भगाई कर्मन की ॥ ३ ॥
समता पाठ पढ़ाती है, ध्यान की याद दिलाती है,
नाशा दृष्टि लखो इनकी ॥ ४ ॥
जो शीव आनन्द चाहो तुम, इनका ध्यान लगाओ तुम,
विपत हरे भव भटकन की ॥ ५ ॥

भजन १२

(चाल—मान मेरा एहसान अरे नादान—फि...
मान अरे नादान अरा कर ध्यान जगत में जीना है दिन ...

दौलत न चले ये साथ तेरे सब ठाठ पड़ा रह जायेगा,
दिन रात है करता प्यार जिसे ये तन भी न साथ निभायेगा,
मात पिता परिवार तेरे सुत नार न आवे काम ये देख विचार ॥१॥
क्या मान करे नादान अरे बुलबुला है जीवन ये जल का,
क्यों पाप की पोट धरे सिर पै सामान सफर करले हलका,
तू करले अब वह काम तेरा जो नाम हमेशा याद करे संसार ॥२॥
कर मदद गरीब यतीमों की उपकार मे धन ये लगा देना,
निज देश जाति की रक्षा पै यह जान भी अपनी लडा देना,
अपना धर्म सँभाल है सर पर काल,अरे शिवराम तू हो हुशियार॥३॥

भजन १३

(चाल–चन्दा की चांदनी में झूमे झूमे दिल, मेरा–फिल्म पूनम)

रत्नो के पालन मे झूले झूले प्रभु मेरा ॥टेक॥

स्वर्गो से इन्द्र आए मेरु नहला के लाए,
प्रभु का सिंगार करके पिता के द्वार लाए ॥ १ ॥
इन्द्र हो नटवा नाचे ताण्डव सुनाके नाचे,
बाजे अपार बाजे भक्ती में देव नाचे ॥ २ ॥
अद्भुत बनाया पलना झूले सिद्धार्थ ललना,
झूमे है नर नारी दर्श की इन्हें कल ना ॥ ३ ॥
आओ शिवराम आओ मंगल सुगीत गाओ,
पुन्य भंडार भरो नर भव का फल पाओ ॥ ४ ॥

भजन १४

ॐ जय जय वीर प्रभो ।
शरणागत के संकट भगवन क्षण में दूर करो ॥

त्रिशला उर अवतार लिया प्रभु सुर नर हर्षाए ।
पन्द्रह मास रतन कुण्डलपुर धनपति वर्षाए ॥
शुकल त्रयोदशी, चैत्र मास की आनन्द करतारी ।
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव ठाट रचे भारी ॥
तीस वर्ष लों रहे महल में बाल ब्रह्मचारी ।
राज त्यागकर यौवन में ही मुनि दीक्षा धारी ॥
द्वादश वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया ।
झलके लोकालोक ज्ञान में सुख भरपूर लिया ॥
कार्तिक श्याम अमावस के दिन प्रात: मोक्ष चले ।
पर्व दिवाली चला जभी से घर-घर दीप जले ॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी शिव मग परकाशी ।
हरि हर ब्रह्मा नाथ तुम्ही हो जय-जय अविनाशी ॥
दीन दयाल जग प्रतिपाला सुर नर नाथ जपें ।
सुमरत विघन टारे इक छिन में पातक दूर भजे ॥
चोर भील चण्डाल उबारे भव दुख हरण तुही ।
पतित जान 'शिवराम' उबारो हे जिन शरण तुही ॥

भजन १५

पल-पल बीते उमरिया मस्त जवानी जाए, प्रभु गीत ।
गाले गाले प्रभु गीत गाले ॥
प्यारा प्यारा बचपन पीछे खोगया खोगया ।
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया हो गया ॥
बार बार नहीं पावेरे, गंगा बहती है प्यारे, मौका है न्हाले ।
गाले गाले प्रभु गीत गाले ॥

कैसे कैसे बाँके जग में हो गए हो गए।
खेल खेल के अन्त जमी पर सो गए सो गए ॥
कोई अमर नही आया रे, पंछी ये फूल रंगीले, मुर्भाने वाले।
गाले गाले प्रभु गीत गाले ॥

तेरे घर मे माल मसाले होते हैं होते है।
भूख के मारे कई विचारे रोते है रोते है ॥
उनकी कौन खबर ले रे, जिनके नही तनपै कपड़ा, रोटियों
के लाले, गाले प्रभु० ॥

गोरा गोरा देख बदन क्यो फूला है फूला है।
चार दिन की जिन्दगानी पै भूला है भूला है ॥
जीवन सुफल बना लेरे, केवल मुनि समझाए, ओ जाने वाले
गाले गाले प्रभु गीत गाले ॥

भजन १६

मन हर तेरी मूरतिया मस्त हुआ मन मेरा।
तेरा दर्श पाया पाया तेरा दर्श पाया ॥ टेक ॥
प्यारा-प्यारा सिंहासन अति भा रहा भा रहा।
उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा छा रहा ॥
पद्मासन अति मोहै रे नैना निरख अति चित
ललचाया ॥ पाया तेरा० ॥

प्रभु भक्ती से भव के दुख मिट जाते हैं जाते है।
पापी तक भी भवसागर तिर जाते है जाते हैं ॥
शिवपद वोही पाया रे शरणागत में तेरी जो जीव
आया ॥ पाया तेरा ॥

सांची कहूँ खोई निधि मुझको मिल गई मिल गई ।
उसको पाकर मन की अखियाँ खुल गई खुल गई ॥
आशा पूरी होगी रे आश लगाए 'वृद्धि' तेरे ।
द्वार आया ॥ पाया तेरा० ॥

भजन १७

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे हैं ।
झुका तेरे चरणों में सर जा रहे है ॥

यहाँ से कभी दिल न जाने को करता, करें कैसे जाए बिना भी न सरता
अगरचे हृदय नयन भर आ रहे है प्रभु दर्श कर० ॥ १ ॥
हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई, न मंदिर में बहुमूल्य वस्तु चढ़ाई
यह खाली फकत जोर कर जा रहे है प्रभु दर्श कर० ॥ २ ॥
सुना तुमने तारे अधम चोर पापी न धर्मी सही फिर भी तेरे हैं हामी
हमें भी तो करना अमर जा रहे है, प्रभु दर्श कर० ॥ ३ ॥
बुलाना यहाँ फिर भी दर्शको अपने, सुमत तुमभरोसेलगेकर्महरने
जरा लेते रहना खबर जा रहे हैं प्रभु दर्श कर० ॥ ४ ॥

भजन १८

अब तो बँधाओ मोरी धीर हो वीर स्वामी ।
कब से खड़ा हूँ तोरे तीर हो वीर स्वामी ॥टेक॥
सागर से श्रीपाल निकाला, रैन मंजूषा का दुख टाला ।
आके हरी सब पीर हो वीर स्वामी ॥ १ ॥
सीताजी की अग्नि परीक्षा करी आम देवों ने रक्षा ।
पावक से हुआ नीर हो वीर स्वामी ॥ २ ॥

रानी ने जब सेठ सताया, शूली पर था उसे चढ़ाया।
तुमने हरी दु:ख पीर हो वीर स्वामी ॥ ३ ॥
मानतुङ्गजी श्री मुनिराया, तालों में था बन्द कराया।
झड़ पड़ी तुरन्त जंजीर हो वीर स्वामी ॥ ४ ॥
पिंडी फटने के अवसर पर, तुमको ही ध्याया था मुनिवर।
प्रकट हुए चन्द्र वीर हो वीर स्वामी ॥ ५ ॥
जिस जिस ने प्रभु तुमको निहारा, उसही का दुख तुमने टारा।
'प्रेमी' हुआ है वीर हो वीर स्वामी ॥ ६ ॥

वीर पालना भजन १६

मणियों के पालने में स्वामी महावीर झूलें।
रेशम की डोरी पड़ी मोतियों में गुथवा डाला ॥
त्रिशला माताजी बड़ी देखकर हृदय में फूलें ॥ मणि० ॥
चुटकी बजाय रही हँस के खिलाय रही।
राजा सिद्धारथ मगन होके राज पाट में भूले ॥ मणि० ॥
कुंडलपुरवासी सारे बोले हैं जय जयकारे।
दर्शन कर प्रेम से महाराज के चरणों में झूलें ॥ मणि० ॥
इन्द्रादि देव आये शीश चरणों में झुकाये।
'किशना' के हृदय की मटकने लगी सारी चूलें ॥ मणि० ॥

वीर कीर्तन २०

जय वीर कहो जय वीर कहो। त्रिसला नंदन अति वीर कहो ॥
हर स्वांस यही झनकार उठे। धरती नभ सब गुंजार उठे ॥
प्रेमी का प्राण पुकार उठे। जय वीर कहो० ॥ १ ॥

यह दुनियां एक कहानी है। दरिया का बहता पानी है ॥
बस दो दिन की मिजमानी है। जय वीर कहो० ॥ २ ॥
नर जीवन का है सार सही। सुख के पद का आधार यही ॥
बस लगातार तू तार यही। जय वीर कहो० ॥ ३ ॥
यह संकट भंजन हारा है। भक्तों को तन से प्यारा है ॥
"भगवन" यह नाम महारा है। जय वीर कहो० ॥ ४ ॥

भजन २१

मेरे भगवान मेरी यही आस है,
पार कर दोगे बेड़ा यह विश्वास है ॥टेक॥
मन के मन्दिर में आंखो के रख्खे तुझे।
मेरे भगवान प्यारा पड़ा है मुझे ॥
मेरे दिल से न जाना यह अरदास है ॥मेरे०॥ १ ॥
तेरे रहने को मन्दिर बनाया है मन।
तेरे चरणो पै अरपन किया तन व धन ॥
मेरे दिल से न जावोगे विश्वास है ॥मेरे०॥ २ ॥

भजन २२ (पदमपुरी)

मुझ दुखिया की सुनले पुकार भगवन पद्म प्रभो ॥टेक॥
दीनों के हो तुम प्रतिपालक, धर्म के हो संचालक।
किये अनेको सुधार भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ १ ॥
चारों गति मे दुख बहु पाया, काल अनादि दुख में गमाया।
आया तोरे दरबार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ २ ॥
नर्क गति की करुण वेदना, जन्म मरण कर्मन संग कीना।

मैं भोगे दुःख अपार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ३॥
सदुपदेश दे लाखों तारे, अंजन जैसे अधम उभारे।
अब मेरी ओर निहार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ४॥
सेवक शान्ति शरणे आया, दर्शन करके पाप नशाया।
जीवन के आधार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ५॥

भजन २३

चाँदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो ॥टेक॥
जयपुर राज्य गाँव चाँदनपुर तहाँ बनो उन्नत जिन मन्दिर।
तट नदी गम्भीर हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ १ ॥
पूरव बात चली यो आवे, एक गाय चरने को जावे।
झरजाय उसका छीर ॥ हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ २ ॥
एक दिवस मालिक सग आया, देख गया टीला खुदवाया।
खोदत भयो अधीर, हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ ३ ॥
रैन माहि तब सुपना दीना, धीरे धीरे खोद जमीना।
है इसमें तस्वीर, हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ ४ ॥
प्रात होत फिर भूमि खुदाई, वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई।
भई इकट्ठी भीड़, हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ ५ ॥
तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड़ हर साल करारी।
चैत मास आखीर, हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ ६ ॥
लाखों मीना गूजर आवें, नाचें कूदें गीत सुनावें।
जय बोलें महावीर, हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ ७ ॥
जुड़ें हजारों जैनी भाई, पूजन पाठ करें सुख दाई।
मन बच तन धर धीर, हमारी पीर हरो ॥ चाँदन० ॥ ८ ॥

छत्र चँवर सिंहासन लावें, भर भर घृत के दीप जलावें।
बोले जय गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ६ ॥
जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन संतान बढ़े व्योपारा।
होय निरोग शरीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ १० ॥
'मक्खन' शरण तुम्हारी आया, पुण्य योग से दर्शन पाया।
खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदन० ॥ ११ ॥

भजन २४

प्रभु रथ में हुए सवार नकारा बाज रहा ॥ टेक ॥
क्या ठुमक चाल रथ चलता है, वह छतर शीश पै हिलता है।
इन ज़वर नाथ पर ढुलता है, क्या छाई आज बहार ॥न०॥१॥
किस छवि से नाथ विराज रहे, नासा दृष्टि से साज रहे।
अद्भुत बाजे बाज रहे, सब बोले जय जय कार ॥ नकारा० ॥२॥
ढोलक और बजे नकारा हैं, बाजे का स्वर अति प्यारा है।
तबले का ठुमका न्यारा है, झाझन की हो भनकार॥नकारा०॥३॥
कहे "किशन" जारुचे बाशा है, तेरे नाम पै वो मतवाला है।
सब पियो धर्मका प्याला है, हो भवसागर से पार॥नकारा०॥४॥

भजन २५

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर एक दर्श भिखारी आया है।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को दो नयन कटोरे लाया है ॥
नहीं दुनियाँ में कोई मेरा है आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभु एक सहारा तेरा है जग ने मुझको ठुकराया है ॥
धन दौलत की कछु चाह नहीं घरबार छुटे परवाह नहीं

मेरी इच्छा तेरे दर्शन की दुनियाँ ने चित्त घबराया है ॥
मेरी बीच भँवर में नैया है बस तूही एक खिवैया है ।
लाखों को ज्ञान सिखा तुमने भवसिधु से पार उतारा है ॥
आपस में प्रीत व प्रेम नहीं तुम बिन अब हमको चैन नहीं ।
अब तो तुम आकर दर्शन दो त्रिलोकी नाथ अकुलायी है ॥
जिन धर्म फैलाने को भगवन कर दिया है मन धन अर्पन ।
नव युवक मण्डल अपनाओ सेवा का भार उठाया है ॥

भजन २६

सब मिल के आज जय कहो श्री वीर प्रभु की ।
मस्तक झुका के जय कहो श्री वीर प्रभु की ।टेक।
विघनों का नाश होता है लेने से नाम के ॥
माला सदा जपते रहो श्री वीर प्रभु की ॥ १ ॥
ज्ञानी बनो दानी बनो बलवान भी बनो ।
अकलंक सम बन के कहो जय वीर प्रभु की ॥२॥
होकर स्वतन्त्र धर्म की रक्षा सदा करो ।
निर्भय बनो अरु जय कहो श्रीवीर प्रभु की ॥३॥
तुमको भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है "दास" ।
उस वाणी पै श्रद्धा करो श्रीवीर प्रभु की ॥ ४ ॥

भजन २७

(तर्ज—फिल्म रामराज्य)

त्रिशला के राजदुलारे की हम कथा सुनाते हैं ।
भारत के उजियारे की हम कथा सुनाते हैं ॥टेक॥

बढ़ गये पाप जब भारी हुए दुखी सभी नर नारी।
सिद्धारथ के घर में जन्मे वीर प्रभु अवतारी॥
महिमा जिनकी सदा सकल जन गाते हैं ॥हम०॥
यज्ञ पशु बध हटे सभी दुख कटे, दया में डटे गुणी सुख पाये।
धर्म बाग फिर खिला, समय शुभ मिला,
गिरा अघ किला भले दिन आये।
ज्ञानी ध्यानी बने कर्म सब हने,
दुःखों में छने नही घबराते हैं ॥हम०॥
महावीर कहलाये परमपद पाये,
जगत में नामी सभी को पाये।
ज्ञान दान बहु दिया जगत हित किया,
त्याग के भेद सभी समझाते हैं ॥हम०॥
पावापुर में आन लिया निर्वाण महा सुखकारी।
जिस लिये लिया था योग लिया वही शिवपद भारी॥
देव मिल "अमृत" दीपावली रचाते है॥ हम०॥

भजन २८

(तर्ज-फिल्म रतन)

जब तुम्हीं चले मुख मोड़ हमें यूं छोड़ ओ पारस प्यारा।
अब तुम बिन कौन हमारा॥ टेक॥
ये बादल घिर घिर आते हैं।
तूफान साथ में लाते हैं॥
व्याकुल होकर हमने तुम्हें पुकारा॥ अब तुम०॥

आंखों में आंसू बहते हैं।
सब रो रो कर यूं कहते हैं॥
जब तुम्हीं ने हमसे किया किनारा॥ अब तुम०॥ २॥
होटों पर आहे जारी है दिल में बस याद तुम्हारी है।
ये राज भटकता फिरे है दर दर मारा॥ अब तुम०॥ ३॥

भजन २६

(तर्ज–कव्वाली)

क्यों न अब तक हमारी सुनाई हुई।
जब चरणों से हैं लौ लगाई हुई॥ टेक॥
तेरे चरणों से जिसने लगाई लगन।
पार भव से किया उसको आनन्दघन॥
क्यों न हम पर प्रभु रहनुमाई हुई॥ क्यों०॥ १॥
सेठ के पुत्र को सर्प ने था डसा।
उसके मन में तेरा ही विश्वास था॥
तेरे मन्दिर में विष की सफाई हुई॥ क्यों०॥ २॥
हुक्म राजा ने सूली का जब था दिया।
तब सुदर्शन ने वह हुक्म सर धर लिया॥
सबके दिल पर घटा गम की छाई हुई॥ क्यों०॥३॥
सूली देने का सामान तैयार था।
उसके मन में तो केवल तेरा ख्याल था॥
फिर तो सूली से उसकी रिहाई हुई॥ क्यों०॥ ४॥
प्रेम चरणों से तेरे लगाया हुआ।

तेरा "पदम" मेरे दिल मे समाया हुआ ॥
तेरे दर्शन से सबकी भलाई हुई ॥ क्यों० ॥ ५ ॥

भजन ३०

हमें वीर स्वामी तुम्हारा सहारा ।
कुण्डलपुर के राजा सिद्धारथ का प्यारा ॥
जो दर्शन दिए फिर दुबारा भी देना ।
वह त्रिशलावंतोजी के आँखों का तारा ॥ १ ॥
सुना करता था जो तारीफ स्वामी ।
तो वैसा ही पाया नजारा तुम्हारा ॥ २ ॥
अजब मुस्कराहट अजब शान तेरी ।
अजब नूर प्यारा है स्वामी तुम्हारा ॥ ३ ॥
जो छीना है दिल को न दिल को हटना ।
हटा लोगे दिल को न होगा गुजारा ॥ ४ ॥
करो सेवकों की महावीर रक्षा ।
है सब प्राणियों को सहारा तुम्हारा ॥ ५ ॥
दया हम पै करना दया के हो सागर ।
करोगे तुम्ही भव सागर से पारा ॥ ६ ॥
सिवा प्रेम के हम पै देने को है क्या ।
झुका बस यह चरणों मे शीश हमारा ॥ ७ ॥
"किशनलाल" जैनी जन्म जारचे का ।
बड़े प्रेम से महावीर पुकारा ॥ ८ ॥

भजन ३१

महावीर दया के सागर तुमको लाखों प्रणाम ।
श्री चांदनपुर वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥
पार करो दुखियों की नैय्या ।
तुम बिन जग में कौन खिवैया ॥
मात पिता न कोई मैया ।
भगतों के रखवाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ १ ॥
जब ही तुम भारत में आये ।
सबको आ उपदेश सुनाये ॥
जीवों के आ प्राण बचाये ।
बन्ध छुड़ाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ २ ॥
सब जीवो मे प्रेम बढ़ाया ।
राग द्वेष सबका छुड़वाया ॥
हृदय से अज्ञान हटाया ।
धर्म वीर मतवाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ ३ ॥
समोशरण में जो कोई आया ।
उसका स्वामी परण निभाया ॥
भव सागर से पार लगाया ।
भारत के उजियारे तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ ४ ॥
किशन लाल को भारी आशा ।
सदा रहे दर्शन का प्यासा ॥
धर्म पुरा देहली में वासा ।
कहते बूरा वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ ५ ॥

भजन ३२

(तर्ज-रसिया)

भाइयो चलो सभी मिल महावीर जी के दर्शन करने को ।
दर्शन करने को, कर्म जजीर कतरने को, भाइयो० ॥ टेक ॥
अतिशय क्षेत्र जगत विख्याता, चमत्कार तत्काल दिखाता ।
ऋद्धि सिद्ध सब होय,पुण्य भंडार भरने को ॥ भाइयो० ॥ १ ॥
जयपुर राज्य जिला हिंडौन, चादन गाव बार जिन मौना ।
तीर नदी गम्भीर पटोदा रेन खमरने को ॥ भाइयो० ॥ २ ॥
बनी धर्मशाला चहुँ ओर, बीच बना मदिर चौकोरा ।
उन्नत शिखर विशाल बन रहे स्वर्ग पकड़न को ॥ भाइयो० ॥३॥
चरण पादुका बनी पिछाड़ी, नदिया कहते सब नर नारी ।
इसी जगह निकली थी प्रतिमा, जग भ्रम हरने को भाइयो०॥४॥
छत्र लडाल चमर ढुराव, घृत के भर भर दीप जलावें ।
पूजन पाठ भजन विनती, जयकार उचरने को ॥भाइयो०॥५॥
चैत सुदी में होता मेला, लाखो गूजर मीना भेला ।
जुड़ हजारों जैनी भाई भव सागर तरन को ॥ भाइयो० ॥६॥
एकम बदी वैशाख हमेशा, रथ निकले श्री वीर जिनेशा ।
'मक्खन" भी वहां जाय, प्रभु का नाम सुमरने को ।भाइयो०॥७॥

भजन ३३

पाये पाये जी वीर+के दर्शन पाये जिया हर्षाये ।
सब टले हमारे पातक पुण्य कमाये ॥ टेक ॥
भूले भूले अब तक भटके अब ना भटका जावे ।

शिव सुख दानी तुमको पाकर कैसे भूला जाये । पाये० ॥१॥
भवोदधि तारन तरनजिनेश्वर तुम ग्रन्थों में गाये ।
फिर भक्तो की नाव भंवर में कैसे गोता खाये ॥ पाये० ॥२॥
विघ्न निवारो सकट टारो राखो चरण निभाये ।
फिर 'सोभाग्य' बढे भारत का घर२ मगल गाये ॥ पाये० ॥३॥

भजन ३४

व्याकुल मोरे नयननवा चरण शरण मे आया ।
दर्श दिखादो स्वामी दर्श दिखादो ॥ टेक ॥
कर्म शत्रु तो घिर घिर सिर पर आ रहे आ रहे ।
भव सागर के दुःख अनन्तो पा रहे पा रहे ॥
इनसे वेग बचाओ रे अर्ज हमारी माना ।
दुःख मिटादो स्वामी दुःख मिटादो ॥ व्याकुल० ॥ १ ॥
तीन भुवन मे तुमसा स्वामी और न कोई पाते है पाते है ।
स्वामी तुम बिन गैर और नहीं पाते है पाते है ॥
पथ दिखलाओ रे अर्ज हमारी मानो ।
दुःख मिटादो स्वामी दुःख मिटादो ॥ व्याकुल० ॥ २ ॥
सब जीवों का दुख से बेड़ा पार करो पार करो ।
"सेवक" का भी स्वामी अब उद्धार करो उद्धार करो ॥
सब ही शीश नवावे रे अर्ज हमारी मानो ।
दुःख मिटा दो स्वामी दुःख मिटा दो ॥ व्याकुल० ॥ ३ ॥

+ 'वीर' की जगह "पद्म" भी बोला जाता है ।

भजन ३५

वीर क्या तेरी निराली शान है ।
देख के दुनियां जिसे हैरान है ॥ टेक ॥

जाने क्या जादू भरा है आप में ।
हर बशर को आपका ही ध्यान है ॥ वीर० ॥ १ ॥

सैकड़ा मीलों से आते हे यहाँ ।
दर्श बिन तेरे दुनियाँ हैरान है ॥ वीर० ॥ २ ॥

जिसने जो हसरत तुम्हे जाहिर करी ।
आपने पूरा किया अरमान है ॥ वीर० ॥ ३ ॥

जो भी आया आपके दरबार में ।
उसको मुँह मांगा दिया वरदान है ॥ वीर० ॥ ४ ॥

जीव हिंसा को हटाया आपने ।
सारे जीवों पर तेरा अहसान है ॥ वीर० ॥ ५ ॥

रास्ता मुक्ति का बतलाया हमें ।
तेरा ममनु सारा हिन्दुस्तान है ॥ वीर० ॥ ६ ॥

कामधेनु सी है ज्योती आप में ।
वो ही शक्ति आप में परवान है ॥ वीर० ॥ ७ ॥

है दया करना धर्म इन्सान का ।
वीर स्वामी का यही फरमान है ॥ वीर० ॥ ८ ॥

'राज' पै भी हो इनायत की नजर ।
आपके सन्मुख खड़ा नादान है ॥ वीर० ॥ ९ ॥

शिव सुख दानी तुमको पाकर कैसे भूला जाये । पाये० ॥१॥
भवोदधि तारन तरनजिनेश्वर तुम ग्रन्थों में गाये ।
फिर भक्तों की नाव भंवर में कैसे गोता खाये । पाये० ॥२॥
विघ्न निवारो संकट टारो राखो चरण निभाये ।
फिर 'सौभाग्य' बढे भारत का घर२ मंगल गाये ।।पाये०॥३॥

भजन ३४

व्याकुल मोरे नयननवा चरण शरण में आया ।
दर्श दिखादो स्वामी दर्श दिखादो ॥ टेक ॥
कर्म शत्रु तो घिर घिर सिर पर आ रहे आ रहे ।
भव सागर के दुःख अनन्ते पा रहे पा रहे ॥
इनसे वेग बचाओ रे अर्ज हमारी मानो ।
दुःख मिटादो स्वामी दुःख मिटादो ॥ व्याकुल० ॥ १ ॥
तीन भुवन में तुमसा स्वामी और न कोई पाते हैं पाते हैं ।
स्वामी तुम बिन गैर और नहीं पाते हैं पाते हैं ॥
पथ दिखलाओ रे अर्ज हमारी मानो ।
दुःख मिटादो स्वामी दुःख मिटादो ॥ व्याकुल० ॥ २ ॥
सब जीवों का दुख से बेड़ा पार करो पार करो ।
"सेवक" का भी स्वामी अब उद्धार करो उद्धार करो ॥
सब ही शीश नवावें रे अर्ज हमारी मानो ।
दुःख मिटा दो स्वामी दुःख मिटा दो ॥ व्याकुल० ॥ ३ ॥

---

* 'वीर' की जगह "पद्म" भी बोला जाता है ।

भजन ३५

वीर क्या तेरी निराली शान है ।
देख के दुनियाँ जिसे हैरान है ॥ टेक ॥

जाने क्या जादू भरा है आप में ।
हर वशर को आपका ही ध्यान है ॥ वीर० ॥
सैकड़ों मीलों से आते हैं यहां ।
दर्श बिन तेरे दुनियां हैरान है ॥ वीर० ॥ २ ॥
जिसने जो हसरत तुम्हें जाहिर करी ।
आपने पूरा किया अरमान है ॥ वीर० ॥ ३ ॥
जो भी आया आपके दरबार में ।
उसको मुंह मांगा दिया वरदान है ॥ वीर० ॥ ४ ॥
जीव हिंसा को हटाया आपने ।
सारे जीवों पर तेरा अहसान है ॥ वीर० ॥ ५ ॥
रास्ता मुक्ति का बतलाया हमें ।
तेरा ममनु सारा हिन्दुस्तान है ॥ वीर० ॥ ६ ॥
कामधेनु सी है उन्नोनी आप में ।
वो ही शक्ति आप में परधान है ॥ वीर० ॥ ७ ॥
है दया करना धर्म इन्सान का ।
वीर स्वामी का यही फरमान है ॥ वीर० ॥ ८ ॥
'राज' पै भी हो इनायत की नजर ।
आपके सम्मुख खड़ा नादान है ॥ वीर० ॥ ९ ॥

भजन ३६

महावीर स्वामी, हो अन्तर यामी ।
हो त्रिशला नन्दन, काटो भव फन्दन ॥
बाले ही पन में, तप कीना वन में ।
दरश दिखाना, भूले न जाना ।
पार लगाना, कृपा निधाना ।
महिमा तुम्हारी, है जग मे न्यारी ॥
सुधि लो हमारी हो व्रत के धारी ।
बन खण्ड तप करने वाले, केवल ज्ञान के पाने वाले ।
सद् उपदेश सुनाने वाले, हिंसा पाप मिटाने वाले ॥
हो तुम कष्ट मिटाने वाले, पशुवन बन्ध छुड़ाने वाले ।
स्वामी प्रेम बढाने वाले, हो तुम नियम सिखाने वाले ॥
पूरण तप के करने वाले, भगतों के दुःख हरने वाले ।
पावापुर मे आने वाले, स्वामी मोक्ष के जाने वाले ।

भजन ३७

(तर्ज—छुप छुप खड़े हो जरूर कोई बात है)
गहरी गहरी नदिया नाव बिच धारा है, तेरा ही सहारा है ॥१॥
डगमग करती है कर्मों के भार से,
मारग भूल रहे घोर अन्धकार से,
डूबती इस नाव का तूही खेवनहार है–तेरा ही सहारा है ॥२॥
अग्नि का नीर हुआ तेरे प्रताप से,
कुष्ट रोग दूर हुआ तेरे नाम जाप से,

भव-भव दुख का तूही मेटनहार है–तेरा ही सहारा है ॥ ३ ॥
वीतराग छवि तेरी लगे अति प्यारी है,
चरणों पै जाऊँ नाथ बलिहारी है,
रूप तेरा देख कर 'शांति' चित धारा है–तेरा ही सहारा है ॥ ४ ॥

भजन ३८

(तर्ज–लाल दुपट्टा मलमल का)

लहर लहर लहराये केसरिया झण्डा जिनमत का।
यह सब का मन हरषाये केसरिया झंडा जिनमत का॥
फर फर फर फर करता झंडा गगन शिखा पर डोले।
स्वस्तिक का यह चिह्न अनूठा भेद हृदय के खोले॥
यह ज्ञान की ज्योति जगाये ॥ १ ॥
इसकी शीतल छाया में सब पढ़े 'रतन' जिनवानी।
सत्य अहिंसा प्रेमयुक्त फिर बने देश लासानी॥
यह सत् पथ पर पहुँचाये ॥ २ ॥

भजन ३६

(तर्ज–जिया बेकरार है)

भवसागर अपार है, टूटी ये पतवार है
जीवन नैया डगमग डोले तेरा ही आधार है ॥ टेर ॥
पाप पवन ज्यों चले जोर से नैया डगमग डोले हो।
कर्म लुटेरे आकर के फिर सम्यक् गठरी खोले ॥ १ ॥
क्या अचरज गर बनें तुम्हीं से पाकर के तव भक्ती हो।
भवसागर को पार करूँ मैं दे दो ऐसी शक्ती ॥ २ ॥

हूं अल्पज्ञ नही है शक्ति क्या गुण तेरे गाऊं मैं।
धर्म 'दीप' अर्जी है तुमसे शिवपुर बस्ती पाऊं ॥ ३ ॥

भजन ४०

तर्ज:—(इस दिल के टुकड़े हजार हुये)

भव भवके टुकड़े अपार सहे, कभी यहाँ गिरा कभी वहाँ गिरा।
गलियों में अकेला भ्रमन फिरा,कभी,यहाँ गिरा कभी वहाँ गिरा॥
शुभ कर्म उदय हो जाने से, मानव का जीवन पाया था।
जीवन के थपेड़े लगते ही,कभी यहा गिरा कभी वहा गिरा॥१॥
मलमूत्र भरे उस बिस्तर पर, बचपन की वे घड़ियां बीतीं।
जब पैरो के बल खड़ा हुआ,कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा॥२॥
अलमस्त जवानी आते ही मैं भूल गया सब अपनापन।
तरुणाई की मदहोशी मे, कभी यहां गिरा कभी वहां गिरा॥३॥
यौवन की हरियाली बीती, और शुष्क बुढ़ापा आ धमका।
काया का पतझड़ खूब हुआ, कभी यहा गिरा कभी वहाँ गिरा॥
झूठे विषयों मे फँस करके, जीवन का तमाशा कर डाला।
था 'रतन' वहीं व.कड़बनकर, कभी यहांगिरा कभी वहांगिरा ॥५

भजन ४१

राजुल पुकार

छोड गये स्वामी क्यों मुझ से नाता तोड़ गये।
जाय चढ़े गिरनार मुझे काहे भटकती छोड़ गये॥
भव भव की यह प्रीति लगी थी अब काहे बिसराई।
दिल में थी जब ध्यान धरम की मुझसे क्यों प्रीति लगाई॥
पशुवन की किलकारी सुनकर कँगना गाँठ तुड़ाई।
छप्पन कोटि सजे यदुवंशी काहे बरात सजाई॥

तोड़ मोड़ सब साज मुझे काहे तड़फती छोड़ चले ॥
अब संग चलूँगी नाथ मुझे काहे अकेली छोड़ चले ॥

भजन ४२

शिवपुर पथ परिचायक जय हे, सन्मति युग निर्माता
गङ्गा कल कल स्वर में गाती
तव गुण गौरव गाथा
सुनकर किन्नर तव पद युग में
नित नत करते माथा
जब तक रवि शशि तारे
सादर शीश झुकाते
हे सद्बुद्धि प्रदाता
दुःख हारक सुखदायक जय हे, सन्मति युग निर्माता
जयहे, जयहे, जयहे, जय जय जय जय हे, सन्मति युग निर्माता
मङ्गल कारक दया प्रचारक
खग पशु नर उपकारी
भविजन तारक कर्म विदारक
सब जग तव आभारी
जब तक रवि शशि तारे
तब तक गीत तुम्हारे
विश्व रहेगा गाता
चिर सुख शांति विधायक जयहे, सन्मति युग निर्माता
जयहे, जयहे, जयहे, जय जय जय जय हे, सन्मति युग निर्माता
भ्रातृ भावना भुला परस्पर
लड़ते हैं जो प्राणी

उनके उर में विश्व प्रेम
फिर भरे तुम्हारी वाणी
सब में करुणा जागे
जग से हिंसा भागे
पाए सब सुख साता
हे दुर्जेय दुःख त्रायक जय हे, सन्मति युग निर्माता।
जय हे, जय हे, जय हे जय जय जय जय हे सन्मति युग निर्माता।

भजन ४३

(तर्ज—बापू की अमर कहानी)

सुनो सुनो ए दुनियाँ वालो जैन धर्म की अमर कहानी।
आज फूल उठती है छाती, आती है जब याद पुरानी।
सबसे पहले ऋषभदेव प्रभु, इसकी नींव जमाने आये।
अखिल विश्व को सद्गृहस्थ का सच्चा पाठ पढ़ाने आये।
राज-पाट को त्याग नगर के बाहिर वन में ध्यान लगाया।
केवल ज्ञान प्राप्त कर जिनने सोता हिन्दुस्तान जगाया॥
दया धर्म का मूल बताया, अधर्म वही है जो अभिमानी है॥१॥
नेमिनाथ भगवान जिन्होंने इसका मर्म बताया सच्चा।
निज स्वारथ वश किसी जीव को तड़फाना है कभी न अच्छा।
पार्श्वनाथ प्रभु के तप आगे क्रूर कमठ राक्षस भी हारा।
खण्ड खण्ड गिरि हुए कमठ ने बरसाई जब मूसल धारा।
क्षमा, धैर्य, तप के आगे दुश्मन होते पानी पानी॥ २॥
यह कहने की नहीं जरूरत महावीर ने क्या बतलाया।
अश्वमेध नरमेध यज्ञ का जग से हिंसा-काण्ड हटाया।

गांधीजी ने उसी वीर की सत्य अहिंसा को अपनाया।
अंग्रेजों को दूर हटा कर भारत को आजाद बनाया।
है 'अनूप' नित नित्य नया है, नहीं जहाँ इसकी सानी ॥३॥

भजन ४४

मैंने छोड़ा सभी घरबार, भगवन तेरे लिये ॥
तुम को टीला खोद निकाला, मेहनत से यह छप्पर डाला।
रहे सब ही परिवार ॥ भगवन० १ ॥
जोधराज को तुमने बचाया, फिर मन्दिर उसने बनवाया।
जैनी आ रहे अपार ॥ भगवन० २ ॥
दबे पड़े जब काई न आया, तुम्हें न जाने दूँ मन भाया।
चाहे हो जाये तकरार ॥ भगवन० ३ ॥
चढ़े वहाँ घी मेवा नारियल, सोना चाँदी केशर तन्दुल।
थी यहाँ गऊ की धार ॥ भगवन० ४ ॥
जो तुम मन्दिर में जाओगे, प्रीति मेरी सब बिसराओगे।
हो जाऊँगा मैं ख्वार ॥ भगवन० ५ ॥
बीबी बच्चे सब चिल्लाये, उधर खड़ी गैया डकरावें।
मर जाये धरणि सर मार भगवन० ६ ॥
असर किया वो ग्वाल रुदन ने, तभी वहाँ हितकार गगन से।
सुर द्वार कराई पुकार ॥ भगवन० ॥ ७ ॥
प्रतिमा यहाँ से जब यह जावे, गाड़ी को तू हाथ लगावे।
पहले छयो करै तय्यार ॥ भगवन० ८ ॥
उसका सदा चढ़ावा खाना, जब चाहे तब दर्शन पाना।
सदा रक्खे खुला दरबार। भगवन० ९ ॥

भजन ४५

वीरा वीरा मैं पुकारूँ तेरे दर के सामने ।
मन तो मेरा हर लिया महावीरजी भगवान ने ॥
मोहिनी छवि को दिखादो अब मेरे भगवन मुझे ।
तेरी चर्चा हम करेंगे, हर बशर के सामने ॥वीरा०॥
डूबते श्रीपाल को तुमने बचाया है प्रभो ।
द्रौपदी की लाज राखी कौरवदल के सामने ॥ वीरा०॥
हार का बन कर सरप जब खोलिया उस सेठ को ।
सामने सुमरण किया महावीरजी के नाम का ॥वीरा०॥
चित्त हम सबका भटकता, वीर के दीदार को ।
कर जोड़ के देखा करुँ मैं तेरे दर के सामने ॥वीरा०॥

भजन—[श्रद्धा के फूल] ४६

एक प्रेम पुजारी आया है, चरणों में ध्यान लगाने को ।
भगवान तुम्हारी मूरत पर श्रद्धा के फूल चढ़ाने को ॥
तुम त्रिशला के दृग तारे हो, पतितों के नाथ सहारे हो ।
तुम चमत्कार दिखलाते हो, भक्तों के मान बढ़ाने को ॥ १ ॥
तुमरे वियोग में हे स्वामी, हृदय व्यथा बढ़ती जाती ।
भारत में फिर से आजाओ, जिन धर्म का रंग जमाने को ॥२॥
उपदेश धर्म का देकर के, फिर धर्म सिखादो भारत को ।
आओ एक बार प्रभु आओ, हिंसा का नाम मिटाने को ॥ ३ ॥
प्रभु तुमरे भक्त भटकते हैं, तेरे नाम को हरदम रटते हैं ।
"त्रिलोकी" नित्य तरसता है, प्रभु आपके दर्शन पाने को ॥४॥

भजन ४७

वीर स्वामी का सुन्दर अधर पालना ।
सज रहा सिद्धारथ के घर पालना ॥ टेक ॥
जिसमें रेशम की सुन्दर पड़ी डोरियाँ ।
सच्चे मोती लगाये—चहुँ ओरियाँ ॥
है सुशोभित यह सुन्दर अधर पालना ॥ वीर ॥ १ ॥
झुन झुना माता त्रिशलावती ले रही ।
वीर के हाथ में हँस के जब दे रही ॥
वीर का हिल रहा बेखबर पालना ॥ वीर० ॥ २ ॥
देव इन्द्रादि मिल पुष्प बरसा रहे ।
सारे नर नारी हृदय में हर्ष रहे ॥
देखने जा रहा हर बशर पालना ॥ वीर० ॥ ३ ॥
जन्म उत्सव का दिन मिल मनाओ सखी ।
यह "किशन" ने लिखा है अमर पालना ॥ वीर० ॥ ४ ॥

भजन ४८

क्यों ना ध्यान लगाये, वीर से बावरिया ।
जाना देश पराये झमेला दो दिन का । टेक॥
जीवन तेरा है एक सपना, इस दुनियाँ में कोई न अपना ।
हंस अकेला जाय, वीर से० ॥ १ ॥
माता बहना चाची ताई, पिता पुत्र और भाई जवाँई ।
मतलब से प्रीत लगाय, वीर० ॥ २ ॥
जो है तुमको सबसे प्यारे, मृतक देख तुमसे हों न्यारे ।

कोई संग में न जाय, वीर० ॥ ३ ॥
जिस तन को तू खूब सजाये, आखिर मिट्टी में मिल जाये ।
फिर पीछे पछताय, वीर से० ॥ ४ ॥
जिस माया पर तू इतराये, आखिर में कुछ काम न आये ।
यहीं पड़ी रह जाये, वीर से० ॥ ५ ॥
धर्म ही आखिर काम में आये, हर दम तेरा साथ निभाये ।
"त्रिलोकी नाथ" समझाय, वीर० ॥ ६ ॥

भजन ४९

जब तेरी डोली निकाली जायगी ।
बिन मुहूरत के उठाली जायगी ॥
उन हकीमों से ये कहदो बोल कर ।
दवा करले जो किताबें खोल कर ॥
यह दवा हरगिज न खाली जायेगी ॥ १ ॥
क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार ।
है खड़ा पीछे शिकारी खबरदार ॥
मार कर गोली गिराली जायगी ॥ २ ॥
अय मुसाफिर क्यो पसरता है यहाँ ।
ये मिला तुझको किराये का मकाँ ॥
कोठरी खाली कराली जायगी ॥ ३ ॥
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया ।
मरते दम लुकमान भी यह कह गया ॥
यह घड़ी हरगिज न टाली जायगी ॥ ४ ॥
कहत "भैया" अब श्री जिन वर भजो ।

मोह रूपी नींद को जल्दी तजो ॥
वरना यह पूंजी उठाली जायगी ॥ ५ ॥

भजन ५०

तेरे दर को छोड कर, किस दर जाऊं मैं ।
सुनता मेरी कौन है, जिसे सुनाऊं मैं ॥
जब से नाम भुलाये पदमा, लाखों कष्ट उठाये हैं ।
न जाने इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये हैं ॥
मेरे दुष्ट कर्म ही मुझ को, तुम से न मिलने देते ।
जब मैं चाहूं दर्शन पाना, रोक जब ही वह लेते हैं ॥
छींटा दो प्रभु ज्ञान का शरण में आऊं मै ॥ पदमा ॥
मोह मिथ्या म पडकर स्वामी नाम तिहारा भूला था ।
जिसको समझा था सुख मैंने दुख का गोरख धन्धा था ।
मोह माया को छोड कर शरण खडा हूं मैं ॥ पदमा ॥
बीत चुकी सो बीत चुकी अब, शरण तिहारी आया हूं ।
दर्शन भिक्षा पाने को, दो नैन कटोरे लाया हूं ॥
मन में अपने ज्ञान का दीप जलाऊं मैं ।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊं मैं ॥ पदमा ॥

भजन ५१

महावीर स्वामी मैं क्या चाहता हूं ।
फकत आप का आसरा चाहता हूं ॥ टेक ॥
मिली तुमको पदवी जो निर्वाण पद की ।
कि तुम जैसा मैं भी हुआ चाहता हूं ॥ महावीर० ॥ १

फँसा हूँ मैं चक्कर मे आवागमन के।
कि अब इससे होना रिहा चाहता हूँ ॥ महावीर० २ ॥
दया कर दया कर तू मुझ पर दयालू।
दया चाहता हूँ दया चाहता हूँ ॥ महावीर० ३ ॥
बुरा हूँ भला हूँ अधम हूँ कि पापी।
क्षमा कर तू मुझ पै क्षमा चाहता हूँ ॥ महावीर० ४ ॥

भजन ५२

(तज—गायजा गीत मिलन के तू अपनी लगन के)
गायेजा गीत प्रभु के तू अपनी लगन से—
कि एक दिन जाना है।
काहे सताये कर्म लुटरे—काहे देव दुख,
तुम बिन मेरा और न कोई तुम से ही लागा है दिल
प्यासे हैं नैन दर्शन के तेरे चरणन के—
कि एक दिन जाना है ॥ १ ॥
लूट न जाय कर्म लुटेरे मुझको यह है डर,
मैं अकेला यह जग लुटरा तुम से ही लगा है दिल,
आये हैं शरण तुम्हारे मिटादे दुख सारे—
कि एक दिन जाना है। २ ॥
डोले नयना प्रभुजी के द्वारे दर्शन की है धुन,
सेवक तेरा तुझको पुकारे विनती मेरी सुन,
अर्ज करें हम सारे लगा दे भव पारे—
कि एक दिन जाना है ॥ ३ ॥

भजन ५३

(तर्ज–तेरे कूंचे मे अरमानो की)

तेरे दरबार मे स्वामी सहारा लेने आया हूँ।
तेरे दर्शन को पाने की, तमन्ना लेके आया हूँ।
घेरा मोहे अष्ट कर्मो ने, बचाओ आनकर मुझको।
यही अरदास ले करके, तेरे चरणो मे आया हूँ ॥ १ ॥
हृदय मे भक्ति दिल मे प्रेम और नयनो में तुम मेरे।
और नयनो मे तुम मेरे।
जरा तो देखले आकर, तेरे दर्शन का प्यासा हूँ ॥ २ ॥
आया हूँ द्वार पर तेरे, प्रभुजी मुक्ति बतलादो
प्रभुजी मुक्ति बतलादो।
दया कर तारो सेवक को, शरण तेरो मैं आया हूँ ॥ ३ ॥

भजन ५४

(तर्ज–एक दिल के टुकड़े हजार हुए)

वह दिन था मुबारिक शुभ थी घडी, जब जन्मे थे महावीर प्रभु
तब नरक म भी थी शाति पडी, जब जन्मे थे महावीर प्रभु ।टेक
तिथी चैत मु तेरस प्यारी थी, वह धन्य कुण्डलपुर नगरी।
सिद्धार्थ पिता त्रिशला उर से, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ १ ॥
जब धर्म कर्म था नष्ट हुआ, आचार जगत का बिगड चला।
तब शुद्धाचार सिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ २ ॥
जब यज्ञ मे लाखो पशुओ का, होता था बलिदान महा।
तब हिंसा दूर हटाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ ३ ॥
जब कर्ता वाद अज्ञान बढ़ा, सिद्धान्त कर्म को भूल गये।

तब स्याद्वाद समझाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥ ४ ॥
जब भटक रहे थे भव वन में, शिवराह नजर नही आता था।
तब मुक्ति का मार्ग दिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु॥५॥

भजन ५५

(तर्ज—चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है)
धन धन कातिक अमावस प्रभात है ।
चौदश की रात है यह चौदश की रात है ॥टेक॥
पावा पुरी वन दिल को लुभा रहा ।
आनन्द बादल ये कैसा छा रहा ।
जै जै कार झड़ी लगी मानों बरसात है ॥ १ ॥
ऊषा है फूली सबेरा भी खो गया ।
रात्रि भी खो गई, अँधेरा भी हो गया ।
गगन में बाजे बजे कोई करामात है ॥ २ ॥
गये आज मोक्ष में वीर भगवान जी ।
रत्नों की रोशनी देवों ने आन की ।
पर्व ये दिवाली चला देशो मे विख्यात है ॥ ३ ॥
तभी ज्ञान केवल है गौतम ने पा लिया ।
वहीं "शिव" रास्ता हमको दिखा दिया ।
खुशियाँ मनाये क्यों न खुशी की ये बात है ॥ ४ ॥

भजन ५६

(तर्ज—मेरे दिल तोड़ने वाले, मेरे दिल की दुआ लेना)
श्री महावीर भक्ति में तू तन मन धन लुटा देना ।

अहिंसा प्रेम का नव पाठ दुनियाँ को पढा देना ॥ १ ॥
दिव्य पावन विभूति की शक्ति जग को बता देना ।
वीर महावीर का सन्देश घर घर में सुना देना ॥ २ ॥
दयामय ज्ञान–आगर को हृदय में तू बसा देना ।
धर्म के रक्षा के हेतु, भेट अपनी चढा देना ॥ ३ ॥
लक्ष्य महावीर के जीवन का दुनियाँ को बता देना ।
सत्य और प्रेम के पथ से विश्व जैनी बना देना ॥ ४ ॥
गुणन की खान भगवन का ज्ञान जग को करा देना ।
हटा अज्ञान सब जग का ज्ञान ज्योति जगा देना ॥ ५ ॥
दया और प्रेम से बन्धुत्व जग का तुम बढा देना ।
जो भूले वीर के पथ को तो 'सेठी' पथ बता देना ॥ ६ ॥

भजन ५७

वीर प्रभु आना, आना जी पार बेडा लगाना लगाना जी ॥टेक॥
इन कर्मों ने मुझको घेरा, प्रभु छाया है घोर अँधेरा ।
अब घबरा के तुम को टेरा ॥
भूले को राह बताना २ जी मन मदिर मे आना २ जी ॥वीर०
तुम मुक्ति के राह बनैया, मेरी डोले है भव बीच नैया ।
प्रभु किश्ती के हो तुम खिवैया ॥
अब कृपाकी बल्ली लगाना २ जी, मन मदिर में आना २ जी॥१
स्वामी मुझको अमर फल खिलादो, इन कर्मों से शीघ्र छुडादो।
अपने चरणों का "दास" बनालो ॥
शिवपुर की राह बताना २ जी, मन मदिर मे आना २ जी ॥३

भजन–श्री महावीर जी की महिमा ५८

वीर तुम्हारा ध्यान लगाकर, जिसने आन पुकारा है।
पार हुआ भव दुख से वोही, जिसने लिया सहारा है॥
चाँदनपुर प्रभु निकस आपने, जग का काज सवारा है।
सच्ची भक्ती पूरा करती, मन का भाव विचारा है॥
भवन विशाल दयाल विराजे, पीछे नदी किनारा है।
अन्दर बाहर वेदी ऊपर, काम सुनहरी न्यारा है॥
लगा सामने पखा खेंचे, गन्दी पवन बिनारा है।
धूप की बत्ती घृत का दीपक, सन्मुख जले अपारा है॥
चमक रत्न से रहा सिखर पर, बिजली बल्व उजारा है।
चार मील कटले तक पक्की, सडक बनी सुखकारा है॥
कहो धर्मशाला मे जारी, जल निर्मल नल द्वारा है।
अजन से बत्ती खम्बो पर, जले कतार कतारा है॥
चार चरण पर छतरी अन्दर, चढे दूध की धारा है।
देश देश के यात्री आते, रहती जय जय जय कारा है॥
फाटक ऊपर निशिदिन बजता, शहनाई नक्कारा है।
घन घन घण्टा घडी घूँघरू, घडनावल झकारा है॥
हारमोनियम बाजा तबला, गुनगायन गुँजारा है।
दर्शन पूजन भवन भावना, रहती बारम्बारा है॥
तीनो शिखर वीर का झण्डा, लहर लहर फैरारा है।
स्याह लाल गुल वर्ण वर्ण का, दरशा रहा नजारा है॥
टिकट रेल स्टेशन पर भी, स्वामी नाम तुम्हारा है।
नया कीर्तन "सुमत" आपका, सदा रचे मन हारा है॥

त्रिशला नन्दन पाप निकन्दन, इतना बोल हमारा है ।
ऐसे पुण्य क्षेत्र के दर्शन, हमको हो हर बारा है ॥

भजन महावीर की अमर कहानी ५६

सुनो सुनो ए दुनियाँ वालो महावीर की अमर कहानी ॥सुनो॥
तीन वर्ष का त्रिशलानन्दन सन्मति घर से निकला ।
सिद्धार्थ नृप का प्रिय कुमार वह कर्म काटन निकला ।
राज पाट परिवार त्याग के वह जगल मे आया ।
बाहर भीतर हुआ दिगम्बर ज्ञान ध्यान ध्याया ॥ सुनो ॥
घोर तपस्या करके उसने बारह वर्ष बिताये ।
कर्म काट के केवल पाया सब प्राणी हर्षाये ।
यज्ञो म नर पशु मरते थे आकर शीघ्र बचाये ।
मोह नीद से जगा जगाकर सम्यक् ज्ञान कराये ॥ सुनो ॥
धर्म उपदेश देकर जग को सुख मे उसे बनाया ।
स्याद्वाद का पाठ पढाके हट का भूत भगाया ।
मोक्ष मार्ग बतलाकर प्रभु ने प्राणी मुक्त कराया ।
पावापुर के बीच सरोवर बन्धन तज शिव पाया ॥ सुनो ॥
बापू ने भी शिक्षा ने देश मुक्त करवाया ।
चला गया वो वीर मार्ग से लौट न जग मे आया ।
सत्य अहिंसा ज्ञान रूप जो वीर ने धर्म बताया ।
सिद्ध कहे सुज्ञो ने उसको भक्ति से अपनाया ॥ सुनो । सुनो ॥

भजन महावीर की प्यारी वाणी ६०

सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालो महावीर की प्यारी वाणी ।

जिसने जग के लिए सुखो के हँसते हँसते की कुर्बाणी ॥सुनो॥
धर्म अहिंसा मुख्य बताया सब धर्मो का राजा ।
नहीं मारना किसी जीव को सब पर दया दिखाना ।
चीटी से हाथी तक जितने दिखते तुम्हे जिनावर ।
सभी चाहते सुख से रहना आतम एक बराबर ।
पेड वनस्पति पानी आदि इनमे जीव निशानी ।
इसीलिए तो बतलाया है पिवो छान कर पानी ॥ सुनो ॥
झूठ बराबर पाप न कोई झूठा ठोकर खाता ।
घर बाहर और राज सभा म कही न आदर पाता ।
घर वाली माता पुत्रादि भी विश्वास न लावे ।
सत्य कभी न छोडो चाहे प्राण भले ही जावे ।
बड़े बड़े मुनि ऋषियो ने है इसकी महिमा जानी ।
गाँधी जी ने इसकी रक्षा हित त्यागी जिन्दगानी ॥ सुनो ॥
चोरी करने वाले डाकू लुच्चे चोर कहाते ।
नाम न लेता इनका कोई सुन कर सब घबराते ।
बहुत चोर तो चोरी करते ऊँचे से गिर जाते ।
पकड़े जाने पर जेलो मे डण्डे जूते खाते ।
बड़े बड़े डाकू चोरो ने हार अन्त म मानी ।
धर्म अचौर्य से निज जीवन सुफल बनाओ प्राणी ॥ सुनो॥
पर की स्त्री माता पुत्री बहिना को ना घूरो ।
अपनी बहन सुता सम जानो काम वासना चूरो ।
वेश्या सेवन से हो जाती बडी बडी बीमारी ।
धन दौलत और ज्ञान प्रतिष्ठा सब की होती ख्वारी ।

रावन की क्या सुनी नही है तुमने नीच कहानी ।
कष्ट सहे और प्राण गँवाये नर्क पडा अभिमानी ।। सुनो० ।।
लोभ पाप का बाप बताया तृष्णा डाकन भाई ।
इनके वश मे लाखो ने म्रांण अपनी जान गँवाई ।
जो सुख चाहो इस जीवन में सन्तोषी बन जाओ ।
आवश्यकता से ज्यादा धन तुम अपने घर मत लाओ ।
जियो और जीने दो सब को कहते आतम ज्ञानी ।
स्याद्वाद पर चल कर रसिये ने महिमा पहचानी ।। सुनो० ।।

भजन ६१

(तर्ज—तेरे द्वार खडा भगवान भगत .. ...'बावन अवतार')
प्रभु नाव पडी मझधार पार कर दीजै मोरी ।
हुये जीर्ण शीर्ण पतवार कि इसमे है पापो का भार पार कर दीजै
।। प्रभु० ।।

मोह मगर टकराते देख कर, धीरज छूटा सारा,
आप सिवा अब कौन जिनेश्वर, नाव का खेवन हारा रे,
नाव का खेवन हारा,
मै देख चुका कई द्वार,भटकता फिरा हुआ लाचार, पार कर दीजै
मोरी ।। प्रभु० ।।

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ने डाला चहुँ दिश घेरा,
लुट जाये न इनके हाथो आज 'रतन' धन मेरा रे,
आज रतन धन मेरा,
तुम हो प्रभु करुणाधार करो इस नैय्या का उद्धार, पार कर दीजै
मोरी ।। प्रभु० ।।

भजन ६२

(तर्ज - बड भैय्या लाये है , लदन से छोरी 'एक ही रास्ता')

प्रभु पार्श्व आये है शरण म तुम्हारी ।
बनादो दशा आज बिगडी हमारी ॥
अग्नि म जलते नाग नागिन को है तुमन तारे,
हमतो तुम्हारे सेवक हम ही को क्यो विसारे ।
करी है हमारी इन कर्मो ने ख्वारी, बनादो ॥
गतियो म फिरते फिरते कैसा हाल हो गया,
जन्मो मरण का मिटना भी जजाल हो गया ।
हम भव भ्रमण से थक कर आये तुम्हारे द्वार
दो शक्ति हमको ऐसी, हो जॉय भव से पार ।
"रत्न न सुनाई है हकीकत यह सारी, बनादो ॥

भजन ६३

[तर्ज—बकस की आबरू को एक ही रास्ता"]

पशुओ के सुन रुदन को, तौरण से रथ को मोडा ।
राजुल को क्यो सिसकता, नमी कुमार छोडा ॥
सग यादवो को लेकर, आये थ व्याह रचाने,
देखा कि—जा रहे है', पहुँचे सभी मनाने ।
छोडी न अपनी हठ को नव भव का स्नह तोडा ॥ राजुल ॥
अपन विवाह के हित, हिंसा न तुमको भाई,
तुम बन गये विरागी राजुल को दे जुदाई ।
आखिर को तुमने नाता, शिवनार से है जोडा ॥ राजुल ॥

भजन ६४

[तर्ज—अय दिल मुझे बतादे · "भाई भाई"]

इस जग मे वीर आकर, दीपक जला गया है।
अज्ञान अन्धता को, जग से मिटा गया है ॥
फिर क्या यह आज दुनिया, गलती पे जा रही है,
अज्ञान अन्धता की, फिर बू क्यो आ रही है।
सतोष पूर्ण जीना, सबको सिखा गया है ॥ अज्ञान ॥
अणुबम विनाश कारी, दुनियाँ यह क्यो बनाती,
मरन औ मारने का, सामान क्यो सजाती।
'जीवो औ जाने दो' का, वह हक दिला गया है ॥ अ० ॥
अब युग यह चल रहा है, करवट बदल बदल के,
मानव तू आज चलना, पद–पद सँभल २ के।
सत्-पथ पे वीर चलकर, शिव पद को पा गया है ॥ अज्ञान ॥

भजन ६५

(तर्ज—जापानी "श्री चारसौ बीस")

हो गये महावीर जिन स्वामी, उनकी है यह अमर कहानी।
सिद्धारथ के राज दुलारे, माता थी त्रिशला महारानी ॥
नाच रही थी हिंसा घर घर, अपना सीना ताने,
सबल निर्बलों पर मन चाहे, जुल्म लगा था ढाने।
मानव करता था मनमानी, प्रकटे वीर प्रभु से ज्ञानी,
सिद्धारथ के राज दुलारे, माता थी त्रिशला महारानी।
करुण दशा देखी दुनियाँ की, जगी भावना मन की,

जग जन के हित तजी प्रभु ने तृष्णा राज भवन की ।
थी सन्मति की पूर्ण जवानी, बन जा तप करने की ठानी,
सिद्धारथ के राज दुलारे, माता थी त्रिशला महारानी ॥
बारह बरष कठिन तप करके, केवल ज्ञान उपाया,
"जीवो जीने दो सब जग को" यह उपदेश सुनाया।
पावा मोक्ष भवन लासानी, उनकी है यह "रतन" कहानी,
सिद्धारथ के राज दुलारे, माता थी त्रिशला महारानी ॥

भजन ६६

(तर्ज—जादूगर सैया छोड मेरी 'नागिन')
डूब रही नैया,कोई न खिवैया,हे हे जी दीनानाथ,तनक सहारादो।
तू ही प्रभु मेरा,दास हूँ मै तेरा,रक्षा है तेरे हाथ,तनक सहारादो ॥
छाया अँधियारा सूझे न किनारा. मंजिल मेरी बडी दूर है।
दीन दयाल करुणा सागर, नाम तेरा मशहूर है॥
तू ही तो निभावे साथ ॥ १ ॥
दास ये पुकारे, अर्ज गुजारे, माला रटे तेरे नाम की।
देर करो मत, आओ जी स्वामी, विपत हरो 'शिवराम' की ॥
हे नाथ नमाऊँ माथ ॥ २ ॥

भजन ६७

(तर्ज—मेरा दिल ये पुकारे आजा "नागिन")
त्रिशला के दुलारे आजा, दीनो के सहारे आजा।
मेरा कोई न यहाँ प्रभु जाऊँ मैं कहाँ ॥ टेक ॥

कर्म दे रहे हैं दुख, हे प्रभु क्या करूँ क्या करूँ।
जन्म और मरण कष्ट हा मैं भरूँ मैं भरूँ।
अब तेरी है शरण, तू है सङ्कट हरण, हे वीरदर्श दिखलाजा।१।
ज्ञान दर्शन खजाना मेरा लुट रहा, लुट रहा,
शान्ति सुख का घराना, मेरा मिट रहा मिट रहा।
पीछे पडे हैं करम ठग आठ बेशरम, अब पिण्ड जरा छुडवाजा।२।
लौटकर मुक्ति से वीर आते नही हाँ आते नही,
वीर तुम खुद बनो, है मुनासिब यही है यही।
दास मत बनो शिवराम तुम हो जो निज शक्ति जरा प्रकटाजा।३।

भजन ६८

(तर्ज–सुनरी सखी मोहे सजना बुलाये "नागिन")

बुनोजी प्रभु मोहे कर्म रुलाये, भव भव की खिलाये
भँवरियाँ हाँ……॥
तुम बिन किसको सुनाऊँ दुख बतियाँ हाँ हाँ, हाँ हाँ,
निश दिन कर्म भ्रमाये चहुँ गतियाँ, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ,
इनसे बचावो भव फन्द छुडाओ, मोहे शिव की दिखादो
डगरियाँ हाँ
बिनती पै ध्यान धरोजी, दुख हरिया, हाँ, हाँ, हाँ,
करदो 'रतन' पर दया की नजरियाँ हाँ, हाँ, हाँ, हाँ,
भार हरो मत देर करो, मेरे सर पै पाप गठरियाँ हाँ।

भजन ६९

(तर्ज–भीगा भीगा है समा "नागिन")

तुम से लगी है लगन, लेलो अपनी शरण,

प्रभु द्वार तुम्हारे आया, तेरे करके दर्श हरषाया ।।
तू नही गर सुने तो किसे कहूँ, जा कहूँ ।
दूर रह के मै तुझसे सदा दुख सहूँ, दुख सहूँ ।।
अब ना छूटे ये चरण, मेटो जामन मरण,
यही आशा हृदय मे लाया ।। प्रभु०
दीन दुखिया जो तेरी शरण आगया, आगया ।
नर्क की राह तज वह सुपथ पागया, पागया ।।

गायन ७०

(तर्ज–ओ दूर के मुसाफिर हमको भी साथ लले 'उडन खटोला')
ओ दूर के मुसाफिर टुक जागजा सबेरे पीछे लगे लुटेरे ।।टेक।।
है पास ज्ञान का धन, चिन्ता तुझे न लेकिन ।
बेहोश हो रहा है, सर्वस्व खो रहा है ।
अब हो सचेत भाई, सतगुरु जगाये तेरे, पीछ लगे लुटेरे ।।१।।
इन्द्रिय ठगो ने घेरा, लूटगे धन ये तेरा ।
तू सावधान हो जा, पूँजी बचा के लेजा ।
पछतायेगा वगरना, तू मान मित्र मेरे, पीछे लगे लुटेरे ।। २ ।।
मजिल है दूर तेरी उठ जाग कर न देरी ।
सामान कर सफर का, ले रास्ता तू घर का ।
'शिवराम' एक साथी जिनधर्म साथ ले रे, पोछ लगे लुटेरे ।।३।।

भजन ७१

(तर्ज–साबरमती के सन्त तून कर दिया कमाल "जागृति")
राजा सिद्धार्थ के कँवर त्रिशला के प्यार लाल
कुण्डलपुरी के वीर तूने कर दिया कमाल ।

बचपन में खेला नाग से तू वीर बे मिशाल ॥टेक॥ कुण्डलपुरी
इक रोज मस्त हाथी था नगरी मे छुट गया,
चुटकी में उसे आपने काबू मे कर लिया।
शादी के लिये आपसे जब तात ने कहा,
उस वक्त आपने तुरत इनकार कर दिया।
दुनियाँ को ब्रह्मचर्य का दिखा दिया जलाल ॥ १ ॥ कुण्डलपुरी
ससार को असार जब कि आपने जाना,
दुनियाँ के भोगो का भुजग आपने माना।
तज करके राज पाट और ठाठ शाहाना,
था नौजवानी में धरा मुनिराज का बाना।
समता का भाव धर लिया करके हृदय विशाल ॥२॥ कुण्डलपुरी
केवल सुज्ञान आपने तप करके पा लिया,
भूले हुओ को आपने रस्ता बता दिया।
कल्याण करके विश्व का शिवराज जा किया,
आदर्श आज वीर को हमने बना दिया।
नक्श कदम पै हम चले अपना कदम सम्भाल ॥३॥ कुण्डलपुरी

भजन ७२

(चाल—मेरा''' है जापानी)

सुन तू वीर प्रभु की वाणी, सब ही जीवो को सुखदानी
करती पशुओ का कल्याण, तो फिर नर की कौन कहानी ॥टेक॥
स्याद्वाद है तत्व निराला जो मतभेद मिटाता
कर्मों का सिद्धान्त है आला जो स्वाधीन बनाता
ये जिन वाणी है लासानी, इसको समझे विरले ज्ञानी
करती पशुओ० ॥१॥

आतम से परमातम होना वाणी हमें सिखाती
नीच अधम और पतितों को है मुक्ति का पन्थ दिखाती
देखो कथायें पुरानी, अंजन चोर भए सुज्ञानी :.
करती पशुओं० ॥ २ ॥

तत्त्व अहिंसा इसका उत्तर समता पाठ पढ़ाता
वीरों का आभूषण है ये कायर नही बनाता
सोचें समझें नही जो प्राणी, दूषण देते हैं अज्ञानी
करती पशुओं० ॥३॥

चन्द्रगुप्त सम्राट जैन थे जाने दुनियाँ सारी
और अशोक अहिंसा का था कट्टर एक पुजारी
उनके शासन का नहि सानी, तारीफ करते दूत यूनानी ॥४॥
इसही अहिंसा से गान्धी ने हमें स्वराज्य दिलाया।
ऐटम बम्ब पड़े सब ठंडे जादू अजब चलाया
भागी दूर सभी शैतानी, दुनिया मान रही हैरानी ॥५॥
अब घर मे सन्देश वीर का तुम शिवराम सुनाओ
विश्व प्रेम का नाद जगत मे मित्रो आज बजाओ
मानो वीर वचन सुखदानी, छोड़ो छोड़ो खेंचातानी
करती पशुओं का० ॥ ६ ॥

भजन ७३

(बाश-आओ बच्चो तुम्हे दिखाये झांकी हिंदुस्तान की (जागृति)
सुनो जवानो तुम्हें दिखाये झांकी हिन्दुस्तान की।
इस वाणी का मनन करो जो इच्छा हो कल्याण की।
वन्दे सन्मतिम् वन्दे सन्मतिम् ।। टेक ॥

वीर प्रभु की वाणी ये सन्मार्ग हमें दिखलाती है।
ऊँच नीच का भेद मिटाकर समता पाठ पढ़ाती है।
स्याद्वाद से मतों के झगड़े सारे दूर भगाती है।
आतम से परमातम होना वाणी ये सिखलाती है।
एक यही जिनवाणी है सब जीवों के उत्थान की ॥ इस० ॥१॥
इसका तत्त्व अहिंसा जग में शांति अमन सिखलाता है।
वीरों का आभूषण है ये कायर नहीं बनाता है।
जो कि अहिंसा का है पालक वीर वही कहलाता है।
देश पतन का कारण कोई ये समझे बतलाता है।
इसी के कारण आज हिंद को विजय मिली है शान की ॥इस०२॥
परमाणु की ताकत को यों जैन ग्रन्थ बतलाते हैं।
एक समय में चौदह राजू गमन शक्ति दर्शाते हैं।
राजू है वह कितना लम्बा इसकी हद नहीं पाते हैं।
पुद्गुल के है सभी नजारे आज नजर जो आते हैं।
वृक्षों मे भी जोव बताया सिद्धि है विज्ञान की ॥ इस० ॥३॥
मिला समय अनुकूल आज तो मगर पड़े हम सोते हैं।
जैन धर्म प्रचार का अवसर हाय सुनहरी खोते हैं।
धर्म कर्म को ढोंग बताकर बीज पाप का बोते हैं।
मिलता है जब कर्मों का फल शीश पकड़ कर रोते हैं।
भूल रहे हैं आज कथा ऋषियों के बलिदान की ॥ इस०॥४॥
धर्म हेतु निकलंक देव ने अपना शीश कटाया था।
नष्ट हुआ जब जैन धर्म अकलंक ने आन बचाया था।
समन्त भद्र स्वामी ने आकर डंका जैन बजाया था।

खुद जीवो और जीने दो सबको यह सन्देश सुनाया था ।
वाणी मिली शिवराम अध्यातम कुन्द कुन्द भगवान की ।इस०।५।

भजन ७४

(राग–दरबारी कान्हरा)

घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन निशदिन प्रभुजीको सुमरण करले रे ।। टेक ।।

प्रभु सुमरे ते पाप कटत है, जन्ममरण दुख हरले रे ।
मन वच काय लगाय चरण चित ज्ञान हिया बिच धरले रे ।
'दौलतराम' धरम नौका चढ़ भवसागर से तिरले रे ।।

महावीर भक्ति भजन ७५

जो तेरी याद महावीर आती रहेगी,
तो कर्मो की उलझन भी जाती रहेगी ।
बुरा यह हुआ जो मैं तुमसे अलहदा,
तुम्हारी जुदाई सताती रहेगी ।।
यह मुमकिन नही मै तुम्हे भूल जाऊँ,
मेरी जान भी चाहे जाती रहेगी ।
जमाना गो बदला मगर हम न बदले,
नजर तेरे कदमों मे जाती रहेगी ।।
जुदा आप मुझसे रहेंगे तो क्या है,
मेरी आरजू तो बुलाती रहेगी ।
मेरे हाले दिल को सुना तो यूँ बोले,
यह किरनों की झलकी तो आती रहेगी ।।

नहीं छोड़ा तीर्थङ्करों को कर्म ने,
तेरी भी मुसीबत यह जाती रहेगी ।
छिपा है जो सिद्धों में जाकर तू मुझसे,
नजर मेरी तुझ पै वहीं जाती रहेगी ॥
मेरा दिल बना है तेरा डाकखाना,
खबर इसमें तेरी तो आती रहेगी ।
गया छोड़ लिख कर पता तू जो अपना,
तेरा भेद वाणी बताती रहेगी ॥
मैं पहुँचूंगा चरणों में जब वीरवर के,
जो कुलफत हुई है वह जाती रहेगी ।
खिचा है जो नक्शा 'मुरारी' के दिल पर,
मिटेगा न दुनिया मिटाती रहेगी ॥

आजा भजन ७६

(तर्ज—नाम जिन्दों में लिखा जायेगे मरते मरते)

वीर भगवान तू फिर, दर्श दिखाने आजा ।
यह हुआ देश दुखी, धर्म सुनाने आजा ॥ टेक
वे जवानों के गले, आज है चलते खंजर ।
फिर दया धर्म का तू डंका बजाने आजा ॥ १
हाय तीर्थों पर हुई अब मुकदमे बाजी ।
अपने भक्तों की प्रभु, फूट मिटादे आजा ॥ २
हुई तहजीब भी, काफूर हमारी अब तो ।
फिर वही सभ्यता, प्राचीन सिखादे आजा ॥ ३

है पराधीन हुआ, आज हमारा भारत । .
गैरो के हाथ से, आजाद करादे आजा ॥ ४
जैन का दायरा अब, तग हुआ है बिल्कुल ।
करके तू इसको बसी फिर से दिखादे आजा ॥५
जैन के नाम से ही चिडने लग वे समझे ।
द्वेष अरु पक्ष की तू आग बुझाने आजा ॥ ६
कर रहे गैर है अब चारो तरफ से हमले ।
न्याय तलवार से अब उनको हटाने आजा ॥ ७
छाया पाखण्ड का अंधरा है सारे जग में ।
भूले फिरते हैं जो 'शिव' राह बतादे आजा ॥ ८

भजन आकाश-वाणी (उत्तर) ७७

(तर्ज—नाम जिन्दो मे लिखा जायेंगे मरते मरते)

वीर के आने का सामान बनाओ तो सही ।
वीर दर्शन का जरा पुण्य कमाओ तो सही ॥ टेक
कौन सी मात है वह कूख में जिसकी आये ।
देवी त्रिषला सी कोई मात बताओ तो सही ॥ १॥
वीर को चाहते हो फिर से बुलाना गर तुम ।
कोई सिद्धार्थ पिता हमको दिखाओ तो सही ॥ २ ॥
किस जगह जन्म ले वह कौन है ऐसी नगरी ।
कोई कुण्डलपुर सा शहर बसाओ तो सही ॥ ३ ॥
वीर उपकार को है तुमने भुलाया बिल्कुल ।
ऐसी कृतघ्नता पै दिल में लजाओ तो सही ॥ ४ ॥

देश भारत में नदी खून की बहती हरजां ।
दूध गौओं का वहाँ, पहले बहाओ तो सही ॥ ५ ॥
काम हिंसा के तजो वीर बुझाने वाले ।
मेट कुर्बानी बली यज्ञ हटाओ तो सही ॥ ६ ॥
लौट के आते नही मुक्ती से कोई 'शिव राम' ।
आप खुद आपको ही वीर बनाओ तो सही ॥ ७ ॥

भजन ७८

(गायन—जीवन का लक्ष्य)

नक्शे कदम ये वीर के, दिल की लगी बुझाये जा ।
थी जिन्दगी जो वीर की, ऐसी ही तू बनाये जा ।। टेक ॥
दुनियां है एक अन्धेरा बाग, धर्म इसमें है चिराग ।
ये चिराग जितनी देर, जल सके जलाये जा ॥ १ ॥
जिन्दगी है एक सितार, तत्व सात इसके तार ।
त्याग और वैराग्य की, मिजराय से बजाये जा ॥ २ ॥
कर्म है "माणिक" प्रबल, कर दिया तुमको निबल ।
इनकी हस्ती जिस तरह मिट सके मिटाये जा ॥ ३ ॥

भजन ७९ नेमिनाथ और राजुल

वो योग ने मस्ताना चितवन डाल दी ।
नेमि ने शादी में उलझन डाल दी ॥
छोड कर राजुल पिता, बोले कुँवर कहाँ को चले ।
सुनके वालिद के सखुन, यूँ नेमि जी कहने लगे ॥
अब मैंने शिव रमनी मे चितवन डाल दी ॥ वो० ॥ १ ॥
ले इजाजत माँ से राजुल चल दई ।

पास जा श्री नेमि जी से यूँ कहो ॥
क्यो मेरी शादी में उलझन डाल दी ॥ बो० ॥ २ ॥
नेमिजी कहने लगे, सुन के राजुल का सखुँ ।
क्या करूँ मै होता था, तेरे लिये लाखो का खूँ ।
इसलिये सुलझन मे, उलझन डाल दी ॥ बो० ॥ ३ ॥
आपका निश्चय है यह तो राजुल भी 'मणिक' तप करे ।
दीक्षा दीजे नाथ भव सागर से ये दासी तरे ॥
बस इतना कह, चरणो मे गरदन डाल दी ॥ बो० ॥ ४ ॥

भजन ८० नेमि विवाह

ये बादल बेरुखी के मेघ बन बन के निकलेगे ॥ टेक ॥
बरसते झूमते कदमो पै रिमझिम बन के निकलेगे ।
मेरे नेमि जब मेरे सामने चितवन के निकलेगे ॥
मुसर्रीरात खेल होगा क्या वो जूनागढ का नजारा ।
जब नेमि यहाँ के बाजारो में, दूल्हा बन के निकलेगे ॥ १ ॥
बडी भाई वो मन मोहक है नेमि व्याह ने आये ।
उधर श्री कृष्ण ने तोरन पै हैवाँ कैद करवाये ॥
जब देखा नाथ को पशुओ ने शिकवा लब पै यूँ लाये ।
हमारी जान जाएगी और तुम देखोगे आखो से ॥
फवारे खून के जिस दम सामने गर्दन से निकलेगे ॥ २ ॥
सुनी गुफ्तार पशुओ की, तो दुनियाँ ही छोड बैठे ।
रिहाई कफ्स से कर, सेहरा कँगना तोड ही बैठे ॥
समझ दुनियाँ को फानी, तर्क दुनियाँ भरको कर बैठे ।
उदासी देख वालिद उन से घबरा कर ये कह बैठे ॥

हम देख आँखो से अरु आप योगी बन के निकलेंगे ॥ ३ ॥
फुगा बेकार ना ले फिजू जब वो न आये योगी ।
हटाया मोह दुनियाँ से, बने शिव नार के भोगी ॥
तेरे दर्श को ये "माणिक" तेरा बेचैन रहता है ।
तेरे कदमो पर गिर कर अब दीदा होके कहता है ॥
ये बद आमाल कब इस रूह के कन कन से निकलेंगे ॥ ४ ॥

भजन ८१ (राजुल की पुकार)

नेमि पिया की राजुल रोती है डार डार ।
रथ को तुम फेरो स्वामी, कहती हूँ बार बार ॥ टेक ॥
गल्ती मेरी कुछ हो तो, मुझको बतादो ।
मुझ अबला के हो तुम, जीवन के सार सार ॥ नेमि० ॥ १ ॥
ठहरो तुम ठहरो स्वामी, अब मैं आती हूँ ।
झूठी है ममता जग की, दीक्षा लेती हूँ ॥
पति न होवे तो है, नारी जीवन भार भार ॥ नेमि० ॥ २ ॥
बन म ही रह कर, मैं तप को करूँगी ।
त्यागी है तृष्णा, अब ना घर मे रहूँगी ॥
अपनो दासो को जग मे, कर देना पार पार ॥ नेमि० ॥ ३ ॥
राजुल गई है सब, भूषण को छोड कर ।
मात पिता अरु तुमसे, ममता को तोड कर ॥
'बिष्णु' की विनती ये ही पापो को हार हार ॥ नेमि० ॥ ४ ॥

भजन ८२ (राजुल पुकार)

(तर्ज—बतादे सखी कौन गली गये श्याम)
बतादे सखी नेमि गये कित ओर ॥ बतादे० ॥ टेक ॥

मैं तो उन्ही के चरणो की दासी ।
काटू ँगी जाकर, लगी जो फाँसी ।
ढू ँढू ँगी बन बन दोर ॥ बतादे० ॥ १ ॥
मात पिता सब को तज दू ँगी ।
सखी सहेली सग मे न लू ँगी ।
ध्यान धरू ँगी मन मोर ॥ बतादे० ॥ २ ॥

भजन मनोकामना ८३

मेरे मन मन्दिर मे आन पधारो, महावीर भगवान् ॥ टेक
भगवान् तुम आनन्द सरोवर ।
रूप तुम्हारा महा मनोहर ॥
निशदिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान् ॥ १
सुर किन्नर गणधर गुण गाते ।
योगी तेरा ध्यान लगाते ॥
गाते सब तेरा यश गान, पधारो महावीर भगवान् ॥ २
जो तेरी शरणागत आया ।
तूने उसको पार लगाया ॥
तुम हो दयानिधे भगवान्, पधारो महावीर भगवान् ॥ ३
भक्त जनो के कष्ट निवारे ।
आप तरे और हमको भी तारे ॥
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान् ॥ ४
आये हैं अब शरण तिहारी ।
पूजा हो स्वीकार हमारी ॥
तुम हो करुणा दया निधान, पधारो महावीर भगवान् ॥ ५

रोम रोम मे तेज तुम्हारा ।
भूमण्डल तुमसे उजियारा ॥
रवि "शशि" तुमसे ज्योतिर्मान,पधारो महावीर भगवान् ॥६

भजन ओम् भक्ति ८४

ओम् अनेक बार बोल आतम सर भोगी ॥ टेक ॥
निर्विकल्प निर्विवाद, ये ही हैं अनादि नाद ।
धारते हृदय मे सदा वीतराग योगी ॥ ओम्० ॥१॥
अनात्म भाव को तू त्याग, विषम कषाय से विराग ।
जपले, ओम् नाम सदा, तब ही जय होगी ॥ ओम्० ॥२॥
पाँचो परमेष्ठी जान, गर्भित इसम सुख निधान ।
पा के मन्त्र राज को, भव दधि से पार होगी ॥ओम्॥३॥
परम ब्रह्म रूप जान, ये ही शिव स्वरूप मान ।
ध्यान मगन आत्मा तब, रिद्ध सिद्ध होगी ॥ ओम्० ॥४॥
"मगल" सुखकर इसको जान, होय पाप की भी हान ।
आदि लगे कर्म जाल की क्षय होगी ॥ ओम्० ॥ ५ ॥

भजन ८५

(तर्ज—तुम्ही चले परदेश । फिल्म रतन)
क्यो ! वीर लगाई देर सुनी नहि टेर हमे न उबारा ।
दुनियाँ मे कौन हमारा ॥
ये दुख के बादल छाए है,
हम बेवश है घबराए हैं ।
अब तुम्ही कहो कित जायँ कही न सहारा ॥ दुनियाँ०

हम माया पर इतराए हैं,
इस करनी पर पछताए हैं।
यह तुम्हीं देख लो वही होय दृगधारा ॥ दुनियाँ०
विषयों में हमें लुभाया है,
अज्ञान अँधेरा छाया है।
अब सूझ रहा है देव कहीं न किनारा ॥ दुनियाँ०
तुमने सब संकट टारे हैं,
हम से पापी तारे हैं।
हम किस गिनती में रहे हमे न सम्हारा ॥ दुनियाँ०
हम तेरा दृढ़ विश्वास किए,
'कुमरेश' हृदय में आश लिए।
अड़ गए पकड़ कर यही तुम्हारा द्वारा ॥ दुनियाँ०

भजन ८६

(तर्ज—क्या मिल गया भगवान् तुम्हें। फिल्म अनमोल घड़ी)

क्या मैं कहूँ भगवान तेरी शरण में आके।
गत कर्म ने करदी जो मेरी हाय ! सताके ॥
मैं सोच रहा था सदा अब सुख से रहूँगा।
आनन्द की धारा में यहाँ निर्भय बहूँगा ॥
ये क्या थी खबर कर्म की होगी न दया भी।
रख देगा किसी दिन मेरे अरमान मिटा के ॥
गत कर्म ने.........
उम्मीद थी मुझको सभी अनुकूल रहेंगे।
जीवन में शूल भी मेरे तो फूल रहेंगे ॥

पर बन गये हैं आज सभी अपने बिगाने।
वे सेकते हैं हाथ घर मे आग लगाके ॥
गत कर्म ने..........

अफसोस क्या करूँ है सुनी मैंने कहानी।
श्रीपाल को कब लील सका सिन्धु का पानी॥
शूली न सुदर्शन को कही काट सकी भी।
बच जाते तेरे नाम की सब टेर लगाके॥
गत कर्म ने........

आफत मे पड रहा हूँ मै लाचार हो गया।
तेरे चरण का बस मुझे आधार हो गया॥
'कुमरेश' पर तू कर नजर प्रभु अब तो दया की।
दु ख दर्द मिटादे मुझे शिववास दिला के॥
गत कर्म ने.........

भजन ८७

(आजा मेरी बरबाद मोहब्बत के सहारे। फिल्म अनमोल घड़ी)
आजा ओ आजा

आजा प्रभु महावीर रे दीनों के सहारे।
है कौन जो तेरे सिवा तकदीर सँवारे॥
आई है मुसीबत हमे बस आसरा तेरा
हमें बस आसरा तेरा
सुनले पुकार रो रहे हम दर्द के मारे
है कौन जो.........
उम्मीद मिट गई सभी अरमान मिट चुके

सभी अरमान मिट चुके
उफ लुट चुके बस बच रहे हैं प्राण हमारे
है कौन जो..........
बरबाद हो रहे नही मिलता है ठिकाना
नही मिलता है ठिकाना
इस डूबती नैया को लगा तू ही किनारे
है कौन जो..........
अविवेक ने इतना हमे मदहोश कर दिया
हमें मदहोश कर दिया
खुद ही बनी बिगाड़ली निज पर पै लुभाके
है कौन जो.........
अजन सा अधर्मी नही क्या तूने उबारा
नही क्या तूने उबारा
यमपाल से चाण्डाल भी है तूने ही तारे
है कौन जो.......
'कुमरेश' कह रहा नही क्या विनती सुनोगे
नही क्या विनती सुनोगे
हम भी पड़े रहेगे यही दर पै तुम्हारे
है कौन जो.......

भजन ८८

(तर्ज रतन–जब तुम्ही चले परदेश)
जय जय जग तारक देव, करे नित सेव, पदम-जिन तेरी,
अब वेग हरो भव फेरी ॥ टेक ॥

तुम विश्व पूज्य पावन पवित्र, हो स्वार्थहीन जग जीव मित्र,
हो भक्तो के प्रतिपाल करो मत देरी ॥ अब० ॥ २
मुनि मानतुङ्ग का कष्ट हरा, पल मे सब बन्धन मुक्त करा।
रणपाल कुंवर की तुम्ही ने काटी बेरी ॥ अब० ॥ ३
कपि स्वान सिह अज बैल अली, तारे जिन तब ली शरण भली
यश भरी है अपरम्पार कथाऐ तेरी ॥ अब० ॥ ४
कफ वात पित्त अन्तर कुव्याधि, जादू टोना विषधर विषादि
तुम नाम मन्त्र से भीड भगे भव केरी ॥ अब० ॥ ५
अब महर प्रभु इतनी कीजे, निज पुर मे निज पद सम दीजे
"सौभाग्य' बढे, शिव रमा हो पद की चेरी ॥अब० ॥ ६

भजन ८९

सब मिल के आज जय करो वीर प्रभु की ॥ टेक
विघनो का नाश होता है लेने से नाम के।
माला सदा जपते रहो, श्री वीर प्रभु की ॥सब मिल० १
ज्ञानी बनो, दानी बनो, बलवान भी बनो।
अकलक सम बनके कहो, जय वीर प्रभु की ॥ सब मिल० २
होकर स्वतन्त्र धर्म की, रक्षा सदा करो।
निर्भय बनो अरु जय कहो, श्री वीर प्रभु की ॥ सब मिल ०३
तुझको भी अगर मोक्ष की, इच्छा हुई अय 'दास'।
उस वाणी पर श्रद्धा करो, श्री वीर प्रभु की ॥ सब मिल० ४

भजन ९० (भक्त की पुकार)

मैने छोडा सभी घरवार, भगवन् तेरे लिये ॥ टेक
तुमको टीला खोद निकाला, मेहनत से यह छप्पर डाला।

रहे सब यही परिवार ॥ भगवन्० १
ओबराज को तुमने बचाया, फिर मन्दिर उसने बनवाया।
आ रहे जैनी अपार ॥ भगवन्० २
दबे पडे जब कोई न आया, तुम्हे न जाने दूँ मन भाया।
चाहे हो जाये तकरार ॥ भगवन्० ३
चढे वहाँ घी मेवा नरियल, सोना चादी केशर तन्दुल।
थी यहाँ गऊ की धार ॥ भगवन्० ४
जो तुम मन्दिर मे जाओगे, प्रीत मेरी सब बिसराओगे।
हो जाऊँगा मै तो ख्वार ॥ भगवन्० ५
बीबी बच्चे सब बिल्लाये, उधर खडी गैया डकरायें।
मर जायँ धरणि सर मार ॥ भगवन्० ६
असर किया वो ग्वाल रुदन ने, तभी वहाँ हितकर गगन से।
सुर द्वारा कराई पुकार ॥ भगवन्० ७
प्रतिमा यहाँ से जब यह जावे, गाडी को तू हाथ लगावे।
पहिले छत्री करे तय्यार ॥ भगवन्० ८
उसका सदा चढावा खाना, जब चाहे तब दर्शन पाना।
सदा रक्खे खुला दरबार ॥ भगवन्० ६

भजन भक्त की पुकार ६१

वीर प्रभु आना, आना जी पार बडा लगाना लगाना जी ॥ टेक
इन कर्मों ने मुझको घेरा, प्रभु छाया है घोर अन्धेरा।
अब घबरा के तुमको टेरा ॥
भूले को राह बताना २ जो मन मन्दिर मे आना २ जी ॥वीर०१

तुम मुक्ति के राह बतैया, मेरी डोले है भव बीच नैया।
प्रभु किश्ती के हो तुम खिवैया ॥
अब कृपा की बल्ली लगाना २ जी, मन मंदिर मे आना २ जी२
स्वामी मुझको अमर फल खिलादो, इन कर्मों से शीघ्र छुड़ादो।
अपने चरणो का "दास" बनालो ॥
शिवपुर की राह बताना २ जी, मन मंदिर मे आना २ जी ॥३

भजन ६२

वीरा वीरा मै पुकारू तेरे दर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया महावीर जी भगवान् ने ॥
मोहनी छवि को दिखादो अय मेरे भगवान् मुझे।
तेरी चर्चा हम करेगे, हर बशर के सामने ॥ वीरा०
डूबते श्रीपाल को तुमने बचाया हे प्रभो।
द्रौपदी की लाज राखी कौरव दल के सामने ॥ वीरा०
हार का बन कर सरप जब डस लिया उस सेठ को।
सोमा ने सुमिरण किया महावीर जी के नाम को ॥वीरा०
चित्त हम सबका भटकता है, वीर के दीदार को।
कर जोड़ के देखा करू, मैं तेरे दर के सामने ॥ वीरा०

भजन ६३

चांदनपुर के महावीर (गजल)

वीर क्या तेरी निराली शान है।
देख के दुनियाँ जिसे हैरान है ॥ टेक
जाने क्या जादू भरा है आप मे।
हर वशर को आपका ही ध्यान है ॥ १

सैकड़ो मीलो से आते हैं यहां,
दर्श बिन दुनियां तेरे हैरान है ॥ २
जिसने जो हसरत तुम्हे जाहिर करी,
आपने पूरा किया अरमान है ॥ ३
जो भी आया आपके दरबार मे,
उसको मुंह माँगा दिया वरदान है ॥ ४
जीव हिंसा को हटाया आपने,
सारे जीवो पर तेरा अहसान है ॥ ५
रास्ता मुक्ति का बतलाया हम,
तेरा ममनू सारा हिन्दुस्तान है ॥ ६
कामधेनू सी है ज्योति आप म,
वोही शक्ति आप म परधान है ॥ ७
है दया करना धरम इन्सान का,
वीर स्वामी का यही फरमान है ॥ ८
"राज" पै भी हो इनायत की नजर,
आपके सन्मुख खड़ा नादान है ॥ ९

भजन ६४

(तर्ज—रतन फिल्म)

चाँदनपुर महावीर, भरो सुख सीर, हरो दुख सारा,
दुनियाँ मे कौन हमारा ॥ टेक
प्रभु चरणो की महिमा भारी, सुन्दर छवि सोहे मनहारी
तुम अतिशय की बलिहारी, प्रभु हमको तारो,
आज न करो किनारा ॥ दुनियाँ० १

भक्तो का पारावार नही, भक्ति का कोई शुम्मार नही।
कब ही खाली दरबार नहीं, हम दीनो को,
भवसिंधु से करदो पारा ॥ दुनियाँ० २
अपने दिल में जो ध्याता है, वह सफल मनोरथ पाता है।
नही खाली कोई जाता है, हे अजब देव भगवान,
न कोई बिसारा ॥ दुनियाँ० ३
घर बैठे जो गुन गान करैं, वह भी सुन्दर जलपान करैं।
कोई विपद न उस पर आन परै, प्रभु करो 'सुदर्शन' पार,
न लावो बारा ॥ दुनियाँ० ४

भजन दुनियाँ की पुकार ६५

(तर्ज—रतन–रिमझिम बरसे बादरवा)

दुख के छाये बादरवा दूषित हवायें आईं।
वीर मोरे आजा आजा मोरे वीर आजा ॥ टेक
विपदा के बादल घिर घिर आगये आगये।
ऐसे दुर्दिन में भगवन् तुम कहाँ गये कहाँ गये ॥
कैसे ये दिन बीत रे, जग की विपदा को हरने।
प्यारे प्रभु आजा आजा, प्यारे प्रभु आजा ॥ वीर० १
क्या कहूँ भारत की जनता सो गई सो गई।
आलस में सो करके सब निधि खोदई खोदई ॥
तुम बिन कौन जगायेरे, सोई जनता को भगवन्।
फिर से उठा जा आजा, फिर से उठाजा ॥ वीर० २
जो जन शुद्ध भाव से तुझको, ध्याते है ध्याते हैं।
पापी तक भी भवसागर, तिर जाते है जाते है ॥

फिर क्यो देर लगाये रे, 'रतन' खडा दर तेरे।
इसे अपना जा आजा, इसे अपना जा ॥ वीर० ३

भजन ९६

(तर्ज—चुप चुप खडे हो जरूर कोई बात है। फिल्म-बडी बहिन)
धन धन कार्तिक अमावस प्रभात है।)
चौदश की रात है यह चौदश की रात है ॥ टेक
पावापुरी वन दिल को लुभा रहा।
आनन्द बादल ये कैसा छा रहा।
जै जै कार भण्डी लगी मानो बरसात है ॥ १
ऊषा है फूली सबरा भी हो गया।
रात्रि भी खो गई, अँधेरा भी खो गया।
गगन मे बाजे बजे कोई करामात है ॥ २ ॥
गये आज मोक्ष मे वीर भगवान् जी।
रत्नो की रोशनी देवो ने आन की।
पर्व ये दिवाली चला देशो म विख्यात है ॥ ३
तभी ज्ञान केवल है गौतम ने पालिया।
वही "शिव" रास्ता हमको दिखा दिया।
खुशियाँ मनाये क्यो न खुशी की ये बात है ॥ ४

भजन ९७

कुण्डलपुर के श्री महावीर भज प्यारे तू श्री महावीर।
जय महावीर जय महावीर भज प्यारे तू श्री महावीर ॥ टेक
मुक्ति नायक श्री अति वीर जय जय वर्धमान गुण धीर ॥ १

त्रिशला नन्दन गुण गम्भीर, राय सिद्धारथ के सुत बीर ॥ २
मोह महानल को तुम वीर, कर्म जलद को हरण समीर ॥ ३
तप कर तोर कर्म जजीर, केवल ज्ञान लहा बल वीर ॥ ४
दे उपदेश हरी जग पीर, शिवपुर पहुँचे भव के तीर ॥ ५

भजन ६८

(तर्ज–बापू की अमर कहानी)

सुनो सुनो ए दुनियाँ वालो जैन धर्म की अमर कहानी ।
आज फूल उठती है छाती, आती है जब याद पुरानी ॥आती०
सबसे पहले ऋषभदेव प्रभु, इसकी नीव जमाने आये ।
अखिल विश्व को सद्गृहस्थ का सच्चा पाठ पढाने आये ॥
राज–पाट को त्याग नगर के बाहिर बन म ध्यान लगाया ।
केवल ज्ञान प्राप्त कर जिनने सोता हिन्दुस्तान जगाया ॥
दया धर्म का मूल बताया, अधम वही है जो अभिमानी ॥ १ ॥
नेमिनाथ भगवान जिन्होने इसका मर्म बताया सच्चा ।
निज स्वारथवश किसी जीव को तडफाना है कभी न अच्छा ।
पार्श्वनाथ प्रभू के तप आके क्रूर कमठ राक्षस भी हारा ।
खण्ड खण्ड गिरि हुए कमठ ने बरसाई जब मूसल धारा ।
क्षमा, धैर्य, तप के आगे दुश्मन होते पानी पानी ॥ २ ॥
यह कहने की नही जरूरत महावीर ने क्या बतलाया ।
अश्वमेध मेघ यज्ञ का जग से हिंसा काण्ड हटाया ।
गाँधी जी ने उसी वीर की सत्य अहिंसा को अपनाया ।
अङ्ग्रेजो को दूर हटाकर भारत को आजाद बनाया ।
है 'अनुप' नित नित्य नया है, नही जहाँ मे इसकी सानी ॥ ३ ॥

भजन ६६

(तर्ज—चुप चुप खड हो)

भव भव रुला हूँ न पाया कोई पार है,
तेरा ही आधार है तेरा ही आधार है।
सीता के शील को तुमन बचाया है,
सूली से सेठ को आसन बिठाया है ॥
खिली खिली कलिया किया नागहार है तेरा
जीवन की नाव य कर्मो के भार से,
अटको है कीच बीच रतियो की मार से।
रही सही मत का तू ही पतवार है तेरा ही
महिमा का पार जब सुर नर न पा सके,
सौभाग्य य प्रभु गुण तेरे गा सके।
बार बार आपका सादर नमस्कार है, हो

भजन १००

(तर्ज—एक दिल के टुकड हजार हुए)

वह दिन था मुबारिक शुभ थी घडी,
जब जन्मे थ महावीर प्रभू ।
तब नरक म भा थी शान्ति पडा,
जब जन्मे थ महावीर प्रभू ॥ टक ॥
तिथि चत सुतेरस प्यारी थी,
वह धन्य थी कुण्डलपुर नगरी ।
सिद्धार्थ पिता त्रिशला उर से,
वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ १ ॥

जब धर्म कर्म था नष्ट हुआ,
आचार जगत का बिगड चला ।
तब शुद्धाचार सिखाने को,
वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ २ ॥
जब यज्ञ मे लाखो पशुओ का,
होता था हा ! बलिदान महा ।
तब हिंसा दूर मिटाने को,
वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ ३ ॥
जब कर्त्ता वाद अज्ञान बढा,
सिद्धान्त कर्म को भूल गये ।
तब स्याद्वाद समझाने को,
वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ ४ ॥
जब भटक रहे थे भव बन में,
शिवराह नजर नही आता था ।
तब मुक्ति का मार्ग दिखाने को,
वे जन्मे थे महावीर प्रभू ॥ ५ ॥

भजन १०१

(तर्ज–मोहब्बत के धोखे मे कोई न आये–फिल्म बडी बहिन)

तेरी वीर महिमा को किस तौर गाये ।
जो उपकार तू ने किए क्या बतायें ॥ टेक ॥
था चारो तरफ जब कि छाया अँधेरा ।
था अज्ञान ने सारे भारत को घेरा ।
था तुमने भगाया उसे फिर भगाये, उसे फिर भगाये ॥ १

अनेकान्त सिद्धान्त सब को बताया ।
करम का मरम था जगत को जताया ।
प्रभू पाठ समता हमें फिर पढाये, हमें फिर पढाये ॥ २
कही दीन पशुओ पर चलती छुरी थी ।
कही यज्ञ हिसा की रीति बुरी थी ।
जो हिंसा हटाई उसे फिर हटाय, उसे फिर हटाय ॥ ३
अधम और पतित को तुमनें उभारा ।
हमे नाथ है अब तुम्हारा सहारा ।
है 'शिव' राह भूले दया कर दिखाय, दया कर दिखायें ॥ ४

भजन १०२

(तर्ज—जो दिल मे खुशी बनकर आये वह दर्द बसाकर चले गये)
जो दिल में खुशी बनकर आए, वह रज बसाकर चले गए ।
जो सुहाग रचाने आए थे, वह दुहाग दिला के चले गए ॥टेक॥
पशुवन की पुकार को सुन स्वामी,
गिरनार चढे है जाकर के, हाय जाकर के,
जो जीव दया चित लाए थे,
वह मुझे रुलाकर चले गए ॥ १ ॥
क्या भूल भई मुझसे स्वामी,
ये पूछ रही हूँ मैं तुमसे, हाय मैं तुमसे ।
क्यो मौड सजाके आए थे,
क्यौ कँगना तुडा कर चले गए, हाय चले गए ॥२
नौ भव तो रही साथ तुम्हारे,

दशवे मे विसारा क्यों हमको।
जो प्रीति बढ़ाने श्राए थे,
वह प्रीति हटाकर चले गये ॥ ३
मेरे कन्थ भए है वैरागी,
तो मै भी बनूंगी वैरागन, हाय वैरागन।
वन पन्थ बताने श्राये थे,
'शिव' पन्थ बताकर चले गए ॥ ४

भजन १०३

पल पल बीते उमरिया मस्त जवानी जाए।
प्रभु गीत गाले गाले प्रभु गीत गाले ॥
प्यारा प्यारा बचपन पीछे खो गया खो गया।
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया हो गया॥
बार-बार नही पावेरे गङ्गा बहती है, प्यारे मौका है न्हाले
गाले प्रभु० ॥

कैसे कैसे बाके जग मे हो गये हो गये।
खेल खेल के श्रन्त जमी पर सो गये सो गये॥
कोई मगर नही श्रायारे, पछी ये फूल रगीले, मुर्झाने वाले
गाले प्रभु० ॥

तेरे घर मे माल मसाले होते है होते है।
भूख के मारे कई विचारे रोते है रोते है॥
उनकी कौन खबर लेरे जिनके नही तनपै कपडा रोटियों
के लाले गाले प्रभु० ॥

गोरा-गोरा देख बदन क्यो फूला है फूला है।
चार दिन की जिन्दगानी पै भूला है भूला है ।।
जीवन सुफल बनाले रे केवल मुनि समझाये श्रो जाने
वाले गाले प्रभु० ।।

भजन १०४

वीर विम्ब महिमा

नयनो मे जिसके समा गई प्रतिमा श्री महावीर की ।।
तारो भरी रात थी सुन्दर वह ख्वाब था,
टीले की केवल खुदाई का ख्याल था।
ग्वाले की किस्मत जगा गई प्रतिमा श्री महावीर की ।।
जयपुर रियासत का शाही फर्मान था,
जब तोप का वो निशाना दिवान था।
गोले को ठण्डा बना गई प्रतिमा श्री महावीर की ।।
मन्दिर अनोखा वह तैयार होगा ।
जिससे अधिक धर्म प्रचार होगा ।
मन्त्री को सब समझा गई प्रतिमा श्री महावीर की ।।
जब बन्द किया सन् तितालिस का मला ।
नाजिम पुलिस भज फिर तब ही खोला ।।
सुमत नृप को अतिशय दिखा गई प्रतिमा श्री महावीर की ।।

भजन १०५

(तर्ज—छुप छुप खडे ही जरूर कोई बात है)
गहरी गहरी नदिया नाव बिच धारा है,
तेरा ही सहारा है ।। १ ।।

डगमग करती है कर्मो के भार से,
मारग भूल रहे घोर अन्धकार से ।
डूबती इस नाव का तू हो खेवनहार है,
तेरा ही सहारा है ॥ २ ॥
अग्नि का नीर हुआ तेरे प्रताप से,
कुष्ट रोग दूर हुआ तेरे नाम जाप से ।
भव भव दुख का तू ही मेटनहार है,
तेरा ही सहारा है ॥ ३ ॥
वीतराग छवि लगे तरी अति प्यारी है,
चरणो पै जाऊँ नाथ बलि बलिहारी है ।
रूप तेरा देख कर 'शान्ति' चित धारा है,
तेरा ही सहारा है ॥ ४ ॥

भजन (मन की भावना) १०६

महावीर स्वामी मै क्या चाहता हूँ ।
फकत आपका आसरा चाहता हूँ ॥ टेक ॥
मिली तुमको पदवी जो निर्वाण पद की ।
कि तुझ जैसा मै भी हुआ चाहता हूँ ॥ महावीर० १ ॥
फँसा हूँ मैं चक्कर मे आवागमन के ।
कि अब इससे होना रिहा चाहता हूँ ॥ महावीर० २ ॥
दया कर दया कर तू मुझ पर दयालू ।
दया चाहता हूँ दया चाहता हूँ ॥ महावीर० ३ ॥
बुरा हूँ भला हूँ अधम हूँ कि पापी ।
क्षमा कर तू मुझ पै क्षमा चाहता हूँ ॥ महावीर० ४ ॥

भजन १०७

(तर्ज-सरोते की) आदिनाथ स्तुति

आदिनाथ स्वामी ने दर्शन दिखाए ॥ टेक ॥

सबसे पहिले आदि तीर्थङ्कर, जन्म अयुध्या पाए।
नाम किया नाभि राजा का, तुमरे पिता कहलाए ॥ हो दर्शन० १॥
माता मरु देवी ने स्वामी, तुमको गोद खिलाए।
बाल अवस्था मे कर त्यागन, तुम गुणवान कहाए ॥ हो दर्शन० २॥
जैन पन्थ के मारग जग में, तुमने ही चलाए।
बार बार सारे बतलाए, ज्ञान हृदय मे छाए ॥ हो दर्शन० ३॥
त्याग कर हो नगन मूरती, तुम नगरी मे धाए।
जा तप किया बनो के अन्दर, अन्तर ध्यान लगाए ॥हो दर्शन० ४॥
छह मास तप करके बन म, भोजन की ठहराई।
जहाँ गए अन्तराय पडे, तुमने छह मास बिताए ॥ हो दर्शन० ५॥
हस्तनापुर की सुरत लगाई, जब ये मते उपाए।
तुमने ही श्रेयास के जाकर, गन्ने के रस पाए ॥ हो दर्शन० ६ ॥
हाथ जोड सब खडे सामने, दर्शन करने आए।
'किशनलाल' भी खडा शरण मे तुमको शीश झुकाए॥हो दर्शन० ७॥

भजन भगवान भक्ति १०८

महावीरा भोले भाले तुमको लाखो प्रणाम ।
हो चाँदनपुर वाले तुमको लाखो प्रणाम ॥

पार करो भक्तो की नैया, तुम बिन जग मे कौन खिवैया।
माता पिता ना कोई भैया, भक्तो के रखवाले तुमको० ॥१॥

तुम ही जब भारत मे आये, सबको आ उपदेस सुनाये ।
जीवो के आ प्राण बचाये, बन्ध छुडाने वाले तुमको० ॥२॥
हर जीवो मे प्रेम बढाया, राग द्वेष सब का छुडवाया ।
हृदय मे आ ज्ञान सिखाया, धर्म वीर मतवाले तुमको० ॥३॥
समोशरण मे जो कोई आया, उसका स्वामी परण निभाया ।
भव सागर से पार लगाया, भारत के उजियारे तुमको०॥४॥
'किशनलाल' को भारी आशा, सदा रहे दर्शन का प्यासा ।
धर्मपुरा देहली म बासा, कहते बूरा वाले तुमको० ॥५॥

भजन श्रद्धा के फूल १०६

एक प्रेम पुजारी आया है, चरणो म ध्यान लगाने को ।
भगवान् तुम्हारी मूरत पर, श्रद्धा के फूल चढाने को ॥ टेक
तुम त्रिशला के दृग तारे हो, पतितो के नाथ सहारे हो ।
तुम चमत्कार दिखलाते हो, भक्तो के मान बढाने को ॥१॥
तुमरे वियोग में हे स्वामी, हृदय व्यथा बढती जाती ।
भारत में फिर से आ जाओ, जिनधर्म का रङ्ग जमाने को ॥२॥
उपदेश धर्म का दे करके, फिर धर्म सिखादो भारत को ।
आओ एक बार प्रभु आओ हिंसा का नाम मिटाने को ॥ ३॥
प्रभु तुमरे भक्त भटकने है , तेरे नाम को हर दम रटते हैं।
'त्रिलोकी' नित्य तरसता है, प्रभु आपके दर्शन पाने को ॥ ४॥

भजन ११०

(तर्ज—जीया बेकरार है फिल्म बरसात')
भवसागर अपार है, टूटी ये पतवार है ।

जीवन नैया डगमग डोले, तेरा ही आधार है ॥ टेर ॥
पाप पावन ज्यो चले जोर से नैया डगमग डोले हो ।
कर्म लुटेरे आकर के फिर सम्यक् गठरी खोले हो ॥
क्या अचरज गर बने तुम्ही से पाकर के तव भक्ति हो ।
भवसागर को पार करूँ मे देदो ऐसी शक्ति हो ॥ २
हूँ अल्पज्ञ नही है शक्ति क्या गुण तेरे गाऊँ मे ।
'दीपचन्द' की अर्जी है प्रभु शिवपुर बस्ती पाऊँ हो ॥ ३

भजन १११

(तेरे कूँचे मे अरमानो की दुनिया ले के आया हूँ–
फिल्म दिल्लगी)

तेरे चरणो मे अय भगवान ये आशा ले के आया हूँ ।
सुधर जाये मेरा जीवन यह इच्छा लेके आया हूँ ॥टेक ॥
न आवे भाव हिंसा का बचन हितकर सदा बोलूँ,
शील सतोष मय जीवन कि वांछा लेके आया हूँ ॥ १
सभी से प्रेम हो मेरा नही हो द्वेष दुष्टो से,
भाव दुखिया पे मे अपना दया का लेके आया हूँ ॥ २
काम अरु क्रोध की अग्नि मेरी हो शात हे भगवन,
लोभ मद मोह मर्दन की सुचिता लेके आया हूँ ॥ ३
रहे नित भाव समता का न ममता हो मुझे पर से,
सफल शिवराम हो मन की कामना लेके आया हूँ ॥ ४

भजन ११२

(तर्ज–जिया बेकरार है छाई बहार है–फिल्म बरसात)
जिया बेकरार है मेरी पुकार है,

दर्श स्वामी दो दिखा, मुझे इन्तजार है ।। टेक
ओ, जितने देव जगत के देख, सब ही रागी देखे हो सब ।
तुझको राग और द्वेष नही सब, एक लिहारे लेखे हो एक ।। १
ओ, सबसे न्यारी तेरी महिमा, कैसे कोई गाये हो ।
तेरा ध्यान धरे जो कोई, तुझसा ही हो जाय हो ।। २
ओ, हम है बैठे आस लगाय, हमको दर्श दिखाना हो ।
तारन तरन कहात हो तुम, अपना बिरद निभाना हो ।। ३
ओ, धर्मी तारे पार अनन्ते, एक अधर्मी तारो हो ।
वीतराम शिवराम हो तुम तो, मेरी ओर निहारो हो ।। ४

भजन ११३

(तर्ज--ओ दुनिया बनाने वाले क्या यही है दुनियाँ तेरी)

(फिल्म सिंदूर)

ओ मौड सजान वाले क्या तुमने यह आज विचारी ।
हाय करूँ क्या नमि पियाजी जाय चढे गिरनारी ।। टेक
बारात सजाकर क्यो लाये बलदेव कृष्ण थे क्यो आये ।
ओ कगना बँधाने वाले क्यो कुल की लाज उतारी ।। १
हा पशु बधे जो चिल्लाये तो मोड तोड कर गिरि धाये ।
ओ दया दिखाने वाले क्यो दया न मेरी धारी ।। २
नही किसी को सताते हो तुम, प्रेम का पाठ पढाते हो तुम ।
ओ प्रेम सिखाने वाले क्यो मुझ मे है प्रीति बिसारी ।।३
सुखी जोम मुझे अब धरना है निज आतम का हित करना है ।
शिवनारी को चाहने वाले, अब मै भी बनूँ शिव नारी ।। ४

भजन ११४

हे वीर तुम्हारे द्वारे पर एक दरश भिखारी आया है।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को दो नयन कटोरे लाया है ॥ १ ॥
नही दुनियाँ मे कोई मेरा है आफत ने मुझ को घेरा है।
अब एक सहारा तेरा है जग ने मुझ को ठुकराया है ॥ २ ॥
धन दौलत की कुछ चाह नही घरबार छुटे परवाह नही।
मेरी इच्छा है तेरे दशन की दुनियाँ से चित घबराया है ॥ ३ ॥
मेरी बीच भँवर मे नैया है, प्रभु तू ही एक खिवैया है।
लाखो को ज्ञान सिखा तुमने भवसिधु से पार लगाया है ॥ ४ ॥
आपस मे प्रीति व प्रेम तु ह न हमको चैन नही।
अब तुम ही आकर दर्शन दो 'त्रिलोकी' नाथ अकुलाया है ॥ ५ ॥

भजन ११५ दर्श महिमा

(तर्ज—झमझुम बरसे बादरवा)

मनहर तेरी मूरतियाँ मस्त हुआ तन मेरा।
तेरा दरश पाया, पाया तेरा दरश पाया ॥ टेक ॥
प्यारा प्यारा सिहासन, अति भा रहा भा रहा।
उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा छा रहा ॥
पद्मासन अति सोहे रे, नयना उमगे हे मेरे।
चित ललचाया चाया तेरा दरश पाया ॥ १ ॥
तब भक्ति से भव के दुख मिट जाते है जाते है।
पापी तक भी भवसागर तिर जाते है जाते है ॥
जो जीव आया पाया, तेरा दरश पाया ॥ २ ॥
साँच कहूँ कोई निधि मुझको मिल गई मिल गई।

उसको पाकर मन की कलियाँ खिल गई खिल गई ।।
आशा होती पूरी रे, आशा लगा के "वृद्धि" ।
तेरे द्वार आया आया तेरा दरश पाया ।। ३ ।।

भजन ११६

(दीपावली का सच्चा सरूप)

तुम सुनो भ्रातगन ब'त, कहूं समझा के ।
इस भाति दिवाली, करा खूब हर्षा के ।। टेक ।।
जिन धर्म धार, मन मन्दिर साफ करालो ।
अरु शील व्रत, छतगिरि वहाँ टंगवालो ।।
शुभ शिक्षा वारनिश पट हृदय करवाके ।। इस० ।। १
निज पर विवेक की उसमे दरी बिछालो ।
निर लोभ रूप एक चादर उसमे डालो ।।
पर द्रव्य हरन के त्याग का तकिया बनालो ।
यू शुद्धाचरण का उजला फर्श बिछालो ।।
फिर सम्यग् ज्ञान दर्शन लैम्प जलवा के ।। इस० ।। २
उठ प्रभात तुम, जिन मन्दिर में जाओ ।
कर जिन प्रक्षालन, पूजा खूब रचाओ ।।
घी खाँड का उम्दा शुद्ध मोदक बनवाओ ।
जिन वीर के चरणो, चढा के मस्तक नाओ ।।
तुम दो परिक्रमा, महावीर गुनो को गा के ।। इस० ।। ३
जिन वाणी हाट है, सत गुरु हैं हलवाई ।
गुरु रूपी पेड़ा मिष्ठ वचन बालूशाई ।।

अरु तरह तरह की दश धर्म रूप मिठाई।
बडी मजेदार अरु सुन्दर अधिक बनाई॥
बिन दामो दे है, ले आओ भरवाके॥ इस०॥ ४

वात्सल्य थाल भर, समता रूप मिठाई।
तुम प्राणी मात्र मे, इसको दो पहुँचाई॥
हो धनवान मित्र या, निर्धन शत्रु दुखदाई।
तुम यथा शक्ति सुयोग्य, दो सबको जाई॥
तज वैर भाव रोगादिक दोष हटा के॥ इस०॥ ५

अब समोसरन की, रचना मन मे लाओ।
वहाँ गन्धकुटी है, यहाँ हटडी थपवाओ॥
वहाँ रतन रोशनी यहाँ दीपक जलवाओ।
है चतुर्मुख अरहन्त, भावना लाओ॥
फिर देख जिन अतिशय, द्वादश सभा लगाके॥ इस०॥ ६

अब करो खेल का ठाठ, मित्र हो इकट्ठे।
तुम त्यागो शतरज तास, बदनी अरु सट्टे॥
है चार सघ के पात्र, खिलारी पक्के।
तुम चारो दान का दाँव, लगाओ इकट्ठे॥
एक इक के अनगिन मिले, धरो धन लाके॥ इस०॥ ७

तुम चार अनियोग की, चौसर यहाँ बिछालो।
और सोलह कारन सार, सुभग मन भालो॥
फिर रत्नत्रय के, फाँसे हाथ उठालो।
द्वादश अनुप्रेक्षा पौ, बाहर है भालो॥
यूँ "मुरारी" आठो को जीत, पंचगुरु पाके॥ इस०॥ ८

भजन ११७

(तर्ज—फिल्म रतन)

जब तुम्ही चले मुख मोड हमें यूँ छोड।
ओ पारस प्यारा, अब तुम बिन कौन हमारा ॥ टेक ॥
ये बादल घिर घिर आते है आते है।
तूफान साथ मे लाते है।लाते हैं॥
व्याकुल होकर हमने तुम्हे पुकारा ॥ अब तुम० ॥ १ ॥
आँखो म आँसू बहते है बहते है।
सब रो रोकर यूँ कहते है कहते है॥
जब तुम्ही ने हमसे किया किनारा ॥ अब तुम० ॥ २ ॥
होटो पर आहे जारी है दिलमे याद तुम्हारी है॥
ये 'राज' भटकता फिरे है दर दर मारा ॥ अब तुम० ॥ ३ ॥

भजन ११८ श्री महावीर जी की महिमा

वीर तुम्हारा ध्यान लगा कर, जिसने आन पुकारा है।
पार हुआ भव दुख से वोही, जिसने लिया सहारा है॥
चाँदनपुर प्रभु निकस आपने, जग का काज सवारा है।
सच्ची भक्ती पूरा करती, मन का भव विचारा है॥
भवन विशाल दयाल बिराजें, पीछे नदी किनारा है।
अन्दर बाहर वेदी ऊपर, काम सुनहरी न्यारा है॥
खया सामने पखा खेंचे, गन्दी पवन बिकारा है।
धूप की बत्ती घृत का दीपक, सन्मुख जले अपारा है॥
चमक रहा है रहा शिखर पर, बिजली बल्ब उजारा है।

चार मील कटले तक पक्की, सड़क बनी सुख कारा है ॥
छहो धर्मशाला में जारी, जल निर्मल नल द्वारा है।
अन्जन से बत्ती खम्भों पर, जले कतार कतारा है ॥
बीर चरण पर छतरी अन्दर, चढ़े दूध की धारा है।
देश देश के यात्री आते, रहती जय जय कारा है ॥
फाटक ऊपर निशदिन बजता, शहनाई नक्कारा है।
घन घन घण्टा घडी घूँघरू, घडनावल झकारा है ॥
हारमोनियम बाजा तबला, गुन गायन गुँजारा है।
दर्शन पूजन भवन भावना, रहती बारम्बारा है ॥
तीनो शिखर वीर का झँडा, लहर लहर फैरारा है।
स्याह लाल गुल वर्ण वर्ण का, दरशा रहा नजारा है ॥
टिकट रेल स्टेशन पर भी, स्वामी नाम तुम्हारा है।
नया कीर्तन "सुमत" आपका, सदा रचे मन हारा है ॥
त्रिशला नन्दन पाप निकन्दन, इतना बोल हमारा है।
ऐसे पुन्य क्षेत्र के दर्शन, हमको हो हर बारा है ॥

भजन ११६

(तर्ज—तुमको मुबारिक हो ऊँचे महल ये हमको हैं प्यारी हमारी गलियाँ),

सबके हितैषी हो जिनराज स्वामी।
लगती है प्यारी निहारी बतियाँ तिहारी बतियाँ।टेक
अजब तेरो वाणी मे जादू भरा है जादू भरा है।
पशु और पक्षी के मन को हरा है।

हिवनी के सिहनी लगाये निज छतियाँ । लगती है ॥१॥
जिसे ज्ञान अमृत है तूने पिलाया ।
जनम और मरण रोग उसका मिटाया ।
भटके न वो फिर कभी चार गतियाँ । लगती है ॥ २ ॥
जिन राज वाणी जो मन म बसाए ।
शिवराम जग जाल से छूट जाए ।
भोगे सदा वो आनन्द दिन रतिया ॥ लगती है ॥ ३ ॥

भजन १२० प्रभु गीत गाले

(तर्ज–रतन–रुम झुम बरसे बादरवा)

पल पल बीते उमरिया, मस्त जवानी जाए ।
प्रभु गीत गाले गाले प्रभु गीत गाले ॥ टेक
प्यारा प्यारा बचपन पीछे, खोगया खोगया ।
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया हो गया ॥
बार बार नही पावेरे,
गगा बहती है प्यारे, मौका है न्हाले गाले ॥ प्रभु० ॥ १
कैसे कैसे बाके जग म, हो गए हो गए ।
खेल खल कर अन्त जमी पर सोगए सोगए ॥
कोई अमर नही आया रे,
पछी ये फूल रँगीले है मुर्झाने वाले गाले ॥ प्रभु० ॥ २
तेरे घर मे माल मसाले होते है, होते है ।
भूख के मारे कोई विचारे, रोते है रोते है ।
उनकी कौन खबर ले रे,
जिनके नहीं तनपै कपडा, रोटियो के लाले गाले ॥प्रभु०॥३

गोरा गोरा देख बदन क्यो फूला है फूला है ।
चार दिनो की जिन्दगानी पै भूला है भूला है ॥
जीवन सफल बनाले रे,
केवल मुनि समझाए ओ, जाने वाले गाले ॥ प्रभु० ॥ ४

झण्डा गायन १२१

(तर्ज–रतन–रुम झुम बरसे बादरवा)

फर फर फहरे केसरिया गगन शिखर पर झण्डा ।
चित हर साता साता, चित हर साता ॥ टेक
प्यारे-प्यारे बालक हिल मिल, आरहे आरहे ।
इसकी छाया बैठ वीर, गुन गारहे गारहे ॥
गायन कैसा प्यारा रे, जोश जागता दिल में ।
सुख बरसाता साता चित हर साता ॥ फर० ॥ १
जल दल बल की दल बन्दी से दूर रहो दूर रहो ।
स्वाभिमान रक्षा मे, दृढ बल पूर रहो पूर रहो ॥
सबको वीर बनाता रे, धर्म दिखाता जग मे ।
तप सर साता साता, तप सर साता ॥ फर० ॥ २
सत्य अहिंसा के मारग पर बढे चलो बढे चलो ।
उन्नतिके 'सौभाग्य' शिखर पर चढे चलो चढे चलो ॥
मत कायर पन लाना रे, हँस हँस बली हो जाना ।
यही दरसाता साता यही दरसाता ॥ फर० ॥ ३

राजुल पुकार भजन १२२

(तर्ज—फिल्म किस्मत)

नेमी पिया ने जो लिया गिरनार बसेरा ।

घर घर में दिवाली है मेरे घर में अँधेरा ॥
शादी को छोड़ कर मेरे साजन चले गए,
वह क्या गए सब राज भोग सुख चले गए।
इस मतवाली दुनियाँ में अब रह क्या गया मेरा ॥ १
ढूँढूँगी उनको जा अभी अँधियारी रात में,
धर्मानुराग त्याग का दीपक ले हाथ में।
फिर वो मिलें या न मिले हो जाए सबेरा ॥ २
सुनती थी जो मैं सच्ची हुई सारी कहानी,
गम्भीर दयावान थी वो उनकी जवानी।
तड़फाये हुए पशुओं का खुलवा दिया घेरा ॥ ३
वस्तु भली बुरी से भरा ये जहान है,
धर्मी की यहाँ जीत है पापी की हान है।
हर तौर फिरे लूटता यह कर्म लुटेरा ॥ ४
माँ बाप आप क्या कहो मैं मेंहदी रचालूँ,
वर और दूजा वरने को फिर कंगना बंधालूँ।
तप से जलादूँ काम बासनाओं का डेरा ॥ ५
मैं किसको सुनाऊँ मेरा यह गम का फसाना,
निर्मोही पिया ने मेरा दुख दर्द न जाना।
नौभव का संग छोड़ के क्यों आज मुँह फेरा ॥ ६
पर्वत की विकट राहों में फिरती हूँ भटकती,
डरती कभी हँसती कभी पी पी पुकारती।
इच्छा है फकत एक बार दर्श हो तेरा ॥ ७
अब [illegible] में लग गई सुमत गिरनार जी वन्दूँ,

जा उस गुफा में मैं सती राजुलवती देखूँ ।
धर ध्यान गुण निधान जहा नेम को टोरा ॥ ८

राजुल पुकार १२३

ये क्या किया मुझे तोरन पै आकर छोड दिया ।
सुनके पशुओ का रुदन बन्द उनका तोड दिया ॥
ये आप हो का जिकर था ये आप ही का त्याग ।
जरा सी बात पर सारा जमाना छोड दिया ॥
सब फुगा करते थे जिस वक्त चली राजमती ।
अब तो राजुल न अपना आशियाना छोड दिया ॥
मैं तो समझी थी शादी से प्रभू नाखुश हे ।
तुमने तो जाके शिव रमणी से नाता जोड लिया ॥
माणिक ये कहती थी राजुल कि प्रभु शिक्षा दो ।
मे न तुम्हे छोडूं चाहे तुमन मुझ छोड दिया ॥

भजन १२४ राजुल पुकार

नेमिनाथ जी नमिनाथ जो सुनो अरज अब प्रभु आकर ॥ टेक
नौ भव से प्रीति लगाई थी, स्वामी तुमने ही तो निभाई थी ।
अब तडफे नाथ जिया मेरा तुमही तो पार करो आकर ॥नेमि० १
पापो से भरी इस दुनियाँ मे, ये जीव महा दुख पाता है ।
पशुओ की सुनकर पुकार उनका कष्ट हरो आकर ॥ नेमि० २
कर कगन अरु सिर मोर तोर, राज्य विभव सब त्यागा है ।
गिरनार पै जा दीक्षा लोनो,मम दशा लखो स्वामिन आकर॥नेमि०
स्वामि मैं भी सब विभव त्याग, वैराग्य जो सब में धारा है ।
गिरनार पै जाके कहने लगी,मै भी शरण,गई प्रभुजी आकर॥नेमि०

अब दीक्षा दो मुझको स्वामी, आतमहित मारग बतलाओ।
'मंगल' तव शरण म आया है, हृदय म नाथ बसो आकर ॥ नेमि०

भजन १२५ मनोभावना

(तर्ज-कव्वाली)

मेरे भगवान् मेरी यही आस है।
पार कर दोगे बेडा यह विश्वास है ॥ टेक
मन के मन्दिर म आखो के रस्ते तुझे।
मेरे भगवान लाना पडा है मुझे ।
मेरे दिल से न जाना यह अरदास है ॥ मेरे० १
तेरे रहन को मन्दिर बनाया है मन।
तेरे चरणो पै अरपन किया तन व धन।
मेरे दिल मे न जाओगे विश्वास है ॥ मेरे० २
प्रम की डोर से बाध करके प्रभो।
मन के मन्दिर म रक्खूँगा तुमको प्रभो।
तुम्हे जान का दूँगा न अवकाश है ॥ मेरे० ३
कैसे जाओग जाओ तो त्रिशला ललन ।
तुमको जाने न दूँगा म आनन्द धन।
प्रम बन्धन पदमदास' के पास है ॥ मेरे० ४

चाँदनपुर महावीर भजन १२६ रसिया

चाँदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो।
जयपुर राज्य गाँव चाँदनपुर, तहाँ बनो उन्नत जिन मन्दिर।
तीर नदी गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥ १
पूरब बात चली यो आवे, एक गाय चरने को जावे।

झर आये उसका क्षीर, हमारी पीर हरो ॥ २

एक दिवस मालिक सँग आयो, देखि गाय टीला खुदवायो।
खोदत भयो अधीर, हमारी पीर हरो ॥ ३

रैन माहि तब सुपना दीना, धीरे धीरे खोद जमीना।
है इसमे तस्वीर, हमारी पीर हरो ॥ ४

प्रात होत फिर भूमि खुदाई, वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई।
भई इकट्ठी भीर, हमारी पीर हरो ॥ ५

तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड हर साल करारी।
चैत मास आखीर, हमारी पीर रहो ॥ ६

लाखो मैना गूजर आवे, नाच कूदे गीत सुनावें।
जय बोले महावीर, हमारी पीर हरो ॥ ७

जुडे हजारो जैनी भाई, पूजन भजन कर सुखदाई।
मन बच तन धरि धीर, हमारी पीर हरो ॥ ८

छत्र चमर सिहासन लावे, भरि-भरि घृत के दीप जलावें।
बोले जय गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥ ६

जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन सन्तान बढे व्यापारा।
होय निरोग शरीर, हमारी पीर हरो ॥ १०

"मक्खन" शरण तुम्हारी आयो, पुण्य योग ते दर्शन पायो।
खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो ॥ ११

भजन (बधाई महावीर जन्म) १२७

श्री वीर जन्म उत्सव मिलकर मनाओ सारे।
देने चलो बधाई, सिद्धार्थ राज द्वारे ॥ टेक
शुभ चैत शुक्ल तेरस है दिन पुनीत पावन।

त्रिशला की कोख आकर, जन्मे त्रिलोक तारे ।। श्री वीर० १
इन्द्रादि देव आकर, शचि मात को सुलाकर ।
भगवान को उठा कर, ले मेरु गिरि सिधारे ।। श्री वीर० २
सुर जाय क्षीर जागर, एक सहस आठ गागर ।
जल हाथों हाथ लाकर, भगवत के शीश ढारे ।। श्री वीर० ३
शृंगार कर सची ने, मघवा की गोद दीने ।
हरि सहस चक्षु कीने, छवि देखि जग दुलारे ।। श्री वीर० ४
सुर नह्वन कर प्रभु का, लाकर पिता को सौंपे ।
किया इन्द्र नृत्य ताडव निजराज के अगारे ।। श्री वीर० ५
कुण्डलपुरी म घर घर, खुशियाँ मना रहे है ।
कही नाचरग गाने, कही बज रहे नगारे ।। श्री वीर० ६
कूँचा बाजार गलियो म, शोर मच रहा है ।
नर नारि दर्शनो को, जिनराज के पधारे ।। श्री वीर० ७
मेवा मिठाइयो के, भर भर के थाल लावें ।
कोई फूल फल चढावे, कोई आरती उतारे ।। श्री वीर० ८
जिस वीर की सुरासुर, नर भक्ति कर रहे है ।
सो हे जिनेश आजा 'मक्खन' हृदय हमारे ।। श्री वीर० ९

भजन चाँदनपुर जाते समय १२८

मुझ छेडो न छडो दीवाना वीर का ।
देखूँ देखूँगा चल के ठिकाना वीर का ।। टेक
शेर—वीर की भक्ति मे रह कर ही होगा मेरा भला ।
जाके उनसे ही करूँगा, अपने मैं दिल का गिला ।
दु.ख सुनने को हमारे, कोई हमदम न मिला ।
प्रेम की अल्फी पहन कर, आज चाँदनपुर चला ।

मुझे छेडो न छेडो दीवाना वीर का ॥ १
शेर–दिल मे मेरे लग रही है, वीर का जोगी बनूँ ।
फाड सर अपना गरेबा जाके कदमो मे पडूँ ।
राह म जितनी मुसीबत हो सभी दिल पर सहूँ ।
दर्शनो से कोई रोके, जब मै रो रो कर कहूँ ।
मुझे छेडो न छेडो दीवाना वीर का ॥ २
शेर–चन्द रोजा जिन्दगी हे, बन रहा हूँ यो गदा ।
छोड दुनिया की मोहब्बत, अब तो उस पर हूँ फिदा ।
बन गया हूँ मस्त अब तो, होके दुनिया से जुदा ।
रोकना कोई न मुझको, बस मेरी सुनलो सदा ॥
मुझे छेडो न छडो दीवाना वीर का ॥ ३
शेर–भाइयो सुनलो फकत तुमको बताना हे यही ।
अब 'किशन' और शाम को भी कथ के गाना है यही ॥
मुझे छेडो न छडो दीवाना वीर का ॥

भजन १२६

(चलते समय)

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे है ।
झुका तेरे चरणो म सर जा रहे हैं ॥ टेक ॥
यहाँ से कभी दिल न जाने को करता ।
कर कैसे जाये बिना भी न सरता ।
अगरचे हृदय नैन भर आ रहे हैं ॥
हुई पूजा भक्ती न कुछ सेवकाई ।
न मन्दिर मे बहुमूल्य वस्तु चढाई ।

यह खाली फकत जार कर जा रहे हैं ॥
सुना तुमने तारे अधम चोर पापी ।
न धर्मी सही फिर भी तेरे हैं हामी ।
हमे भी तो करना अमर जा रहे है ॥
बुलाना यहा फिर भी दर्शन को अपन ।
सुमत तुम भरोसे जग कम हरन ।
जरा लेते रहना खबर जा रहे ह ॥

भजन (वीर पालना) १३०

मणियां के पालन मे स्वामी महावीरा झूल ॥ टक ॥
रेशम की डोरी पडी मोतिया म गुथवा लडी ।
त्रिशना माता जो बग्गी देख कर हृदय म फूलें ॥ मणि०
चटकी बजाय रही हँसके खिलाय रही ।
राजा सिद्धारथ मगन होके राजपाट म भूल ॥ मणि०
कुण्डलपुर वासी सारे बोले ~ जय जय कारे ।
दर्शन कर प्रम से महाराज के चरणो को छूल ॥ मणि०
इन्द्रादि देव आय शीश चरणो म झुकायें ।
किशना के हृदय की मटकने लगी सारी चूलें ॥ मणि०

भजन कुण्डलपुर महावीर जी १३१

(तर्ज—फिल्म खजाची)

महावीर पधारे हैं जय हो जय हो ।
कुण्डलपुर की गलियो में स्वर्गो के नजारे है ॥ टेक
उस देश चलो सजनी, जहाँ वीर जन्म लीनो ।
त्रिशला के दुलारे ह महावीर० ॥ १
वह देश अति प्यारा कुण्डलपुर सब से न्यारा ।

खुशियो के नजारे है, महावीर० ॥ २ ॥
"सेवक" पै दया कीजे, चरणो मे जगह दीजे।
हम तेरे सहारे है, महावीर० ॥ ३ ॥

भजन १३२ महावीर प्यारे

महर की नजर कर, महावीर प्यारे।
दर्श अपना हमको, दिखा वीर न्यारे॥ टेक॥
सुनाया था जो ज्ञान, गौतम ऋषी को।
वही ज्ञान हमको, सुना वीर प्यारे॥ १॥
तिराया था अजन से, पापी को तुमने।
हमे भी तिराओ, महावीर प्यारे ॥ २॥
जो लडती परस्पर है, सन्तान तेरी।
इन्हे "प्रेम" करना, सिखा वीर प्यारे॥ ३॥
गफलत मे सोये, सभी हिन्द वासी।
इन्हे शीघ्र आकर, जगा वीर प्यारे॥ ४॥
जैन कौम पोछे हटी जा रही है।
इसे उन्नति पर, लगा वीर प्यारे॥ ५॥
करे अर्ज "केवल" सुनो हे दयामय।
हमे पास अपने बुला वीर प्यारे॥ ६॥

भजन १३३ (पार्श्वनाथ)

प्रभु पार्श्व से जो मेरा प्यार होना।
तो दुनियाँ मे ऐसा नही ख्वार होता॥ टेक॥
ये खल कर्म मुझको, न ऐसा सताते।
अगर मोह की, भग पीके न सोता॥ १॥

दरश ज्ञान चारित्र, सम्पत लुटा कर।
दरिद्री हुआ आज, दर दर न रोता ॥ २ ॥
जो इक बार निज धर्म, नौका मे चढ़ता।
तो इस भव उदधि में, खाता न गोता ॥ ३ ॥
मैं क्यों लक्ष चौरासी, धर जन्म मरता।
जो नर जन्म पाकै, न विषयो में खोता ॥ ४ ॥

भजन १३४ भक्त की प्रेरणा

तू भजले प्राणी श्री जिनवर गुणधाम।
हित चित से तू करले सुमरन, त्याग मोह मद काम ॥ तू० १
नर तन पाय वृथा क्यो खोवत, जामन मरण ले थाम ॥ तू० २
तन धन देख काहे को भूले, लोहू भर वे चाम ॥ तू० ३
अहो "वीर" अनमोल रतन को, लगे न कुछ भी दाम ॥ तू० ४

भजन १३५

(तर्ज—गाँधी तू आज हिन्द की एक शान बन गया)
ऐ ! वीर तू ससार का अभिमान बन गया।
जिसने लिया उपदेश, वो इन्सान बन गया ॥
बहती थी नदी खून की मजहब के नाम पर।
उस वक्त तू दुनियाँ पै मिहरबान बन गया ॥
दुनियाँ को रिहा कर दिया हिंसा के पाप से।
सुख चैन का पथ लोगों को आसान बन गया ॥
बजने लगी सब ओर अहिंसा की दुंदुभी।
सुन कर जिसे सारा जहाँ बलवान बन गया ॥

हर दिल म पनपने लगे जब प्रेम के पौधे।
तो उजडा हुआ चमन फिर से गुलस्तान बनगया॥
शिक्षाएँ तेरी गौर से जिस दिल म समाई।
"भगवत' को नजर म वहाँ भगवान बन गया॥

भजन १३६ गायन (मेला चाँदनपुर)

कि मेला होय रहा चादनपुर दरम्यान॥ टक॥
आ रहे यात्री दूर दूर से ला रहे दापक पूर पूर के।
गायन होय रहा चादनपुर दरम्यान॥ १॥
अक्षत चन्दन पुष्प जन स दीप धूप नैवद्य व फल से।
पूजन होय रहा चाँदनपुर दरम्यान॥ २॥
मेल जोल स कन्त व कान्ता प्रम भाव से भव्य आत्मा
जय जय बोल रहा चाँदनपुर दरम्यान॥ ३॥
पद्मपुरी म पद्मप्रभु जी, महावीर म महावीर जी।
दुखडा खोय रहा चाँदनपुर दरम्यान॥ ४॥
भवन विशाल वीरका लखकर,वीर प्रभुके चरण सुमर कर।
'सुमत' चित डोल रहा चाँदनपुर दरम्यान॥ ५॥

बधाई भजन १३७

(तर्ज–फिल्म झूला)

देखो त्रिशला माता के आज बधाई है,
बोलो बधाई है, बधाई है, बधाई है।
राजाके महलोम नौबत बाजे,घर २ में सहनाई है॥देखो०
देख देख बालक के लक्षण लासानी,

फूले फूले राजा है फूली फूली रानी।
शुभ दिन शुभ घडी आई है ।। देखो० ।। १ ।।
जग के कुमारा से बिल्कुल निराले,
दयाबो हितैषी क्षमा धर्म वाले।
हाँ लेकिन कर्मों से इनकी लडाई है ।। देखो० ।। २ ।।
महावीर हमका भूल न जइयों,
दशन अपन फिर भी करइयो ।
नइया सुमन की भी पार लगइयो,
किश्ती हमारी भी पार लगइयो ।
बडी बडी आशा लगाई ।। देखो० ।। ३ ।।

भजन १३८

(रथ म विराजमान भगवान के सामन गाने का भजन)

प्रभु रथ में हुए सवार,नक्कारा बाज रहा ।। टक ।।
क्या ठुमक ठुमक रथ चलता है ।
य छतर शीश पर हिलता है ।।
क्या छाई आज बहार । नक्कारा० १
किस छवि से नाथ विराज रहे ।
नासा दृष्टि से छाज रहे ।।
अद्भुत बाज सब बाज रहे ।
सब बोलो जय जय कार ।। नक्कारा० २
ढोलक अरु बाजे नकारा है ।
बाजे का स्वर अति प्यारा है ।।
तबले का ठुमका न्यारा है ।

झाँझन की हो झङ्कार ॥ नक्कारा० ३
कहे "किशन" जारचे वाला है ।
तेरे नाम पै वो मतवाला है ॥
सब पियो धरम का प्याला है ।
हो भव सागर से पार ॥ नक्कारा० ४

भजन १३६

कङ्कन बन्धन सब ही उतारूँ ।
जोगन का बाना बन धारूँ ॥
दिया सब मोह माया को तोर ॥ बतादे० ३
नेमि पिया का ध्यान धरूँगी ।
नौ भव की प्रीति को हरूँगी ॥
मन मे यह उठती हिलोर ॥ बतादे० ४
दुद्धर तप जा बन मे कीना ।
"मङ्गल" मय पर्वत पा लीना ।
लियो तब स्वर्ग सम्पदा मोर ॥ बतादे० ५

प्राणी मात्र मे मित्र भाव रख,
निन्दा द्वेष मिटा दे ।
शान्ति पूर्वक रहना सीख,
ईर्ष्या क्लेश हटा दे ॥
जिन आज्ञा सिर धारे तब ही, सच्चे जैन कहाये ॥ जय ॥
स्वर्ण वाक्य सर्वज्ञ देव के,
फिर से जग को सुनायें ॥
सच्चा ज्ञान सिखा कर सब को,

सच्चे जैन बना दें ॥

सज्जनों की श्रेणी में फिर, अपना नाम लिखा दें ॥ जय ॥

भजन महावीर जयन्ती १४०

वीर जयन्ती आई री ।
मस्त मधुप गुञ्जार रहे हैं ।
सुमन सजा कर लाई री ॥
वीर जन्यती आई री ॥
वृक्ष लताएँ झूम रही हैं ।
झुक झुक धरती चूम रही हैं ॥
अभिवादन करने को मानो ।
सुमन सजा कर लाई री ॥
वीर जयन्ती आई री ॥

भजन महावीर कीर्तन १४१

त्रिशला नन्दन जै महावीर,
पाप निकन्दन जै महावीर ।
जै महावीर जै महावीर,
जै महावोर जै महावीर ॥
आओ हिलमिल कर आज सबे,
श्री महावीर कीर्तन कर लें ।
कुछ समय शान्ति के सागर में,
आओ हम हिलमिल कर तर लें ॥
लय स्वर का ऐसा समा बँधे,
सब दुनियाँ के झंझट भूलें ।

श्री महावीर के कीर्तन में,
आनन्द हिंडोले मे झूले ॥

त्रिशला नन्दन जै महावीर,
पाप निकन्दन जै महावीर।
जै महावीर जै महावीर,
जै महावीर जै महावीर ॥

उस महावीर प्रभु के महात्म्य का,
क्यो कर मित्र बखान करू ।
नहि शक्ति कण्ठ मे इतनी है,
जो उसका कुछ गुण गान करू ॥

जब आड धर्म की लेकर के,
अन्याय घोरतर होते थे।
तब दया धर्मधारी बैठे,
आँसू की माल पिरोते थे ॥

सोते थे सुख की नीद नही,
जब मूक पशू निर्बल प्राणी ।
थे भुला चुके धर्मान्ध व्यक्ति,
सब दयामई श्री जिन वाणी ॥

जब बेकस बेबस बेचारे,
पशुओ पर अत्याचार हुआ ।
तब पुरुष वेष में महावीर,
तीर्थंङ्कर का अवतार हुआ ॥

त्रसित पीड़ित दुखियारो का,
फिर स्वर्णमयी ससार हुआ।
सुर दुन्दुभि तत्क्षण बजने लगी,
त्रिभुवन मे जय जय कार हुआ॥

त्रिशला नन्दन जय महावीर,
पाप निकन्दन जय महावीर।
जय महावीर जय महावीर,
जय महावीर जय महावीर॥

कुण्डलपुर मे जन्मोत्सव पर,
नर नारी हर्ष मनाते थे।
आकाश मार्ग से इन्द्रादिक,
बहुमूल्य रत्न बरसाते थे॥

रत्नो के सुन्दर पलने में,
श्री वीर झुलाये जाते थे।
माता पितादि मुखचन्द्र निरख,
कर फूले नही समाते थे॥

जन मन रञ्जन जय महावीर,
भव भय भजन जय महावीर।
जय महावीर जय महावीर,
जय महावीर जय महावीर॥

जिनकी गुण गरिमा बड़े-बड़े,
अहमिन्द्र इन्द्र भी गाते हैं।

चक्राधिप वन्द्य मुनीश्वर भी,
जिनके पद पङ्कज ध्याते हैं ॥

आओ उनकी शुभ जय ध्वनि से,
हम भव भव के बन्धन खोले ।
"पुष्पेन्दु" प्रेम से हिलमिल कर,
आओ हम एक बार बोले ॥

त्रिशला नन्दन जै महावीर,
पाप निकन्दन जै महावीर ।
भव भय भञ्जन जै महावीर,
जन मन रञ्जन जै महावीर ॥

जै महावीर जै महावीर,
जै महावीर जै महावीर ।

कलिमल गञ्जन जै महावीर,
शिव तिय रञ्जन जै महावीर ।
तिहुँ जग प्यारे जै महावीर,
जग उजियारे जै महावीर ॥

जै महावीर जै महावीर,
जै महावीर जै महावीर ।

वर्द्धमान सन्मति अति वीर,
मुक्ति रमा पति जै महावीर ।
त्रिशला नन्दन जै महावीर,
पाप निकन्दन जै महावीर ॥

जै महावीर जै महावीर,
जै महावीर जै महावीर।

भजन १४२–प्रभात वीर वन्दन

जयति जय जय श्री वीर जिनेश।
विश्व वन्दित शाश्वत अखिलेश ॥
निरञ्जनं, निर्विकार अभिराम।
अनूपम, वीतराग निष्काम ॥
विमल अविनाशी ललित ललाम।
सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, देव, परमेश ॥
पूज्य त्रिशला नन्दन जगदीश।
प्रभो ! झुकावे जग सब शीश ॥
पा लिया जब कुछ पुण्याशीष।
मिट गया जग का सारा क्लेश ॥
यहाँ फैला था तम अज्ञान।
किया सत्वर उसका अवसान ॥
हो गया संसृति का कल्यान।
किसी से राग नहीं है द्वेष ॥
किया हिंसा का सत्यानाश।
मिटाया जग का भीषण त्रास ॥
अहिंसा का कर पूर्ण विकास।
स्वयं बनकर निर्मल राकेश ॥
भरा जग में नूतन आनन्द।

किया सब जीवों को सानन्द ॥
मिटा कर आपस का वह द्वन्द ।
प्रेम की धारा बही विशेष ॥
दिखाया स्याद्वाद का रूप ।
बताया रत्न त्रयी स्वरूप ॥
सुदृढ़ तम अनेकान्त स्तूप ।
स्वय होकर सच्चा सर्वेश ॥
भटकते दर दर साधू सन्त ।
न पाता था कोई शिव पन्थ ॥
बताया तुमने उसे तुरन्त ।
स्वतः होकर सबसे अग्रेश ॥
बिठाया सबको एक स्थान ।
सिखाया एक प्रेम का गान ॥
रखी स्वस्तिक झण्डे की शान ।
उसे फहराया देश विदेश ॥
बहा स्नेह सरल अनमोल ।
विश्व को अपनाया उर खोल ॥
दिया समता पर सबको तोल ।
सभी के बन करके हृदयेश ॥
भूप सिद्धारथ के प्रिय लाल ।
विश्व को तुमने किया निहाल ॥
तोड़ माया मिथ्या भ्रम जाल ।
प्रगट हो जिन वृष दिव्य दिनेश ॥

विश्व ने किया स्वय जयकार ।
होगया उसका सफल सुधार ॥
बह गई सुखद प्रेम की धार ।
दिया तुमने नूतन सन्देश ॥
शक्ति सचित तुम हो अभिराम ।
तुम्ही को विश्व शाति विश्राम ॥
तुम्हें हो बारम्बार प्रणाम ।
तुम्हारा है सेवक "कुमरेश" ॥

भजन वीर स्मरण १४३

है महावीर प्यारा हमारा ।
दीन दुखियो का अन्तिम सहारा ॥
भूप सिद्धार्थ का तू दुलारा ।
देवी त्रिशला की आँखो का तारा ॥
हिन्द का वह चमकता सितारा ।
है महावीर प्यारा हमारा ॥
जन्म कुण्डलनगर मे लिया था ।
शोर सारे जहाँ मे किया था ॥
इन्द्र सुर ज्ञान से तब चितारा ।
है महावीर प्यारा हमारा ॥
जब कि दुनियाँ में विपदा पडी थी ।
घोर अज्ञान चादर मढी थी ॥
तब प्रगट तू हुआ था उदारा ।
है महावीर प्यारा हमारा ॥

ज़ुल्म करते थे जालिम जहाँ पर।
घोर होती थी हिसा यहाँ पर॥
चण्डी भैरव का लेकर सहारा।
है महावीर प्यारा हमारा॥

मास भक्षक था सारा जमाना।
देवता का था इनको बहाना॥
तूने उनका किया था किनारा।
है महावीर प्यारा हमारा॥

लोग दुनियाँ में यो ही भटकते।
काशी मथुरा मे सर को पटकते॥
मुक्ति को तू हर जगह जनारा।
है महावीर प्यारा हमारा॥

ऊँचा आदर्श तूने जताया।
राह कर्त्तव्य पथ की लगाया॥
कर स्वय ज्ञान का नव उजारा।
है महावोर प्यारा हमारा॥

आज ससार मे फिर से आजा।
शान दुनियाँ मे अपनी दिखाजा॥
तूने दुखियो का दुख है निवारा।
है महावीर प्यारा हमारा॥

तेरा पूजक हो सारा जमाना।
ऐसी युक्ति प्रभो आ बताना॥

तू ही 'कुमरेश' का है सहारा ।
है महावीर प्यारा हमारा ॥

भजन वीर पताका (झण्डा) १४४

सबको वीर सन्देश सुना दो ।
जिनमत का झण्डा फहरा दो ॥
गौरव-युक्त प्रतीत काल की,
विमल कीर्ति यह मूर्तिमान है ।
वीरो की शुभ याद दिलाना,
इसका ध्येय यही महान है ॥
नव-जीवन की ज्योति जगा दो ।
जिनमत का झण्डा फहरा दो ॥
वीरो का अरमान यही है,
सकल जाति की शान यही है ।
उन्नति की पहिचान यही है,
प्रोत्साहन की तान यही है ॥
इसको पंचम स्वर से गा दो ।
जिनमत का झण्डा फहरा दो ॥
विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ाता,
आत्म-त्याग की शक्ति लाता ।
सुख का प्रबल प्रवाह बहाता,
नव स्फूर्ति सचार कराता ॥
वीर-सुधा का श्रोत बहा दो ।
जिनमत का झण्डा फहरा दो ॥

भारत में जिस समय घोरतर,
मिथ्या ज्ञान-तिमिर छाया था।
लेकर तब अवतार वीर ने,
सबको सत्पथ दर्शाया था॥

उनके आग शीश झुका दो।
जिनमत का झण्डा फहरा दो॥

होते थ बलिदान अनको,
अत्याचारो की वेदी पर।
हिसा बन्द करी तब प्रभु न,
दया धर्म का पाठ पढाकर॥

उन्ही वीर की गाथा गा दो।
सब को वीर सन्देश सुना दो।

तक सूर्य अकलङ्क देव से,
और ममन्तभद्र से ज्ञानी।
नमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रधर,
विद्या-बल जिनका लासानी॥

उनकी मुस्मृतिय लहरा दो।
जिनमत का झण्डा फहरा दो॥

इसकी अटल छत्र-छाया में,
चन्द्रगुप्त सम्राट कहाये।
इसकी रक्षा हेतु अनेको,
जैन-वीर वे रण मे आये॥

निष्कलङ्क की याद दिला दो।
जिनमत का झण्डा फहरा दो ॥

यद्यपि जग में आज नहीं है,
खारवेल सम्प्रति बलशाली।
कुन्द कुन्द आचार्य नहीं है,
चमक रही है कीर्ति निराली।

उज्ज्वल यश 'पुष्पेन्दु' सुना दो।
जिनमत का झण्डा फहरा दो ॥

भजन वीर जिनेश १४५

हे अनुपम गुण के रत्नाकर।
ज्ञानामृत मय मञ्जु सुधाकर।
दिव्य व्योम के दिव्य दिवाकर।

कृपा सिन्धु करुणेश।
जयतु जय जय जय वीर जिनेश॥

मिथ्या तिमिर विनाशन हारे।
सत सिद्धान्त प्रकाशन हारे।
विश्व बन्धु हे तिहुँ जग प्यारे।

महिमा वान अशेष।
जयतु जय जय जय वीर जिनेश॥

नव जीवन वरदान हमे दो।
आत्मोन्नति का ज्ञान हमें दो।
दृढ़ चारित्र महान हमें दो।

धरें अहिंसक वेष ।
जयतु जय जय जय वीर जिनेश ॥

निज कर्तव्य विहीन आज हैं ।
शक्ति सङ्गठन हीन आज है ।
विविध भाँति हम दीन आज हैं ।
रहा न गौरव लेश ।
जयतु जय जय जय वीर जिनेश ॥

शान्ति सिहासन डोल उठा फिर ।
त्राहि-त्राहि जग बोल उठा फिर ।
मिटने को भूगोल उठा फिर ।
हरो जगत का क्लेश ।
जयतु जय जय जय वीर जिनेश ॥

विश्व प्रेम जग मे छा जाये ।
कोई बैर विरोध न लाये ।
बन्धु बन्धु को गले लगाये ।
रहे न ईर्षा द्वेष ।
जयतु जय जय जय वीर जिनेश ॥

चहुँ दिश जागृति जगादो ।
कर्म वीर 'पुष्पेन्दु' बनादो ।
विजय वैजयन्ती फहरा दो ।
गूँज उठे यह देश
जयतु जय जय जय वीर जिनेश ॥

भजन पद्म प्रभु [वाड़ा] १४६

(तर्ज—मैं बन की चिडिया बन बन डोलूँ रे)

मैं कदम कदम पर पद्म प्रभु की जय बोलूँ रे।
अरु पग पग पर अपने साहस को तोलूँ रे ॥ टेक ॥
मैं शत्रुन से भिड जाऊँ, रणधीर वीर कहलाऊँ।
इस कायरता के कण मे, रग रस घालूँ रे ॥ मै कदम०
हो विषधर की फुवकार, चाहे दिग्गज किलकारे।
मैं सिहा के झुण्डों मे, सग सग डालूँ रे ॥ २
गहरे सागर पर्वत हो, दलदल हो दावानल हो।
मै महाकाल के मुख से, दात टटोलूँ रे ॥ ३
बढजा बढजा आग बढजा पुरुषारथ की चोटी चढजा।
मे कर्म भूमि का शूल, मज पर मोनूँ रे ॥ ४
श्री पद्म स प्रभु विनय यहा, दीज मुझको शक्ति वही।
कहे जैन 'जौहरी'' मे अगन प्रण का होलूँ रे ॥ ५

भजन पदमप्रभु की भक्ति १४७

प्रेमी बन कर प्रम मे, पद्म प्रभु गुण गाया कर।
मन मन्दिर म गाफिले, झाड रोज लगाया कर ॥ टेक
सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद बन्दे, करना अपने आप रहा।
प्रात. उठ कर प्रेम से सत्सगत मे आया कर ॥ १
नर तन के चोले का पाना, बच्चो का है खेल नहीं।

जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, जब तक मिलता मेल नहीं !
नर तन पाने के लिए, उत्तम कर्म कमाया कर । २
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, तैने रोटी खाई क्या ।
सबसे पहले पूछ कर, भोजन फिर तू खाया कर ।
देख दया उस पद्म प्रभु की, जैन शास्त्र का ज्ञान दिया ।। ३
जरा सोचले अपने मन में, कितनों का कल्याण किया ।
सब कर्मों को छोड़ कर, इनको ही तू ध्याया कर ।। ४

भजन पद्म प्रभु १४८

(तर्ज–मुनि बाबा पलकियाँ खोल रस की बूँदें पड़ीं)

मुझ दुखिया की सुनले पुकार, भगवन् पद्म प्रभो
दीनों के तुम प्रतिपालक ।
धर्म मार्ग के हो संचालक ।।
किये अनेकों सुधार, भगवन पद्म प्रभो ।। मुझ० १
चारों गति में दुख बहु पाया ।
काल अनादि दुख में गमाया ।।
आया तेरे दरबार, भगवन पद्म प्रभो ।। मुझ० २
नरक गति की कर्म वेदना ।
जनम मरन कर्मन मग कीना ।।
भोगे मैं दुख अपार, भगवन पद्म प्रभो ।। मुझ० ३
सद् उपदेश दे लाखों तारे ।
अंजन जैसे अधम उबारे ।।
अब मेरी ओर निहार, भगवन पद्म प्रभो ।। मुझ० ४

बीच भँवर मे फँस रहा नैया ।
पद्म प्रभो हो तुम ही खिवैया ॥
कीजे भवदधि पार, भगवन पद्म प्रभो ॥ मुझ० ५
सेवक 'शांति' शरण मे आया ।
दर्शन करके पाप नशाया ॥
जीवन के अधार, भगवन पद्म प्रभो ॥ मुझ० ६

भजन १४६ पद्म प्रभु

म्हारा पद्म प्रभु जी की सुन्दर मूरत म्हारे मन भाई जी ।
वैशाख शुक्ल पचम तिथि आई प्रगटे त्रिभुवन राई जी ॥
म्हारे मन भाई जी म्हारा पद्म० ॥ टेक
रत्न जड़ित सिंहासन सोहे, जहाँ पर आय विराजा जी ।
तीन छत्र थाकाँ सिर सोहे, चौसठ चँवर ढराये जी ॥
म्हारे मन भाई जी० ॥ १
अष्ट द्रव्य ले थाल सजाकर, पूजा भाव रचाया जी ।
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बताया जी ॥
म्हारे मन भाई जी० ॥ २
समवशरण मे जो कोई आया, उसका परण निभाया जी ।
जो कोई अन्धा लूला आया, उसका रोग मिटाया जी ॥
म्हारे मन भाई जी० ॥ ३
जिसके भूत डाकिनी आते, उनका साथ छुड़ाया जी ।
लाखों जैन अजैनी आई, जय जय शब्द उचारे जी ॥
म्हारे मन भाई जी० ॥ ४
आन देव बहुतेरे सेये, प्रभु मिथ्यात छुड़ाया जी ।

भूला जाट के बैठ के घट मे, नीव खो॰ने आया जी ।।
म्हारे मन भाई जी० ।। ५
फैली प्रभु की महिमा भारी, आते नित नर नारी जी ।
ठाडी 'सेवक' अर्ज करे छे, जीवन मरण मिटाया जी ।।
म्हारे मन भाई जी० ।। ६

भजन १५० पदुम प्रभु

मेरा पद्म ने दुखडा मिटाया रे ऐ बाबू जी ।
मेरा मुरझा कमल दिल खिलाया रे ऐ बाबू जी ।। टेक
घर से यहाँ पर आया जिस बेला ।
देख देख पद्म पुरी का मेला ।
मेरा दुखिया जिया हर्षाया रे ऐ बाबू जी ।। मेरा० १
पद्म जी बात ये, सच्ची है मोरी ।
गुप चुप मेरी, यहा हो गई चोरी ।
मेरा पद्म ने मनुआ चुराया रे, ए बाबू जी ।। मेरा० २
हर दम दया दयालु रखना, मुझ पर तुम दातार ।
आशा 'निद्ध' लगी है तुम से करदो बेडा पार ।
मैंने अब तक बडा दुख उठाया रे, ऐ बाबू जी ।। मेरा० ३

(पदुम प्रभु) भजन १५१

पदमा पदमा मै पुकारू' तेरे दर के सामने ।
मन तो मेरा हर लिया है पद्म प्रभु भगवान ने ।। टेक
मोहनी छवि को दिखादो मेरे भगवन् मुझे ।
तेरी चर्चा हम करेगे हर बसर के सामने ।। पदमा०

डूबते श्रीपाल को तुमने बचाया है प्रभा।
द्रोपदी की लाज राखी कौरव दल के सामने ॥ पदमा०
हार का बन सर्प जब खा लिया उस सेठ को।
सीमा सुमरन किया था पद्म प्रभु भगवान को ॥ पदमा०
चित्त हम सबका भटकता पदम के दीदार को।
कर जोड कर देखा करग तेरे दर के सामने ॥ पदमा०

भजन पद्म प्रभु १५२

पदम प्रभु आजइयो, मन मन्दिर के माहि॥ पदम०
जब कर्मो न आ घरा तब भूत योनि में घेरा।
अब ध्यान लगाया तेरा, तू जनम से मेरा॥
इन कर्मो के फन्दा छुडा जैयो, मन मन्दिर के माहि॥पदम०
जहाँ अन्ध लूले आते, श्री पदम प्रभु को ध्याते।
इन सबके दुख मिटा जैयो, मन मन्दिर के माहि ॥पदम०
मै चरण शरण म आया, प्रभु तुम बिन कौन हमारा।
मेरी नैया को पार लगा जैया, मन मन्दिर के माहि ॥प०
मै शरण छोड कित जाऊँ, नित प्रति प्रभु के गुण गाऊँ।
दास फूय को शरण रख लैयो, मन मन्दिर के माहि ॥प०

भजन १५३

तेरे दर को छोड कर किस दर जाऊँ मैं
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं
जब से नाम भुलायो पदमा, लाखो कष्ट उठाये हैं
न जाने इस जीवन के अन्दर कितने पाप कमाए हैं॥

धरे दिगम्बर भेष हमारी पीर हरो ॥ हमारी० ३
फैली प्रभु की महिमा भारी।
लाखो आते नित नर नारी।
भजमा रहे हमेश हमारी पीर हरो ॥ हमारी० ४
लाखो जोट पालती आते।
मनवांछित फल वे सब पाते।
मिट जाय सबका क्लेश हमारी पीर हरो ॥ हमारी० ५
प्रत्येक मास की पचम तिथि को।
मेला भरता शुक्ल पक्ष को।
घटे बढ़े न लेश हमारी पीर हरो ॥ हमारी० ६
"राज" प्रभु दर्शन को आओ।
पूजा रचाओ पुन्य बढाओ।
मिटे अशेष क्लेश हमारी पीर हरो ॥ हमारी० ७

भजन १५७ नेमनाथ भगवान

श्री नेमि जी! ओ श्री नेम जी! श्री नेम जी! ओ श्री नेम जी!
पूछा पशओ से मैंने जो राजे निहाँ,
मिल के कहने लगे हम है सब सादमां।
पूछा बन्धन से किसने छुड़ाया तुम्हे,
बोले बतलाते हैं उसका नामो निशां।
वो श्री नेमजी वो श्री नेमजी ॥ १
पूछा राजुल सती से कि यह तो बता,
किसके मिलने की है दिल में तेरे तमां।

卐 श्री महावीराय नमः 卐

श्री धार्मिक भजनावली

(फिल्मी तर्ज पर)

द्वितीय भाग

लेखक व प्रकाशक

जैन प्रेम मित्र मंडल

२०१० किनारी बाजार, दिल्ली

स्थापित
१९६४

फोन न०
२६१७७४

नं० १

चौबीसों भगवान की बन्दना

तर्ज—आल्हा

सुमरन करके सब देवों का,
पदमावति को शीश नवाय।
आल्हा लिखता चौबिस प्रभु की,
सज्जनों सुन लो ध्यान लगाय॥

(१) पहले सुमरां आदिनाथ को,
अजितनाथ को शीश नवाय।
सम्भवनाथ के दरसन कर के,
अभिनन्दन पर पहुँचे जाय॥

(२) सुमतिनाथ जी को सुमरा है,
पदम प्रभू जी को लिया मनाय।
सुपार्सनाथ जी के चरणों में,
सबने मस्तक दिया झुकाय॥

(३) चन्दा प्रभु की बैठ चाँदनी में,
पुष्पदन्त जी को सुमरा जाय।
शीतल छाया शीतलनाथ की,
उनके चरणों लिपटा आय॥

(४) श्री श्रेंसनाथ जी का सुमरन करके,
बाँस पूज्य जी लिये मनाय।

विमलनाथ जी को सुमरा है,
जो हैं मुक्ती के दातार ॥

(५) अनन्तनाथ जी के चरणों में,
हमने दीना शीश झुकाय।
धर्म सिखाया धर्मनाथ ने,
शान्ति सिखाई शान्तिनाथ ॥

(६) देश हमारा शान्ति चावे,
ऐसे प्रभु की है अब चाह।
शीस झुकाया कुन्थनाथ को,
अरहनाथ को लिया मनाय ॥

(७) दरसन करके मल्लिनाथ के,
मुनिसोव्रत जी को शीस झुकाय।
नमीनाथ का सुमरन करके,
चरण छुये हैं नेमीनाथ ॥

(८) फिर सुमरा है पदमावति को,
शीस बिराजे पारसनाथ।
चौबिसवें जो तीर्थंकर हैं,
वर्धमान है जिनका नाम ॥
शीस झुकाकर उनके चरणों में,
हमने आल्हा दई बनाय।

(६) जैन प्रेम मित्र मंडल ने स्वामी,
चौबिस प्रभु की आल्हा दई सुनाय।
भगवन अब अरदास हूँ करता,
नैय्या पार लगा दो आय॥

—:※※:—

नं० २

(मल्हार शान्तिनाथ स्वामी की)

शान्ति जिनेश्वर अब तो मेरी पीर हरो जी॥ टेक॥
एजी वीतरागी हो स्वामी वीतरागी हरो भवपीर॥ शान्ति०॥
अष्ट कर्म मुझे दुख भारी दे रहे जी।
एजी मोक्षदाता हो स्वामी मोक्षदाता करदो इनसे पार॥ शान्ति०
श्रीपाल को सागर से तार दियो जी।
एजी तुमने मैना का हो स्वामी तुमने मैना का दीनों संकट टार॥
चीर तो बढ़ाया स्वामी तुमने द्रोपदी का।
एजी तुमने भीर में हो स्वामी तुमने भीर हैं करी है सहाय॥
दास तुम्हारे स्वामी दर आ खड़े जी।
एजी इनकी नैया हो स्वामी मोरी नैया करदो भव से पार॥

— : × -

नं० ३

मैं क्या करूँ राम (फिल्म संगम)

मैं क्या करूँ वीर मुझे कर्मों ने घेरा ॥ टेक ॥
ओय होय कर्मों ने घेरा आय हाय कर्मों ने घेरा।
तुम तो गये मोक्ष स्वामी मैं नर्कों में रुल गया,
कर्म जैसे किये मैंने फल वैसा ही पा लिया,
मैं तो हूँ अज्ञान मुझे कर्मों ने घेरा ॥ ओय होय० ॥ १ ॥
मैं दुखिया संसारी स्वामी तुम तो प्रतिपाल हो,
नैया मेरी बीच भंवर में तुम ही खेवनहार हो,
करदो इसको पार मुझे कर्मों ने घेरा ॥ ओय होय० ॥२॥
सिद्धार्थ के नन्द हो मां त्रिशला के लाल हो,
कुन्डलपुर में जन्म लेकर पाया केवल ज्ञान हो,
प्रभु तुम हो दीनदयाल मुझे कर्मों ने घेरा ॥ ओय० ॥३॥
अहिंसा के उपदेश प्रभु जी दुनिया को सुना गये,
जियो और जीने दो सबको ये सन्देश पढ़ा गये,
खुद पाया पद निरवाण मुझे कर्मों ने घेरा ॥ ओय० ॥४॥
मैं क्या करूं वीर मुझे कर्मों ने घेरा।

—++—

नं० ४

तर्जे—हसता हुआ नूरानी चेहरा (फिल्म पारसमणी)

हंसता हुआ महावीर का चेहरा ॥ टेक ॥
खिलता हुआ ये गुलाब सा चेहरा।
वीर की वाणी है सबसे प्यारी।
सुनलो जरा सुनलो जरा ॥ हंसता० ॥
पहले तेरी वाँडी ने लूट लिया दूर से।
फिर मैने भव २ में देखा है घूम के।
वीर जी अति वीर जी बोलो तो कहाँ हो जरा ॥हंसता०॥१॥
जी भर के तड़फाया जी भर के दर्शन दो।
सबकुछ भुलाया है थोड़ी शरण दो।
मेरी नैया बीच भंवर में आके पार लगा ॥ हंसता ॥२॥
सेवक चरण में अब तो शरण दो।
आये हैं दर पे थोड़ा दरश दो।
तुम हो भगवन मैं हूँ बालक अपना सा मुझको बना ॥हंसता॥३॥

—(:०:)—

नं० ५

मल्हार महावीर स्वामी की

महावीर स्वामी प्रगटे हैं चाँदन गाँव में जी।
एजी कोई ग्वाला हो स्वामी कोई ग्वाला खड़ा है तुमरे पास।
क्षीर तो चढ़ायो गैया तुमरे शीस जी।
एजी टीले अन्दर हो स्वामी टीले अन्दर रहे तुम नन्दा पर॥
महावीर० ॥ १ ॥

एक दिन सपनों ग्वाले को दे दियो जी।
एजी उस टीले को देखो स्वामी टीले को ग्वाला रहा खोद॥
महावीर० ॥ २ ॥

निकाली थी प्रतिमा स्वामी उसने आपकी जी।
एजी उसने वहीं पर हो स्वामी उसने वहीं पर झोंपड़ी लीनी डाल॥
महावीर० ॥ ३ ॥

दरशन करन को स्वामी नरनारी आ रहे जी।
एजी कोई शोर हो देखो स्वामी शोर मचो है चहुँ ओर॥
महावीर० ॥ ४ ॥

जोधराज पर विपता भारी आ पड़ी जी।
एजी उसने मन्दर हो स्वामी उसने मन्दिर दियो बनवाय॥
महावीर० ॥ ५ ॥

कितने ही रथ तो स्वामी तुमने तोड़ दिये जी।
एजी रथ चल दियो हो स्वामी रथ चल दियो ग्वाले का लगते
हाथ ॥ महावीर० ॥

जैन प्रेम मित्र मंडल स्वामी दर पर आ गया जी।
एजी इसकी नैया हो स्वामी मेरी नैया पड़ी है मंझधार ॥
महावीर स्वामी० ॥



नं० ६

तर्ज — जो वायदा किया वो निभाना पड़ेगा
(फिल्म ताजमहल)

तुम्हें नाथ दर्शन दिखाना पड़ेगा।
रोके जमाना चाहे रोके कोई भी।
प्रभु जी तुमको आना पड़ेगा ॥ तुम्हें नाथ० ॥
सिद्धार्थ जी के राज दुलारे।
त्रिशला माता के नैनों के तारे। आ
भक्त बुलावें तुमको प्रभु जी आना पड़ेगा ॥ तुम्हें० ॥१॥
तरसते हैं प्रभु जी ये भक्त तुम्हारे।
तुम बिन हमको स्वामी कौन संभाले। आ…
देदो सहारा मुक्ती के दाता तुमको आना पड़ेगा ॥ २ ॥
कहते हैं नभ से चाँद और तारे।
जलते हैं वेदी पर दीपक ये प्यारे। आ…
त्रिशला के नन्दन महावीर स्वामी तुमको आना पड़ेगा ॥३॥
जैन प्रेम मित्र मंडल शरण तिहारी।
आये हैं दर पे अब तो सुधि लो हमारी। आ…
दिखा दो किनारा बता दो ठिकाना पार लगाना पड़ेगा ॥
तुम्हें नाथ दर्शन दिखाना पड़ेगा ॥ ४ ॥

—:※※:—

नं० ७

तर्ज—वो दिल कहाँ से पाऊँ (फिल्म भरोसा)

वो कर्म कहां से पाऊँ तेरा दर्श जो करा दे ॥ टेक ॥
पापों में फंस रहा हूँ इनसे तो तू छुड़ा दे ॥ वो० ॥

अपना कहूँ मैं किसको कोई नहीं है मेरा ।
माना कोई न अपना प्रभु तुम न भूल जाना ॥ वो० ॥१॥

रहने दो मुझको अपने चरणों का दास बनकर ।
दे दो हमें सहारा एहसान हो तुम्हारा ॥ वो० ॥२॥

आये हैं दर पै तेरे महिमा तुम्हारी सुनकर ।
दर पे हैं हम तुम्हारे दर्शन दिखादो आके ॥ वो० ॥३॥

जैन प्रेम मित्र मंडल शरण प्रभु तुम्हारी ।
दे दो इसे सहारा सेवा करे तुम्हारी ॥
वो कर्म कहाँ से पाऊँ तेरा दर्श जो करा दे ॥ ४ ॥

—++ -

नं० ८

तर्ज—आजा आई बहार (फिल्म राजकुमार)

सेवक करे पुकार होकर बेकरार ॥ टेक ॥
ओ मेरे शान्तिनाथ दर्श बिन रहा न जाय ॥
दर्शन को तरसें अखियाँ दर्शन दिखइयो ।
नैया भँवर में पार लगइयो ।
तुम हो खेववनहार जग के पालनहार ॥ ओ० ॥१॥
फंसा कर्म बन्धन में इनसे छुड़ाना ।
मुक्ती का स्वामी बता दो ठिकाना ।
दिल का तार २ बोले जय २ कार ॥ ओ० ॥२॥
हिंसा यहाँ पर मारी इनसे बचइयो ।
शान्ति छबी स्वामी अब तो दिखइयो ।
आया तेरे द्वार दर्शन की है आस ॥ ओ० ॥३॥
जैन प्रेम मित्र मंडल शरण तिहारी ।
इन्दर और महेन्दर दोनों हैं पुजारी ।
धन्नी करे पुकार ओंकार तेरा दास ॥ ओ० ॥४॥

हमारे जैन प्रेम मित्र मंडल के सदस्य भाइयों

का

परिचय

(१) श्री गुरु इन्दर सैन जैन कपड़े वाले

(२) श्री जयपाल जी जैन दूध वाले—प्रधान

(३) श्री धरनेन्द्र कुमार जैन गोटे वाले—सैक्रेटरी एवं नित्यकार

(४) श्री महेन्दर कुमार जैन लेखक-फर्म आर० पी० खन्ना एन्ड कम्पनी नई दिल्ली

(५) श्री ओंकारनाथ जैन स्वीट्स एन्ड टाफी वाले कैशियर

[redacted]

—××—

श्री

अध्यात्म पद संग्रह

प्रथम भाग

सम्पादक

मोहनलाल शास्त्री

जवाहरगंज, जबलपुर ।

* प्रथम संस्करण *

वीरसम्वत् २४६२

मूल्य ६० पैसा

अध्यात्म पद संग्रह
प्रथम - भाग

संग्रहकर्त्ता
मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ,
जवाहरगंज, जबलपुर

प्रकाशक
सरल जैन ग्रन्थ भण्डार
जवाहरगंज, जबलपुर

प्रथम संस्करण
रक्षाबन्धन २०२२
मूल्य ६२ पैसा

विषयानुक्रमणिका

—मोहनलाल शास्त्री,

१२-८-६५

श्री

अध्यात्म पद संग्रह

प्रथम भाग

भजन नं० १

मत कीजो जी यारी, ये भोग भुजँग सम जानके ॥ टेक ॥
भुजंग डसत इकवार नसत है, ये अनन्त मृतुकारी ।
तृष्णा तृषा बढ़े इन सेयें, ज्यों पीये जल खारी ॥ टेक ॥
रोग वियोग शोक वन का घन, समता-लता कुठारी ।
केहरि करि अरीन देख ज्यों, त्यों ये दें दुख भारी ॥ टेक ॥
इनमें रचे देव तरु थाये, पाये श्वभ्र मुरारी ।
जे विरचे ते सुरपति अरचे, परचे सुख अधिकारी ॥ टेक ॥
पराधीन छिन मांहि छीन है, पापबंध करतारी ।
इन्हें गिने सुख आकमांहि तिन, आमतनी बुधि धारी॥टेक॥
मीन मतंग पतंग भङ्ग मृग, इन वश भये दुखारी ।
सेवत ज्यों किम्पाक ललित, परिपाक समय दुखकारी ॥टेक॥
सुरपति नरपति खगपति हूकी, भोग न आस निवारी ।
'दौल' त्याग अब भज विराग सुख, ज्योंपावे शिवनारी॥टेक॥

भजन नं० २

जानत क्यों नहिं रे, हेनर आतमज्ञानी ॥जानत०॥टेक॥
रागद्वेष पुद्गलकी संपति, निहचै शुद्धनिशानी ॥१॥
जाय नरकपशु नरगति में, यह परजाय विरानी।
सिद्धसरूप सदा अविनाशी, मानत विरले प्रानी ॥२॥
कियो न काहू हरे न कोई, गुरुशिख कौन कहानी।
जनममरनमलरहित विमल है, कीच बिना जिमि पानी॥३॥
सारपदारथ है तिहुँ जगमें, नहिं क्रोधी नहिं मानी।
'दौलत' सो घट माहिं विराजे, लखि हूजे शिवथानी॥४॥

भजन नं० ३

चिनमूरति दृगधारीकी मोहे, रीति लगत है अटापटी ॥टेर॥
बाहिर नारकिकृत दुख भोगे, अन्तर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनिसँग पै तिस, परनतितैं नित हटाहटी ॥१॥
ज्ञान विराग शक्ति तैं विधिफल, भोगत पै विधि घटाघटी।
सदन निवासी तदपि उदासी, तातें आस्रव छटाछटी॥२॥
जे भवहेतु, अबुध केते तस, करत बंध की झटाझटी।
नारक पशु तिरयंच विकलत्रय, प्रकृतिन की है कटाकटी॥३॥
संयम धर न सके पै संयम, धारण की उर चटाचटी।
तासु सुयश गुणकी 'दौलत' के, लगी रहे नित रटारटी॥४॥

भजन नं० ४

हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजे । हे जिन० ॥ टेक ॥
राग द्वेष दावानलतें बचि, समतारसमें भीजे ॥ हे जिन० ॥
परकों त्याग अपनयो निज में, लाग न कबहूँ छीजे ॥ हे जिन०
कर्म कर्मफल मांहि न राचे, ज्ञान-सुधारस पीजे ॥ हे जिन० ॥
मुझ कारजके तुम कारण वर, अरज 'दौल'की लीजे ॥ हे जिन० ॥

भजन नं० ५

हमारी वीर हरो भवपीर । हमारी० ॥ टेक ॥
मैं दुख तपत दयामृतसर तुम, लखि आयो तुम तीर ।
तुम परमेश मोक्षमगदर्शक, मोह दवानल नीर ॥टेक॥
तुम विन हेतु जगत उपकारी, शुद्ध चिदानद धीर ।
गणपति ज्ञानसमुद्र न लंघै, तुम गुणसिन्धु गहीर ॥टेक॥
याद नहीं मैं विपति सही जो, धर धर अमित शरीर ।
तुमगुनचिंतत नशत तथा भय,ज्यों घन चलत समीर ॥टेक॥
कोटवार की अरज यही है, मैं दुख सहूँ अधीर ।
हरहु वेदना फन्द 'दौल' की, कतर कर्म जंजीर ॥टेक॥

भजन नं० ६ ✗

हे मन तेरी को कुटेव यह, करण विषय में धावे है ॥टेक॥
इनहीकेवश तू अनादितैं, निज स्वरूप न लखावे है ।
पराधीन छिन छीन समाकुल, दुर्गति विपति चखावे है॥ हे मन०
फरस विषयके कारन वारन, गरत परत दुख पावे है ।
रसना इन्द्रीवश झष जलमें, कंटक कंठ छिदावे है ॥ हे मन०

गंधलोलपंकज मुद्रित में, अलि निजप्राण खपावै है।
नयन विषयवश दीपशिखा में, अंग पतंग जरावै है।।हेमन०
करन विषयवश हिरन अरन में, खलकर प्रान लुनावै है।
'दौलत'तज इनको जिनकोभज, यह गुरुसीख सुनावै है।हेमन०

भजन नं० ७ ✗

हो तुम शठ अविचारी जियरा,
जिनवृष पाय वृथा खोवत हो ॥
पी अनादि मद मोह स्वगुननिधि,
भूल अचेत नींद सोवत हो ।।टेक।।
स्वहित सीखवच सुगुरु पुकारत,
क्यों न खोल उर दृग जोवत हो ॥
ज्ञान विसार विषयविष चाखत,
सुरतरु जारि कनक बोवत हो ।।हो०।।
स्वारथ सगे सकल जन कारन,
क्यों निज पापभार ढोवत हो।
नरभव सुकुल जैनवृष नौका,
लहि निज क्यों भवजल डोवत हो ।।हो०।।
पुण्यपापफल वातव्याधिवश,
छिन में हँसत छिनक रोवत हो।
संयमसलिल लेय निज उरके,
कलिमल क्यों न 'दौल' धोवत हो ।।हो०।।

भजन नं० ८

आपा नहीं जाना तूने, कैसा ज्ञानधारी रे। टेक।
देहाश्रित कर क्रिया आपको, मानत शिवमगचारी रे ॥१॥
निज निवेद विन घोर परीषह, विफल कही जिन सारी॥२॥
शिव चाहे तो द्विविध कर्म तें, करनिज परणति न्यारी रे ॥३॥
'दौलत' जिननिजभावपिछान्यो, तिनभवविपतिविदारीरे॥४॥

भजन नं० ६

मत कीज्यो जी यारी, घिनगेह देह जड़ जान के। टेक।
मात तात रज वीरजसों यह, उपजी मल फुलवारी।
अस्थिमाल पल नसा-जालकी, लाल लाल जलक्यारी॥१॥
करमकुरंग थली पुतली यह, मूत्रपुरीष भँडारी।
चर्ममँढ़ी रिपुकर्म घड़ी धन, धर्म चुरावनहारी ॥२॥
जे जे पावन वस्तु जगत में, ते इन सर्व बिगारी।
स्वेद मेद कफ क्लेशमयी बहु, मदगदव्याल पिटारी ॥३॥
जा संयोग रोग भव तौलों, जा वियोग शिवकारी।
बुध तासों न ममत्व करें यह, मूढ़मतिन को प्यारी ॥४॥
जिन पोषी ते भये सदोषी, तिन पाये दुख भारी।
जिन तप ठान ध्यानकर शोषी, तिन परनी शिवनारी॥५॥
सुरधनु शरदजलद जलबुदबुद, त्यों झट विनशन हारी।
यातें भिन्न जान निज चेतन, 'दौल' होहु शमधारी ॥६॥

भजन नं० १०

हमतो कबहुँ न निजघर आये, परघर फिरत बहुत दिन बीते।
नाम अनेक धराये, हमतो कबहुँ न निजघर आये। टेर।
परपद निजपद मान मगन ह्वै, पर परणति लिपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुख कंद मनोहर, चेतनभाव न भाये॥१॥
नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये।
अमल अखंड अतुल अविनाशी, आतमगुण नहिं गाये॥२॥
यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये।
'दौल' तजो अजहूँ विषयन को, सतगुरु वचन सुनाये॥३॥

भजन नं० ११

छाँड़ि दे या बुधि भोरी, वृथा तनसे रति जोरी॥टेक॥
यह पर है न रहे थिर पोषत, सकल कुमल की झोरी।
यासों ममता कर अनादितैं, बँधो कर्म की डोरी,
सहे दुख जलधि हिलोरी॥ छाँड़ि० ॥१
यह जड़ है तू चेतन यों ही, अपनावत बरजोरी।
सम्यकदर्शन ज्ञान चरण निधि, ये हैं संपत तोरी,
सदा विलसौ शिवगौरी॥ छाँड़ि० ॥२
सुखिया भये सदीव जीव जिन, यासों ममता तोरी।
'दौल' सीख यह लीजे पीजे, ज्ञानपियूष कटोरी,
मिटे परचाह — कठोरी॥छाँड़ि०॥३

आरती नं० १२ ✕

अपनी सुधि भूल आप, आप दुख उपायो,
ज्यों शुक नभचाल बिसरि, नलिनी लटकायो ॥टेक॥
चेतन अविरुद्ध शुद्ध, दरशबोधमय विशुद्ध,
तजि जड़-रमपरस रूप, पुद्‌गल अपनायो ॥टेक॥
इन्द्रिय सुख-दुख में नित्त, पाग रागरुखमें चित्त,
दायक भवविपतिवृन्द, बन्धको बढ़ायो ॥टेक॥
नित चाहदाह दाहे, त्यागों न ताह चाहे.
समता-सुधा न गाहे जिन, निकट जो बतायो ॥टेक॥
मानुष भव सुकुल पाय, जिनवरशासन लहाय,
'दौल' निजस्वभाव भज, अनादि जो न ध्यायो ॥टेक॥

भजन नं० १३ ✕

जीव तू अनादिहीतैं, भूल्यो शिवगैलवा ॥जीव०॥टेक॥
मोहमदवार पियो, स्वपद विसार दियो,
पर अपनाय लियो, इन्द्रिसुखमें रचियो,
भवतें न भियो ना, तजियो मनमैलवा ॥ जीव० ॥१॥
मिथ्याज्ञान आचरन, धरिकर बहु कुमरन,
तीन लोक की धरन, तामें कियो है फिरन,
पायो न शरन न, लहायो सुख शैलवा ॥ जीव० ॥२॥
अब नरभव पायो, सुथल सुकुल आयो,
जिन उपदेश भायो, 'दौल' झट छुटकायो,
परपरनति दुःख-दायिनी चुरैलवा ॥ जीव० ॥३॥

भजन नं० १४

आतम – रूप अनूपम अद्भुत,
याहि लखे भवसिन्धु तरो ।। आ० ।।टेक।।
अल्पकाल में भरत चक्रधर,
निज आतम को ध्याय खरो ।
केवलज्ञान पाय भवि बोधे,
ततछिन पायो लोक शिरो ।। आ० ।।टेक।।
या बिन समुझे द्रव्यलिंगि मुनि,
उग्र तपन कर भार भरो ।
नव—ग्रीवक—पर्यन्त जाय चिर,
फेर भवार्णव माहिं परो ।। आ० ।।टेक।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप,
येहि जगत मे सार नरो ।
पूरव शिवको गये जाहिं अब,
फिर जैहै यह नियत करो ।। आ०।।टेक।।
कोटि ग्रन्थ को सार यही है;
ये ही जिनवानी उचरो ।
'दौल' ध्याय अपने आतम को,
मुक्तिरमा तब वेग वरो ।।टेक।।

भजन नं० १५

मेरे कब ह्वै वा दिन की सुघरी। मेरे॥टेक॥
तन विन वसन असन विन वन में,
निवसों नासा-दृष्टि धरी। मेरे० ॥१॥
पुण्य पाप परसों कब विरचों,
परचों निजि निधि चिर विसरी।
तज उपाधि सजि सहज समाधी,
सहों घाम हिम मेघझरी। मेरे० ॥२॥
कब थिर जोग धरों ऐसो मोहि,
उपल जान मृग खाज हरी।
ध्यान कमान तान अनुभव-शर,
छेदों किहि दिन मोह अरी। मेरे०॥३॥
कब तृन कंचन एक गिनों अरु,
मणिजड़ितालय शैल दरी।
'दौलत' सत गुरुचरन सेव जो,
पुरवो आश यही हमरी। मेरे० ॥४॥

भजन न० १६

अरे जिया, जग धोखे की टाटी ॥अरे०॥टेक॥
झूठा उद्यम लोक करत हैं, जिसमें निशदिन घाटी ॥अरे०॥
जान बूझके अन्ध बने हैं, आंखन बांधी पाटी ॥अरे०॥
निकल जायंगे प्राण छिनक में, पड़ी रहेगी माटी ॥अरे०॥
'दौलतराम' समझमन अपने, दिलकी खोल कपाटी ॥अरे॥

भजन नं० १७

घडि घड़ि प ल पल छिन छिन निश दिन,
प्रभुजी का सुमग्न कर ले रे॥ घड़ि०॥टेक॥
प्रभु सुमिरे तैं पाप कटत हैं,
जनम मरन दुख हर ले रे॥ टेक॥
मन वच काय लगाय चरन चित,
ज्ञान हिये बिच धर ले रे॥ टेक॥
'दौलतराम' धर्मनौका चढि,
भवसागरतैं तिर ले रे॥ टेक॥ ३॥

पद नं० १८

तोहि समझायो सौ सौ बार, जिया तोहि समझायो। टेक।
देख सुगुरु की परहित में रति, हित उपदेश सुनायो ॥सौ०॥
विषय भुजंग सेय दुख पायो, पुनि तिन सों लपटायो
स्वपद विसार रच्यो परपदमें, मदरत ज्यों बौरायो ॥सौ०॥
तन धन स्वजन नहीं हैं तेरे, नाहक नेह लगायो।
क्यों न तजे भ्रम चाखसमामृत, जो नित सन्त सुहायो ॥सौ०॥
अब हूँ समझ कठिन यह नरभव, जिनवृष बिना गमायो।
ते बिलखें मणि डार उदधि में "दौलत" कों पछतायो ॥सौ०॥

भजन नं० १६

धर्म बिन कोई नहीं अपना,
तन सम्पति धन थिर नहिं जग में,
जिसा रैन सपना ।। धर्म० ।।टेक।।
आगे किया सो पाया भाई, याही है निरना ।
अब जो करेगा सो पावेगा, तातैं धर्म करना ।।धर्म०।।
ऐसो सब संसार कहत है, धर्म किये तिरना ।
परपीड़ा व्यसनादिक सेयें, नरक विषैं परना ।।धर्म०।।
नृपके घर सारी सामग्री, ताके ज्वर तपना ।
अरु दारिद्रीके हू ज्वर है, पाप-उदय थपना ।।धर्म०।।
नाती तो स्वारथके साथी, तोहि विपति भरना ।
वनगिरि सरिता अगनियुद्ध में, धर्महि का सरना ।।धर्म०।।
चित 'बुधजन' सन्तोष धारना, पर – चिंता हरना ।
विपति पड़े तो समता रखना, परमातम जपना ।।धर्म०।।

पद नं० २०

तुं ही तुं ही याद मोने, आवे जगत में ।। टेक ।।
तेरे पद पंकज सेवत हैं, इन्द्र, नरिन्द्र, फनिन्द्र भगत में ।
मेरा मन निशदिन हौ गच्यां, तेरे गुन रसपान पगत में ।
भवअनन्तका पातक नास्या, तुम जिनवरछवि दरसलगनमें ।
मात तात परिकर सुतदारा, ये दुखदाई देख जगत में ।
'बुधजन' के उर आनद आया, अबतेहूँ नहिं जाऊँ कुगतमें ।

पद राग कनड़ी २१

उत्तम नर भव पाय के, मत भूले रे रामा ॥टेक॥
कीट पशू का तन जब पाया, तब तूं रहा निकामा।
अब नर देही पाय सयाने, क्यों न भजे प्रभु नामा ॥मत०॥
सुरपति याकी चाह करत उर, कब पाऊँ नर जामा।
ऐसा रतन पाय के भाई, क्यों खोवत बिन कामा ॥मत०॥
तन धन जोवन सुन्दर पायो, मगन भया लखि भामा।
काल अचानक झपट खायगा, पड़ा रहेगा ठामा ॥मत०॥
अपने स्वामी के पद पंकज, करो हिये विसरामा।
मेंट कपट भ्रम अपना बुधजन, ज्यों पावो शिवधामा ॥मत०॥

पद राग भैरवी २२

उठो रे सुज्ञानी जीव, जिन गुन गावो रे। उठो०॥टेक॥
निशि तो नशाय गई, भानु को उद्योत भयो।
ध्यान को लगाओ प्यारे, नींद को भगावो रे ॥उठो०॥
भव वन चौरासी बीच, भ्रमतौ फिरत नीच।
मोह जाल फन्द पर्‌यो, जन्म मृत्यु पायो रे ॥उठो०॥
आरज पृथ्वी में आय, उत्तम नर जनम पाय।
श्रावक कुल कों लहाय, मुक्ति क्यों न पावो रे ॥उठो०॥
विषयनि राचि राचि, बहुविधि पाप सांचि।
नरकनि जाय के, अनेक दुःख पावो रे ॥उठो०॥
परको मिलाप त्यागि, आतम आप लागि।
सु बुध बतावे गुरु, ज्ञान क्यों न लावो रे ॥उठो०॥

भजन नं० २३

तैं क्या किया नादान, तैं तो अम्मृत तजि विष लीना ॥टेक
लख चौरासी जोनि मांहि तैं, श्रावक कुल में आया ।
अब तजि तीन लोक के साहिब, कुगुरु पूजने धाया ॥१॥
वीतराग के दरसन ही तैं, उदासीनता आवे ।
तू तो जिनके सन्मुख ठांडा, सुत को ख्याल खिलावे ॥२॥
सुरग सम्पदा सहजै पावे, निश्चय मुक्ति मिलावे ।
ऐसी जिनवर पूजन सेती, जगत का माना चावे ॥३॥
'बुधजन' मिलें सलाह कहैं तब, तू वापै खिजि जावे।
जथाजोगकों अजथा माने, जनम जनम दुख पावे ॥४॥

भजन २४

मैं देखा आतम रामा ॥ मैं० ॥ टेक
रूप फरस रस गंध तें न्यारा, दरश ज्ञान गुण धामा ।
नित्य निरंजन जाके नाहीं, क्रोध लोभ मद कामा ॥मैं०॥
भूख प्यास सुख दुख नहिं जाके, नाहीं वन पुर गामा ।
नहिं साहिब नहिं चाकर भाई, नहीं तात नहिं मामा ॥मैं॥
भूल अनादि थकी जग भटकत ले पुद्गल का जामा ।
'बुधजन' संगति जिनगुरु की तैं, मैं पाया मुक्ती ठामा ॥मैं०॥

भजन नं० २५

नरभव पाय फेरि दुख भरना,
ऐसा काज न करना हो ॥ नरभव० ॥टेक॥
नाहक ममत ठान पुद्‌गल सौं,
करमजाल क्यों परना हो ॥ नरभव० ॥१॥
यह तो जड़ तू ज्ञान सरूपी,
तिल तुष ज्यों गुरु बरना हो ॥नरभव० ॥२॥
राग दोष तजि भजि समता कों,
कर्म साथ के हरना हो ॥ नरभव० ॥३॥
यो भव पाय विषय-सुख सेना,
गज चढ़ि ईंधन ढोना हो ॥ नरभव० ॥४॥
'बुधजन' समुझि सेय जिनवरपद,
ज्यों भवसागर तरना हो ॥ नरभव० ॥५॥

भजन नं० २६

आज तो बधाई राजा नाभि के द्वार ॥आज० टेक॥
मरुदेवी माता के उरमें, जनमें ऋषभकुमार ॥१॥
शची इन्द्र सुर सब मिलि आये, नाचत हैं सुखकार।
हरषि हरषि पुरके नरनारी, गावत - मंगलचार ॥२॥
ऐसो बालक हूवो ताके, गुनको नाहीं पार।
तन मन वचतैं बंदत 'बुधजन', है भव - तारनहार ॥३॥

भजन नं० २७

आगैं कहा करसी भैया, आजासी जब काल रे ॥टेक॥
ह्यां तो तैंने पोल मचाई, व्हां तौ होय समाल रे ॥१॥
झूठ कपट करि जीव सताये, हर्‌या पराया माल रे।
सम्पतिसेती धाप्या नाहीं, तके बिगनी बाल रे ॥२॥
सदा भोगमें मगन रह्या तू, लख्या नहीं निजहाल रे।
सुमरनदान किया नहिं भाई, होजासी पैमाल रे ॥३॥
जीवनमें जुवतीमंग भूल्या, भूल्या जब था बाल रे।
अब हूँ धारो 'बुधजन' समता, सदा रहहु खुशहाल रे ॥४॥

भजन नं० २८

ऐसो श्रावक कुल तुम पाय, वृथा क्यों खोवत हो ॥टेक॥
कठिन कठिन कर नरभव पाई, तुम लेखी आसान।
धर्म विसार विषय में राचो, मानी न गुरु की आन ॥वृथा
चक्री एक मतंगज पायो, तापर ईंधन ढोयो।
विना विवेक विना मतिहीं को, पाय सुधा पग धोयो ॥वृ०
काहू शठ चिन्तामणि पायो, मरम न जानो ताय।
वायस देखि उदधि में फैंक्यो, फिर पिछे पछताय ॥वृथा
सात विसन आठों मद त्यागो, करुणा चित्त विचारो।
तीन रतन हिरदै में धारो, आवागमन निवारो ॥वृथा
भूधरदास कहत भविजन सों, चेतन अब तो सम्हारो।
प्रभु को नाम तरन तारण जपि, कर्म फन्द निरवारो ॥वृथा

भजन नं० २६

मन मूरख पन्थी, उस मारग मत जाय रे ॥ टेक ॥
कामिनितन कांतार जहां है, कुच परवत दुखदाय रे ॥ १ ॥
काम किरात बसै तिह थानक, सरवस लेत छिनाय रे।
खाय खता कीचक से बैठे, अरु रावण से राय रे ॥ २ ॥
और अनेक लुटे इम पैंडे, वरनैं कौन बढ़ाय रे।
वरजत हों वरज्यो रह भाई, जानि दगा मत खाय रे ॥ ३ ॥
सुगुरुदयाल दया करि 'भूधर' सीख कहत समझाय रे।
आगे जो भावै करि सोई, दीनी बात जताय रे ॥ ४ ॥

भजन नं० ३०

देख्या बीच जहान के, स्वपने का अजब तमाशा ॥टेक॥
एकौं के घर मंगल गावें, पूगी मन की आसा।
एक वियोग भरे बहु रोवें, भरिभरि नैन निराशा ॥ १ ॥
तेज तुरंगनिपै चढ़ि चलते, पहिरैं मलमल खासा।
रंक भये नागे अति डोले, ना कोइ देय दिलासा ॥२॥
तड़कैं राज तखत पर बैठा, था खुशवदन खुलासा।
ठीक दुपहरी मुद्दत आई, जंगल कीना वासा ॥ ३ ॥
तन धन अथिर निहायत जगमें, पानी माहिं पतासा।
'भूधर' इनका गरब करे जे, फिट तिनका जनमासा ॥ ४ ॥

फिट = धिक, जनमासा = मनुष्यता।

आरती नं० ३१

आया रे बुढ़ापा मानी, सुधि बुधि बिसरानी ॥ टेक॥
श्रवण की शक्ति घटी, चाल चले अटपटी।
देह लटी भूख घटी, लोचन झरत पानी ॥ १ ॥
दांतन की पंक्ति टूटी, हाडन की संधि छूटी।
काया की नगरि लूटी, जात नहीं पहचानी ॥ २ ॥
बालों ने वरण फेरा, रोग ने शरीर घेरा।
पुत्रहू न आते नेरा, औरों की कहा कहानी ॥ ३ ॥
'भूधर' समुझि अब, स्वहित करोगे कब।
यह गति ह्वै है जब, तब पछतैहै प्रानी ॥ ४ ॥

भजन नं० ३२

भगवंत भजन क्यों भूला रे, भगवंत भजन० ॥ टेक॥
यह संसार रैन का सपना, तन धन वारि-बबूला रे ॥१॥
इस जीवन का कौन भरोसा, पावक में तृणपूला रे।
काल कुदाल लिये सिर ठांड़ा, क्या समझै मन फूला रे॥२॥
स्वारथ साधै पांच पांच तू, परमारथ को लूला रे।
कहु कैसे सुख पै है प्राणी, काम करे दुखमूला रे ॥३॥
मोह पिशाच छल्यो मति मारे, निजकर कंध वसूला रे।
भज श्रीराजमतीवर 'भूधर' दो दुरमति सिर धूला रे ॥४॥

भजन नं० ३३

पानी में मीन पियासी रे, मोहे रह रह आवे हांसी रे ॥टेक॥
ज्ञान बिना भवबन में भटक्यो, कित जमुना कितकाशी रे॥ १॥
जैसे हिरण नाभि कस्तूरी, वन वन फिरत उदासी रे ॥२॥
'भूधर' भरम जाल को त्यागो, मिट जाये जम फांसी रे॥३॥

भजन नं० ३४

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय ॥ टेक ॥
फल चाखन की बार भरे दग, मर है मूरख होय ॥१॥
किंचित् विषयनि के सुख कारण, दुर्लभ देह न खोय ।
ऐसा अवसर फिर न मिलेगा, हो निद्रित ना सोय ॥२॥
इस बिरियां में धरम–कल्पतरु, सींचत स्याने लोय ।
तू विष बोवन लागत तो सम, और अभागा कोय ॥३॥
जे जग में दुखदायक बेरस, इसही के फल सोय ।
यों मन 'भूधर' जानि के भाई, फिर क्यों भोंदू होय ॥४॥

पद राग बिहाग नं० ३५

जगत जन जू आ हारि चले ॥ टेक ॥
काम कुटिल संग बाजी माड़ी, उन करि कपट छले ॥ज०
चार कषाय मयी जहँ चौपर, पाँसे जोग रले ।
इत सरबस उत कामिनि कौड़ी, इह विधि झटक चले ॥ज०
कूर लिलार विचार न कीन्हों, ह्वै है ख्वार भले ।
बिना विवेक मनोरथ का के, 'भूधर' सुफल फले ॥ज०

पद नं० ३६

ऐसी समझ के सिर धूल, ऐसी समझ के सिर० ॥टेक॥
धर्म उपजन हेत हिंसा, आचरे अघमूल ॥ऐसी०॥
छके मत मदपान पीके, रहे मन में फूल।
आम चाखन चहे भोंदू, बोय पेड़ बबूल ॥ऐसी०॥
देव रागी, लालची गुरु, सेय सुखहित भूल।
धर्मनग की परख नाहीं, भ्रम हिंडोले झूल ॥ऐसी०॥
लाभकारन रतन बणजे, परख को नहिं शूल।
करत इह विधि बनज 'भूधर', विनश जैहै मूल ॥ऐसी०

पद राग सोरठ नं० ३७

अन्तर उज्ज्वल करना रे भाई ॥ टेक ॥
कपट कृपान तजै नहिं तब लों, करनी काज न सरना रे ॥
जप तप तीरथ यज्ञ व्रतादिक, आगम अर्थ उचरना रे।
विषय कषाय कीच नहिं धोयो, यों ही पचि पचि मरना रे॥
बाहिर भेष किया उर शुचि सों, कीयें पार उतरना रे।
नाहीं है सब लोक रंजना, ऐसे वेदन बरना रे॥
कामादिक मल सों मन मैला, मजन किये क्या तरना रे।
'भूधर' नील वसन पर कैसे, केशर रंग उछरना रे॥

पद राग सोरठ न० ३८

सुनि ठगनी माया, तै सब जग ठग खाया ॥ टेक ॥
टुक विश्वास किया जिन तेरा, सो मूरख पछताया ॥सु०
आपा तनक दिखाय बीज ज्यों, मूढमती ललचाया ।
करि मद अन्ध धरम हर लीनों, अन्त नरक पहुँचाया ॥सु०
केते कन्त किये तै कुलटा, तो भी मन न अघाया ।
किस ही सों नहिं प्रीति निबाही, वह तजि और लुभाया ॥सु०
'भूधर' छलत फिरत यह सबको, भोंदू करि जग पाया ।
जो इस ठगनी को ठग बैठे, म तिसको सिरनाया ॥सु०

पद राग सोरठ न० ३९

अब मेरे समकित सावन आयो ॥ टेक ॥
बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावन सहज सहायो ॥
अनुभव दामिनि दमकन लागी, सुरति घटाघन छायो ।
बोले विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिन भायो ॥
गुरु धुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमन विहसायो ।
साधक भाव अंकूर उठे बहु, जिततित हरष सवायो ॥
भूलधूल कहिं मूल न सूझत, समरस जल झरलायो ।
'भूधर' को निकसै अब बाहिर, निज निरचू घर पायो ॥

भजन नं० ४०

बरसत ज्ञान सुनीर हो श्री जिनमुखघनमों ।।टेक।।
शीतल होत सुबुद्धिमेदिनी, मिटत भवातप पीर ।।१।।
स्यादवाद नय दामिनि दमकै, होत निनाद गँभीर ।।२।।
करुणानदी वहे चहुँ दिशितैं, भरी सो दोई तीर ।।३।।
'भागचन्द' अनुभव मन्दिरको, तजत न संत सुधीर ।।४।।

भजन नं० ४१ ✓

जे दिन तुम विवेक बिन खोये ।।टेक।।
मोह-वारुणी पी अनादितैं, परपद में चिर सोये।
सुखकरंड चितपिंड आपपद, गुन अनंत नहिं जोये ।।१।।
होय बहिर्मुख ठानि राग रुख, कर्मबीज बहु बोये।
तसुफल सुखदुख सामग्रीलखि, चितमें हरषे रोये ।।२।।
धवल ध्यान शुचिसलिलपूरतें, आस्रवमल नहिं धोये।
पर द्रव्यनिकी चाह न रोकी, विविध परिग्रह ढोये ।।३।।
अबनिजमेंनिजजाननियततहाँ, निज परिनाम समोये।
यह शिवमारग समरससागर, 'भागचन्द' हित तो ये ।।४।।

पद नं० ४२ ✓

अरे हो अज्ञानी, तूने कठिन मनुष भव पायो ।।टेक।।
लोचनरहित मनुष के कर में, ज्यों बटेर खग आयो ।।१।।
सो तू खोवत विषियन माँहीं, धरम नहीं चित लायो ।।२।।
'भागचन्द' उपदेश मान अब, जो श्री गुरु फरमायो ।।३।।

भजन नं० ४३

जीव ! तू भ्रमत सदीव अकेला ।
संग साथी कोई नहिं तेरा ।। टेक ।।
अपना सुखदुख आपहि भुगतै, होत कुटुम्ब न भेला ।
स्वार्थ भये सब बिछुरि जात हैं, विघट जात ज्यों मेला ।। १
रक्षक ना कोई पूरन ह्वै जब, आयु अंत की बेला ।
फूटत पारि बँधत नहिं जैसें, दुद्धरजल जो ठेला ।। २
तनधनजीवन विनशि जातज्यों, इन्द्रजाल का खेला ।
'भागचन्द' इमि लखकर भाई, हो सतगुरु का चेला ।। ३

पद राग दीपचन्दी सोरठा ४४

प्रानी समकित ही शिवपंथा, या बिननिष्फल सबहै ग्रंथा ।। टे०
जा बिन बाह्य क्रिया तप कोटी, सकल वृथा है रन्था ।। १ ।।
हयजुत रथभी सारथि बिन जिमि, चलत नहीं ऋजुपन्था ।। २ ।।
'भागचन्द' सरधानी नर भये, शिवलक्ष्मी के कन्था ।। ३ ।।

भजन नं० ४५

आकुलरहित होय इमि निशदिन, कीजे तत्त्वविचारा हो ।
को मैं कहा रूप है मेरा, पर है कौन प्रकारा हो ।। १
को भव-कारण बंध कहा को, आस्रव रोकन हारा हो ।
खिपत कर्म बंधन काहे सों, थानक कौन हमारा हो ।। २
इमि अभ्यास किये पावत है, परमानन्द अपारा हो ।
'भागचन्द' यह सार जगत करि, कीजे बारंबारा हो ।। ३

पद लावनी नं० ४६

धन्य धन्य है घड़ी आज की, जिन धुनि श्रवण परी।
तत्त्वप्रतीति भई अब मेरे, मिथ्या-दृष्टि टरी ॥टेक॥
जड़ तैं भिन्न लखी चिन्मूरत, चेतन स्वरस भरी।
अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, पर में सब परिहरी ॥१॥
पाप पुण्य विधि बंध अवस्था, भासी अति दुक्ख भरी।
वीतराग विज्ञान भाव मय, परनति अति विस्तरी ॥२॥
चाह दाह विनशी.बरसी पुनि, समता मेघ झरी।
बाढ़ी प्रीति निराकुल पद से, 'भागचन्द' हमरी ॥३॥

भजन नं० ४७

श्रीजिनवर दरश आज, करत सौख्य पाया।
अष्ट प्रातिहार्यसहित, पाय शान्ति काया ॥टेक॥
वृक्ष है अशोक जहां, भ्रमर गान गाया।
सुन्दर मन्दार पहुप, वृष्टि होत आया ॥ १ ॥
ज्ञानामृत भरी वानि, खिरे भ्रम नसाया।
विमल चमर ढोरत हरि, हृदय भक्ति लाया ॥ २ ॥
सिंहासन-प्रभा - चक्र, वास जग सुहाया।
देव दुँदुभी विशाल, सुरसंग ने बजाया ॥ ३ ॥
मुक्ताफल माल सहित, छत्र तीन छाया।
'भागचन्द' अद्भुत छवी, कही नहीं जाया ॥ ४ ॥

भजन न० ४८ √

सांची तो गंगा यह वीतरागवानी,
अविच्छिन्न धारा निज–धर्म की कहानी ॥सांची०॥टेक॥
जामें अति ही विमल अगाध ज्ञान–पानी,
जहाँ नहीं संशयादि पंक की निशानी ॥ सांची० ॥१॥
सप्तभंग जहँ तरंग, उछलत सुखदानी,
सन्तचित मरालवृन्द रमें नित्य ज्ञानी ॥ सांची० ॥२॥
जाके अवगाहनतें शुद्ध होय प्रानी,
'भागचन्द्र' निहचै घट माहिं या प्रमानी ॥ सांची० ॥३॥

भजन न० ४९ √

परनति सब जीवनकी, तीन भाँति बरनी ।
एक पुण्य एक पाप, एक रागहरनी ॥ परनति० ॥
तामें शुभ अशुभ अंध, दोय करे कर्मबंध,
वीतराग परिणति ही, भवसमुद्र – तरनी ॥ १ ॥
जावत शुद्धोपयोग, पावत नाहीं मनोग,
तावत ही करन जोग, कही पुण्य करनी ॥ २ ॥
त्याग शुभ क्रियाकलाप, करो मत कदाच पाप,
शुभमे न मगन होय, शुद्धता विसरनी ॥ ३ ॥
ऊंच ऊंच दशा धारि, चित प्रमादको विडारि,
ऊंचली दशातैं मति, गिरो अधो धरनी ॥ ४ ॥
'भागचन्द' या प्रकार, जीव लहे सुख अपार,
यातें निरधार स्याद्‌वादकी उचरनी ॥ ५ ॥

पद नं० ५०

यही इक धर्ममूल है मीता ! निज समकितसारसहीता । यही०
समकित सहित नरकपदवासा, खासा बुधजन गीता ।
तहँतें निकसि होय तीर्थंकर, सुरगन जजत सप्रीता ॥१॥
स्वर्गवास ही नीको नाहीं, बिन समकित अविनीता ।
तहँतें चय एकेंद्री उपजत, भ्रमत सदा भयभीता ॥२॥
खेत बहुत जोते हु बीज बिन, रहत धान्य सों रीता ।
सिद्धि न लहत कोटि तपहूतें, वृथा कलेश सहीता ॥३॥
समकित अतुल अखंड सुधारस, जिन पुरुषननें पीता ।
'भागचन्द्र' ते अजर अमर भये, तिनहीनें जग जीता ॥४॥

भजन नं० ५१ ✓

जीवनके परिनामनिकी यह, अति विचित्रता देखहु ज्ञानी ।टेक
नित्य निगोदमाहितैं काढकर, नर परजाय पाय सुखदानी ।
समकित लहि अन्तर्मूहूर्तमें, केवल पाय वरै शिवरानी ॥१
मुनि एकादश गुणथानक चढ़ि, गिरत तहांतैं चितभ्रम ठानी ।
भ्रमत अर्धपुद्गलप्रावर्तन, किंचित् ऊन काल परमानी ॥२
निज परिनामनिकी सँभालमें, तातैं गाफिल मत ह्वै प्रानी ।
बंध मोक्ष परिनामनिहीसों, कहत सदा श्रीजिनवर वानी ॥३
सफलउपाधिनिमितभावनिसों, भिन्नसु निजपरनतिकोछानी
ताहि जानिरुचिठानि होहुथिर, भागचंदयह सीखसयानी ॥४

———

भजन नं० ५२

कहिवे को मन सूरमा, करने को काचा।
विषय छुड़ावें औरको, आपहि अति माचा ॥टेक॥
मिश्री मिश्री के कहे, मुख होय नहीं मीठा।
नीम कहें मुख कटु हुआ, कहुँ सुना नहीं दीठा ॥ १ ॥
कहने वाले बहुत हैं, करने को कोई।
कथनी लोक रिझावनी, करनी हित होई ॥ २ ॥
कोटि जनम कथनी कथै, करनी विन दुखिया।
कथनी विन करनी करे, 'द्यानत' सो सुखिया ॥ ३ ॥

भजन नं० ५३

तूं तो समझ,समझ रे भाई ॥ तू तो० ॥टेक॥
निशिदिन विषयभोग लपटाना, धरम वचन न सुहाई ॥
कर मनका ले आसन मार्यो, बाहिज लोक रिझाई।
कहा भयो बक ध्यान धरे तैं, जो मन थिर न रहाई ॥
मास मास उपवास किये तैं, काया बहुत सुखाई।
क्रोध मान छल लोभ न जीत्या, कारज कौन सराई ॥
मन वच काय जोग थिर करके, त्यागो विषय कषाई।
'द्यानत' सुरग मोक्ष सुखदाई, सतगुरु सीख बताई ॥

भजन नं० ५४

दुनियां मतलब की गरजी, अब मोहे जान पड़ी ॥टेक॥
हरे वृक्ष पै पंछी बैठा, रटता नाम हरी।
प्रात भये पंछी उड़ चाले, जग की रीति खरी ॥ १ ॥

जब लग बैल बहे बनिया का, तब लग चाह घनी।
थके बैल को कोइ न पूछे, फिरता गली गली ॥ २ ॥
सत्त बांध सती उठ चाली, मोह के फन्द पड़ी।
'द्यानत' कहे प्रभु नहीं सुमरयो, मुरदा सङ्ग जली ॥ ३ ॥

भजन नं० ५५

आतम अनुभव करना रे भाई ॥ टेक ॥
जब लों भेद-ज्ञान नहिं उपजे, जनम मरन दुख भरना रे ॥
आगम पद नव तत्त्व बखानें, व्रत तप सजम धरना रे।
आतम-ज्ञान बिना नहिं कारज, जोनी–संकट परना रे ॥
सकल ग्रन्थ दीपक है भाई, मिथ्या तमके हरना रे।
कहा करे ते अन्ध पुरुष को, जिन्हें उपजना मरना रे ॥
'द्यानत' जे भवि सुख चाहत हैं, तिनको यह अनुसरना रे।
'सोहं' ये दो अक्षर जपके, भव-जल पार उतरना रे ॥

पद राग सारङ्ग नं० ५६

मोहि कब ऐसा दिन आय है ॥ टेक ॥
सकल विभाव अभाव होहिंगे, विकलपता मिट जाय है ॥
यह परमातम यह मम आतम, भेद–बुद्धि न रहाय है।
औरन की क्या बात चलावें, भेद–विज्ञान पलाय है ॥
जानें आप आप में आपा, सो व्यवहार विलाय है।
नय प्रमाण निक्षेपन माँहीं, एक न औसर पाय है ॥
दर्शन ज्ञान चरन के विकलप, कहो कहाँ ठहराय हैं।
'द्यानत' चेतन चेतन ह्वै है, पुद्गल पुद्गल थाय हैं ॥

पद राग बिहागरो नं० ५७ ✓

जानत क्यों नहि रे, हे नर आतम ज्ञानी ॥ टेक ॥
राग दोष पुद्गल की सङ्गति, निश्चय शुद्ध ममानी ॥जा०
जाय नरक पशु नर सुरगति, ये परयाय विरानी।
सिद्धस्वरूप सदा अविनाशी, जानत विरला प्रानी ॥जा०
कियो न काहू हरै न कोई, गुरु शिष कौन कहानी।
जनम मरन-मलरहित अमल है, कीच बिना ज्यों पानी ॥जा०
सार पदारथ है तिहुँ जग में, नहिं क्रोधी नहि मानी।
'द्यानत' सो घट मांहि विराजै, लख हूजे शिवथानी ॥जा०

पद नं० ५८

प्रानी ये संसार असार है, गर्व न कर मन माहिं ॥टेक॥
जे जे उपजें भूमि पै, जम सों छूटें नाहि ॥प्रानी०
इन्द्र महाजोधा बली, जीत्यो रावण राय।
रावण लक्ष्मण ने हत्यो, जम गयो लक्ष्मण खाय ॥प्रानी०
कंस जरासिन्ध सूरमा, मारे कृष्ण गुपाल।
ताको जरदकुमार ने, मारयो सोऊ काल ॥प्रानी०
कई बार क्षत्री हते, परशुराम बलसाज।
मारयो सोउ सुभूमि ने, ताहि हन्यो यमराज ॥प्रानी०
सुर नर खग सब वश करें, भरत नाम चक्रेश।
बाहूबलि पै हार के, मान रह्यो नहि लेश ॥प्रानी०
जिनकी भौंहें फरकते, डरते इन्द्र फणीन्द्र।
पायनि परवत फोरते, खाये काल मृगेन्द्र ॥प्रानी०

नारी संकल सारखी, सुत फाँसी अनिवार ।
घर बन्दीखाना कहा, लोभ सुचौकीदार ॥प्रानी०
अन्तर अनुभव कीजिए, बाहिर करुणाभाव ।
दो बातनि करि हूजिये, 'द्यानत' शिवपुर राय ॥प्रानी०

पद राग काफी नं० ५६

आपा प्रभु जाना मैं जाना ॥ टेक ॥
परमेश्वर-यह मैं इस सेवक, ऐमा भर्म पलाना ॥ आ०
जो परमेश्वर सो मम मूरति, जो मम सो भगवाना ।
मरमी होय सोई तो जानै, जाने नाहीं आना ॥ आ०
जाको ध्यान धरत हैं मुनिगन, पावत हैं निरवाना ।
अर्हत सिद्ध सूरि गुरु मुनि पद, आतम रूप बखाना ॥ आ०
जो निगोद में सो मुझ मांही, सोई है शिव थाना ।
'द्यानत' निश्चै रञ्च फेर नहिं, जाने सो मतिमाना ॥ आ०

पद राग विहागरा नं० ६० ✓

जिया तैं आतमहित नहिं कीना ॥टेक॥
रामा रामा धन धन कीना, नरभव फल नहिं लीना ॥१॥
जप तप करकें लोक रिझाये, प्रभुता के रस भीना ।
अन्तर्गत परनाम न सोधे, एको गरज सरी ना ॥२॥
बैठि सभा में बहु उपदेशे, आप भये परवीना ।
ममता डोरी तोरी नाहीं, उत्तम तैं भये हीना ॥३॥
"द्यानत"मनवच कायलायके,निज अनुभव चितदीना ।
अनुभव धारा ध्यान विचारा, मंदर कलश नवीना ॥४॥

पद नं० ६१ ✓

अब हम अमर भये न मरेंगे ॥टेक॥
तन कारन मिथ्यात दियो तज, क्यों करि देह धरेंगे ॥१॥
उपजै मरै काल तें प्रानी, ताते काल हरेंगे।
राग दोष जग बंध करत हैं, इनको नाश करेंगे ॥२॥
देह विनाशी मैं अविनाशी, भेद-ज्ञान पकरेंगे।
नासी जासी हम थिर वासी, चोखे हो निखरेंगे ॥३॥
मरे अनन्तबार बिन समझे, अब सुख दुख बिसरेंगे।
'द्यानत' निपट निकट दो अक्षर, बिन सुमरे सु मरेंगे ॥४॥

पद (राग गौरी) नं० ६२

कर रे कर रे कर रे, तू आतम हित कर रे ॥टेक॥
काल अनन्त गयो जग भ्रम ते, भव भव के दुख हर रे ॥१॥
लाख कोटि भव तपस्या करते, जितो कर्म तेरो जर रे।
स्वास उस्वास माँहिं सो नासै, जब अनुभव चित धर रे ॥२
काहे कष्ट सहे वन माहीं, राग दोष परिहर रे।
काज होय समभाव बिना नहिं, भावो पचिपचि मर रे ॥३॥
लाख सीख की सीख एक यह, आतम निज पर पर रे।
कोटिग्रन्थ को सार यही है, 'द्यानत' लख भव तर रे ॥४॥

पद राग गौरी नं० ६३

अब हम आतम को पहिचाना जी ॥ टेक ॥
जैसा सिद्ध क्षेत्र मे राजत, तैसा घट में जाना जी ॥अब०॥

देहादिक परद्रव्य न मेरे, मेरा चेतन बाना जी ॥अब०
'द्यानत' जो जाने सो स्याना, नहि जानै सो दीवानाजी॥अब०

पद राग मल्हार नं० ६४

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी ॥ टेक ॥
हरषि हरषि बहु गरजि गरजिके, मिथ्या तपन हरी ॥१॥
सरधा भूमि सुहावनि लागे, संशय बेल हरी।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े, समुझि पवन सियरी॥२॥
स्यादवाद नय बिजली चमके, परमत शिखर परी।
चातक मोर साधु श्रावक के, हृदय सु भक्ति भरी ॥३॥
जप तप परमानन्द बढ़यो है, सुखमय नीव धरी।
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ॥४॥

पद राग गौरी नं० ६५

भाई अब मै ऐसा जाना ॥ टेक ॥
पुद्गल दरब अचेत भिन्न है, मेरा चेतन बाना ॥१॥
कलप अनन्त सहत दुख बीते, दुख को सुखकर माना।
सुख दुख दोऊ कर्म अवस्था, मैं करमन ते आना ॥२॥
जहाँ भोर था तहाँ भई निशि, निशि की ठौर विहाना।
भूलमिटी निजपद पहिचाना, परमानन्द निधाना ॥३॥
गूंगे का गुड़ खाय कहे किमि, यद्यपि स्वाद पिछाना।
'द्यानत' जिन देख्या ते जाने, मेंढक हंस पखाना ॥४॥

पद राग रामकली न० ६६

हम न किसी के कोइ न हमारा, झूठा है जगका व्यवहारा॥टेक
तन सम्बन्धी सब परिवारा सोतन हमने जाना न्यारा ॥
पुण्य उदय सुख का बढवारा, पाप उदय दुख होत अपारा।
पुण्य-पाप दोऊ संसारा, मै सब देखन जाननहारा ॥
मै तिहुँ जग तिहुँ काल अकेला, परसंयोग भया बहुमेला।
थिति पूरी कर खिर खिर जाही, मेरे हर्ष शोक कछु नाहीं ॥
रागभाव तें सज्जन माने, द्वेष भाव ते दुर्जन जाने ।
राग द्वेष दोऊ मम नाही, 'द्यानत' मे चेतन पद माँही ।

पद न० ६७

विपति मे धर धीर, रे ! मन विपति मे धर धीर ॥टेक॥
सम्पदा ज्यो आपदा रे, विनश जै है वीर ॥रे मन०॥
धूप छाया घटत बढ़े ज्यों, त्योंहि सुख दुख पीर ॥रे मन०॥
दोष'द्यानत' देय किसको, तोरि करम जंजीर ॥रे मन०॥

पद न० ६८

धिक धिक जीवन समकित बिना ॥ टेक ॥
दान शील तप व्रत श्रुत पूजा, आतम हेत न एक गिना ॥
ज्यो बिन कन्त कामिनी शोभा, अम्बुज विन सरवर ज्योंसुना।
जैसे बिना एक के बिन्दी, त्यो समकित बिन सरब गुना ॥
जैसे भूप बिना सब सेना, नीव बिना मन्दिर चुनना ।
जैसे चन्द्र बिहूनी रजनी, इन्हें आदि जानो निपुना ॥
देव जिनेन्द्र साधु गुरु करुणा, धर्म राग व्यवहार भना ।
निश्चय देव धरम गुरु आतम, 'द्यानत' गहि मन वचन तना ॥

पद नं० ६९

मूलन बेटा जायो रे साधो ॥ मूलन० ॥
जाने खोज कुटुम सब खायो रे ॥ साधो ॥ टेक ॥

जन्मत माता ममता खाई, मोह लोभ दो भाई ।
काम क्रोध दोइ काका खाये, खाई तृष्णा दाई ॥साधो॥

पापी पाप पडौसी खायो, अशुभ कर्म दोइ मामा ।
मान नगर को राजा खायो, फैल परो सब गामा ॥साधो॥

दुरमति दादी विकथा दादो, मुख देखत ही मूओ ।
मङ्गलाचार बधाये बाजे, जब यो बालक हूओ ॥साधो॥

नाम धरो बालक को सूधो, रूप वरन कछु नाहीं ।
नाम धरन्ते पांडे खाये, कहत 'बनारसि' भाई ॥साधो॥

पद नं० ७०

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके रागद्वेष नहिं मन में ॥ टेक
विरक्तभाव वृक्ष के नीचे, वृद सहें वह तन मे ॥ ऐसे०
झाडी जङ्गल नदी किनारे, ध्यान धरें वो मन में ॥ ऐसे०
गिरि वर मरुत शिखरके ऊपर, ध्यान धरें ग्रीषम में ॥ ऐसे०
ऐसे मुनिवर देख 'बनारसि', नमन करत चरणन में ॥ ऐसे०

पद नं० ७१ रागमारु

जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे।
विन देखी होसी नहिं क्यों ही, काहे होत अधीरा रे ॥१
समयो एक बढ़े नहिं घटसी, जो सुख दुख की पीरा रे।
तू क्यों सोच करे मन मूरख, होय वज्र ज्यों हीरा रे ॥२
लगे न तीर कमान वान कहुँ, मार सके नहिं मीरा रे।
तूं सम्हारि पौरुष बल अपनो, सुख अनन्त तो तीरा रे ॥३
निश्चय ध्यान धरहु वा प्रभुको, जो टारे भवभीरा रे।
'भैया' चेत धरम निज अपनो, जो तारे भवनीरा रे ॥४

पद नं० ७२

हो चेतन वे दुख विसरि गये ॥ टेक ॥
परे नरक में संकट सहते, अब महाराज भये।
सूरी सेज सबै तन बेदत, रोग एकत्र ठये ॥ हो०
करत पुकार फिरत दुख पावत, करमन आन दये।
कहूँ शीत कहुँ उष्ण महा भुवि, सागर आयु लये ॥ हो०
निकस पशूगति पाइ तहाँ के, दुख ना जाय कहे।
शीत उष्ण और भूख तृषा के, अकथ जु दुक्ख लहे ॥ हो०
कठिन कठिन कर नरभव पाया, काहे न चेत लये।
अब प्रमाद तज चेतहु 'भैया', श्रीगुरु यों उचरे ॥ हो०

पद नं० ७३

स्वसम्वेदन सुज्ञानी जो, वही आनन्द पाता है।
न पर का आसरा करता, सदा निजरूप ध्याता है ॥टेक
न विषयों की कोई चिन्ता, उसे बेजार करती है।
लखा विषरूप है जिसको, वह क्योंकर याद आता है॥
कषायों की जो लहरें हैं, न जिसके जल को लहरातीं।
जो निश्चल मेरु सदृश है, पवन घन ना हिलाता है॥
जो चिन्ता है वही दुख है, जो इच्छा है वही दुख है।
है जिसने अपनी निधि देखी, नहीं फिकरों में जाता है॥
है तन से गरचे व्यवहारी, मगर मन से रहे निश्चल।
वही सत ध्यान का कन है, जो कर्मों को जलाता है॥
सुधा की बूंद ले लेकर, वह इक सागर बनाता है।
इसी का नाम 'सुखोदधि' है, उसी में डूब जाता है॥

पद नं० ७४

परम कल्याण–भाजन मैं, मैं अम्मृत स्वाद पाऊँगा।
मिटाकर आधि अरु व्याधी, मैं आनद हिय मनाऊँगा॥टेक
जगत जंजाल को तजकर, मुझे रहना है निर्द्वन्दी।
मैं संकट अग्नि को समजल, वखूबी से बुझाऊँगा॥ मि०
मुझे जिनराज के सुन्दर, महलमें जाने की रुचि है।
वही निजरङ्ग में रंग कर, मैं बहिरङ्ग हटाऊँगा॥ मि०
परम सुखकार सुखभाजन, है परमातम मेरे अन्दर।
उसे लखकर मगन होकर, मैं 'सुखसागर' नहाऊँगा॥ मि०

पद नं० ७५

जगत में कोइ नहीं मेरा ।
सब संशय को टाल देखलो, आप शुद्ध डेरा ॥जगत०॥टेक
क्यों शरीर में आपा लखकर, होत कर्म चेरा ।
वृथा मोह में फँसकर, करता है मेरा तेरा ॥ १ ॥
है व्यवहार असत्य स्वप्न सम, नश्वर उलझेरा ।
कर निश्चय का ध्यान कि, जिससे होवे सुलझेरा ॥ २ ॥
जीव जीव सब एक सारखे, शुद्ध – ज्ञान – ढेरा ।
नहीं मित्र नहिं अरी जगत में, खूब ही है हेरा ॥ ३ ॥
बैठ आप में आपो भज लो, वही देव तेरा ।
'सुखसागर' पावेगा क्षण में, होत न जग फेरा ॥ ४ ॥

पद नं० ७६

मुझे ज्ञान शुचिता सुहाई हुई है ।
परम शान्तता दिल में भाई हुई है ॥ टेक ॥
जहाँ ज्ञान सम्यक् नहीं खेद कोई ।
निजानन्द परता जमाई हुई है ॥ १ ॥
नहीं रागद्वेषौ, नहीं मोह कोई ।
परम ब्रह्म रुचिता बढ़ाई हुई है ॥ २ ॥
जगत नाट्यशाला, नटन जो कि करता ।
वहीं शुद्धता नित्य छाई हुई है ॥ ३ ॥
करूँ ध्यान हरदम उसी का खुशी हो ।
स्व 'सुख सिन्धु' में प्रीति छाई हुई है ॥ ४ ॥

पद नं० ७७

अरे मन करले आतम-ध्यान ॥ टेक ॥

कोइ नहीं अपना इस जग में, क्यों होता हैरान ॥ १ ॥
जासे पावे सौख्य अनूपम, होवे गुण अमलान ॥ २ ॥
निज में निज को देख देख मन, होवे केवलज्ञान ॥ ३ ॥
अपना लोक आप में राजत, अविनाशी सुखदान ॥ ४ ॥
'सुखसागर' नित बहे आपमें, कर मज्जन रजहान ॥ ५ ॥

भजन नं० ७८

जगत जंजाल से हटना, सुगम भी है कठिन भी है।
परम सुखसिन्धु में रमना, सुगम भी है कठिन भी है ॥टेक
है कायरता बड़ी जामें, इसे वशकर सुवीरज से।
निजातम-भूमि में जमना, सुगम भी है कठिन भी है ॥१
परम शत्रू हैं रागादी, इन्हें वशकर सुवीरज से।
सुसमता का अनूभवना, सुगम भी है कठिन भी है ॥२
करोड़ों भाव आ आकर, मनोहरता बता जाते।
न इनके मोह में पड़ना, सुगम भी है कठिन भी है ॥३
करम जड़ हैं न कुछ करते, चले जाते सुमारग से।
अबन्धक शाश्वता रहना, सुगम भी है कठिन भी है ॥४
कषायों की जलन जिसको, वही तन को जलाती है।
चिदानन्द 'सुखसागर', सुगम भी है कठिन भी है ॥५

पद नं० ७६

निजरूप को विचार, निजानन्द स्वाद लो।
भवभय मिटाय आप में, आपो सम्हार लो ॥टेक॥
अपना स्वरूप शुद्ध, वीतराग ज्ञानमय।
निरमल फटिक समान, यही भाव धार लो ॥ १ ॥
ये क्रोध भाव आदि, आत्मा के हैं विभाव।
सुख शान्तिमय स्वभावका, रूपक चितार लो ॥ २ ॥
नहीं मान आतमभाव है, विकार कर्म का।
मार्दव स्वभाव सार है, इस को विचार लो ॥ ३ ॥
माया नहीं निजात्म है, विकार मोह का।
आर्जव स्वधर्म स्वच्छ, यही तत्त्व धार लो ॥ ४ ॥
नहिं लोभ है स्वरूप है, चारित्र – मोहिनी।
शुचिता अपार सार, इसे ही सम्हार लो ॥ ५ ॥
चारों कषाय शत्रु, निजातम के हैं प्रबल।
इनके दमन के हेतु, आत्म-ध्यान धार लो ॥ ६ ॥
सब कर्ममल निवारिये, यदि शिव की चाह है।
'सुखदधि' विशाल आप, सुखाकन्द सार लो ॥ ८ ॥

गजल नं० ८०

आतम स्वरूप सार को, जाने वही ज्ञानी।
है मोक्षपन्थ रूप वही, मोक्ष – विज्ञानी ॥टेक॥
है यह अनेक – धर्मरूप, गुण – मई आतम।
एकान्त नय ना देख सके, आत्म सुज्ञानी ॥ १ ॥

कोई कहे वह शुद्ध है, कोई कहे अशुद्ध ।
है शुद्ध भी अशुद्ध भी, यह जैन की वानी ॥ २ ॥
है कर्म-बन्ध इसलिये, अशुद्ध यह आतम ।
स्वभाव से है शुद्ध यही, बात प्रमानी ॥ ३ ॥
कोई कहे नित्य कोई, कहता है है अनित्य ।
यह नाशरहित गुणमई है, नित्य सुज्ञानी ॥ ४ ॥
पर्याय पलटता रहे, हो मैल से उजला ।
परिणाम मई तत्त्व में, अनित्यता मानी ॥ ५ ॥
करता है निज स्वभाव का, परका नहीं करता ।
भोगता है स्व स्वभाव का, यह बात सुहानी ॥ ६ ॥
है मोह ने अज्ञान में, इसको फँसा डाला ।
सुज्ञान-भाव धारते हो, आत्म महानी ॥ ७ ॥
भवदधि से निकलने का, यही मार्ग निराला ।
पाता है 'सुख उदधि' को, न जिसका कोई सानी ॥ ८ ॥

भजन नं० ८१

करो मन आतमवन में केल ॥ टेक ॥
होय सफल नरभव यह दुर्लभ, हो शिवरमणी-मेल ॥
भवबाधा मिट जाय छिनक में, छूटे कर्मन-जेल ॥करो०
निजानन्द पावें अविनाशी, मिटि है सकल दुखेल ॥
निजराधा-सङ्ग राचो हरदम, हो 'सुखसागर' खेल ॥करो०

भजन नं० ८२

करम जड़ हैं न इनसे डर, परम पुरुषार्थ कर प्यारे।
कि जिन भावों से बाँधे हैं, उन्हीं को अब उलट प्यारे ।।टेक
शुभाशुभ पाप पुण्यों को, सदा ही बाँधते जियमें।
शुभाशुभ टालकर चेतन, तूं शुभ उपयोग धर प्यारे ।।१।।
तूं जैसा शश्वता निर्मल, परमदीपक परमज्योती।
तूं आपा परको जाने रह, न रागरु द्वेष कर प्यारे ।।२।।
जहाँ आतम अकेला है, वहीं उपयोग निर्मल है।
उसी में निज चरण धरना, यही अभ्यास रख प्यारे ।।३।।
तूँ भवसागर सुखावेगा, निजातम भाव भावेगा।
'सुखोदधि' में समावेगा, सदा समता-सहित प्यारे ।।४।।

भजन नं० ८३

जो आनन्द निजघट में, नहीं परमें प्रगट होता।
जो ज्ञानी हैं निजानन्द का, नहीं दुख सुख उसे होता ।।टेक
करोड़ों रोग अरु व्याधी, अगर तन मन में आती हैं।
निराश होकर चली जातीं, असर उस घटपै नहिं होता ।।१
कहा सुवरण कहा लोहा, रतन अरु काँच का अन्तर।
कहा है चेतना सुखमय, कहा जड़रूप है थोता ।।२
जो जड़ में मोह करते हैं, वही भव में विचरते हैं।
उन्हीं को राग द्वेषों में, क्षणक सुख दुख निकट होता ।।३
जो अपनी निधिका स्वामी है, उसे क्या और धन चाहिये।
वह 'सुखसागर' मगन रह के, शुद्धानानन्द-मय होता ।।४

गजल नं० ८४

परम रस है मेरे घट में, उसे पीना कठिन सुन ले ।
जगत रस में जो भीगे हैं, उन्हें समरस कठिन सुनले।।टेक
है भव-आताप दुखदाई, किसी ने चैन ना पाई ।
जो इनके सङ्ग में उलझे, उन्हें शिवसुख कठिन सुनले।।१
प्रथमपद में जो काँटे हैं, उन्हीं से छिद रहा यह तन ।
जो भेदज्ञान का शस्तर, उसे पाना कठिन सुनले ।।२
बचाकर रखना आपे को, है सुगाई परम अद्भुत ।
जो भवथिति नाश करलेते, न निजसुख कुछ कठिन सुनले।।३
जो 'सुखोदधि' में रहे लौलीन, उन्हें बेकार कह दीजे ।
परखना ऐसे पुरुषों का, जगत में है कठिन सुनले ।।४

भजन नं० ८५

मुझे निरबान पहुँचन की, लगी लौं है अनादी से ।
मैं किस विध कार्य साधूंगा, यही इच्छा अनादी से ।।१।।
लिया व्यवहार का सरना, न निश्चय से करी मिल्लत ।
इसी से हो रहा रुलना, चतुर्गति में अनादी से ।।२।।
परम निश्चय उमड़ आया, कि पाया आपका दर्शन ।
मिटाया ध्यान सब परका, जो छाया था अनादी से ।।३।।
लखा निज को कि येही है, परम आतम परमज्ञानी ।
यही सुख-शान्ति-सागर है, न जाना था अनादी से ।।४।।
मुझे निज दुर्ग में बसना, जहाँ आना न कर्मों का ।
औ 'सुखसागर' नहाना है, न पाया था अनादी से ।।५।।

पद नं० ८६

देखो भूल हमारी, हम संकट पाये ॥ टेक ॥
सिद्धसमान स्वरूप हमारा, डोलूँ जेम भिखारी ॥१॥
पर परणति अपनी अपनाई, पोट परिग्रह धारी ॥२॥
द्रव्यकर्म वश भावकर्म कर, निजगल फाँसी डाली ॥३॥
नो कर्मन तें मलिन कियो चित, बाँधे बन्धन भारी ॥४॥
बोये बीज बबूल जिन्होंने, खावें क्यों सहकारी ॥५॥
करम कमाये आगे आवें, भोगें सब संसारी ॥६॥
'नैनसौख्य' अब समता धारो, सतगुरु सीख उचारी ॥७॥

पद नं० ८७

जड़ता विन आप लखें, नाहिं मिटै मोरी ॥ टेक ॥
लखो जब निज हिये नैन, भयो मोह अतुल चैन ।
सम्यक् के अभाव मैंने, कीनी भव फेरी ॥१॥
अतुल-सुख अतुल-ज्ञान, अतुलवीर्य को निधान ।
काया में विराजमान, मुक्ति मेरी चेरी ॥२॥
द्रव्य – कर्म – विनिर्मुक्त, भावकर्म – असंयुक्त ।
निश्चैनय लोकमात्र, परजय वपु वेरी ॥३॥
जैसे दधि मांहि घीव, तैसे जड़ मांहि जीव ।
देखी हम अपने 'नैन', आनन्द की ढेरी ॥४॥

पद नं० ८८ ✓

इक जोगी असन बनावे, तासु भखत अघ नमन होत ॥
ज्ञान-सुधा-रस जल भर लावे, चूल्हा शील जलावे ।
कर्मकाष्ठ को चुग चुग बाले, ध्यान अगिन प्रजलावे ॥इ०
अनुभव भाजन निजगुण तन्दुल, ममता क्षीर मिलावे ।
सोहं मिष्ट निशङ्कित व्यञ्जन, समकित छोंक लगावे ॥इ०
स्याद्वाद सप्तभङ्ग मसाला, गिनती पार न पावे ।
निश्चय नय को चमचा फेरे, विरत–भावना भावे ॥इक०
आप पकावे आपहि खावे, खावत नाहिं अघावे ।
तदपि मुक्तिपद पंकज सेवे, 'नयनानद' शिर नावे ॥इक०

पद नं० ८९

मूढ़ मन मानत क्यों नहिं रे ॥ टेक ॥

पर द्रव्यन को डोलत रहता, फिरै गांठकी संपति खोता ।
डूब रसातल मारत गोता, सुख चाहत अरु करत कुकर्म ॥१
चिर अभ्यास कियो जिनशासन, बैठे मार मारकर आसन ।
तदपि भयो विज्ञान प्रकाश न, मगन भयो लख तनको चर्म ॥२
अरे नैनसुख हिय के अन्धे, मत कर नाम जतिन के गन्दे ।
अब तो त्याग जगतके धन्धे, कर सुकृत कर जतनधर्म ॥मन०

पद राग धनाश्री नं० ६०

रे मन उलटी चाल चले ॥ टेक ॥

पर सङ्गति में भ्रमतो आयो, पर-सङ्गत बन्ध फले ॥ रे मन
हितको छाँड़ अहित सों राचै, मोह-पिशाच छले ।
उठ उठ अन्ध सम्हार देख अब, भाव सुधार चले ॥ रे मन
आओ अन्तर आतम के ढिग, पर को चपल टले ।
परमातम को भेद मिलत ही, भव को भ्रमण गले ॥ रे मन
मनके साथ विवेक धरो मित, सिद्ध स्वभाव वरे ।
बिना विवेक यही मन छिन में, नरक-निवास करे ॥ रे मन
भेदज्ञान तें परमातम पद, आप आप उछरे ।
'नन्दब्रह्म' पर पद नहिं परसै, ज्ञान-स्वभाव धरे ॥ रे मन

पद नं० ६१

जिय ऐसा दिन कब आय है ॥ टेक ॥

सकल विभाव अभाव रूप ह्वै, चित्त विकल मिट जाय है ॥
परमातम में निज आतम में, भेदा-भेद विलाय है ।
औरों की तो चलै कहाँ फिर, भेदविज्ञान पलाय है ॥
आप आपको आपा जानन, यह व्यवहार लजाय है ।
नय परमान निक्षेप कहीं ये, इनको औसर जाय है ॥
दरसन ज्ञान भेद आतम के, अनुभव मांहि पलाय है ।
'नन्दब्रह्म' चेतनमयपद में, नहिं पुद्गल गुण भाय है ॥

पद राग आशावरी नं० ६२

जान जान अब रे, हे नर आतम ज्ञानी ॥ टेक ॥
राग द्वेष पुद्गल की परिणति, तू तो सिद्ध समानी ॥१॥
चार गती पुद्गल की रचना, तातें कही विरानी ।
सिद्धस्वरूपी जगतविलोकी, विरले के मन आनी ॥२॥
आपरूप आपहिं परमाने, गुरशिष कथा कहानी ।
जनम मरण किसका है भाई, कीचरहित है पानी ॥३॥
सार वस्तु तिहु काल जगतमे, नहि क्रोधी नहिं मानी ।
'नन्दब्रह्म' घट माहि विलोके, सिद्धरूप शिवरानी ॥४॥

पद नं० ६३

जान लियो मैं जान लियो, आपा प्रभु मे जान लियो ॥टेक
परमेश्वर मैं सेवक को भ्रम, एक छिनक में दूर कियो ॥१
परमेश्वर की मूरत मे ही, ज्ञानसिन्धुमय पेख लियो ।
मरमी होय परख सो जानें, औरन को है सुन्न हियो ॥२
याहिज्ञान मुनिज्ञान ध्यानबल, छिनमे शिवपद सिद्ध कियो ।
अरहत सिद्ध सूरि गुरु मुनिपद, एक आत्म उपदेश कियो ॥३
जो निगोद में सो अपने मे, शिवथानक सोई लखियो ।
'नन्दब्रह्म' यह रत्न फेर नहिं, बुधजन योग्य जान गहियो ॥४

भजन नं० ६४

समझ मन स्वारथ का संसार ॥ टेक ॥
हरे वृक्ष पर पक्षी बैठा, गावे राग मल्हार ।
सूखा वृक्ष गयो उड़ पक्षी, तजकर दममें प्यार ॥ १ ॥
बैल वही मालिक घर आवत, तावत बांधो द्वार ।
वृद्ध भयो तब नेह न कीन्हों, दीनों तुरत बिसार ॥ २ ॥
पुत्र कमाऊ सब घर चाहे, पाना पीवे वार ।
भयो निखट्टू दुर दुर पर पर, होवत बारम्बार ॥ ३ ॥
ताल पाल पर डेरा कीनों, सारस नीर निहार ।
सूखा नीर ताल को तज गये, उड गये पंख पसार ॥ ४ ॥
जब तक स्वारथ सधे तभी तक, अपना सब परिवार ।
नातर बात न पूछे कोई, सब बिछड़े सँग छार ॥ ५ ॥
स्वारथ तज जिनगह परमारथ, किया जगत उपकार ।
'ज्योती' ऐसे अमर देव के, गुण चिन्तें हरबार ॥ ६ ॥

भजन नं० ६५

अरे मन आतम को पहचान, जो चाहत निज कल्यान ॥टेक
मिल जुल सङ्ग रहत पुद्गल के, ज्यों तिल तेल मिलान ।
पर है आतम भिन्न पुद्गल से, निश्चय नय परमान ॥१
इन्द्रिन रहित अमूरत आतम, ज्ञानमयी गुण खान ।
अजर अमर अरु अलख लखै नहि, आँख नाक मुँह कान ॥ २

पद नं० ६६

आप में जब तक कि कोई, आप को पाता नहीं।
मोक्ष के मंदिर तलक, हरगिज कदम जाता नहीं ॥टे०
वेद या क़ुरान या पुराण, सब पढ़ लीजिये।
आपको जाने बिना, मुक्ती कभी पाता नहीं ॥१॥
भाव करुणा कीजिये, यह ही धरम का मूल है।
जो सतावे और को सुख, वह कभी पाता नहीं ॥२॥
हिरण खुशबू के लिये, दौड़ा फिरे जंगलके बीच।
अपनी नाभी में बसे फिर, देख भी पाता नहीं ॥३॥
ज्ञान पै 'न्यामत' तेरे है, मोह का परदा पड़ा।
इसलिये निज आत्मा, तुझको नजर आता नहीं ॥४॥

पद नं० १००

जब हंस तेरे तन का कहीं, उड़ के जायगा।
अय दिल बता फिर किससे तू, नाता लगायेगा ॥१॥
यह भाई बन्धु जो तुझे, करते हैं आज प्यार।
जब आन बने कोई नहीं, काम आयगा ॥२॥
यह याद रख सब हैं तेरे, जी के जीते यार।
आखिर तू एकाकि ही, यमदुख उठायगा ॥३॥
सब मिलके जला देंगे तुझे, जाके शाम में।
एक छिन की छिन में तेरा, पता न पायगा ॥४॥

कर नाश आठ कर्म का, निज-शत्रु जानकर।
वे नाश किये इनके तू, मुक्ती न पायगा ॥५॥
अवसर यही है जो तुझे, करना है आज कर।
फिर क्या करेगा काल जब, मुँह बाके आयगा ॥६॥
अय 'न्यायमत' उठ चेत क्यों, मिथ्यात्व में पड़ा।
जिनधर्म तेरे हाथ यह, मुश्किल से आयगा ॥७॥

पद नं० १०१

दुनियां में सबसे न्यारा, यह आत्मा हमारा।
सब देखन जानन हारा, यह० ॥टेक॥
यह जले नहीं अग्नी में, भींगे न कभी पानी में।
सूखे न पवन के द्वारा, यह० ॥ १ ॥
शस्त्रों से कटे ना काटा, नहिं तोड़सके कोई भाटा।
मरता न मरी का मारा, यह० ॥ २ ॥
मां बाप सुता सुत नारी, झूठे झगड़े संसारी।
नहिं देता कोइ सहारा, यह० ॥ ३ ॥
मत फँसे मोह ममता में, 'मक्खन' आजा आपा में।
तन धन कछु नाहिं तुम्हारा, यह० ॥ ४ ॥

पद नं० १०२

ये आत्मा क्या रंग, दिखाता नये नये।
बहुरूपिया ज्यों भेष, बनाता नये नये ॥ टेक
भरता है स्वांग देव का, स्वर्गों में जाय के।
करता किलोल देवियों के, संग नये नये ॥ टेक
गर नर्क में गया तो, रूप नारकी धरा।
लखि मार पीट भूख प्यास, दुख नये नये ॥ टेक
तिर्यंच में गज बाज वृषभ, महिष मृग अजा।
धारे अनेक भांति के, काबिल नये नये ॥ टेक
नर नारि नपुंसक बना, मानुष की योनि में।
फल पुन्य पाप के उदय, पाता नये नये ॥ टेक
मक्खन इसी प्रकार भेष, लाख चौरासी।
धारे बिगारे बार बार, फिर नये नये ॥ टेक

पद नं० १०३

सुख के सब लोग सगाती है, दुख में कोइ काम न आता है।
जो सम्पति मे आ प्यार करे, वहीविपतिमेआँखदिखाता है॥
सुत मात तात चाचा ताई, परिवार नार भगिनी भाई।
खुद गर्ज मतलबी यार सभी, दुनियां का झूठा नाता है॥
धन माल खजाने महल हाट, हाथी घोडे रथ राजपाट।
सब बनी बनी के ठाठवाट, बिगड़ी में पता न पाता है॥
क्या राजा रंक फकीर मुनी, नरनारि नपुंसक मूर्ख गुनी।
'मक्खन'इमिवेदपुराणसुनी, सबही को कर्म सताता है॥

पद नं० १०४

कर्मनि की गति न्यारी, किसी से कभी टरे न टारी ॥टेक
रामचन्द्र से नामी राजा, वनवन फिरे दुखारी ॥ किसी०
जन्मत कृष्ण न मंगल गाये, मरत न रोवन हारी ॥ किसी०
पाँचों पांडव द्रौपदि नारी, विपति भरी अतिभारी॥ किसी०
ऋषभदेव प्रभु छहों मास लों, फिरे विना आहारी ॥ किसी०
इन्द्र धनेन्द्र खगेन्द्र चक्रधर, हलधर कृष्ण मुरारी ॥ किसी०
'मक्खन' जिन इन कर्मन जीता, तिन चरनन बलिहारी॥ कि०

पद नं० १०५

मोहि सुन-सुन आवे हांसी, पानी में मीन पियासी ॥टेक॥
ज्यों मृग दौड़ा फिरे विपिन में, ढूंढे गन्ध बसे निजतन में।
त्यों परमातम आतम में, शठ पर में करे तलासी
कोई अँग भभूति लगावे, कोई शिर पर जटा ब
कोई पञ्च अगनि तपता है, रहता दिनरात उद... ॥१
कोई तीरथ वन्दन जावे, कोई गंगा जमुना न्हावे।
कोई गढ़ गिरनार द्वारिका, कोइ मथुरा कोइ काशी ॥२
कोई वेद पुरान टटोले, मन्दिर मस्जिद गिरजा डोले।
ढूंढ़ा सकल जहान न पाया, जो घट घट का वासी ॥४
'मक्खन'क्यों तू इतउत भटके, निजआतमरसक्योंनहिंगटके।
जन्म मरण दुख मिटे कटे, लख चौरासी की फाँसी ॥५

भजन नं० १०६

आतम अनुभव करना रे भाई ॥ आतम० ॥ टेक ॥
और जगत की थोती बातें, तिनके बीच न पड़ना रे ।
काल अनन्ते तिन में बीते, एकौ काज न सरना रे ॥१
अनुभवकारन श्री जिनवानी, ताही को उर धरना रे ।
या विन कोउ हितू ना जगमें, छिन इक नाहिं विसरना रे॥२
आतम अनुभव तैं शिवसुख हो, फेर नहीं जहाँ मरना रे ।
और बात सब बन्ध करत हैं, या रति बन्ध कतरना रे ॥३
पर परिणति तें पर वश पर हैं, तातें फिर दुख भरना रे ।
'चम्पा' यातें पर परिणति तजि, निज रचि काज सुधरना रे ॥४

भजन नं० १०७

कहा परदेशी को पतियारो ॥ कहा० ॥ टेक ॥
मन मानें तब चलै पन्थ को, साँझ गिने न सकारो ।
सबै कुटुम्ब छाँड़ इतही पुनि, त्याग चलै तन प्यारो ॥१॥
दूर दिशावर चलत आपही, कोउ न राखन हारो ।
कोऊ प्रीति करो किन कोटिन, अन्त होयगो न्यारो ॥२॥
धन सों राचि धरम सों भूलत, झूलत मोह मँझारो ।
इह विधि काल अनन्त गमायो, पायो नहिं भव पारो ॥३॥
साँचे सुख सों विमुख होत है, भ्रम मदिरा मतवारो ।
चेतहु 'चेत' सुनहु रे भइया, आपहि आप सँभारो ॥४॥

भजन नं० १०८

प्रभु तुम आतम ध्येय करो,
सब जगजाल तनो विकलप तज।
निजसुख सहज वरो ॥ टेक ॥
हम तुम एकदेश के वासी, इतनो भेद परो।
भेदज्ञानबल तुम निज साधो, हम विवेक विसरो ॥प्रभु०॥
तुम निज राच लगे चेतन में, देह से नेह टरो।
हम सम्बन्ध कियो तन धन से, भववन विपति भरो ॥प्रभु०॥
तुमरो आतम सिद्ध भयो प्रभु, हम तनबन्ध धरो।
यातें भई अधोगति हमरी, भवदुख अगनि जरो ॥प्रभु०॥
देख तिहारी शान्ति छवी को, हम यह जान परो।
हम सेवक तुम स्वामि हमारे, हमहिं सचेत करो ॥प्र
दर्शनमोह हरी हमरी मति, तुम लख सहज टरो
'चम्पा' सरन लई अब तुमरी, भवदुख वेग हरो' .

भजन नं० १०९

दिन यों ही बीते जाते हैं ॥ दिन० ॥ टेक ॥
जिनके हेत पाप बहु कीने, ते कछु काम न आते हैं ॥
सजन सँगाती स्वारथ साथी, तन धन तुरत नशाते हैं।
दुख आये कोई होय न शीरी, पाप तेरे लपटाते हैं ॥
कुकथा सुनत प्रेम अति बाढ़े, सुकथा सुन मुरझाते हैं।
सप्तव्यसन–सेवन में सुखिया, क्यों कर समकित पाते हैं ॥

पद नं० १०

तुम हो दीनन के बन्धु, दया के सिन्धु, करो भव पारा।
तुम बिन प्रभु कौन हमारा ॥टेक॥
मोहादि शत्रु बलकारी हैं, इनने सब सुबुद्धि विसारी है।
इन दुष्टों से कैसे होवे छुटकारा ॥तुम०॥
पञ्चेन्द्रिय विषय नचाते हैं, नहिं त्यागभाव कर पाते हैं।
विषयों की लम्पटता ने, ध्यान बिगारा ॥तुम०॥
ये कुटुम विटम्ब सताते हैं, नहिं धर्मध्यान कर पाते हैं।
इन कर्मों ने निजज्ञान दबाया सारा ॥तुम०॥
ऐसो भवसिन्धु अपारी है, वह रहे सभी संसारी हैं।
अब तुम्ही कहो कैसे होवे निस्तारा ॥तुम०॥
परदेव बहुत दिखलाते हैं, सब राग द्वेष युत पाते हैं।
ये खुद अशान्त किम देंय, शांति का द्वारा ॥तुम०॥
तुम डूबत भविक उवारे हैं, कुंजी हू शरण तिहारे हैं।
मोय दे समकित का दान, करो उद्धारा ॥तुम०॥

पद नं० २११

नहि वृथा गमावे, सहसा नहिं पावे, मानुष जन्म को ॥टेक
मानुष जन्म निरोगी काया, उर विवेक चतुराई।
धर्म अधर्म पिछान किये बिन, काम कछू नहिं आई जी ॥म०
जिनवर धर्म दिगम्बर ताको, यदि डर धरनों भाई।
तो आगम अनुसार देव गुरु, तत्त्व परखि सुखदाई जी ॥म०

पद नं० १२२

सुन चेतन प्यारे साथ न चले तेरी काया ॥टेक॥
मल मल धोया चोवा चंदन, इतर फुलेल लगाया।
सबरी द्रव्यें भई अपावन, कुछ भी हाथ न आया ॥१॥
रचा करते करते तूने, क्यों मन को भरमाया।
इसको रोते चले गये सो, उमने जग भरमाया ॥२॥
यह इक धोके की टाटी, अरु दर्पण की छाया।
जिसने इससे प्रीति लगाई, अन्त समय पछताया ॥३॥
इसके पोखन-कारण पांचहु, करण विषय में धाया।
जीरण होते-होते ढुल गये, ज्यों तरुवर की छाया ॥४॥
मानुषभव को सुरपति तरसे, बड़ी कठिन से पाया।
अबकी चूकत फिर नहिं पावो, बार-बार समझाया ॥५॥
बालपने में खेला खाया, जोवन व्याह रचाया।
अर्द्ध मृतक अब जरा अवस्था, यों ही जनम गँवाया ॥६॥
जिसमें ज्ञान ध्यान की समता, ममता को विसराया।
'मंगल' तिस योगी चरणों में, जग ने शीश नवाया ॥७॥

पद राग पूर्वी नं० १२३

भजन बिन यों ही जनम गमायो ॥ टेक ॥
पानी पैल्यां पाल बाँधी, फिर पीछें पछतायो ॥भजन०॥
रामामोह भये दिन खोवत, आशा पास बँधायो।
जप तप संयम दान न दीनों, मानुष जनम हरायो ॥भजन०॥

देह शीश जब काँपन लागी, दशन चलाचल थायो।
लागी आग बुझावन कारन, चाहत कूप खुदायो ॥भजन०
काल अनादि गमायो भ्रमतां, कबहुँ न चित थिर लायो।
हर्ग विषयसुख भरम भुलानो, मृगतिसना-वश धायो ॥भ०

पद नं० १२४

जगत की झूठी सब माया, अरे नर चेत वक्त पाया ॥टेक॥
कंचन वरनी कामिनी, जोवन में भरपूर ॥
अन्तर दृष्टि निहारते, मल-मूरत मशहूर।
कुधी नर इसमें ललचाया ॥ अरे नर०॥१॥
लक्ष्मी तो चंचल बड़ी, बिजली के उनहार।
याके फन्दे तें बचो जी, अपनी करो सम्हार ॥
विवेकी मानुष भव पाया ॥ अरे नर०॥२॥
स्वच्छ सुगन्ध लगाय के, करके सब शृङ्गार।
तिस तन में तू रती करैजी, सो शरीर है छार ॥
वृथा क्यों इसमें ललचाया ॥ अरे नर०॥३॥
तन धन ममता छाँड़के, रागद्वेष निरवार।
शिवमारग पग धारिये जी, धर्म जिनेश्वर सार ॥
सुगुरु ने ऐसा बतलाया ॥ अरे नर०॥४॥

पद नं० १२५

अब हम अमर भये न मरेंगे,
हमने आतम राम पिछाना ॥ टेक ॥
जल में गलत न जलत अग्नि में,
असि से कटत न विष से हाना ।
चीरत फाँस, न पेरत कोल्हू,
लगत न अग्नी बान निशाना ॥ १ ॥
दामिन परत न हरत वज्र गिर,
विषधर डस न सके इक जाना ।
सिंह व्याघ्र गज ग्राह आदि पशु,
मार सके कोइ दैत्य न दाना ॥ २ ॥
आदि न अन्त अनादि निधन यह,
नहिं जन्मा नहिं मरत सयाना ।
पाय – पाय पर्याय कर्म – वश,
जीवन मरण मान दुख ठाना ॥ ३ ॥
यह तन नशत और तन पावत,
और नशत पावत अरु नाना ।
ज्यों बहुरूप धरे बहु – रूपी,
यों बहु–स्वांग भरे मन माना ॥ ४ ॥
ज्यों तिल तेल दूध में घृत,
त्यों तन में आतम-राम समाना ॥

देखत एक एक ही समुझत,
कहत एक ही मनुज अजाना ॥ ५ ॥
पर पुद्गल अरु पर यह आतम,
नहीं एक, दो तत्त्व प्रधाना ।
पुद्गल मरत जरत अरु विनसत,
आतम अजर अमर गुणवाना ॥ ६ ॥
अमररूप लख अमर भये हम,
समझ भेद जो वेद बखाना ।
ज्योति जगी श्रुति की घट अन्तर,
'ज्योति' निरन्तर उर हर्षाना ॥ ७ ॥

पद नं० १०६

अपनी सुधि पाय आप, आप यों लखायो ॥ टेक ॥
मिथ्यानिशि भई नाश, सम्यक् रवि को प्रकाश।
निर्मल चैतन्य – भाव, सहजहिं दर्शायो ॥ अपनी०
ज्ञाना वर्णादि कर्म, रागादि मेटि भर्म ।
ज्ञानबुद्धि तें अखण्ड, आपरूप धायो ॥ अपनी०
सम्यग दृग ज्ञान चरण, कर्त्ता कर्मादि करण ।
भेदभाव त्याग के, अभेद – रूप पायो ॥ अपनी०
शुक्लध्यान–खड्ग धार, वसु अरि कीने सँहार ।
लोक अग्र सुथिर वास, शाश्वत सुख पायो ॥ अपनी०

पद नं० १२७

ज्ञान–स्वरूप तेरा, तूँ अज्ञान हो रहा।
जड़कर्म के मिलाप से, विभाव को गहा ॥टेक॥
पन अक्ष के विषय अनिष्ट, इष्ट जान के।
करके विरोध राग आग, को जला रहा ॥ ज्ञान०
यह व्याधिगेह देह अस्थि, चाम से बना।
निज जान के सिंगार, ठान मूढ़ हो रहा ॥ ज्ञान०
सुत तात मात मित्र आ–दि मान आपके।
करके अकृत पाप आत्म–बोध खो रहा। ज्ञान०
कर भेदज्ञान राग आदि, दोष जान के।
चिद्रूप-ज्ञान-चन्द्रिका, निहार 'जिन' कहा॥ ज्ञान०

पद नं० १२८

हे जियरा अन्तर के पट खोल ॥ टेक ॥
दुनियां क्या है एक तमाशा, चार दिना की झूठी आशा।
पल में तोला पल में माशा, ज्ञान तराज़ हाथ में लेकर ॥
तौल सके तो तौल ॥ हे० ॥१॥
मतलब की है दुनियांदारी, मतलब के हैं सब संसारी।
तेरा जग में को हितकारी, तन मन का सब जोर लगाकर॥
नाम प्रभू का बोल ॥ हे० ॥२॥
अगर इस वक्त न चेत सका तो, फेर न अवसर होगा ऐसा ॥
इससे आतम-हित कर मूरख, क्यों करता है देर ॥ हे०॥३॥

पद नं० १२६

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, हम मोक्षमार्ग में लग जावें।
करि शुद्ध रत्नत्रय भेद त्याग, निज शुद्धातम में रमि जावें॥
तज इष्टानिष्ट विकल्प सभी, समतारस निज में भरि लावें।
करि साम्यभाव स्वाभाविक परिणति, पाय उसीमें रमि जावें॥
है गुणअनन्तमय शुद्ध निजातम, शक्ति प्रगटकर दिखलावें।
फिर काल अनन्ता रहें उसी में, ज्ञाता दृष्टा बन जावें॥
झलकें लोकालोक कालत्रय, निज परिणति में मिल जावें।
स्वाधीन निराकुल ज्ञानचन्द्रिका, आस्वादी हम बन जावें॥

पद नं० १३०

सुनियो भवि लोको, करमन की गति वांकड़ी ॥टेक॥
तीरथ ईश जगत्पति स्वामी, रिषभदेव महाराज।
एक वर्ष आहार न मिलियो, भयो असम्भव काज जी ॥सु०
अर्ककीर्ति परनारी-कारण, जयकुमार से हार।
कीरत खोय दई सब छिन में, कर्म उदय अनिवार जी ॥सु०
विधिवश रावन हरी जानकी, अपजस भयो अपार।
पाण्डव पांच वेष धर निकले, तब पायो आहार जी ॥सु०
छप्पनकोड़ि यदुवंश कहां वे, हरि त्रिखण्ड पति सार।
जनमत मंगल भयो न तिनके, मरे न रोवनहार जी ॥सु०
करमन की गति रुके न काहू, तीनों लोक मँझार।
एक 'जिनेश्वर' भक्ति जगतमें, शिवसुखदायक सार जी ॥सु०

पद नं० १३१

जगत में आत्मपावन को, समझना काम भारी है।
वही ज्ञानी है जिसने आत्मनिधि, अनुपम सम्हारी है॥
उन्हें हरवक्त भेदज्ञान की, चरचा सुहाती है।
कि जिससे आप में आपी, छटा उठती करारी है॥
करोड़ों भाव दिन पर दिन, जो आते हैं, चले जाते।
जो है इक शुद्ध उपयोगी, उसी की शान प्यारी है॥
न भवसागर से है मतलब, न कुछ करना न कुछ धरना।
करो अनुभव सु आतम का, यही शिक्षा सुखारी है॥

पद नं० १३२

मिथ्यात्व - नींद छोड़ दे, आपा सम्हार ले।
जरा ज्ञानचक्षु खोल के, निजको पिछान ले॥ टेक॥
वस्यो निगोद में, अनन्तकाल जाय के।
तहाँ स्वास में अठारह, जन्म मरण पाय के॥ १॥
जहाँ अंक के अनन्त-भाग, ज्ञान में गहा।
भू आदि पंच मांहि, एकाक्ष हो रहा॥ मि०
विकलेन्द्रियादि योनि में, दुखी हुआ फिरा।
सुर नर नरक नीच, गोत्र पाय के मरा॥ मि०
ज्यों अन्धे को वटेर, त्यों सुबोध पाय के।
दृग ज्ञान चरण धार ले, निज में समाय के॥ मि०

(चाल—म्हारा नेमि पिया गिरनारी चाल्या नं० १३७)

म्हारा परमदिगम्बर मुनिवरआया, सब मिल दरशन करलो।
बार-बार मिलनो मुश्किल है, भक्तिभाव उर भरलो ॥टेक॥
दोहा—हाथ कमंडलु काठको, पीछी पंख मयूर।
विषय आश-आरंभ सब, परिग्रह से है दूर ॥
श्री वीतराग विज्ञानी का कोई, ज्ञान हिये बिच धरलो ॥१॥
दोहा—एक बार कर-पात्र में, अन्तराय मल टाल।
अल्प अहार हो लें खड़े, नीरस सरल सँभाल ॥
'सौभाग्य' तरणतारण मुनिवरका, तारक चरण पकड़ लो॥२॥
दोहा—चारों गति दुख से टरो, आत्मरूपको ध्याय।
पुण्य पाप से दूर दूर, ज्ञान गुफा में आय ॥
ऐसे मुनि-मारग उत्तम धारी, तिनके दरशन करलो ॥३॥

(समवसरण स्तुति—राग श्यामकल्याण नं० १३८)

आज कोई अद्भुत रचना रची ॥ टेक ॥
जुगल इन्द्र दोउ चँवर ढुरावत, निरत करत हैं शची ॥१
समवसरण महिमा देखन की, होड़ाहोड़ मची ॥२
स्वर्ग विमान विपुल छबि जाकी, देखत मन न खची ॥४
जिनगुण सार सभी हैं इनमें, ये जिन बात सची ॥४
'नवल' कहे उर आवत ऐसे, हरष धार के नची ॥५

(म्हारा नेम पिया गिरनारी चाल्या नं० १३६)

म्हारा ऋषभ जिनेश्वर नैया म्हारी, भंव सें पार लगाओ ।
खेवट बनकर शीघ्र खबर ल्यो, अब मत देर लगाओ ॥टेक॥

इस अपार भवसिन्धु को, तीर नहीं चहुँ ओर ।
नैया मारी झरझरी, पवन चले झकझोर॥
म्हारी नैया को इस फंदासूँ प्रभु, आकर तुंही छुड़ाओ ॥१॥

क्रोध मान मद लोभ ये, सब ही को कर दूर ।
भवसागर को तीरते, तुम ही हो हितशूर ॥
ओ हितकारी भगवन म्हारो, धन चारित्र बचाओ ॥२॥

सब भक्तों की टेर सुन, राखी है तू लाज ।
आयो हूँ अब शरण में, सारो म्हारो काज ॥
सकल-तिमिर को दूर भगाकर, ज्ञान दीप जलाओ ॥३॥

भजन नं० १४०

नजरियाँ लाग रहीं प्रभु ओर ॥ टेक ॥
दीनबन्धु वह है जगनायक, दीनन के ये हैं सुखदायक ।
उनकी अनुपम कोर, नजरियाँ ॥ १ ॥
नाम निरंजन सब सुख कंजन, श्री जिनराज सर्वदुखभंजन ।
लगी उन्हीं से डोर, नजरियां ॥ २ ॥
उनकी छवी देख हरषाते, इन्द्रादिक भी पार न पाते ।
'प्रेम' जगत में शोर, नजरियाँ ॥ ३ ॥

(नेमिभजन छन्द, रेखता नं० १४१)

गिरनार गया आज, मेरा नेमि दे दगा।
जिनेन्द्र बिना क्या करूँ, दिल श्याम से लगा ॥टेक॥
बलभद्र कृष्ण यादवा, सब साथ ले सगा।
व्याहन को सजके आये, जिनके लार सुर खगा ॥ १ ॥
पशुअन की सुन पुकार, त्याग दिल में है नगा।
चले छोड़ पशू बन्ध, संयम ध्यान में पगा ॥ २ ॥
नेमिनाथ छोड़ जग, गिरनार चल गया।
तब राजमती ने भी, घर बार तज दिया ॥ ३ ॥
करुणानिधान स्वामी, पशू मुक्त कर दिया।
तकसीर बिना छोड़, चले हमको क्यों पिया ॥ ४ ॥
तुम तो हो मेरे नाथ, आठ भव की मैं तिया।
सो ही नेह आज, हमसे छाँड़ क्यों दिया ॥ ५ ॥
कहें नेमि यह संसार, सब असार है तिया।
यह सुनके राजुल, भूषण डार सब दिया ॥ ६ ॥
नेमिनाथ छोड़ जग, गिरनार चल गया।
तब राजमती ने, भी घरबार तज दिया ॥ ७ ॥

भजन नं० १४२

नैना लाग रहे मोरे, जिन चरणन की ओर ॥ टेक ॥
निरखत मूरत तेरी नैना, जैसे चन्द - चकोर ॥ १ ॥
जैसे चातक चहत मेघ को, घन गरजत जिमि मोर ॥ २ ॥
'ज्ञान' कहे धनभाग्य हमारा, बन्दे दोउ कर–जोर ॥ ३ ॥

श्री जिनवर स्तुति नं० १४३

तुम बिन हमरो कौन सहाई, श्री जिनवर उपकारी ।
सेठ सुदर्शन के संकट में, नाथ ! तुम्हीं तो आये थे ।।
शूली तें सिंहासन कीना, उनके प्राण बचाये थे ।
सीता जी की अग्नि-परीक्षा, तुमने पार उतारी ।।१।।
भविषदत्त पर भीर पडी जब, तुमको हृदय बिठाया था ।
आफत मेंटी सारी उसकी, सानद घर पहुँचाया था ।।
द्रौपदी के चीरहरण की, तुमने विपदा टारी ।।२।।
इस विध संकट के अवसर पर, जिसने तुमको ध्याया था ।
दुःख मिटा सुखवृद्धी कीनी, भव से पार लगाया था ।।
मेरा भी दुख दूर करो प्रभु, आया शरण तुम्हारी ।।३

रंग भयो जिनद्वार (राग...होरी) १४४

रंग भयो जिन द्वार..., चलो सखी खेलन होरी ।
सुमत सखी सब मिलकर आओ, कुमति ने देवो निकार ।
केशर चन्दन और अगर्जा, समताभाव घुलाय...चलो०
दया मिठाई, तप बहु मेवा, सित ताम्बूल चबाय ।
आठ करम की डोरी रची है, ध्यान अग्नि सु जलाय...च०
गुरु के वचन मृदंग बजत है, ज्ञान क्षमा डफ ताल ।
कहत 'बनारसी' या होरी खेलो, मुक्तिपुरी को राच...चलो०

श्री जिनेन्द्र-स्तवन गजल नं० १४५

प्रभू जी आप बिन मेरे, अँधेरा ही अँधेरा था।
मुसीबत में न कोई था, सहारा एक तेरा था ॥टेक॥
उदय अब पुण्य का आया, दरश मैं नाथ का पाया।
प्रभू को देखकर हूआ, मुदितमन आज मेरा है ॥१॥
इसी चक्कर में दुनियाँ के, सहे दुख लाख चौरासी।
नहीं क्षण एक थी मुझको, मिला था सौख्य आतमका ॥२
प्रभू अब दर्श हो साक्षात्, मुझे नहिं चैन पड़ता है।
मिटा आवागमन मेरा, तुझे मैं टेर करता हूँ ॥३॥
प्रभू जब आप हिरदे में, झुले मन मेरा आनद में।
सहारा तेरा है भारी, प्रभू जी मेरे जीवन में ॥४॥

भजन नं० १४६ तर्ज—जब चले गये गिरनार....

जब तुम्हीं चले मुख मोड़, हमें यों छोड़, ओ पारस प्यारा।
अब तुम बिन कौन हमारा ॥ टेक ॥
ये बादल घिर घिर आते हैं, तूफान साथ में लाते हैं।
व्याकुल होकर के हमने तुम्हें पुकारा ॥१॥
आँखों से आँसू बहते हैं, सब रो रो कर यों कहते हैं।
जब तुम ही ने प्रभु, हमसे किया किनारा ॥२॥
होठों पर आहें जारी हैं, दिल में बस याद तुम्हारी है।
ये 'राज' भटकता फिरे है, दर दर॰ मा...

भजन नं० १४७

किये जा, किये जा, किये जा भगवान की अरचा।
मेरन्हवन की अरचा, वीर की, अरचा किये जा ॥टेक॥
सु तेरस चैत की आई, अजब बहार है छाई।
श्री महावीर स्वामी का, जनम दिन है मनाने का ॥१॥
करो तुम याद वह शुभदिन, लिया अवतार अन्तिम जिन।
सुमेरू पर ले जाने का, न्हवन जिनवर कराने का ॥२॥
प्रभू ने राज्य को छोड़ा, जगत – जंजाल को तोड़ा।
ज्ञान पाकर हमें रस्ता, बताया मोक्ष जाने का ॥३॥
प्रभू-चरणों में सिर नावो, सदा 'शिवराम' गुण गावो।
हमें शिवराह दिखलाया, परमसुख शान्ति पाने का ॥४॥

श्री जिनेन्द्र—स्तवन नं० १४८

तुमसे लागे नैन प्रभूजी..., तुमसे लागे नैन...
सुनकर सुयश सुखद शिवदानी, नाम तुम्हारा श्री जिनवानी।
आन पड़े हैं चरण शरण में, भवभ्रम से वे चैन प्रभूजी ॥१
सहज स्वभाव भाव निज प्रगटे, क्रूर कुभाव स्वयं सब विघटे।
ज्ञानानंद दिवाकर लखकर, बीत गई दुखरैन प्रभू जी ॥२
तुम समान नाहीं जग माँहीं, कहै जिसे प्रभु लख प्रभुताहीं।
तीनलोक सिरमौर धन्य है, तुम गुणमणि सुखदैन,प्रभू जी ॥३
ज्ञाता दृष्टा है अविनाशी, अतुलवीर्य बल सुखकी राशी।
... के ... भव्य'सखा हो, कारण तुम जिनवैन प्रभूजी ॥४

जिन स्तुति—दादरा भैरवी नं० १४६

सुन दे नार...जग मेरी भी पुकार...
ओ भरतार ...जाते हो कहाँ रथ मोड़के ..

भी मुझे अधबीच में,
ते तजा जगबीच में?
दया का पतवार, खेवो जीवन के आधार।
सुनो भरतार, जाते हो कहाँ रथ मोड़के...१

स्वामी पशुओं की पुकार पर,
त्यागी दया चितधार कर,
भी जग का झूठा प्यार, आई तजकर सब परिवार।
सुनो सुनो भरतार, जाते हो कहाँ रथ मोड़के...॥२

दुख आवागमन का सौभाग्य से,
मेटूँ भवफन्द तेरे गु जाप से,
करूँ आतम का उद्धार, पाऊँ सिद्धासन पद सार।
सुनो सुनो भरतार, जाते हो कहाँ रथ मोड़ के...॥३

भजन नं० १५०

आनद मंगल आज हमारे, आनद मंगल आज ॥टेक॥
श्री जिन-चरण-कमल परसत ही, विघन गये सब भाज ॥१॥
सफल भई सब मेरि कामना, सम्यक् हिये विराज ॥२॥
'नैन' वयन मन शुद्ध करन को, भेंटे श्री जिनराज ॥३॥

श्री वैदेही जिन—स्तवन नं० १५१

सिन्धु ये अपार है, नैया मँझधार है। ॥।
तू ही मेरा मांझी प्रभु ! तू ही पतवार है ॥टेक॥
वैदेही भगवान - तूँ, जीवन को आधार है। ।
तूँ ही वीतराग प्रभु ! तू ही मेरा देव है१॥
राग-द्वेष में फँसकर स्वामी, तेरा नाम भुलाया।
भव भव माहीं भटक भटकते, आज तो दरशन पाया है॥
जीवन नैया हुई जर्जरी, आज ले नाथ उबारी।
साधक के तुम साथी होकर, देते हिम्मत सारी ॥
तेरा नाम सहारा पाकर, लाखों पार लगे हैं।
मेरा भी सौभाग्य सफल हो, श्रद्धा दीप जगे हैं ॥३

श्री नेमिनाथ—स्तवन नं० १५२

मेरी ओर निहारो प्रभु जी, मैं चरणों का दास भया ॥टेक॥
तुम बिन आन देव सँग मेरा, अब तक बहुत अकाज भया॥१
त्रिभुवन में तारक तुम ही हो, मो उर निश्चय आज भया॥२
काल-लब्धि तें अबतुम भेंटो, तुम्हें देख भ्रम भाग गया॥३
'बलदेव' तुम्हारो शरण गहो, तुम्हें फरस मैं निकल गया॥४

— —

मुद्रक—साधना प्रिन्टिंग प्रेस, मिल्लौनीगंज, जबलपुर।